नीराजन

एकादश पुष्प

वर्ष १९७५-७६

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

हमारा साध्य

प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल
आत्म-विश्वास-युक्त बौद्धिक क्षमता एवं
निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः शक्ति
का अर्जन कर, अपने
जीवन को निस्पृह भाव
से भारत माँ के चरणों
में अर्पित करना ही
हमारा परम
साध्य
है।

नीराजन

दुर्गेश वाजपेयी

निजी प्रति.

वार्षिक पत्रिका

१९८५-८६

एकादश पुष्प

संरक्षक :—
श्री ओमशंकर

सम्पादक—
कुमार दिनेश

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

समर्पण

राष्ट्र देवता की नीराजना में,
अपनी इन्द्रधनुषी-बहुआयामी प्रतिभाओं के काव्य, ज्ञान, विचार,
संस्मरण, निबन्ध, हास्य-व्यंग्य, रिपोर्ताज, कथा, यात्रावृत व प्रेरक
प्रसंग के शब्द स्पर्श रुप रस गंध से भरी
सैकड़ों हथेलियों का अर्ध्य निराजन के इस अंक के साथ–
आपको सादर समर्पित – – – – – –

●

ओ जीवन चितरे !
अनगढ़ मिट्टी के ढेले-माँस-पिण्ड में,
जीवन के इन्द्रधनुषी रंगों से
रूप आकार गढ़ने वाले,
मेरे चितरे ! मेरे शिल्पी !
हमारी शिराओं की बहती रक्तधारा में
मनुष्यत्व की अरुणाभा को,
रेत हो गयी अमृत सलिला नदी के जल की तरह–
कौन पी गया ?
क्या अब न उठाओगे, –
हमारी डूबती - स्याह पड़ती अस्मिता में
जीनव का नया रंग चढ़ाने के लिये
अपनी जुदाई तूलिका ?
क्या यों ही विस्मृत कर दोगे–
हमारी खण्डित मूर्ति को
काल की अनन्त गहराई में दफ़न हो जाने के लिये–
उठो मेरे चितरे ! मेरे शिल्पी !
हम पर अपने हजार रंग चढ़ाओ–
अपनी हथौड़ी - छेनी उठाओ,
हमें रंगों और गढ़ो–
कि– हम गा सकें–
ऊँ सहनावबतु ……… ।

– कुमार दिनेश

नीराजकों से

मैंने अपने पिछले सम्बोधन में तुम लोगों से आग्रह किया था कि समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए तुम स्वयं बताओ कि तुम अपना छात्र-जीवन बिताते हुए समाज-सेवा का क्या कार्यक्रम अपना सकते हो। इसके लिए मैंने तुमसे लिखित सुझाव माँगे थे। परन्तु मुझे दुःख है कि केवल एक छोटी कक्षा के आवासीय छात्र ने अपने सुझाव लिखकर दिये थे कि अपना विद्यालय पड़ौस के किसी गाँव को अपना ले और उसका सघन अध्ययन कर उसकी समस्याओं का पता लगाया जाय। तत्पश्चात् एक-एक समस्या को लेकर उसका समाधान ढूँढने का प्रयास किया जाय। इस समाधान को क्रियान्वित करने में जो छात्र रुचि लें इन्हें इस प्रकल्प में लगाया जाय। उदाहरण के लिये कुछ शरीर से पुष्ट छात्र श्रम-दान करें अर्थात् स्वच्छता का कार्य, नाली खोदना, सड़क अथवा बाँध बनाना आदि। दूसरे जो बौद्धिक कार्य में रुचि रखते हैं वे विद्यालय न जा सकने वाले बच्चों तथा निरक्षर प्रौढों को पढ़ा सकते हैं। आचार्य तथा कुछ बौद्धिक दृष्टि से अधिक विकसित ऊँची कक्षाओं के छात्र समय-समय पर ग्राम-वासियों को एकत्र कर उनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को कैसे उन्नत और विकसित किया जा सकता है इस विषय पर उनको उद्बोधित कर सकते हैं।

इस छोटे छात्र की प्रतिक्रिया श्लाघनीय एवं अनुकरणीय थी परन्तु एक बड़ी कक्षा के नगर में रहने वाले छात्र के इस मौखिक प्रश्न ने मुझे बड़े ही असमंजस में डाल दिया कि "आचार्य जी, हमें समाज के दुर्बल वर्ग के लिये चिन्ता क्यों करनी चाहिये ?" यह छात्र सम्पन्न परिवार का है, पढ़ने में साधारणतः अच्छा है और अपने परिवार में ही रहता है। सहज भाव से ही उसने यह प्रश्न पूछा था जिससे यह स्पष्ट है कि औसत छात्र का आजकल का दृष्टिकोण यही है। वह केवल कैरियरिस्ट (Careerist) है अर्थात् अपने जीवन को अधिक से अधिक सुविधापूर्ण बनाना चाहता है। वह पढ़ता इसी लिये है और अच्छी से अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण होना चाहता है ताकि अच्छी नौकरी मिले, अच्छा सम्मानपूर्ण पद मिले, मासिक आय अच्छी हो, सब प्रकार की सुविधाओं से पूर्ण जीवन हो तथा अपना और अधिक से अधिक अपने परिवार का स्तर ऊँचा हो। उसकी और उसके परिवार वालों की यही महत्वाकांक्षा है।

परन्तु क्या जीवन का चरम लक्ष्य केवल अपने और अपने परिवार के स्तर को ऊपर उठाना अर्थात अधिक से अधिक सुख-सुविधा का जीवन बिताना मात्र है ? क्या इस प्रकार का सोच मात्र पाशविक स्तर का नहीं है ? आलस्य, निद्रा, भय आदि नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ मनुष्य और पशु में समान हैं। केवल धर्म भावना अथवा कर्त्तव्य-बोध ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठतर बनाता है। मनुष्य केवल स्वयं अपने अथवा अपने प्रियजनों के लिये ही नहीं सोचता, वह उस समाज और राष्ट्र के विषय में भी सोचता है जिसके द्वारा उसके व्यक्तित्व की निर्मिति हुई है। यदि तुम इस विद्यालय में रहकर एवं पढ़कर अच्छी शिक्षा पाते हो तो यह इसी लिये तो सम्भव हुआ कि तुम्हारे पिता जी जो शायद डाक्टर हैं अथवा वकील हैं तुम्हारा व्यय-भार वहन करने में समर्थ हैं। परन्तु उनकी आय का स्रोत क्या है ? वह समाज ही तो है। समाज का साधारण व्यक्ति ही तो जो अपने बच्चे के इलाज के लिये या किसी मुकदमें को लड़ने के लिये डाक्टर अथवा वकील की भारी फीस अपना पेट काट कर

देता है तुम्हारे पिता की आय का स्रोत है। इस प्रकार तुम न केवल अपने भरण-पोषण वरन् अपने पूरे विकास-शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक-के लिये अपने समाज तथा उसकी पारम्परिक संस्कृति के ऋणी हो। क्या इस ऋण से मुक्त होना तुम्हारा कर्त्तव्य नहीं है ? जिस समाज अथवा राष्ट्र ने तुम्हें सब-कुछ दिया उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना, उसकी सांस्कृतिक विरासत को और अधिक समृद्ध बनाना तथा उसके उपेक्षित, निर्धन और पीड़ित वर्ग को राहत पहुँचाना क्या तुम्हारा धर्म नहीं है ? इस धर्म का पालन करना ही तुम्हें पशुत्व से ऊपर उठाकर मनुष्यत्व की पदवी प्रदान करेगा। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो तुम्हारी सारी शिक्षा व्यर्थ है।

वही समाज उन्नति करता है, वही राष्ट्र शक्तिशाली, सम्पन्न और गौरवशाली बनता है जिसके नागरिक अपने समाज के प्रति समर्पित भाव से उसकी सेवा में तत्पर रहते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर उसके लिये अपना सब कुछ-यहाँ तक कि प्राण भी बलिदान करने को तत्पर रहते हैं। अन्ततोगत्वा समाज की उन्नति में ही उसके घटकों की उन्नति समाहित है।

और फिर दार्शनिक दृष्टि से हम सभी उस परम पिता की सन्तान ही तो हैं। अतएव परस्पर भाई होने के नाते एक दूसरे के सुख-दुःख में सम्मिलित होना हमारा कर्त्तव्य हो ही जाता है। वेदान्त तो सारी सृष्टि को ही एक ब्रह्म की अभिव्यक्ति मानता है। इसीलिये दूसरे का कष्ट हमारा ही कष्ट है।

चन्द्रपाल सिंह

श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को उन दिनों ५०० रु० मासिक वेतन मिलता था। औसत भारतीय स्तर का निर्वाह ही उनने न्यायोचित समझा और उससे सीमित परिवार का खर्च ५०/- रु० मासिक से चलाया शेष ४५० रु० की बचत को निर्धन छात्रों की आवश्यकताएँ जुटाने में लगाया करते थे। वे हमेशा कहते थे 'अपने लौकिक उत्तरदायित्व घटाकर लोक सेवी को परामर्थ के कार्यों में लगा देना चाहिये।' उन्होंने यह कहा भी और आजीवन निबाहा भी।

× × × × ×

लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित लोक सेवक मण्डल संस्था के संचालक का स्थान लालाजी के स्वर्गवास से खाली हो गया। इस स्थान पर निर्वाह मात्र का वेतन मिलता था। कम पैसे पर योग्य आदमी कौन मिले ? अड़चन के कारण मण्डल का काम रुक गया। उन दिनों श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन पंजाब नेशनल बैंक के प्रान्तीय मैनेजर थे। लम्बा वेतन मिलता था। उनने नौकरी छोड़ दी और मण्डल के संचालन का काम सम्भाल लिया।

गाँधी जी ने इस त्याग से उत्पन्न आर्थिक कठनाई के सम्बन्ध में पूछताछ की तो उनने सीधा सा उत्तर दिया —"जरूरत घटाने पर अर्थ सन्तुलन बिठा लेने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये।"

नीराजन के इस अंक में

संरक्षक
श्री ओमशंकर

सम्पादक
कुमार दिनेश

हिन्दी विभाग

विविध प्रतियोगिता परिणाम वार्षिकोत्सव रिपोर्ताज व वार्षिक आख्या

रचना व रचनाकार	पृष्ठ
अंत विद्यालयीन प्रतियोगिता १९८५-८६	१
संस्कृत ज्ञान परीक्षा १९८५-८६	४
आदर्श पुरुष का जन्मोत्सव	५
वार्षिक आख्या	७
विलासी नहीं अपरिग्रही	१०

आचार्य वर्ग की रचनाएँ

धर्मान्तरण/शतीशचन्द्र गुप्त	११
भारतीय गणतन्त्र अमर रहे/ओमशंकर त्रिपाठी	१४
सर्व धर्म समभाव/विमलेन्द्रकुमार कनौजिया	१५
नागफनी/ओमशंकर त्रिपाठी	१८

आमन्त्रित रचनाएँ व प्रेरक पत्र

उसने कहा था/शिवनारायण लाल वाजपेयी	१९
समय की बाँसुरी पर/उमेश त्रिवेदी	२३
नयी रचना भूमि लेकर आ रहा हूँ/महेशचन्द्र	२४
श्री शंकर जी पाद बोड़स/सम्पादक	२६
शिक्षकों का स्वधर्म/महादेवी वर्मा	२९
प्रेरक पत्र	३१

कविताएँ

मैं और मेरा किशोर/अविनाश कुलवाणी	३५
अभी बहुत चलना है साथी/विवेककुमार सिंह	३६
व्यवधानों की इस आँधी में/अरुण शुक्ल	३८
जल गया भूगोल सारा/पंकज कुमार	३९
लक्ष्य तो अन्जान है/प्रभात अवस्थी	४१

रचना व रचनाकार	पृष्ठ
प्यार ही हमारा हो एक देवता/आशुतोष पाण्डेय	४३
आओ इस देश को सँवार लें/संजय धूपड़	४५
जाड़ा आया–जाड़ा आया/राजेश शुक्ल	४७
हमको प्यार है/आदर्शकुमार श्रीवास्तव	४८
जाड़ा आया/पंकज 'भारती'	४९
बापू के प्रति/दिनेश मिश्र	५०
जाड़े की कविता/सतीश चन्द्र गुप्त	५१
इस धरती से हमको प्यार/अशीष सिंह	५२

संस्मरण, प्रेरक प्रसंग व विचार संकलन

हाजिर जवाब वैज्ञानिक/पुनीत विद्यार्थी	५३
उद्योगवाद : मानव जाति के लिये अभिशाप/विवेक आनन्द	५४
गाँधी जी के चुनौती भरे क्षण/राजीव अग्रवाल	५८
उद्‌बोधन/शुभाशीष गुप्त	६०
एक संस्मरण/अनुराग चतुर्वेदी	६२
स्वामी रामतीर्थ : एक प्रेरक प्रसंग/मनीष पाण्डेय	६३
ऐसे थे गाँधी जी/प्रदीप दीक्षित	६४

हास्य–व्यंग

न हँसो तो जानूँ/नितिन कपूर	६५
एक खुला साक्षातकार/अनुपम मिश्र	६६
एक अच्छा–खराब पत्र/राजेश मौर्य	६९
एक अनार छः सौ पचीस बीमार/ऋषिरूप त्रिपाठी	७०

सामान्य ज्ञान व विज्ञान

संस्मरण/राजीव कुमार	७१
संसार/मुकेश सिंह	७२
वैज्ञानिक पहेलियाँ/अरविन्द कुमार शुक्ल	७३
बुद्धि परीक्षा	७४
अन्तरिक्ष-यात्रा में भारत के बढ़ते कदम/अमित गुप्त	७५
ज्ञान और बिज्ञान/आदित्य सचान	७६
ज्ञान की बातें/आलोक व अविनाश	७७
इन्हें भी जानिये/आशुतोष सचान	७२
मिक ने मारा भोपाल को/गोपाल कृष्ण	७९
बूझो तो जाने/मोहित कुमार	८०
भारत व विश्व में सबसे बड़ी और ऊँची/संतोष भट्ट	८१
किस खाद्य पदार्थ से कितनी ऊर्जा/रजत पाण्डेय	८२

रचना/रचनाकार पृष्ठ
परखनली पौधशाला में बेल वृक्ष/रमेश चन्द्र मिश्र ८३
कुछ यन्त्रों के नाम व कार्य/अजय कुमार ८३
ज्ञान वार्ता/सुमित कक्कड़ ८४

निबन्ध

क्या भारत को एटमबम बनाना चाहिये/संजीव शुक्ला ८५
विद्यार्थी और राजनीति/सूरज अग्रवाल ८७
जी हाँ जब समुद्र के नीचे नगर बनेगा/अरविन्द्र शुक्ल ८८
मुझे गर्व है कि मुझे इस देश में जन्म मिला/अभिषेक ९०
मैं क्या बनूँगा/आनन्द कुमार ९२
जीवाणु हमारे मित्र या शत्रु/प्रणय कुमार ९३
भारत और परमाणु ऊर्जा/राजीव अग्रवाल ९६
शून्य/विश्वजीत कुमार ९८
उन्नति कैसे करें/धर्मेन्द्रप्रताप सिंह ९९
किशोरावस्था में प्रवचन कितना सार्थक/अविनाश अकेला १०१
इस दौड़ में हम कहाँ हैं/संजय अवस्थी १०२
बिद्याध्यन ही सफलता की कुँजी है/नवीन वर्मा १०४
'बरमूडा त्रिकोण' का रहस्योद्घाटन/पंकज गुप्त १०५
पंजाब में अतंकवाद : कुछ दुर्लभ तथ्य/सुनील गुप्त १०७
भारतीय संस्कृति की विशेषतायें/सूरज अग्रवाल १११

यात्रावृत्त व रिपोर्ताज

भारतीय स्वर्ग की यात्रा/विवेक पाण्डेय ११४
हमारे विद्यालय का एकाउन्ट कैम्प–१९८४/पंकज भारती ११६
उत्तराँचल के संस्मरण/सुनील सिंह ११८
दक्षिण भारत की एक झलक/वीरेन्द्रनाथ १२१
हमारी दक्षिण भारत यात्रा/अभिषेक १२८
एक अविस्मरणीय यात्रा/निरंजन गोरे १३४

कहानियाँ व लघु कथाएँ

परिवर्तन/प्रतीक तिवारी १३७
यह कर्तव्य पालन है/त्रिभुवन नाथ पाण्डेय १३९
दर्द/प्रतीक तिवारी १४१
अनुशासित छात्र/सुधीर कुमार १४३
सिसकती मानवता/नवीन वर्मा १४४
३८ वर्ष बाद/राघवेन्द्र सिंह चौहान १४५
कर्त्तव्य पालन की राह/ज्योति कु० गुप्त १४७

तरुण-भारती

चिर तारूण्य/दीपक खन्ना १४९
Computer and Society/Pradeep Shukla १५१
Cancer or Malignency/Praveen Saraswat १५३

छपते छपते

शाबाश राजेन्द्र १५६
समदर्शी १५७
आतंक वादी से १५९
वेद वाणी १६४

Engltsh Section

Some Reminiscences of My Student days/Chandrapal Singh 1
Thoughts for Today/Avinash Kulkarni 2
Why does it happen/Shailesh Gupta 8
Some Simple Puzzles/Aditya Sachan 9
Our Education Sjstem/Saurabh Rai 10
Laser–a new Source of Light/Ashish Tayal 12
The Gandhian Economics/Ashutosh Pandey 18
Science and Religion/Chavli Ramesh 20
Religious Conversion A Threat to our Intergation/Anshul Dixit 22
Gandhian Idiology/Manish 24

संदेश

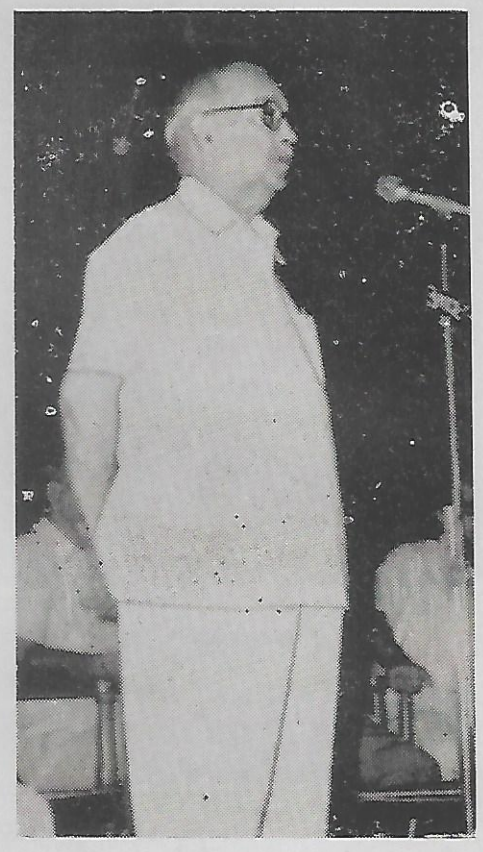

वैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह

सुशीला सदन
१५/१९८-ए सिविल लाइन्स
कानपुर
दिनाँक ३ मार्च १९८६

परमप्रिय बन्धु दिनेश जी,

सप्रेम नमस्कार।

अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'नीराजन' के लिये आपने मुझे अपना संदेश देने के लिये आमन्त्रित किया है। इसके लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।

किसी भी अच्छे विद्यालय की पत्रिका न केवल उसकी गतिविधियों का दर्पण होती है, वरन् उसके सृजनात्मक शक्तियों को प्रोत्साहित कर उन्हें अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा भी देती है।

मैं आशा करता हूँ कि आपके कुशल सम्पादकत्व में 'नीराजन' इस उत्तरदायित्व का वहन तो करेगा ही और उस महापुरुष के, जिनका नाम इस विद्यालय से जुड़ा है, जीवनादर्श को अपनाकर सच्चे अर्थों में भारत माता का 'नीराजन' सिद्ध होगा।

भवदीय
(नरेन्द्र जीत सिंह)

वार्षिकोत्सव व पं० दीनदयाल उपाध्याय जन्मोत्सव समारोह :
मंच पर प्रो० राजेन्द्र सिंह, शिक्षा निदेशक- श्री आत्म प्रकाश, माननीय बैरिस्टर साहब व प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी ।

प्रतिभाएँ
सत्र
८४–८५

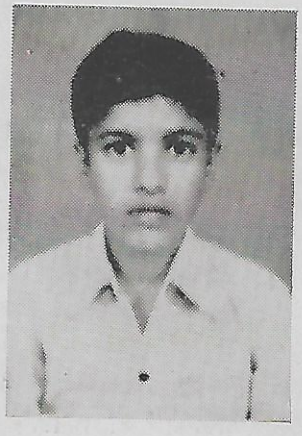

गोविन्दशंकर पान्डेय
३७६/५००
वि० यो०– भौतिक वि०, रसा० वि०, गणित

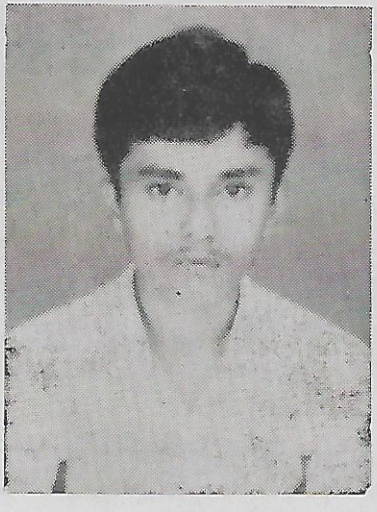

कमलेश कुमार
३७६/५००
वि० यो०– भौतिक वि० व गणित

अन्तः विद्यालयीन प्रतियोगिता परिणाम १९८५-८६

प्रतियोगिता	भरत वर्ग (कक्षा षष्ठ से अष्टम)	एकलव्य वर्ग (कक्षा नवम व दशम)	अभिमन्यु वर्ग (कक्षा एकादश व द्वादश)
कहानी	१. ज्योति कुमार गुप्त ८ 'क' २. शीलेन्द्र कुमार ८ 'ख' ३. त्रिभुवन नाथ पाण्डेय ८ 'क' व सुधीर पुरवाल ७ 'क'	१. प्रतीक तिवारी, ९ 'क' २. अनुराग सक्सेना, १० 'ख' ३. दीपक सक्सेना, ९ 'ख' व भुवन सिंह, ९ 'क'	१. कृष्णधर त्रिपाठी, ११ 'क' २. मनोज कुमार, ११ 'क' व अरुण शुक्ल १२ 'क' ३. अरुण वर्मा, १२ 'क' व सौरभ राय, ११ 'ख'
कविता	१. राजेश शुक्ल ८ 'क' २. आशीष सिंह, पंकज भारती, ८ 'क' ३ सतीशचन्द्र गुप्त ७ 'ख' ४. आदर्श कुमार श्रीवस्तव, ६ 'ख'	१. विजय सराफ, १० 'क' २. सन्तोष कुमार मिश्र, १० 'क' व विश्वजीत सिंह, १० 'क' ३. नीरज कुमार झा ९ 'क' व देवर्षि शुक्ल ९ 'क'	१. विवेक कुमार सिंह, एकादश 'ख' २. अरुण शुक्ल, द्वादश 'क' ३. पंकज सिंह, द्वादश 'क' व आशुतोष पाण्डेय, एकादश 'ख' सांत्वना - शुभेन्द्र सेखर, १२ 'क' प्रभात प्र. ११ 'क' व संजय धूपड़ १२ 'क'
निबन्ध	१. अभिषेक, ८ 'क' २. विवेक आनन्द, ८ 'क' ३. राघवेन्द्र सिंह, ८ 'क' व आनन्द कुमार शर्मा, ७ 'क'	१. नितिन कृष्ण दुबे, ९ 'क' २ शरद श्रीवस्तव, नवम् 'ख' व दिनेश मिश्र, १० 'क' ३. रामेन्द्र त्रिपाठी, ९ 'ख'	१. सूरज अग्रवाल, ११ 'ख' व पुनीत विद्यार्थी ११ 'क' २. आशीष खरे, ११ 'क' व पवन पण्डेय, ११ 'ख' ३. अनिल कुमार वर्मा, १२ 'क' व विजय कुमार सक्सेना, ११ 'ख'

क्रमशः.....

कला	१. नीरज भारती, ७ 'अ' व मनीष कुमार '७' २. पंकज भारती, ८ 'क' व प्रवीण अग्रवाल, ६ 'ख' ३. सुधांशु मालवीय, ८ 'ख' व विनय तिवारी, ८ 'ख'	१. विवेक ओमर, ९ 'ख' २. यश कुमार, १० 'ख' ३. शुभेन्द्र सिंह, ९ 'क'	१. सौरभ राय, ११ 'ख' २. दिनेश कुमार गुप्त, ११ 'क' ३. मनीष कुमार, ११ 'क'
सुलेख	१. सौभाग्य शुक्ल, ६ 'ख' २. प्रवीन गंगवार, ६ 'क' व अभिषेक, ८ 'क' ३. पंकज भारती, ८ 'क' व पुष्पेश सिंह, ६ 'ख'	१. सुनील गुप्त, १० 'ख' २. यश कुमार श्रीवस्तव, १० 'ख' व अमित गुप्त, ९ 'ख' ३. शुभेन्द्र सिंह व नीरज कुमार झा, ९ 'क'	१. आशतोष सक्सेना, ११ 'क' २. सर्वेविक्रम बहादुर सिंह, ११ 'क' ३. विजय कु० सक०, सूरज अग्रवाल, व अश्विनी कु०, विवेक, ११ 'ख' व सुरेन्द्र त्रिपाठी, अनिल कुमार वर्मा, १२ 'क'
स्वतन्त्र लेखन	१. राजीव कुमार, ७ 'ख' २. मनीष पाण्डेय, ६ 'ख'	१. सन्तोष कुमार मिश्र, १० 'क' २. अनुपम मिश्र, १० 'क' ३. रंजन खन्ना, १० 'क'	१. ऋषि रूप त्रिपाठी, ११ 'ख' २. सूरज अग्रवाल, ११ 'ख' ३. निर्दोष कुमार, ११ 'क' व निरंजन गोरे, ११ 'ख' ४. अंशुल दीक्षित ११ 'ख'
यात्रा वृत्त	१. अभिषेक, ८ 'क' व बीरेन्द्र नाथ, ८ 'ख' २. आशीष कुमार सिंह, ८ 'क'		

● गुरु गोविन्द सिंह जयंती के अवसर पर विद्यालय के विशाल कक्ष में 'एकल अभिनय प्रतियोगिता' सम्पन्न हुई परिणाम इस प्रकार रहा—

विनय पाण्डेय	—	अष्टम् 'क' — प्रथम
आलोक तिवारी	—	अष्टम् 'ख' — द्वितीय
	व	
प्रभाकर विसेन	—	दशम 'क' — द्वितीय
आशीष सिंह	—	अष्टम 'क' — तृतीय

● ९ दिसम्बर ८५ को कक्षानुशासन व वेश प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे—

पूर्व माध्यमिक (भरत वर्ग)

सप्तम	'क'	— प्रथम
अष्टम	'क'	— द्वितीय
अष्टम	'ख'	— तृतीत

माध्यमिक वर्ग (एकलव्य वर्ग)

दशम	'क'	— प्रथम
नवम	'क'	— द्वितीय
दशम व नवम	'ख'	— तृतीय

उत्तर माध्यमिक वर्ग (अभिमन्यु वर्ग)

एकादश	'क'	—	प्रथम
एकादश	'ख' व द्वादश 'ख'	—	द्वितीय
द्वादश	'क'	—	तृतीय

ईसोपदेश

धनी नीकुदेमुसन ने पूछा— ईश्वर के दर्शन कब होते हैं ? ईसा ने कहा— नया जन्म होने पर। जब शरीर से ऊँचा उठकर मनुष्य आत्मा के लोक में प्रवेश करता है, तो भगवान के दर्शन पाता है।

शिष्यों ने ईसा की नीति पूछी— उसने कहा— सच कहने में डरना नहीं। मौत से अकारण उलझना नहीं और मरने का दिन आ खड़ा हो तो डरना नहीं। हमें विवेक और वीरता का समन्वय करना चाहिये।

संस्कृति ज्ञान परीक्षा-परिणाम १९८५-८६

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

विद्या भारती द्वारा अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का संचालन इस उद्देश्य से किया जाता है कि छात्र अपनी सांस्कृतिक परम्परा, महान् पूर्वजों एवं अमूल्य राष्ट्रीय थाती से परिचित हो सकें। इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह विद्यालय समय-समय पर ऐसी विविध परीक्षायें आयोजित करता है।

सत्र १९८५-८६ में सम्पन्न हुई संस्कृति-ज्ञान परीक्षा में कक्षाशः जिन छात्रों ने प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया है, उनकी नामावली इस आशय से प्रकाशित की जा रही है कि वे संस्कृति-ज्ञान के प्रेरणा स्रोत बनेंगे। स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों के नाम निम्नांङ्कित हैं :—

	छात्र का नाम	कक्षा	स्थान
१.	चि० अनुराग गुप्त	षष्ठ 'क'	प्रथम
२.	,, गौरव गुप्त	,, ,,	द्वितीय
३.	,, राजेश वर्मा	सप्तम 'क'	प्रथम
४.	,, अनुराग गुप्त	,, ,,	द्वितीय
५.	,, आशीष तिवारी	,, ,,	,,
६.	,, शरद सिन्हा	,, ,,	,,
७.	,, अभिषेक	अष्टम 'क'	प्रथम
८.	,, आशुतोष सिंह	,, ,,	द्वितीय
९.	,, शीलेन्द्र कुमार	अष्टम 'ख'	,,
१०.	,, अंशुल गुहा	नवम 'क'	प्रथम
११.	,, आलोक अवस्थी	,, ,,	द्वितीय
१२.	,, जितेन्द्र गुप्त	,, ,,	,,
१३.	,, विजय कुमार सराफ	दशम 'क'	प्रथम
१४.	,, ब्रजेश बाजपेयी	,, ,,	द्वितीय
१५.	,, कृष्ण मुरारी	एकादश 'ख'	प्रथम
१६.	,, विनय श्रीवास्तव	,, ,,	,,
१७.	,, शैलेन्द्र सिंह सेंगर	,, ,,	,,
१८.	,, विवेक कुमार सिंह	,, ,,	,,
१९.	,, सौरभ राय	,, ,,	द्वितीय
२०.	,, सिद्धार्थ शुक्ल	द्वादश 'क'	प्रथम
२१.	,, अनुराग मिश्र	,, ,,	द्वितीय

पं० दीनदयाल जन्मोत्सव व विद्यालय–वार्षिकोत्सव पर एक रिपोर्ताज

आदर्श पुरुष का जन्मोत्सव

सम्पादक

युग द्रष्टा पं० दीनदयाल उपाध्याय की पुण्य स्मृति में माननीया स्व० सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह उपाध्या बूजी द्वारा स्थापित पं० दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर का पन्द्रहवाँ वार्षिकोत्सव उनके जन्मदिवस २५ सितम्बर ८५ को विद्यालय परिसर में विभिन्न सांस्कृतिक व साहित्यिक आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ। इस पुनीत अवसर पर सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रो० राजेन्द्र सिंह व प्रदेश के शिक्षा–निदेशक माननीय श्री आत्म प्रकाश ने अपनी उपस्थिति से विद्यालय परिवार को उत्साहित किया।

पं० दीनदयाल जन्मोत्सव समारोह २५ सितम्बर ८५ को प्रो० राजेन्द्र सिंह जी के विज्ञान प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ प्रारम्भ होकर २८ सितम्बर ८५ तक-पूर्व छात्र सम्मेलन, वाद विवाद प्रतियोगिता व कवि गोष्ठी के विभिन्न आयोजनों के साथ अविकल चलता रहा। २५ सितम्बर - प्रातः १० बजे विद्यालय के विभिन्न आयु वर्ग के छात्रों द्वारा तैयार किये विज्ञान-माडलों की आकर्षक प्रदर्शनी को प्रो० राजेन्द्र सिंह ने उद्घाटित किया। प्रदर्शनी के निर्णायकों में सर्वश्री जी० के० वाशिष्ठ-रीडर-सिविल इंजीनियरिंग विभाग, एच० बी० टी० आई, कानपुर, डॉ० कामेश्वर राव–विभागाध्यक्ष–सिविल इंजीनियरिंग विभाग-एच० बी० टी० आई, कानपुर व डा० आर० एन० कपूर-प्रो० वी० एस० एस० डी० कालेज, कानपुर ने तीन सर्व श्रेष्ठ माडलों को पुरस्कार हेतु चुना। इसी दिन प्रातः ११ बजे तक पूर्व छात्र सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसके मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए प्रो० राजेन्द्र सिंह जी ने पूर्व छात्रों को देश व समाज सेवा के लिए अपने को समर्पित कर देने का आह्वान किया। पूर्व छात्र सम्मेलन में पूर्व छात्रों की संस्था 'तरुण भारती' का भी गठन किया, गया, जिसकी सांगठनिक कल्पना व भावी कार्यक्रमों के स्वरुप व उनकी दिशा की योजना विद्यालय के निवर्तमान प्राचार्य डा० चन्द्रपाल सिंह जी व वर्तमान प्राचार्य श्री ओमशंकर ने की थी। 'तरुण भारती' की कल्पना व उसके स्वरुप को स्पष्ट करते हुए प्राचार्य श्री ओमशंकर ने कहा कि–'तरुण भारती' इस विद्यालय के पूर्व छात्रों की एक ऐसी संस्था के रूप में विकसित होनी चाहिए जो देश को योग्य व प्रतिभावान समाजसेवी युवक दे सके"। उलेखनीय है कि पूर्व छात्रों ने सर्वसम्मति से अपने कामों की जिम्मेदारी स्वीकारते हुए विभिन्न सामाजिक कार्यों की एक योजना बना ली है। भविष्य में वे इसे क्रियान्वित करेंगे।

इसी दिन सायं ७ बजे नगर के गणमान्य व्यक्तियों, अभिभावकों व विद्यालय परिवार की संयुक्त सभा आयोजित हुई जिसका सभारम्भ विद्यालय के बाल वर्ग के छात्रों के सहगान 'यह देश हमारा है, हमको अति प्यारा है। इस धरती को हमने, माँ कह के पुकारा है' भावगीत से हुआ। कार्यक्रम की श्रृंखला में

विद्यालय के मेधावी छात्रों को प्रदेश के शिक्षा निदेशक डॉ० आत्म प्रकाश ने पुरस्कृत किया तथा प्राचार्य श्री ओमशंकर ने विद्यालय के वर्तमान सत्र की वार्षिक आख्या प्रस्तुत करते हुए उसकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह जी ने सबका स्वागत करते हुए प्रो० राजेन्द्र सिंह जी को सबकी ओर से प० दीन दयाल जी के अविस्मरणीय संस्करण सुनाते हुए वक्तव्य देने का अनुरोध किया। प्रो० राजेन्द्र सिंह ने अपनी प्रवाहपूर्ण सहज व स्वाभाविक शैली में पं० दीनदयाल जी के अनेकों मार्मिक संस्मरणों के साथ उनका पुण्य स्मरण किया और देश की वर्तमान परिस्थितियों में उनके जैसे प्रतिभाशाली, विद्वान व कर्मठ समाज सेवी नेताओं की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस विद्यालय के छात्र अपने आदर्श पुरुष पं० दीनदयाल जी की तरह ही अपने को राष्ट्र व समाज की सेवा में समर्पित करेंगे। उक्त अवसर पर सभा की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश के शिक्षा निदेशक डा० आत्म प्रकाश ने देश की शिक्षा व्यवस्था की विभिन्न समस्याओं की चर्चा करते हुए कहा कि–"यह हमारे लिए खेद की बात है कि आजादी के ३८ वर्षों बाद भी देश में प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य पूरा नहीं हुआ है। वर्तमान समय में कम से कम साढ़े चार हजार प्राथमिक विद्यालयों की कमी केवल इस प्रदेश में अनुभव की जा रही है। ७२ हजार विद्यालयों में १८ हजार के पास भवन नहीं है। इन विद्यालयों में ४५% ऐसे हैं जिनके पास श्यामपट तक का अभाव है।

२७ सितम्बर को प्रातः १० बजे वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन प्रारम्भ हुआ। प्रतियोगिता का विषय था "राष्ट्र के सर्वांङ्गीण विकास हेतु शिक्षा में हिन्दी माध्यम ही सर्वश्रेष्ठ हैं।" प्रतियोगिता में २२ स्थानीय विद्यालयों के ४४ प्रतियोगियों ने विषय के पक्ष व विपक्ष में अपने सशक्त व तर्कयुक्त विचार प्रस्तुत किए। वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान करने वाले प्रतियोगी छात्रों को व्यक्तिगत पुरस्कार के अतिरिक्त छात्र वर्ग में स्थानीय 'आर० के० मिशन हा० से० स्कूल, कानपुर व छात्रा वर्ग से 'कानपुर विद्या मन्दिर, स्वरुप नगर कानपुर को चल वैजयन्तियाँ भी प्रदान की गई।

समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शृंखला की अन्तिम कड़ी के रुप में २८ सितम्बर को रात्रि ८ बजे से कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आये कवियों–सर्व श्री लाखनसिंह भदौरिया, 'सौमित्र'; छैलबिहारी बाजपेई 'बाण; रघु जी–प्रेम नारायण श्री० डा० प्रतीक मिश्र, आत्म प्रकाश शुक्ल, सुमन दुबे, शिव बहादुर सिंह, कुँवर व सुरेश मिश्र प्रगति कवियों ने अपनी सरस रचनाओं से श्रोताओं को प्रातः ३ बजे तक रस विभोर कर दिया। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि समस्त कविगण स्वेच्छा से बिना पारिश्रमिक स्वीकार करते हुए आये थे। विद्यालय के प्राचार्य श्री ओम शंकर जी ने 'कवि सम्मेलन, के उद्घाटन के पूर्व स्पष्ट किया कि–वह इस कवि सम्मेलन को एक राष्ट्रीय 'कवि मंच' के रूप में स्थापित व विकसित करना चाहते हैं जिस मंच पर कवि आर्थिक लाभ का विचार छोड़कर देश की जन समस्याओं को अपनी कविता का विषय बनाकर जन मानस को साहित्यिक चेतना से जोड़ने का प्रयास करेंगे और अपनी सर्जना व मनीषा को युगीन बनाएंगे।

पं० दीनदयाल विद्यालय, कानपुर विकास यात्रा के कई चरणों को पार करता हुआ अपने निश्चित गंतव्य तक पहुँचने की उत्कट इच्छा के साथ आगे बढ़ रहा है। समाज का हर रचनात्मक सहयोग उसकी इस विकास यात्रा में सहायक होगा। समस्त विद्यालय परिवार 'सहयोग' की इसी भावना व विश्वास के सहारे साधनारत है।

———

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर ।

– वार्षिक आख्या –

परिचय :

आज से पन्द्रह वर्ष इस पूर्व विद्यालय की स्थापना 18 जुलाई 1970 को स्वर्गीय पं० दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में इस उद्देश्य से की गई थी कि श्रेष्ठ भारतीय संस्कार देकर बालक को राष्ट्र का योग्य नागरिक बनाया जाय। यह विद्यालय उन पब्लिक स्कूलों की कमी को पूरा करने का प्रयास है, जहाँ पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी होने के साथ-साथ अंग्रेजी शिष्टाचार एवं रहन-सहन के अनुकरण पर बल दिया जाता है। परिणाम स्वरूप हमारा किशोर मानस अपनी संस्कृति से दूर होकर अपनों के बीच में रहते हुए भी पराया हो जाता है। परिणामतः उससे की गई समाज की अपेक्षा प्रश्न चिन्ह बनकर ही रह जाती है।

भवन :

जिस भूमि पर विद्यालय स्थित है वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। भवन-निर्माण का पूर्ण श्रेय स्वर्गीया सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह को है, जिनको हम लोग स्नेहवश बूजी कहा करते थे, उन्होंने इसके निर्माण का पूरा व्यय वहन करके अपनी देख-रेख में ही इसको बनवाकर अपने अप्रतिम विद्या-प्रेम के साथ-साथ अगाध देश-प्रेम का भी परिचय दिया है। वस्तुतः उसके प्रति श्रद्धाभिव्यक्त करना उनके किसी भी सुपरिचित व्यक्ति हेतु शब्दातीत है। आवश्यकतानुसार विद्यालय भवन का और भी विकास हो रहा है। इण्टर कक्षाओं हेतु एक एक स्वतन्त्र-भवन ही बन कर तैयार हो चुका है। इसकी लागत लगभग 5, 97, 938 रुपये आई है। इस निर्माण व्यय में कर्मचारियों के चार आवास भी शामिल हैं। इस कार्य हेतु लगभग 1,25,000 रुपये दान में भी प्राप्त हुए। भविष्य में आचार्यों हेतु आवास एवं स्वतन्त्र छात्रावास बन सके इस दिशा में हम विचार कर रहे हैं।

शिक्षण :

यह विद्यालय कक्षा षष्ठ से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ आज पूर्ण विकसित वैज्ञानिक वर्ग में मान्यता प्राप्त विशेष कोटि का इण्टरमीडियट विद्यालय बन चुका है। प्रत्येक कक्षा में दो अनुभाग हैं और विद्यालय के 14 अनुभागों में छात्रों की संख्या 645 है। इस विद्यालय को शासन के द्वारा विशिष्ट विद्यालय के

रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गई थी जिसमें छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है।

शिक्षा-विभाग द्वारा निर्धारित विषयों के अतिरिक्त छात्रों को उनकी अभिरुचि के अनुरूप चित्र-कला, वक्तृत्व, अभिनय आदि से भी परिचित कराया जाता है। पाठ्य विषयों का स्तर ऊँचा रखने हेतु अष्टम कक्षा तक केन्द्रीय विद्यालय के समान राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान परिषद (एन० सी० ई० आर० टी०) द्वारा तैयार की हुई पाठ्य पुस्तकों को विद्यालय के पाठ्यक्रम में रखा गया है।

अनुशासन की दृष्टि से निर्धारित वेश में ही विद्यालय आना पड़ता है जिसमें ऋतु के साथ-साथ परिवर्तन भी होता है।

आचार्य :

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित इस समय 22 है। कलाध्यापक को छोड़कर शेष सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

परीक्षा-परिणाम :

सन् 1975 से लेकर वर्तमान सत्र तक परीक्षा परिणाम प्राय 100% या इसके लगभग ही रहता है। वर्तमान सत्र का परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा –

इण्टर में 77 विद्यार्थी बैठे जिसमें 58 प्रथम श्रेणी में तथा 18 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। एक छात्र अनुत्तीर्ण हुआ। इनमें से 12 छात्र ससम्मान उत्तीर्ण हुए। इस सत्र में चि० शैलेश गुप्ता को प्रान्त में 7वाँ तथा चि० दिनेश दीक्षित को 9वाँ स्थान प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार हाई स्कूल का परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा —कुल 82 छात्र बैठे जिसमें 61 छात्र प्रथम श्रेणी में, 19 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। 9 छात्र ससम्मान उत्तीर्ण हुए।

इस वर्ष इस विद्यालय के 7 छात्र विभिन्न अभियान्त्रिकी विद्यालयों तथा 3 विद्यार्थी चिकित्सकीय विद्यालयों में चुने गये हैं।

बोर्ड के अतिरिक्त शिक्षा विभाग द्वारा संचालित एकीकृत छात्रवृत्ति परीक्षा जिसमें 8वीं कक्षा के छात्र बैठते हैं, सफलता प्राप्त करते आ रहे हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा संचालित मानस प्रवेश, मानस-किशोर, मानस-प्रवीण व अन्य स्थानों पर होने वाली वाद-विवाद, भाषण प्रतियोगिताओं आदि में हमारे छात्र उत्कृष्ट स्थान पाकर पुरस्कृत होते रहते हैं।

छात्रवृत्तियाँ :

शासन द्वारा अपनी योग्यतानुसार, छात्रवृत्ति पाने वाले भिन्न-भिन्न स्तर के लगभग 210 छात्रों के अतिरिक्त कई दानशील महानुभावों एवं दाताव्यन्यासों (चेरिटेबिल ट्रस्टों) द्वारा भी 15 विद्यार्थी छात्रवृत्ति से लाभान्वित हो रहे हैं। इनमें जयनारायण चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री हरि भार्गव ट्रस्ट, श्री सोमनाथ चोपड़ा व यूनिवर्सल सब्सक्रिप्शन एजेन्सी के मालिक श्री चावला जी के नाम विशेष उलेखनीय हैं।

शारीरिक शिक्षा :

मानसिक विकास के साथ-साथ हमारे विद्यालय में शारीरिक कार्यक्रमों की भी विशेष योजना है। सामूहिकता की भावना हेतु योग, आसन व समता पर हम विशेष ध्यान देते हैं। साथ ही जनपद स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता में विगत 10 वर्षों से हम विजेता का पद प्राप्त करते आ रहे हैं। गत दो वर्षों से हमारे छात्रों ने कबड्डी में प्रवेश किया है, और दोनों वर्ष जनपदीय विजेता रहे। इन सभी खिलाड़ी छात्रों का शैक्षिक स्तर भी उच्चकोटि का है।

पुस्तकालय :

विद्यालय का पुस्तकालय विकासशील है। इसमें लगभग 35000/— रु० मूल्य की 6000 पुस्तकें हैं। विद्यालय के वाचनालय में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक मासिक पत्र, पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान की बातें नियमित रूप से श्यामपट पर लिख दी जाती हैं।

पाठ्यक्रमेतर-गतिविधियाँ :

पाठ्येतर क्रिया कलाप भी शिक्षा का महत्वपूर्ण अंश है। अतः बच्चों में उत्तरदायित्व एवं प्रजातांत्रिक भावना के विकास के लिए स्वशासित दो संस्थायें —बाल भारती (कक्षा 8 तक के लिये) किशोर भारती (कक्षा नवम से द्वादश तक) तरुण भारती पूर्व छात्र के लिए भी गठित की गई हैं जिनकी भावी रूपरेखा एवं कार्यक्रमों पर विचार चल रहा है। आज के कार्यक्रम में हमारी तरुण भारती के सदस्यों का सहयोग हमारा आनन्द वर्धन कर रहा है। उनके तत्वावधान में समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम जैसे वाद-विवाद, निबन्ध तथा आशु भाषण आदि की प्रतियोगिता, समाचार समीक्षा, साहित्यिक प्रतिभा के विकास में सहायक होती है।

प्रायः प्रतिवर्ष ही हमारे बच्चे विजयदशमी के अवकाश में देश दर्शन करते हैं, जिससे न केवल उन्हें देश के उस भाग की कुछ व्यवहारिक जानकारी होती है वरन उसके सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है। इस वर्ष हमारे छात्र दो दिशाओं में देश-दर्शन हेतु गये। बाल वर्ग कन्या कुमारी की ओर एवं किशोर वर्ग कुल्लू की ओर।

छात्रावास :

विद्यालय के ऊपरी खण्ड में छात्रावास है। इसकी व्यवस्था एक मुख्य अधीक्षक एवं एक सहायक, अधीक्षक करते हैं। इस समय छात्रावासी छात्रों की संख्या 119 है। छात्रावास अधीक्षक छात्रावास में रहकर अनुशासना स्वास्थ्य, भोजन, पढ़ाई आदि की देख-रेख करते हैं। आवासीय बच्चों में स्थानीय 10 शेष बिहार तथा उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के है। पाठ्य विषयों के अतिरिक्त समय-सारणी में प्रति दिन नैतिक शिक्षा या सदाचार के प्रावधान हैं। वन्दना के पश्चात अध्ययन प्रारम्भ होने से पूर्व कक्षाचार्य अथवा निर्धारित आचार्य नियमित रूप से शिष्टाचार, नैतिक गुण या महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग बताते हैं। साथ ही रामायण, गीता के निर्धारित अंश कण्ठस्थ कराये जाते हैं। नैतिक शिक्षा की परीक्षा भी होती है। मंगलवार को रामचरित पर प्रवचन होता है।

इस प्रकार हम छात्र को आदर्श नागरिक बनाने एवं समाजोन्मुखी जीवन यापन करने की प्रेरणा देने का प्रयास कर रहे हैं। ईश्वर से अनुग्रह एवं आपसे सद्भाव बनाये रखने की कामना है।

———

विलासी नहीं अपरिग्रही

राज जनक महल की छत पर सोये हुए थे। हँस-हँसिनी अटारी की मुंडेर पर बैठे वार्तालाप करने लगे। हँसिनी बोली— इन दिनों सबसे बड़े ब्रह्मज्ञानी राजाजनक हैं। हंस ने बात काटकर कहा— तुम रैक्य को जानती नहीं। अपने समय के वे सबसे बड़े ब्रह्मवेत्ता हैं। हँसिनी ने पूछा— भला कौन है– रैक्य ? हँस ने उत्तर दिया— अरे, वही गाड़ीवाला रैक्य, जो गाड़ी खींचकर बोझा ढोता व आयाचित वृत्ति से निर्वाह करता है।

जनक अधजगे थे। वे पक्षियों की भाषा जानते थे सो करवट बदलकर हँस-हँसिनी की वार्ता ध्यान पूर्वक सुनने के निमित्त करवट बदलने लगे। आहट पाकर युग्म चौकन्ना हुआ और उड़ गया। बात अधूरी रह गई।

राजा को नींद नहीं आयी। रैक्य कौन है ? कहाँ रहते हैं ? उनसे सम्पर्क कैसे सधे ? यह विचार उन्हें बेचैन किये हुए थे। सबेरा होते ही दरबार लगा। राजा ने सभासदों से गाड़ी वाले रैक्य को ढूँढ निकालने का आदेश दिया। दौड़-धूप तेजी से होने लगी।

कठिनाई से बहुत दौड़-धूप के बाद रैक्य का पता चला। राजदूतों ने उनसे जनक नगरी चलने का अनुरोध किया। जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया मुझे राजा से क्या लेना-देना अपना प्रस्तुत कर्तव्य पूरा करूँ या इधर-उधर भागता फिरूँ।

दूतों ने सारा विवरण कह सुनाया। जनक स्वयं ही चल पड़े और वहाँ पहुँचे जहाँ गाड़ी खींच धकेलकर निर्वाह चलाते और साधना-सेवा का समन्वित क्रम चलाते थे।

राजा ने इतने बड़े महाज्ञानी को ऐसा कष्ट साध्य जीवनयापन करते देखा तो द्रवित हो उठे। सुविधा साधनों के लिए उन्होंने धनराशि प्रस्तुत की।

अस्वीकार करते हुए रैक्य ने कहा— राजन, यह दरिद्रता नहीं, ब्रह्मवेत्ता का अपरिग्रह है। जिसे गंवा बैठने पर तो मेरे हाथ से ब्रह्मतेज भी चला जायगा।

तत्वज्ञान के उस मर्म रहस्यों को सत्संग से जानने के उपरान्त जनक यह विचार लेकर वापिस लौटे कि विलासी नहीं अपरिग्रही ही सच्चा ब्रह्मज्ञानी हो सकता है। उन्हें नयी दिशा मिली। उस दिन से उन्होंने अपने हाथों कृषि करने, हल चलाने की नयी योजना बनायी और श्रम उपार्जन के सहारे निर्वाह करते हुए राज-काज चलाने लगे।

———

धर्मान्तरण

सतीश चन्द्र गुप्त
आचार्य— सामाजिक विज्ञान

आज हर धर्म के पंडित व मुल्लों की एक विशिष्ट कठमुल्ली प्रजाति ने मानव समाज को अपने वर्गीय स्वार्थों के पोषण हेतु प्रदूषित कर दिया है। इसी प्रजाति ने पहले मनुष्य में 'मनुष्य' नहीं हिन्दू, मुसलमान और ईसाई देखना शुरू किया और धीरे-धीरे उसे धार्मिक से 'साम्प्रदायिक' बनाया। धर्मान्तरण इसी प्रजाति के घिनौने कामों का परिणाम है— जिसमें समाज के दलित शोषित व पीड़ित वर्ग की झूठी सेवा व अन्य आकर्षण दिखाकर उसकी अशिक्षा, लाचारी व भूख को भुना लिया जाता है। धर्मान्तरण के इन तमाम सामाजिक-आर्थिक कारणों को अपनी दृष्टि से विश्लेषित कर रहे हैं— श्री सतीश जी। [सं०]

यदि हम अतीत के इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि डालें, तो प्रतीत होता है कि— धर्मान्तरण की प्रक्रिया किसी न किसी रूप में हमारे समाज में व्याप्त रही है। मध्यकाल में मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा तलवार की नोंक पर भय और आतंक का वातावरण उत्पन्न करके धर्मान्तरण किया गया। मुगल बादशाह औरंगजेब (१६५८–१७०७ ई०) ने अनेक हिन्दुओं के मन्दिरों जैसे– बनारस का सोमनाथ मन्दिर, मथुरा का केशव मन्दिर नष्ट करके उनके स्थान पर मस्जिदों का निर्माण कराया। उसने न केवल हिन्दुओं को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए उच्च पदों पर नियुक्ति, विभिन्न प्रकार की सुविधायें, पुरस्कार जैसे अनेक प्रकार के प्रलोभन दिये, अपितु बलात् अनेक हिन्दुओं को इस्लाम धर्म कबूल करने के लिये मजबूर किया। उसने मथुरा के गोकुल जाट के सम्पूर्ण परिवार को बलपूर्वक मुसलमान बना लिया था। उस समय औरंगजेब की हिन्दू-विरोधी धार्मिक नीति का जाटों, सतनामियों, बुन्देलों, राजपूतों, मराठों और सिक्खों ने प्रबल विरोध किया। अनेक अनेक बहादुर बच्चों ने हिन्दु धर्म के रक्षार्थ धर्मान्तरण का प्रतिकार करते हुये अपने प्राणों का बलिदान कर दिया उनमें अजीत सिंह, जुझार सिंह, फतेह सिंह, जोरावर सिंह, वीर हकीकतराय के नाम उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक युग में ईसाई पादरियों ने धन व पद का लोभ देकर शिक्षा के माध्यम से अशिक्षित जनता का धर्मान्तरण किया। नागालैण्ड, केरल, मध्य प्रदेश और तमिलनाडु आज धर्मान्तरण की विषम समस्या से आक्रान्त हैं। तामिलनाडु में मीनाक्षीपुरम् तथा रामनाथपुरम् के लगभग १५०० हरिजन हिन्दू धर्म परिवर्तन कर

चुके हैं। इसके अतिरिक्त अन्य लाखों उपेक्षित भाई-बहनों को भी धर्मान्तरित करने का षड़यन्त्र हमारे प्रबुद्ध धर्माचार्यों और सैकड़ों उत्साही हिन्दू कार्यकर्ताओं ने सब प्रकार से प्रबंध करके विफल कर दिया। धर्मान्तरण की इस प्रक्रिया को सम्पूर्ण देश में व्याप्त करने का प्रयत्न चल रहा है। सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण विचारणीय विषय है। इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा कि– हिन्दू धर्म के अभिन्न अंग ये हरिजन बन्धु धर्मान्तरण क्यों कर रहे हैं ?

आधुनिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में चिन्तन करने से विदित होता है कि —आज का धर्मान्तरण हमारी कुरीतियों का परिणाम है। हमारी संकुचित भावनाओं का दुष्परिणाम है। हिन्दू समाज के उच्च तथा सम्पन्न वर्ग के व्यक्ति ही इसके लिए उत्तरदायी हैं। इधर अन्य धर्मावलम्बी तो समय का लाभ उठाते ही है, उधर सम्पन्न एवं उच्च वर्ग के लोग जिनके यहाँ ये बधुआ मजदूरों के रूप में कार्य करते थे उनके द्वारा इन मजदूरों का आर्थिक शोषण एवं शरीरिक उत्पीड़न प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है। वे अपनी अस्मिता बचाने में सक्षम नहीं हैं। वर्ष भर कठिन परिश्रम के बाद पेट पालने में असमर्थ हैं। कुओं से पानी भरना, बसों में बगल की सीट पर बैठना, सामाजिक सम्मान प्राप्त करना आदि से वंचित थे। तथाकथित उच्च वर्गीय व्यक्ति उन्हें धर्मान्तरण के लिए बाध्य कर रहे हैं। एक ओर हमारे द्वारा उपेक्षित वर्ग को धन एवं पद का प्रलोभन, सुरक्षा, बराबर का सम्मान, अपार स्नेह अन्य धर्मावलम्बियों द्वारा प्राप्त हो रहा है। वहीं दूसरी ओर हमारे ही समाज द्वारा उन्हें उत्पीड़ित किया जाता है, घृणा की दृष्टि से देखा जाता है, और उनके साथ उपेक्षा पूर्ण व्यवहार किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में यदि यह वर्ग धर्मान्तरण के जाल में फँसता जा रहा है— तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

आजादी के अड़तीस वर्षों बाद हमारी क्या उप ल है ? यही कि हम अपने समाज के एक प्रमुख अंग को खोते जा रहे हैं। धर्म जीवन-यापन का एक मार्ग है। हम उन्हें भटका हुआ कह सकते हैं, परन्तु वे किसी सुगम मार्ग की खोज में हैं। यदि धर्मान्तरण केवल जीवन यापन के मार्ग तक सीमित हो, तो धर्म निरपेक्ष राज्य में अनपेक्षित नहीं है। किन्तु धर्मान्तरण के बाद अगला चरण राष्ट्रान्तरण का होता है। हमारे राष्ट्र का प्राचीन धर्म हिन्दू है "हिन्दू" शब्द की व्यापक राष्ट्रीय संकल्पना को स्पष्ट करते हुये महापुरुषों ने कहा कि "वे सब लोग हिन्दू हैं, जो हमारे राष्ट्रीय शूरवीरों का सम्मान करते हैं और हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं का पालन करते हैं। धर्मान्तरण के बाद व्यक्ति में उपरोक्त गुणों का अभाव हो जाता है। व्यक्ति की विचार धारा संकीर्ण हो जाती है। उसमें अपने ही धर्म, संस्कृति, परम्परायें और महापुरुषों के प्रति श्रद्धा जागृति होती है, जो आगे चलकर राष्ट्र की एकता के लिए घातक सिद्ध होती है।

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है, जिसमें सभी धर्मों के अनुयाइयों को अपने धर्म के पालन एवं उपासना पद्धति की पूर्ण स्वतन्त्रता है। राज्य की दृष्टि में सभी धर्म समान हैं। राज्य धर्म के नाम पर किये जाने वाले अनैतिक और राष्ट्र विरोधी कार्यों पर रोक लगा सकता है। परन्तु धर्म-निरपेक्षता से तात्पर्य यह नहीं है कि किसी भी धर्म के अनुयाइयों द्वारा दूसरे धर्म के लोगों को प्रलोभन देकर उन्हें धर्मान्तरण के लिये प्रेरित किया जाय। धर्मान्तरण और सर्व धर्म समभाव परस्पर विरोधी हैं। धर्मान्तरण करने वाले अपने धर्म को अन्य धर्मों से श्रेष्ठ समझते हैं और इसीलिए दूसरों का धर्म बदलना अपना अधिकार समझते हैं, क्या ये लोग दूसरों का यह अधिकार छीन नहीं लेते हैं कि वे बिना किसी बिघ्न बाधा के अपने मनचाहे धर्म का पालन कर सके ? वे सर्वधर्म समभाव की उस भावना का हनन करते हैं, जो सभी धर्मावलंबियों को स्वधर्म पालन का समान

अधिकार और स्वतन्त्रता प्रदान करती है। अतः सरकार का कर्तव्य है कि इस प्रकार के राष्ट्र विरोधी कार्यों पर रोक लगायें। परन्तु अत्यन्त खेद का विषय है कि हरिजनों के प्रति विशेष सहिष्णुता प्रकट करने वाली हमारी सरकार भी हाथों पर हाथ रखे बैठी है, कानों में तेल डाले सो रही है। विदेशी संस्थायें धर्मान्तरण के लिए अरबों रुपया खर्च कर रहीं हैं। सरकार उन पर रोक नहीं लगा पा रही है। भारत सरकार द्वारा कैथोलिक ईसाइयो के धर्म गुरु "पोप जॉन पाल" को राजकीय अतिथि के रूप में भारत बुलाया जाना भारत की गुलाम मानसिकता को दर्शाता है। इस प्रकार सरकार को केवल चन्द वोटों की राजनीति के कारण धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की मर्यादा का हनन नहीं करना चाहिये। सरकार द्वारा इस प्रकार की शक्तियों को प्रश्रय नहीं देना चाहिये जिससे राष्ट्र की एकता व अखण्डता को कोई खतरा हो सके।

सरकार किसी भी दल की हो वह अपने ढंग से कार्य करती है। अतः समाज को अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग होना चाहिये। इस धर्मान्तरण के पीछे भीषण षड़यन्त्र चल रहा है, समय रहते यदि हम जागरुक न हुये तो समस्या का हल सम्भव नहीं होगा। अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारकर यह समाज नहीं चल सकता है। आइये हम इस पाप का प्रक्षालन उन्हें गले लगाकर करें, उन्हें अभय दान देकर करें, उन्हें उनका सम्मान लौटाकर करें। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने "शुद्धि आन्दोलन" के माध्यम से धर्मान्तरण को रोकने का ही मात्र प्रयास नहीं किया, अपितु अन्य धर्मों को स्वीकार किये हुए हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में आने के लिये प्रेरित किया। उसी प्रकार पूज्य बापू जी ने साबरमती आश्रम में रहकर अपने जीवन के अनेकों वर्ष शोषित, पीड़ित, दलित वर्ग की सेवा करते हुए धर्म परिवर्तन को रोकने का भरसक प्रयास किया।

इस प्रकार आज के प्रगतिवादी युग में यदि हम उन्हें नहीं अपनायेंगे तो कोई दूसरा अपना बना लेगा। और तब वे देश तथा समाज दोनों के लिये घातक सिद्ध होंगे, इस प्रकार हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम अपने इस वर्ग को जो पुरातन काल से उपेक्षित है, उसे सम्मान एवं सुरक्षा प्रदान करें, जिससे समाज व राष्ट्र को विघटनकारी तत्वों से बचाया जा सके।

कोई क्षण-भर के लिए यह डर न रखें कि दूसरे धर्मों के आदरपूर्ण अध्ययन से स्वयं अपने धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा कमजोर हो जाएगी।

× × × ×

मैं सभी धर्मों का स्वागत करता हूँ। मेरी सभी धर्मों में श्रद्धा है। परन्तु मुझे स्वयं अपना धर्म छोड़ने का कोई कारण दिखाई नहीं देता।

—गाँधी जी

प्रधानाचार्य श्री ओमशङ्कर त्रिपाठी का ३७वें गणतन्त्र दिवस पर विद्यालय के नाम संदेश

भारतीय गणतन्त्र अमर रहे !

इस वर्ष, गणतन्त्र की ३६वीं वर्षगाँठ पर राज्य के मुख्यमंत्री व शिक्षामंत्री का विद्यालय के प्रधानाचार्य के नाम कोई परम्परागत् संदेश नहीं आया। इस स्वस्थ परम्परा को अक्षुण्ण रखा प्रधानाचार्य श्री ओमशङ्कर त्रिपाठी के विद्यालय के नाम इस संदेश ने। प्रस्तुत संदेश उनकी साहित्यिक प्रतिभा का परिचायक है इसलिए पठनीय भी.....। [.सं०]

आज २६ जनवरी है, भारतीय गणतन्त्र की छत्तीसवीं वर्षगांठ। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिये किये गये कितने प्रयासों के बाद हमको यह दिन देखने को मिला था। उसका एहसास आज की पीढ़ी केवल कल्पना के आधार पर कर सकती है। आबाल वृद्ध वनिताओं की उत्सर्ग भावना जब कर्ममयी वाणी में हर गली चौराहे पर अलख जगाती घूमती होगी, जब सिंदूरी परिदृश्य लोहित यथार्थ के पर्याय हो गये होंगे और जब हर हलवाहा, चरवाहा भी वन्देमातरम् की कसक को हर घड़ी महसूसने लगा होगा, तभी शायद भारत की स्वतन्त्रता का देवता प्रसन्न हुआ होगा और उसने अपना वरद हस्त उठाकर 'स्वस्त्यस्तु' ! कहा होगा।

किन्तु नियति बड़ी क्रूर होती है और विधि का विधान भी वैसा ही रुक्ष। न जाने क्या हो गया था हमारे अवशेष नेतृत्व को, जिसने वन्दना के उन स्वरों में भी स्वार्थ और लिप्सा की धुनें शामिल कर दी थीं, जिसका परिणाम हुआ था भारत माँ की मगंलमयी मूर्ति का विखण्डन। परिणाम हुआ व्यथा, क्रन्दन और सदियों बाद तक न समाप्त होने वाला अविश्वास।

आज कुछ ऐसी ही धरती और ऐसे ही समाज में पल बढ़ रहे हैं हम सभी।

किन्तु फिर भी हम उदयाचल की संस्कृति के पोषक हैं और अमरता के पुजारी। हम अंगारों पर मुस्कराते और कालकूट पीकर भी जीते हैं। अतः हमको स्वीकारना होगा उन सभी चुनौतियों को जिसका आलाप अधिकांश कण्ठों से केवल आतंकित करने के लिए होता रहता है। हमको निराशा की इस काल रात्रि में आशा के दीप जलाने होंगे, अविश्वास की बीथियों में विश्वासी प्रहरी खड़े करने होंगे और शब्दजाल में उलझी कर्मठता को मुक्त कर खुले आसमान तले लाना होगा। आओ आज हम मिलकर संकल्प लें, "न हो साथ कोई अकेले बढ़ेंगे।"

———— जय स्वदेश !

सर्वधर्म समभाव

— विमलेन्द्र कुमार कनौजिया
आचार्य जीव विज्ञान

"जैसे विभिन्न रास्तों से होती हुई नदियाँ अन्त में समुद्र में विलीन हो जाती हैं, संसार के विभिन्न रूपों में उसी परमात्म सत्ता से मिलते हैं".....यही कहा था शिकागो के सर्वधर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द ने। 'सर्वधर्म-समभाव की हमारी कल्पना में सभी धर्मों के प्रति सद्भावना व सदाशयता की विराट् अन्तः वाह्य दृष्टि समाहित है। आज साम्प्रदायिक तनावों से टूटते समाज के लिए सर्वधर्म समभाव का विचार ही आशा की शेष किरण है। प्रस्तुत है आचार्य विमलेन्द्र का यह सांस्कृतिक लेख। [.सं०]

संसार में अनेक धर्म, ग्रन्थ, पन्थ प्रचलित है। "मुण्डे-2 मति भिन्नः" के आधार पर प्रत्येक मानव की विचार शक्ति भिन्न भिन्न होती है। संसार के समग्र मानव समुदाय को एक ही पंथ पर चलने को बाध्य नहीं किया जा सकता। पंथ भिन्नता होते हुए भी संसार के समस्त विचारों का मूल बिन्दु एक ही है।

संसार के समस्त धर्मावलम्बी ईश्वरीय सत्ता में आस्था रखते है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, करणावरुणालय, सृष्टिकर्ता, पालन कर्ता एवं संहार कर्ता है। ईश्वरीय इच्छा के बिना संसार का एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। उसकी कृपा पाने के लिए ही संसार के समस्त धर्मावलम्बी आराधना, साधना, तप, संयम, नियम आदि मार्ग अपनाते हैं। ईश्वर एक ही है। उसके नाम भिन्न हैं। हमारी पुकार के शब्द भिन्न हैं। जैसे वृक्ष एक होता है किन्तु शाखायें अनेक होती हैं –

"रास्ते जुदे - जुदे हैं, मकसूद एक है।"

× × × ×

"जो जेहि भाव, नीकि तेहि सोई।"

भगवान की कृपा उनकी करुणा, उनकी मेहर, उनकी तौफीक, उनकी ग्रेस, उनकी मर्सी अपार है, अनन्त है। विविध धर्मो में व्यक्त दर्शन एक ही ईश्वर की व्याख्या करते हैं —

१. **हिन्दू-दर्शन** —भारतीय दर्शनानुसार परमात्मा व जीवात्मा में कुछ भी अन्तर नहीं है, दोनों एक ही हैं, सत्य हैं, चेतन हैं तथा आनन्द स्वरुप हैं। बन्धन माया जन्य है। माया अज्ञान उत्पन्न करती है। जीवात्मा माया जन्य अज्ञान को दूर कर अपना स्वरूप पहचानता है तथा आनन्दमय परमात्मा में लीन हो जाता है। आनन्द में विलीन होना मानव-जीवन का चरम लक्ष्य है।

२ **पारसी धर्म** —पारसी धर्म में 'मज्दा' अहुरा या होरमज्द ईश्वर के विभिन्न नाम हैं। पारसियों के धार्मिक ग्रन्थ 'अवेस्ता' के अनुसार प्रभु जरयुस्त्र को प्रथम बार ईश्वर के दर्शन हुए। उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि— "हे होरमज्द ! प्रेम या ज्ञान के द्वारा आप मेरे तन पर, मेरे मन पर कृपा करें, अपने आर्शीवाद की कृपा करें जिससे मैं पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकूँ।" पारसी धर्म में ऐसी मान्यता है कि होरमज्द सर्वोपरि हैं। सभी सृष्टि उन्हीं की रचना है। "वे एक हैं, अनादि हैं, पूर्ण हैं, पवित्र हैं, शिव हैं, ऋतु हैं, प्रकाश हैं।" होरमज्द के सात अग माने जाते हैं —१. शुद्ध मन २. पवित्रता ३. शक्तिबल ४. नम्रता ५. पूर्णता ६. अमरता व ७. सत्य।

३. **यहूदी धर्म** —ईश्वर एक है, उन्हींने जीव व जगत की रचना की हैं। वे सर्वव्यापी, प्रेममय और करुणामय है। वे सूर्य की भाँति स्पष्ट एवं अन्धकार की भाँति रहस्यमय हैं। वे सत्कर्म व प्रेम से प्रसन्न होते हैं। सच्चे, भले उदार व चरित्रवान लोगों पर वे अपनी कृपा बिखेरते हैं। यहूदी धर्मानुसार उनका सर्वोत्तम नाम 'जहोवा' है। पुरानी बाइबिल यहूदियों का मूल धर्म-ग्रंथ है। जहोवा कहते हैं कि— "मुझसे प्रेम करना है, मेरा कृपा-पात्र बनना है, तो अपने भाइयों से मनुष्य मात्र से प्रेम कर। पूर्ण मन से, बचन से कर्म से प्रेम कर। सबकी सेवा कर सदाचार का पालन कर।"

४. **ईसाई धर्म** —ईसाई धर्म ग्रंथ बाइबिल (न्यू टेस्टामेण्ट) है, उसमें ईश्वर की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि —"God who is rich in mercy for his great love" परमेश्वर अपनी अगाध व्यापक कृपा, करुणा और शान्ति।" ईसाई धर्म में आत्म शुद्धि का सर्वोत्तम साधन माना गया है और प्रार्थना में याचना की जाती है, भगवत्कृपा की। ईसाई धर्मानुसार 'ईश्वर अकेले थे, उन्होंने अपना अकेलापन दूर करने के लिये सृष्टि-निर्माण की। हम मनुष्य उस परमात्मा के हाथ के खिलौने हैं।" बाईबिल में कहा गया है कि "God is spirit" (ईश्वर सत्य है)। जो उसकी पूजा करते हैं उन्हें निष्ठा एवं सत्यता से उसकी पूजा करनी चाहिये।

५. **इस्लाम धर्म** —[अर-रहमानिर —रहीम की रहमत] अल्लाह रहमान भी है, रहीम भी अर्थात् वह कृपाशील व दयावान् है। कैफ भोपाली के शब्दों में "बहुत ही मेहरवां हैं वो, बड़ा ही मेहरवां हैं वह। सदा रहमत फिशां, रहमत फिशां, रहमत फिशां है वह॥"

कुरान शरीफ में कहा गया हैं कि —निःसंदेह अल्लाह तौबा कबूल करने वाले हैं, रहमत वाले हैं, दयालु हैं, कृपालु है।" पुनः आगे कहा गया है कि —"अल्लाह पर तौबा की कबूलियत सिर्फ उन लोगों के लिये है, जो नादानी से गुनाह कर बैठते हैं। और फिर जल्दी से ही तोबा कर लेते।" कुरान शरीफ में ही आगे कहा गया है —"वस्तुतः मैं ऐसे लोगों के लिए क्षमाशील हूँ जो तोबा कर लें, ईमान लाएँ और नेक अमल करें फिर राह पर कायम भी रहें।" पुनः कहा गया है कि —"हम तोबा करें सच्चे दिल से तोबा करें तो हम पर अल्लाह की तौफीके इलाही होगी।" राबिआ का दृष्टांत देते हुए बताया गया है कि खुदा एक के बदले

दस गुना देता है। राबिआ के पास मात्र दो रोटी थीं। दो सन्तों के लिये अपर्याप्त थीं। राबिआ ने संतों को भोजन कराने का निश्चय किया। दासी जब थाली लाई तो उसमें अठारह रोटियाँ थीं राबिया ने थाली वापस कर दी। थोड़ी देर बाद दासी थाली पुनः वापिस लाई अब उसमें पूरी बीस रोटियाँ थीं। जो संतों को खिलाई गई। संतों के पूछने पर राबिआ ने बताया कि खुदा दस गुना देता है, पहले रोटियाँ अठारह थी जो बे हिसाब थीं इस बार पूरी बीस हैं। कुरान शरीफ में कहा गया है कि —"जो आदमी नेकी लेकर आये उसके लिए उसका बदला दस गुना है।" और "जो बदी लेकर आए उसका उसको बराबर बदला दिया जायेगा।"

कितनी दयालुता है अल्लाह की।

इस प्रकार विविध धर्मों का अध्ययन करने पर ईश्वर में समान अवधारणा प्रतीत होती है। ईश्वर सर्व व्यापक है, सर्वशक्तिमान है, कृपा, क्षमा, करुणा उनके विशिष्ट गुण हैं। ईश्वर को प्राप्त करने के लिये शुद्ध अन्तःकरण सभी ने स्वीकार किया है, प्रार्थना, प्रेम, भक्ति, शुद्ध अन्तःकरण से उसकी पुकार आवश्यक है। ईश्वरीय सिद्धान्त पर यह सम्पूर्ण मानवता एक है, एक ही पिता की सन्तान है। मार्ग भिन्न हो सकते हैं पर लक्ष्य एक है, नाम भिन्न हैं पर ईश्वर एक है अतः सभी धर्मों के प्रति समान भाव अपेक्षित है।

———

धर्म का अर्थ है अलग-अलग नामों से पहचाने जाने वाले सब धर्मों का एक साथ संकलन करने वाला तथा उन्हें एकरूप देखने वाला परम-धर्म।

× × × × × ×

दुनियां में जितने आदमी हैं, उतने ईश्वर के नाम है। ईश्वर, भगवान, खुदा, गॉड, होरमस····· जो कुछ भी कह लो, उसीके नाम हैं। और इन सब नामों से भी वह ज्यादा है।

× × × × × ×

सब धर्मों के प्रति समभाव से देखने पर हम दूसरे धर्मों के प्रत्येक स्वीकार करने योग्य तत्व का अपने धर्म में समन्वय करने में कभी संकोंच नहीं रखेंगे, बल्कि ऐसा करना अपना धर्म समझेगे।

× × × × × ×

जिस प्रकार किसी वृक्ष का तना एक होता है, परन्तु शाखाएँ और पत्ते अनेक होते हैं, उसी प्रकार सच्चा और पूर्ण धर्म तो एक ही है; परन्तु जब वह मानव के माध्यम से व्यक्त होता है तब अनेक रूप ग्रहण कर लेता था।

—गांधी जी

नागफनी

—ओम शङ्कर त्रिपाठी

[खिचते हुए दो मनों और टूटते दो सम्बन्धों की कड़ुवाहट का प्रतीक है कँटीली नागफनी, जिसके बीज अनजाने कारणों से अनायास मन के गर्त में बो जाते हैं और फिर धीरे-धीरे उग आती है यह नागफनी— .सं०]

तुम्हारे और हमारे बीच में
एक नागफनी उग आई है,
जिसके काँटे उत्तरोत्तर कुछ सख्त होते जा रहे हैं
और अब तो (ऐसा लगता है कि,)
टूट-टूटकर (दोनों ही तरफ) बिखरने भी लगे हैं।
इस नागफनी को
(याद नहीं पड़ता)
शायद बोया तुमने ही था,
और उसी तरह
सींचा मैंने होगा
तभी तो, बढ़कर इतनी गझिन हो गई है
और हम दोनों की मेड़
आवागमन के लिए अत्यन्त कठिन हो गई है।
पता नहीं क्यों अब मेंड़ें प्रायः ही टूट रही हैं
और टेढ़ी-मेढ़ी राहें
खेतों के बीच बन रही हैं।
कभी कभी ऐसा भी लगता है
कि
नागफनी
हर इंच पर उग रही है
और
हर खेत के तन को
भीतर ही भीतर
अवश्य चुभ रही है,
अवश्य चुभ रही है।

गुलेरी जी की कहानी का पद्यानुवाद —

उसने कहा था

शिवनारायण लाल बाजपेयी
प्रधानाचार्य —दयानन्द इ० का० सुरसा, हरदोई ।

गुलेरी जी की सुप्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' के पद्यानुवादक हैं श्री शिवनारायण लाल बाजपेयी प्रधानाचार्य– दयानन्द इ० का० सुरसा, हरदोई। बाजपेयी जी, संयोग से इस विद्यालय के निवर्तमान संस्थापक प्राचार्य ठा० चन्द्रपाल सिंह जी के प्रिय शिष्यों में रहे हैं। उन्होंने पद्यानुवाद को अपने श्रद्धेय गुरुदेव माननीय ठाकुर साहब के 'कर कमलों' में समर्पित किया है। यहाँ प्रस्तुत है— कविता-कहानी की मिश्रित कलात्मकता का एक सुरुचिपूर्ण साहित्यिक उदाहरण जिसकी 'आत्मा' में गुलेरी जी का 'कहानीकार' व कलेवर में बाजपेयी जी का 'कवि' जीवंत हो उठा है। [सं०]

अमृतसर के गाड़ीवानों की भी मीठी बोली।
भरी गली से राही वारे जैसे करें ठठोली।।

'हट के बाबू जी हो,
बच के लाला जी हो,
हटो खालसा जी।'

मीठी-मीठी मार करें,
जानो दुलार करें,
ऐसे प्रहार करें,

हट जा जीड़े जोगिये,
बच जा पुत्ता प्यारिये,
हट जा कर्मा वालिये।'

उसी शहर की एक दुकां पर,
सिक्ख बालिका बालक मिलकर,
परिचय पाया, चले राह धर,
बालक बोला पहुँच मोड़ पर,

"क्या हो गयी कुड़माई ?"
"धत्" भागी शरमाई ।।

उसी शहर की एक गली में बिगड़ा कोई घोड़ा ।
वही बालिका दबी देख बालक ने मोड़ा घोड़ा ।।
उसे बचाया किसी भांति निज को खतरे में छोड़ा ।
मोड़ तलक पहुँचा जब पूछा मुड़कर के कुछ थोड़ा ।।

"क्या हो गयी कुड़माई ?"
"धत्" भागी मुसकायी ।।

उसी शहर की उसी गली में मिले वही दो राही ।
बालक ने अधीर होकर फिर वही थाह ली चाही ।।
पूछा उसने वही प्रश्न, 'क्या हो गयी कुड़माई' ।
आशा के विपरीत बात ही उसको पड़ी सुनाई ।।

लड़की बोली, "हो गयी, हो गयी, जी हो गयी ।"
बालक बोला 'कब' ?

वह बोली 'जी कल' ।।

कढ़ा हुआ यह शालू
कैसा रंग संभालू,

फिर बालिका सिधारी,
बालक लड़ा भिखारी
लुटा चुका सर भारी ।

क्यों जी क्यों जी क्यों ?
मन में हारा यों ।।

दिन बीते वह बालक सेना में फिर हुआ सिपाही ।
लहनासिंह था नाम काम शुभ दिव्य ज्योति का माही ।
सूबेदार हजारासिंह का परम हितैषी चाही ।
धीर वीर निर्भीक बात का धनी तथा गुणग्राही ।।

लहना ने घर पर ही पाया एक पत्र सरकारी ।
सूबेदार हजारासिंह का साथ निवेदन भारी ।।
'फ्रांस चलेंगे साथ लाम पर आओ करें तयारी' ।
पाते ही आदेश, वहाँ पहुँचा प्रमोद था भारी ।।

मिले हजारासिंह लिपटकर फिर उससे वह बोले ।
"सूबेदारिन तुझे जानती, जा मिल आ रे भोले" ।।
वह आश्चर्य चकित था कैसे परिचित कोई डोले ।
सूबेदारिन बोली, 'तेरी कुड़माई' को खोले ।।

बोली बात याद आयी फिर ताजी हुयी कहानी ।
वही बालिका सूबेदारिन सम्मुख दिल की रानी ।।
उर में दृढ़ विश्वास और आशा की ज्योति सुहानी ।
बोली 'आते ही तुमको पहचाना मैंने मानी' ।।

बोला मेरे पूत और पति के तुमही रखवाले ।
जैसे मुझे बचाया था अमृतसर में हे प्यारे ।।
वैसे ही अब इन्हें बचाना ये ही वचन हमारे ।
आँखों में आँसू उमड़े थे आंचल रही पसारे ।।

रुंधा कण्ठ लहना का नयनों में भर आया पानी ।
मुखमण्डल के संकेतों ने कह दी जी की बानी ।।
लहना ने फिर मत्था टेका आशिष सुनी सोहानी ।
'उसने कहा', गांठ में बांधा जी की जां में जानी ।।

(३)

लुधियाना से भी बढ़कर है यहां फ्रांस में जाड़ा ।
खन्दक का जीवन यह तो है पशु से बदतर बाड़ा ।।
गोली बोली 'धांय' भूल से कहीं शीश जो काढ़ा ।
बोला बोधा, अरे 'बाप रे काँप रहा मैं गाढ़ा' ।।

लहना ने बरबस उसको अपनी जर्सी पहनाई ।
कहा, 'विलायत से मेमों की बुनी नयी मैं पाई ।।
खाकी वर्दी पहने पहरा देता बात बनाई ।
उसके भी कामों को करता वही रीति मनलाई ।।

तम था चारों ओर रात का रहा घोर सन्नाटा ।
सैनिक अपनी जगहों पर लेटे लेते खर्राटा ।।
लहना पहरे पर सतर्क लपटन पहुँचा सर्राटा ।
बोला 'धावा करो अभी आओ पथ मैंने छांटा' ।।

साहब ने यह कहते अपनी सिगरेट फिर सुलगाई ।
लहना ने देखा उसकी सूरत विचित्र ही पायी ।।
नील गाय की सींगों की हक्कानी एक उड़ायी ।
अबदुल्ला के मन्दिर में जाने की बात चलायी ।।

साहब ने 'हाँ' कहते सिगरेट पीने का हठ ठाना ।
दियासलाई लाने का फिर उसने लिया बहाना ।।
जगा बजीरा को बोला, 'जा लौटा सब को लाना' ।
चकली साहब वह जर्मन है मैंने है पहचाना ।।

उसने साहब की करनी को छिपकर शंकित देखा।
बम को खन्दक की दीवारों में घुसेड़ते देखा।।
आग लगाने वाला ही था कुन्दा मारा लेखा।
'मनी गट्ट' कहते साहब को पटका घूमिल रेखा।।

लिया तलाशी पत्र मिल गये जो योजना बनाई।
"मैं तुमसे उस्ताद चलेगी चाल न छल से छाई"।।
साहब ने लेटे ही लेटे फिर पिस्तौल चलाई।
लहना घायल, पर झट उसको स्वर्ग की राह दिखाई।।

(४)

'जीते सिक्ख हजारा की गूंजी नभ में यह बानी।
लहना तूने हमें बचाया धन्य धन्य हे मानी।।
घायल लेने गाड़ी आयी लहना ने हठ ठानी।
'सुबेदार आप अब जायें बोझा साथ निभानी।।

होरों को चिट्ठी लिखना मेंरा प्रणाम लिख शेरू।
'उसने कहा' हुआ पूरा घर जाना कहना तेरू।।
गाड़ी उड़ी और उड़ने को आये प्राण पखेरू।
लहना ने अन्तिम क्षण देखे जीवन खेल सुमेरू।।

देखी अमृतसर की गलियां देखे वे दो राही।
देखी सूबेदारिन पति-सुत हेतु भीख की गाही।।
फिर देखा वह दृश्य किस तरह अपनी आन निबाही।
'उसने कहा, हुआ पूरा' गह राह स्वर्ग की थाही।।

———

समय की बाँसुरी पर.....

—उमेश त्रिवेदी

[एक समर्थ गीतकार की रचना,-जिससे अपने 'समय की 'गीति' बाँसुरी पर' अज्ञात स्वर साधना की। श्री उमेश, प्यार में गुदगुदाने और ओज में थरथरा देने वाले कवि हैं। प्रस्तुत रचना—हमारे मर्म को सुखद स्पर्श देती हुई..... .सं०]

सुलगती लकड़ियों के धुँयें जैसे दर्द के बादल,
हठीले मान जा अंतस गगन पर यूँ न मंडरा, रे।
पसारे प्रेरणा के पर—
लिये कुछ नव सृजन के स्वर,—
उतर आ गीत बनकर आज अधरों पर उतर आ रे।

समय की बाँसुरी पर छिड़ चला यह कौन सा सरगम,
कि बैठी मरसिया सी पढ़ी रही हर आँख में शबनम,
किसी का प्यार पाने के लिये खुद प्यार प्यासा है-
असत की राह पर इंसानियत का रथ गया है थम,.

उजेला पंख फैलाये,—
अंधेरा दूर हो जाये,—
सिसकती राह पर ऐसा टिमकता दीप धर जा रे।
उतर आ गीत बनकर आज अधरों पर उतर आ रे॥

औरों को हँसते देखो मनु,
हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,
सबको सुखी बनाओ॥

—प्रसाद जी

नयी रचना भूमि लेकर आ रहा हूँ !

—महेश चन्द्र मिश्र 'विधु'

[श्री 'विधु' राष्ट्रीय जागरण व युग-बोध के नवगीतकार हैं। सन् '७५ के 'सक्रांति काल' में लिखी गई यह रचना उस समय के 'सृजन और संघर्ष' की सार्वभौमिकता की दृष्टि से आज भी कितनी प्रासंगिक है। —सं०]

तुम बढ़ो आगे तुम्हारे साथ पूरा देश लेकर आ रहा हूँ।
इस नयी उद्भावना, नव चेतना को, -
सृजन-क्षण चिन्तन - मनन - सम्वेदना को।
कर्म की उत्सर्ग निष्ठा दृढ़मना को, -
सत्य - साहस के कदम संचेतना को।
राष्ट्र की सेवा प्रथम कर्त्तव्य का पथ-बोध लेकर आ रहा हूं।
तुम बढ़ो आगे तुम्हारे साथ पूरा देश लेकर आ रहा हूं॥
यह समय बलिदानियों की होड़ का है, -
नव-सृजन, नव-साध संयम होड़ का है।
श्रम-बहादुर आंख के तारे सभी जन -
देश आगे जा रहा युग मोड़ का है।
तुम बढ़ो अब जोश में, विश्वास गति - रथ वेग से ले आ रहा हूं।
तुम बढ़ो आगे, तुम्हारे साथ पूरा देश लेकर आ रहा हूं॥
खेत औ खलिहान के सपने सुहाने, -
अब मिलों कल - कारखानों के जमाने।

एक सबका लक्ष्य, यात्रा यह बड़ी है, -
मातृ भू - देवांगना के गीत गाने ।
राष्ट्र को ही है समर्पित यह जवानी, नयी रचना भूमि लेकर आ रहा हूं ।
तुम बढ़ो आगे तुम्हारे साथ पूरा देश लेकर आ रहा हूं ।।
नियति, निष्ठा, न्याय की लम्बी लड़ाई, -
मोह - शंका घर - घिरौंदो की लड़ाई –
खोखली अंधी - व्यवस्था की लड़ाई –
आदमी के दर्द सुख - दुःख की लड़ाई ।
इस लड़ाई के लिये सामर्थ्य - सीमा - बोध लेकर आ रहा हूं ।
तुम बढ़ो आगे, तुम्हारे साथ पूरा देश लेकर आ रहा हूं ।।
एक कल्पान्तर समय की मांग है यह, -
भ्रष्ट पापी क्रूर - कामी - कलुष भागे ।
जिन्दगी संघर्ष की लम्बी - कहानी -
कदम साहस के बढ़े अब और आगे ।
कर्म-छन्दों को यहाँ अब गुनगुनाता, श्रम-सपन-संसार लेकर आ रहा हूं ।
तुम बढ़ो आगे, तुम्हारे साथ पूरा देश लेकर आ रहा हूं ।।

———

साक्षात्कार—

श्री शंकर श्री पाद बोड़स

संगीत साधना ही जिनका जीवन है

—सम्पादक

[जब मैं प्रथम दिन इस विद्यालय में आया तो विशाल कक्ष में चल रही प्रार्थना ने मेरे भावुक मानस का स्पर्श कर लिया। प्रार्थना का स्वर अत्यन्त कर्णप्रिय था। मन में प्रश्न उठा— इस स्वर को किसी न किसी संगीतज्ञ ने ही राग और लय दी होगी। बातचीत के माध्यम से पता चला कि देश-प्रसिद्ध संगीतकार श्रद्धेय श्री शङ्कर श्रीपाद बोड़स ने अपनी इस प्रार्थना को स्वर राग और लय दी है। तब से मन में एक ललक जग उठी कि ऐसे मनीषी के दर्शन लाभ कर लिया जाय। दैवयोग से वह अवसर भी प्राप्त हुआ। जब उनसे मिलने गया तो उनकी सहजता ने तो और भी प्रभावित किया। सन् १९०० में महाराष्ट्र के सांगली जिले में पैदा हुये श्रद्धेय बोड़स जी से बातचीत हुई उसे शब्दशः अङ्कित करना ही अधिक उचित होगा। यह सोचकर उस वार्तालाप को ही प्रस्तुत कर रहा हूँ। श्रद्धेय बोड़स जी को आदरपूर्वक सभी लोग 'दादा' के नाम से जानते हैं।] [सं०]

प्रश्न : दादा आपने संगीत साधना कब से, कहाँ और किसके मार्गदर्शन में प्रारम्भ की ?

बोड़स जी : मन में संगीत सीखने की प्रबल इच्छा थी। सन् १९१८ में जब पण्डित विष्णु दिगम्बर जी पलुस्कर सांगली आये तो पिता जी से विशेष आग्रह किया कि हमें संगीत सीखने की अनुमति प्रदान करें। पिताजी ने पंडित जी से मिलकर सशर्त संगीत सीखने की अनुमति प्रदान की। शर्त थी संगीत शिक्षा के साथ-साथ अपना अध्ययन क्रम भी जारी रहना चाहिये। गुरूजी ने शर्त मान ली। बस इसी के साथ हमारी संगीत साधना का आरम्भ हुआ। गुरूजी के साथ मैंने तथा मेरे भाई ने बम्बई में आकर 'गन्धर्व महाविद्यालय' में प्रवेश लिया तथा यहीं पर संगीत साधना का आरम्भ हुआ उसके पश्चात् नासिक में गंधर्व महाविद्यालय खोला गया वहाँ पर सन् '२५ तक शिक्षा प्राप्त की साथ ही इण्टर भी पास किया।

प्रश्न : आपके विद्यालय की कार्यशैली कैसी थी ?

बोड़स जी : अपनी संस्कृति में वर्णित गुरुकुलों के समान ही हमारा विद्यालय था। इसमें केवल हमें जाकर रहना होता था हमारे भोजन आदि की व्यवस्था श्रद्धेय गुरूजी स्वयं करते थे। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त दक्षिणा स्वरूप गुरूजी का आदेश मानना होता था।

प्रश्न : दादा आपको गुरुदक्षिणा के रूप में क्या करना पड़ा ?

बोड़स जी : गुरुदक्षिणा के रूप में मुझे कानपुर आकर संगीत प्रसार का आदेश मिला।

प्रश्न : आपको कानपुर आने का ही आदेश क्यों मिला ?

बाड़स जी : जिस समय कांग्रेस के अधिवेशन होते थे उनमें हमारे गुरूजी अपने शिष्यों के साथ सर्वप्रथम 'वन्दे मातरम्' का गान करते थे। दिसम्बर १९२५ में कानपूर में कांग्रेस का अधिवेशन था उनमें हम सभी लोग 'वंदे मातरम्' गान के लिए आये थे। उस समय प० पृथ्वीनाथ हाई स्कूल के हेडमास्टर श्री देवी प्रसाद खत्री जी ने पंडित जी से निवेदन किया कि कानपुर में संगीत के प्रसार के लिए आप कोई व्यवस्था करें। गुरूजी ने कहा 'शङ्कर' तुम्हें कानपुर रुकना है। यही तुम्हारी गुरुदक्षिणा है। गुरूजी का आदेश मानकर मैं सांगली छोड़कर कानपुर का निवासी बन गया।

प्रश्न : आपके संगीत प्रसार में क्या-क्या कठिनाइयां आईं ?

बोड़स जी : सन् '२५ में संगीत का प्रसार करना आसान काम नहीं था उस समय संगीत शिक्षा सम्भ्रांत परिवारों में अच्छी नहीं मानी जाती थी। लोगों की यह धारणा थी कि संगीत का स्थान कोठों पर है। एक संगीतज्ञ को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था। विद्यालय में मैंने जब पढ़ाना प्रारम्भ किया तो अभिभावक आकर कहने लगे, "मास्टर जी ! हमारा बच्चा संगीत नहीं सीखेगा।" बड़ी विषम स्थिति थी जिसका उल्लेख मैंने अपने प्रधानाचार्य से किया। विद्यालय में संगीत विषय अनिवार्य कर दिया गया। अभिभावकों से कहा गया कि यदि आप अपने अभिभाव्य को पढ़ाना चाहते हैं तो संगीत पढ़ाना अनिवार्य होगा। तब जाकर इसका विरोध खत्म हुआ।

इस सम्बन्ध में एक अच्छा उदाहरण और बताऊँ। महानगर के सुप्रसिद्ध वकील स्वर्गीय पं० मुन्ना लाल जी भूषण ने मेरे पास आकर कहा कि आप मेरी पत्नी को घर पर आकर संगीत सिखायें। उनके परिवार में इस विषय पर काफी विवाद हुआ। अध्यापक के बारे में पूर्ण जानकारी ली गयी और अंत में जाकर मुझे वहाँ पढ़ाने का मौका मिला परन्तु जिस समय मैं पढ़ाने के लिए जाता था, कमरे में एक कोने पर एक काली-काली सी मोटी सी महिला बैठी रहती थी। जब तक पूरी पढाई नहीं होती थी तब तक बैठी रहती थी। एक दिन जब मैंने अपनी शिष्या से कहा, "मैं आज आपको 'रामकली' राग सिखाऊँगा।" तो वह महिला उठकर आई और बोली, "क्या आपने मुझे बुलाया है ?" तब मुझे पता लगा कि उस महिला का नाम रामकली है और मेरे पढ़ाने के समय वह एक निरीक्षिका के रूप में बिठाई गयी थी।

प्रश्न : जिस प्रकार साहित्य, सत्याग्रह आदि का देश की स्वाधीनता में महत्वपूर्ण योगदान रहा है उसी प्रकार संगीत का स्वाधीनता संग्राम में क्या योगदान रहा ?

बोड़स जी : कांग्रेस के विभिन्न अधिवेशनों में वन्देमातरम् गान द्वारा एक विशेष प्रकार का जोश लोगों के मन में जागता था। उसके लिए हमारे गुरूजी द्वारा दिया गया स्वर मुख्य कारण था। लाहौर अधिवेशन में जब जेल भरने का आह्वान किया गया तो हमारे गुरूजी के मन में भी गिरफ्तारी देने का विचार आया और उन्होंने लाला लाजपत राय जी के सामने भी व्यक्त किया। तब लालाजी ने कहा, "पलूस्कर जी आप संगीत के माध्यम से जो जागरण का कार्य कर रहे हैं, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आपके सत्याग्रह करके जेल जाने से साधना में विघ्न पड़ेगा आप संपूर्ण देश में घूम-घूम कर, अपने शिष्यों को विविध स्थानों पर रखकर संगीत के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का जागरण करें।" लाला जी की इसी बात को मानकर हम लोगों ने जेल के सीखचों के बाहर रहकर अनेक देशभक्ति पूर्ण गीतों को संगीत के स्वरों से सजाकर राष्ट्रीय जागरण का कार्य किया। हमने कानपुर के स्वर्गीय श्यामलाल 'पार्षद' रचित झण्डागान– "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।" को स्वर देकर एक नयी चेतना समाज में जागृत की।

प्रश्न : संगीत के प्रसार के लिये आपने और क्या-क्या किया ?

बोड़स जी : पं० लालमणि जी मिश्र के साथ १९४७ में कानपुर सिविल लाइन्स में गांधी संगीत महाविद्यालय की स्थापना की जिसके माध्यम से आज सम्पूर्ण प्रान्त में संगीतकारों की एक शृंखला खड़ी हुई है। संपूर्ण उत्तर भारत में संगीत, जो कोठे की चीज माना जाता था, जन सामान्य के बीच में लाकर खड़ा किया। १९६१ में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य पद से सेवा निवृत्त हुआ। महापालिका ने उस विद्यालय को अपने अधिकार में लेकर अब उसे एक अच्छा रूप प्रदान किया है।

प्रश्न : दादा ! शास्त्रीय संगीत के भविष्य के विषय में आपकी क्या राय है ?

बोड़स जी : शास्त्रीय संगीत का भविष्य अत्यन्त उज्जवल है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तथा भातखण्डे जी ने जो 'नोटेशन की वैज्ञानिक प्रणाली दी है वह दुनियाँ के अन्य किसी संगीत में नहीं। आज विश्व के अन्य सभी संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत से नोटेशन की प्रणाली लेकर विकास करने में लगे हैं। भारतीय संगीत आज भी विदेशों में अपना एक स्थान बनाये है। भारतीय संगीत द्वारा जो आध्यत्मिक सुख मिलता है उसके लिए दुनियाँ के सभी लोग तड़पते हैं। यही हमारी श्रेष्ठता है और यह परम्परा आगे भी बढ़ती रहेगी।

दादा आज की शाम आपके साथ एक संगीतमय वातावरण में प्रारम्भ हुई और संगीतमय वातावरण में ही समाप्त हुई। हम ईश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की प्रार्थना करते हुए विदा होने की अनुमति चाहते हैं। हम आपको प्रणाम करते हैं।

———

शिक्षकों का स्वधर्म

—महादेवी वर्मा

[प्रस्तुत है साहित्य की अनन्य साधिका महादेवी जी का 'आचार्य कुल' में दिया गया यह व्याख्यान। हम 'आचार्य गण' कुछ सीख सकते हैं इस व्याख्यान से। —सं०]

हमारी संस्कृति सदा से ही शासन और समाज, दोनों की मार्ग दर्शिका रही है, किन्तु पिछले २०० सालों से, जबसे शासकों ने शिक्षा पर काबू करने का प्रयोग किया, तबसे हमारा मनोबल गिरने लगा और शिक्षा शासनपरक बनती गयी। आज जीवन के हर क्षेत्र में और शिक्षा में भी राष्ट्रीयकरण का नारा व्याप्त है, किन्तु इस राष्ट्रीयकरण का अर्थ केवल "सरकारीकरण" है। यह शाश्वत दासता की मांग है। जब बन्दी खुद ही कहने लगे कि मेरे पैरों में बेड़ियां डाल दो तब उसका उद्धार कौन कर सकता है ?

हम आज भी अंग्रेजों के द्वारा चालू की गयी शिक्षा पद्धति को चला रहे हैं। स्वतन्त्रता के बाद शिक्षा नहीं बदली। पुराना चौखटा आज भी कायम है। नतीजा यह हुआ कि आज स्वतन्त्र भारत का तरुण हमसे कुछ प्राप्त नहीं कर पा रहा है। वह बुद्धि से बौना और जीवन के सम्बल से वंचित होता जा रहा है। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति न शासनपरक थी, न समाजपरक थी। हमारी परम्परा में गुरू तथा शिष्य दोनों का लक्ष्य आत्म-शोधन के लिए विद्या देना तथा विद्या प्राप्त करना था और यही कारण था कि उस वक्त का तरुण आत्मविश्वास से भरा होता था।

आज का तरुण विक्षुब्ध है। वह अपने जीवन की विक्षुब्धता को भरने आता है, लेकिन शिक्षक के आने से, जाने से, उसके होने से या न होने से विद्यार्थी के जीवन पर कोई असर नहीं पड़ता। आज तरुण प्यार और संवेदना का प्यासा है, उस अमृत के लिये प्यासा है, जिसे केवल आचार्य ही दे सकता है। हम मेघ बनकर बरस जायें, सब दरारें, सब विषमतायें पाट दें। समस्याओं का समाधान अगर नहीं हुआ, तो ध्वंस होगा और तब नयी पीढ़ी हमें क्षमा नहीं करेगी।

यदि आज का छात्र विध्वंस के मार्ग पर जाता है, तो उसका दायित्व हम शिक्षकों पर है। तरुण के आवेश को विवेक की शक्ति देकर उसका सर्जनात्मक विकास करना शिक्षकों का कर्त्तव्य है, लेकिन इस ओर शिक्षकों का ध्यान नहीं गया है। उनके संगठन अधिक वेतन तथा ग्रेड आदि की मांग तक सीमित है। समस्याओं का समाधान हो, शिक्षा सरकार से मुक्त हो, शिक्षकों का वर्चस्व अखंडित रहे, ऐसी मांग कोई नहीं करता।

विनोबा जी ने जब आचार्यकुल का विचार सुझाया, तो उनके मन में शिक्षा की स्वायत्तता और शिक्षकों के अखंडित वर्चस्व की ही बात थी। आचार्यकुल का काम आत्मशोधन तथा आत्ममंथन को प्रेरणा देना है। अपने मनोबल और तपस्या के द्वारा नागरिक तथा समाज के वर्चस्व को कायम रखना तथा नयी पीढ़ी के मार्ग को आलोकित करना हम शिक्षकों का कर्त्तव्य होना चाहिये। यह हम तभी कर सकेंगे, जब हमारा चरित्र उज्जवल हो, भावनाएं उदात्त हों और हम आज के राजनैतिक दलदल से बचे रहें। हमारी राजनीति तो विक्षिप्तों का एक मेला है। विक्षिप्तों के इस मेले में, जहां सांझ और सवेरे सत्ता के लिये दल बदल होता है, कुर्सियां खींची और उल्टी जाती हैं, कोई यह नहीं जानता कि कल क्या होगा! इस राजनीति ने शिक्षकों का मनोबल दुर्बल किया है और समाज को तोड़ा है।

इतने बड़े समृद्ध ज्ञान के इस समृद्ध देश में शिक्षक क्या यन्त्र बनकर ही रह जाना चाहता है? वास्तव में ज्ञान के सम्प्रेषण में ही हम अपनी कीमत बना सकते हैं। शिक्षकों का काम प्रतिदान का नहीं, आत्मदान का सौदा है।

आज पश्चिम की दुनिया में साधनों का वैभव है, लेकिन अन्तर से वे खाली हैं। जब बुद्धि का वैभव अपनी मर्यादा छोड़ देता है, तब जीवन का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। हमारी संस्कृति के कुछ तत्व शाश्वत हैं। इस देश के चिन्तन में कुछ मूल्य हैं, जो सनातन हैं।

विचार एक यज्ञ है, संकल्प भी एक यज्ञ है। आचार्यकुल का हर सदस्य संकल्प करे और स्वयं दीपक बनकर जले, तभी वह नयी पीढ़ी को, समाज को आलोकित कर सकेगा। आज एक आंधी आयी है। अगर आचार्यकुल तरुणों को, समाज को प्राणदायनी सांस दे सके, तो आंधी और झंझावात गुजर जायेंगे, लेकिन जीवन कायम रहेगा। शिक्षकों का स्थान समाजरूपी वृक्ष की जड़ों में है, इसीलिए शिक्षकों को शाश्वत मूल्यों और तत्वों से मुक्त होना है।

विनोबा ने आचार्यकुल की स्थापना इसलिये की, कि शिक्षक भौतिक और आर्थिक स्तर पर ही संघर्ष न करें, वह जीवन के मूल्यों के लिए आत्मशोधन-मंथन करे। यदि शिक्षक आत्मशोधन में लगें, तो वह परमुखापेक्षी नहीं रहेगा। उसका वर्चस्व, उसकी स्वायत्तता अखण्डित रहेगी।

हम विनोबा के इस स्वप्न को सार्थक कर दें, अपने आपको सार्थक कर दें, जीवन को सार्थक कर दें। वह शिक्षक भी क्या है, जो तपे और धरती में दरारें पड़ जायें। हम मेघ की तरह उमड़ें और बरस जायें, धरती को तृप्त कर दें! आकाश की बातें जानें और धरती पर पांव धरकर चलें!!"

———

देश में दो शक्तियाँ संगठित करनी हैं (१) ग्राम-शक्ति यानी ग्रामीण जनता की शक्ति और (२) आचार्य-शक्ति, यानी शिक्षक, विद्वजन सज्जनों की शक्ति। निर्भय, निष्पक्ष निर्वैर आचार्य-शक्ति खड़ी करने के लिये 'आचार्यकुल' की संकल्पना आई है।

—आचार्य विनोबा भावे

प्रेरक – पत्र

यह है विद्यालय–प्राचार्य के नाम अमेरिका प्रवासी पूर्व छात्र चि० नवनीत का पत्र। प्रवासी भारतीय छात्रों की मनः स्थिति उजागर करता यह पत्र विद्यालय परिवार को आत्मतोष देगा। [.सं०]

आदरणीय आचार्य जी

दिनाङ्क १९-९-८५

सादर चरण स्पर्श

मैं यहाँ सकुशल हूँ। सब कुछ ठीक-ठाक Settle हो गया है। यहाँ आकर मालूम चल रहा है कि यहाँ कोई खास बात नहीं है। सब तरह की सुविधायें है किन्तु भारतीयों के लिए इतना ही काफी नहीं हैं। हमारी सामाजिक परम्परायें एवं संस्कृति इन सारी सुविधाओं से अधिक महत्वपूर्ण हैं। यहाँ के लोग अति विशिष्ट नहीं हैं। उनका बौद्धिक स्तर हम से कहीं नीचे है। यहाँ के भारतीय अपनी मेधा एवं परिश्रम के बल पर अच्छे स्थानों पर हैं। हम लोग अपने देश में अधिक प्रसन्न एवं उन्मुक्त रहते हैं। यहाँ यद्यपि कहने को कोई वर्जना नहीं हैं किन्तु वास्तव में हम विदेशी भारतीय अनेक बन्धनों में जकड़े हैं। यहाँ बसे भारतीय अधिकांशतया इसलिए यहाँ हैं क्योंकि उनकी स्थिति बहुत कुछ 'साँप-छछूंदर' की है। यहाँ आकर लौटना मुश्किल हो जाता है। एक बार नौकरी कर लेने के बाद भारत वापस आने के मार्ग बन्द हो जाते हैं। यहाँ Jobs इतने specialised हैं कि आदमी की भारत के लिए उपयोगिता शून्य हो जाती है। यहाँ रहना मजबुरी हो जाती है। वैसे यह इतना खराब भी नहीं है क्योंकि भौतिक सुविधायें एवं धन कई चीजो पर पर्दा डाल देते हैं और अन्तर्मन का दुःख भुलाने के लिए मदिरा का काम करते हैं। मैं समय रहते वापस लौटने का यत्न करुँगा।

विद्यालय कैसा चल रहा है। हाईस्कूल परिणाम के सम्बन्ध में कुछ हो पाया या नहीं। नीरज की कोई सूचना हो तो मुझे लिखियेगा। दीपक जी के क्या हाल हैं? उनको मेरा सादर प्रणाम।

आपका स्वास्थ्य कैसा चल रहा है। इधर आपसे हुई कई भेंटों में आपसे ठीक से उस सम्बन्ध में बात न हो सकी। आशा है आप अपने पुराने रोगों से मुक्त चल रहें होंगे।

विवेक भागवत यदि विदेश जाने को उत्सुक हो तो उससे कहियेगा कि मुझे पत्र लिखे।

प्रवीण के क्या हाल चाल हैं। उसकी तैयारी कैसी है। वह आई० आई० टी० की तैयारी कर रहा है या नहीं। उसको आई० आई० टी० में अच्छा करना चाहिये।

यहाँ अपने आप खाना बना रहा हूँ। हम तीन भारतीय छात्रों ने एक घर (3-Bed room) किराये पर ले रखा है। सब तरह का खाना मिल जाता है। इस सम्बन्ध में कोई परेशानी नहीं है। प्रत्येक छात्र के पास एक कार है। हम भी शीघ्र लेने की सोच रहे हैं। मेरा Telephone (401-789-9536) है। घर पर ही है। मुझे कभी फोन करने की आवश्यकता पड़े तो यहाँ रात में करियेगा। करीब 10.30 घण्टे का अन्तर है।

शशि के भाई का पता अवश्य लिख दीजियेगा। रवि चूँकि थोड़े समय के लिए यहाँ है अतः उसका पता शीघ्र मिल जाये ओ अच्छा होगा उसका Telephnoe अवश्य लिख दीजियेगा। यहाँ फोन बहुत आसानी से मिल जाते है। अमेरिका भर में फोन मिलाना आसान है।

पत्रोत्तर अवश्य दीजियेगा। भारत से पत्रों की हमेशा प्रतीक्षा रहती है।

सादर

स्नेहाकांक्षी

नवनीत

● ● ● ● ● ●

आगरा से चि० प्रतीप का पत्र प्राचार्य जी को कुछ दिनों पूर्व प्राप्त हुआ। व्यक्ति के निर्माण में हम आचार्यों की महत्वपूर्ण भूमिका को चित्रित करते हुए यह पत्र। [सं०]

आगरा

२८-१-८६

आदरणीय,

आचार्य जी, सादर चरण स्पर्श,

मैं कुशल पूर्वक हूँ आशा है कि आप भी विद्यालय परिवार सहित कुशलता से होंगें। आप शायद यह सोच रहे होगें आखिर मैंने इतने दिनों बाद ही आपको पत्र क्यों डाला? किन्तु इसका समुचित उत्तर मेरे पास नहीं है।

मैं यहाँ आजकल आगरा में सी० पी० एम० टी० की तैयारी कर रहा हूँ। अगस्त से कोचिंग Join कर रखी है जो कि मार्च तक समाप्त होगी। पढ़ाई कोचिंग में अच्छी होती है इसी लिए मेरी पढ़ाई भी ठीक चल रही है।

वैसे तो विद्यालय के दिनों आपकी और मेरी व्यक्तिगत बातचीते बहुत ही कम हुई हैं किन्तु प्रातः स्मरण और पूजा में आपकी कही हुई बातें ही मेरा आज मार्ग दर्शन कर रही हैं। इसमें किंचित मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है। 'अपने शिक्षक स्वयं बनों' वाक्य मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ प्रेरणाप्रद रहा है।

वहाँ के हास्टल का महत्व वास्तव में वहाँ से निकलने के बाद ही पता चला है। वहाँ का जैसा वातावरण, दिनचर्या और तमाम न जाने कितनी बातों के लिए जिन्दगी भर तरसना पड़ेगा।

और अन्त में, मैं विद्यालय-परिवार के सभी सदस्यों को नमस्कार करता हूँ। आपको पुनः चरण स्पर्श तथा यह विनती करता हूँ कि पत्र का उत्तर अवश्य और शीघ्र ही दीजियेगा।

आपका
प्रतीप

पता निम्न है—
प्रतीप दुबे
कमरा न० ५२
सपरू छात्रावास, महात्मा गाँधी मार्ग
आगरा—२८२ ००२

● ● ● ● ● ●

कैलाश चन्द्र अग्रवाल

फोन : ३०
बाँगर मऊ
जिला–उन्नाव (उ० प्र०)
पिन कोट नं० २४१५०१
दिनांक १७-७-८४

परम पूज्यनीय आचार्य जी - सादर चरण स्पर्श।

आशा है आप सम्पूर्ण विद्यालय परिवार सहित सकुशल होंगे। आपके शुभाशीर्वाद से में भी यहाँ पर ठीक प्रकार से हूँ।

कल घोषित हुए हाईस्कूल परीक्षा के परीक्षाफल ने मन प्रफुल्लित कर दिया। अपने विद्यालय के होनहार छात्रों से मैं यही आशा एवम् बिश्वास करता हूँ कि वे इसी प्रकार से विद्यालय का नाम रोशन एवम् हम सभी को गौरवान्वित करते रहेगें। साथ में पीछे आने वाले अपने छोटे छात्र भाइयों के लिये प्रेरणा स्रोत सर्वप्रथम इस अतिसुन्दर परिणाम के लिये आपको ढेर सारी बधाइयाँ। वास्तव में जिस विद्यालय का आप जैसे लोगों द्वारा संचालन हो रहा हो, उस विद्यालय का ऐसा परिणाम आना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं और मेरे परिवार वाले मेरे भाग्य को सराहा करते हैं कि मुझे आपकी देख रेख में ऐसे विद्यालय में दो वर्ष अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। जब से परीक्षाफल सुना है तब से ऐसा महसूस हो रहा है कि आपको एवम् अपने चारों छोटे छात्र भाइयों को दौड़ कर बधाइयां दे आऊँ, परन्तु C. P. M. T. के नजदीक आते दिन मुझे पीछे घसीट रहे हैं खैर इस वक्त आप कृपया मेरी हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनायें प्रिय प्रवीण, ज्ञान प्रकाश,

हृदयेश एवं महेश तक अवश्य पहुँचा दीजियेगा। इसके अलावा मैं उनको दे ही क्या सकता हूँ कृपया पूरा परीक्षा फल लिखियेगा। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं B. Sc. I में पास हो गया हूँ। अंक-पत्र अभी प्राप्त नहीं हुआ है। आलकल थोड़ी बहुत C. P. M. T. की तैयारी कर रहा हूँ २६ जुलाई से परीक्षा है। अब आपका अधिक वक्त न लेना चाहूँगा। विश्वास है कि आप मुझे शिक्षाप्रद दो पंक्तियाँ अवश्य लिखेगें। प्रतीक्षा रहेगी। सभी पू० आचार्यों से मेरा सादर प्रणाम।

शेष सब कुशल मंगल है।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
वारिज अग्रवाल
(भूतपूर्व छात्र)

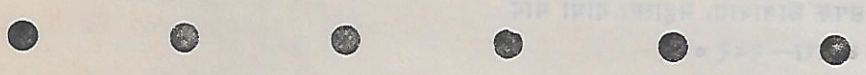

117 L /232 नवीन नगर,
कानपुर–25

आदरणीय त्रिपाठी जी,

सप्रेम नमन।

दस में से चार उच्च स्थान लेकर हाई स्कूल परीक्षा १९८४ में जो गौरव अपने विद्यालय ने अर्जित किया है उसके लिये हम सबका मस्तक ऊँचा उठा है। छात्रों, आचार्यों एवं विद्यालय ने कानपुर का, अपने आदर्शों का एवं पं० दीनदयाल जी का यश बढ़ाया है एतदर्थ बहुत-बहुत बधाइयाँ। पूरा विश्वास है कि भविष्य में भी आप इसे सुरक्षित ही नहीं रखेंगे वरन् वर्धमान बनायेंगे। कृपया छात्रों को भी मेरी भावना से अवगत करा दें। चि० प्रवीण भगवान को मेरा विशेष स्नेह भरा आशीष दें।

सस्नेह—

भवदीय,
जे० पी० श्रीवास्तव

———

'मैं और मेरा किशोर'

–अविनाश कुलकर्णी
द्वादश 'क'

[किशोर मन की छटपटाहट, द्वन्द और नैराश्य की अभिव्यक्ति है यह रचना। शायद वर्तमान की यह घुटन ही आज के किशोर कवि को कुछ लिखने के लिए अनुप्राणित करती है। सं०]

होती है असहनीय पीड़ा, घुटन छटपटाहट मन में।
होता है चित्त प्रसन्न, प्रफुल्लित पल में॥
जब झांकता अतीत के पर्दे में खुद को।
अश्रु छलक आते मेरे सोच कर 'अब' को॥
बड़ा निराला, अनोखा, अजूबा बनने की कल्पना।
सब मिट जाती है क्षण में जैसे पानी पर अल्पना॥
या तो व्यक्ति गिरे तो गिरता ही चला जाये।
और उठे तो वह उठता ही चला जाये॥
यों किसी का उठना और उठ कर गिरना तल में।
ये तोड़ देता है मन को, जैसे टूटे सपना पल में॥
मन का उत्साह, कुछ कर दिखाने की तमन्ना।
धूमिल हो जाती, जैसे धूल से पट जाता है पन्ना॥
दिल में खिन्नता लिये, जब तोड़ बैठता हूँ मन अपना।
बुझती शिखा में घी का काम करता है, प्यारा सा भाषण उनका॥
क्यों कर आती है यह किशोरावस्था जीवन में।
जो विषैली भटकटैया उगा जाती है, सुन्दर मधुवन में॥
हे मेरे भगवान, तू ही दे सकता है मुझे सहारा।
मुझे उबार ले इस नारकीय पीड़ा से मैं हूँ थका-हारा॥

———

अभी बहुत चलना है साथी

–विवेक कुमार सिंह
एकादश 'ख'

[इस वर्ष की अन्तः विद्यालयीन प्रतियोगिताओं में 'अभी बहुत चलना है साथी अभी बहुत चलना।' शीर्षक रचना ने कविता प्रतियोगिता में 'अभिमन्यु वर्ग' (कक्षा एकादश व द्वादश) के चि० विवेक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। भावी कवि की पर्याप्त सम्भावनाओं के साथ स्वस्थ रचना..... सं०]

अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत चलना है।
जीवन के कंटकमय पथ पर, आगे कदम बढ़ाना।
शत झंझावातों से प्रियवर, कभी नहीं घबड़ाना।
ध्येय-मार्ग पर चरण बढ़ाये, अभी बहुत बढ़ना है॥
अभी बहुत चलना है साथी अभी बहुत चलना है॥ १॥
जीवन यदि कुसुमित उपवन है कंटक भी है लिये हुए।
भयाक्रान्त हैं कर्तव्यों से, अंतरमन में डरे हुए।
भयच्युत होकर तुमको प्रियवर संघर्षों से लड़ना है।
अभी बहुत चलना है साथी अभी बहुत चलना है॥ २॥
इतिहास साक्षी है अपना, शत-शत बलिदान कराये हैं।
संस्कृति के चरणों में पलकर हम ध्येय मार्ग के साये हैं।
अनुगामी बन ध्येय मार्ग पर आगे ही बढ़ना है।
अभी बहुत चलना है साथी अभी बहुत चलना है॥ ३॥
जीवन तो सदा अमर है, जीवन की क्या गाथा गायें।
जीवन तो यह घटाकार है, दूर कहाँ को हम जायें।
अमरत्व-स्पृहा त्याज्य करें हम, उद्देश्य-मार्ग पर चलना है।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत चलना है॥ ४॥

संकीर्ण भावनाओं से उठकर, सुरूचि, सुनीति प्रचार करें।
ध्येय-मार्ग पर खुद चल कर, पर दुःख विहीन उपकार करें।
दायित्व यही जीवन का अपने, हमको पालन करना है।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत चलना है ॥ ५ ॥

आनन्द-खोज से उत्तम है, जग में ही हम कुछ काम करें।
धन लिप्सा को छोड़ जगत में, हम अपना कुछ नाम करें।
सफल बनेगा स्वत्व, भूमिका, अतीन्द्रिय हमको बनना है।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत चलना है ॥ ६ ॥

युगों-युगों से जो कुछ कमियाँ पूर्ण हमें करना है।
आवश्यक यदि होगा मरना, आगे बढ़ मरना है।
आदर्शों का अक्षय संग्रह, हमको निश्चित करना है।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत चलना है ॥ ७ ॥

यह विवेक है, यही जान है, यही यन्त्र है जीवन का।
अनवरत पथिक बन, चले मार्ग पर, उद्‌गार यही मेरे मन का।
उद्‌बोधन करता 'विवेक' अविवेकी, मनन आपको करना है।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत चलना है ॥ ८ ॥

———

विचार व्यर्थ के मनोरंजन समझे जाते हैं। पर वस्तुतः उनकी सृजनात्मक शक्ति अनन्त है। वे एक प्रकार के चुम्बक हैं जो अपने अनुरूप परिस्थियों को कहीं से भी खींच बुलाते हैं। साधन किसी को उपहार में नहीं मिले और यदि मिले हों तो टिके नहीं। अपना पेट ही आहार पचाता और जीवित रहने योग्य रस रक्त का उत्पादन करता है। ठीक इसी प्रकार विचार प्रवाह ही व्यक्ति का स्तर विनिर्मित करता है। क्षमताएँ उसी के आधार पर उत्पन्न होती है। पराक्रम के प्रवाह को दिशाधारा उसी से मिलती है।

विचारणा द्वारा विनिर्मित व्यक्तित्व और पराक्रम ही वह अवसर प्रदान करते हैं। जैसा कि सोचा और चाहा गया था।

विचारों की सृजनात्मक क्षमता समझना और उन्हें सही दिशा में गतिशील करना ही वह सौभाग्य है जिसे उपलब्ध पारसमणि प्राप्त कराती रहती है।

व्यवधानों की इस आंधी में.....

— अरुण शुक्ल
द्वादश 'क'

[अन्तः विद्यालयीन 'कविता-प्रतियोगिता' में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली यह रचना चि० अरुण के अन्तस में कविता की 'अंगड़ाई' का उद्भास है। —स०]

अभी बहुत चलना है साथी,
अभी बहुत चलना है।
व्यवधानों की इस आंधी में,
हमें नहीं बहना है।
अत्याचारों के सम्मुख झुक,
उसे नहीं सहना है॥

बलिदानी का वह चोंगा,
अब हमने भी पहना है।
फाँसी का फन्दा ही अब,
हम वीरों का गहना है।
विदेशियों की संस्कृति की,
नीवों को अब ढहना है॥

लोकतन्त्र के भावों का,
ताना बाना बुनना है।
गान्धी के आदर्शों पर,
शाश्वत हमकों चलना है।
अभी बहुत चलना है साथी,
अभी बहुत चलना है॥

———

जल गया भूगोल सारा

—पंकज कुमार
द्वादश 'क'

[कुछ कहना चाहते हैं— चि० पंकज। कविता-प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले किशोर कवि की बोलती हुई रचना। —सं०]

अभी बहुत चलना है साथी,
अभी बहुत पतझड़ मिलेंगे,
विपदाओं के वो सात चक्र भी,
मिल सकते हैं, इस काल गृह में।

कुशल बनकर अभिमन्यु से भी,
तुम से ही चक्र सब भेदे जायें,
स्मरण रहे तुम्हें यह विषय भी,
सातवाँ चक्र कहीं रह न जाये।
अभी बहुत चलना है साथी अभी बहुत.....।

बहुबाधा के कई रूप मिलेंगे,—
सर्प के तेवर बदल, तुम्हें डसने को चलेंगे,
आँधियों का साँय साँय, बादलों का भाँय भाँय,
कँपकँपा देंगे तुम्हें वो, जर्जरा देंगे तुम्हें वो।

ले शिवा की शक्ति तन में,
पी जा कलुष की विष धारा,
विस्मृत करके कंटकों को,
फिर चमन की पहचान कर ले।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत.....।

डगमगायी इस घड़ी में
इस पनपती क्रूर बेला में,
इस धधकते शोला वन में,
बन के जल कण तू बुझा जा।

जल गयी मन भावना कि–
जल गया भूगोल सारा,
बुझ गये सब ज्योति पुँज,
मिट गया इतिहास हमारा।

हो सके तो याद कर लो–
वो पुरानी, वो जवानी,
गाँधी, तिलक, गोखले, सुभाष की
जिन्दगानी, मेरे जुबानी।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत.....।

साक्षी है इतिहास हमारा–
जानता है, विश्व सारा,
उदित हुआ हो जब सूर्य कहीं भी,
ऐसा है, यह देश हमारा।

ये न सोचो कि पा चुके हो,
पाना था जो इस भुवन में,
अभी बहुत बंजर पड़े हैं,
बनकर बसंत, बहार ला जा।
अभी बहुत चलना है साथी, अभी बहुत पतझड़ मिलेंगे।

———

लक्ष्य तो अन्जान है।

--प्रभात अवस्थी
एकादश 'क'

[कविता-प्रतियोगिता में 'सांत्वना-स्थान' पाने वाले 'अभिमन्यु वर्ग' के किशोर कवि चि० प्रभात की कविता —सं०]

अभी बहुत चलना है साथी अभी बहुत।

थके हुए पगों को विश्राम न दो,
अभी बहुत चलना है साथी अभी बहुत।

प्रगति अभी दूर ही है, दूर ही है लक्ष्य अभी;
जिस पर जय करनी है, दूर वह पंथ भी।
क्षितिज के उस पार वह बादलों का देश होगा;
नहीं सोच अरे पथिक पंथ में न सोच अभी॥

लक्ष्य तो अन्जान है, हो गई है शाम बहुत।
अभी बहुत……

अरे यह दुर्दशा देख इस पृथ्वी मंडल की;
जहाँ मुद्रा है अधिक, जब बात होती मानव की।
स्वप्न में न घूम पंथी, आँख अपनी खोल अभी;
मानव रक्षा के हित, बोल अपने बोल अभी।
स्वप्न तो हैं धोखा, हकीकत को न भूल अभी;
करके बात स्पप्नों के कष्टों को न भूल अभी॥

हैं अभी पृथ्वी रुआंसी, रो रही है नियति बहुत।
अभी बहुत··· ···

करना है उद्धार, इस भूले जीवन का भी अभी,
जीवन मरण का निर्णय करने की घड़ी अभी।
मसल दे आकाश, पृथ्वी को तू चकनाचूर कर दे,
मार्ग में बाधाएं आएं, उनको तू खुद दूर कर दे।
शक्ति धारण करने की आयी है घड़ी अभी,
मृत्यु वरण करने का आया है समय अभी।
वह रहा, वह लक्ष्य है तू लक्ष्य का संधान कर ले,
मृत्यु से भी लड़ने की आयी है घड़ी अभी।

हैं प्रसन्न दिग्दिगंत हँस रही दिशाएं हैं,—
जीत पर है तेरी इस संसार का तृण-तृण भी खुश।
जीत है मानव की मानवता की जीत है ये,
किंतु सत्य की राह पर चलना है बहुत,
मानव का यह विकास करना है अभी बहुत।

———

हे प्रभो ! जब किसी कष्ट प्रद और संकट की घड़ी में मुझे कहीं से सहायता न मिले तो मैं हिम्मत न हारूँ। किसी और श्रोत से सहायता की याचना न करूँ, न उन घड़ियों में मेरा मनोबल क्षीण होने पाये। हे प्रभो ! मुझे ऐसी दृढ़ता और शक्ति देना जिससे कि मैं कठिन घडियों में भी संकटों और समस्याओं के सामने भी दृढ़ रह सकूं, और तुम्हें हर घड़ी अपने साथ देखते हुए उन्हें हँसी खेल समझकर अपने चित्त को हल्का रखूं। मैं बस यही चाहता हूँ।

प्यार ही हमारा हो एक देवता

—आशुतोष पाण्डेय
एकादश 'क'

['प्यार ही हमारा हो एक देवता।' के रचनाकार हैं चि० आशुतोष। विद्यालयीन कविता प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली यह रचना '८६ के इस 'अन्तर्राष्ट्रीय शांति वर्ष' में शान्ति और सद्भाव का संदेश देती है। ---स०]

आओ बन्धु देश को सँवार लें,
आदमी को आदमी का प्यार दें।
मातृभूमि के हैं हम पर ऋण बड़े,
आओ कर्म से उन्हें उतार दें॥

बिलख रही युगों-युगों से मनुजता,
सजल नयन मनुष्य के दुलार लें।
वार झेलते शताब्दियाँ गयी,
इस देश के सेवार्थ जीवन तार दें॥

अब तो स्कन्धों पर रक्षा भार लें,
अपने वतन के वासियों के हैं दुःख बहुत।
शक्ति भर सबका हम उद्धार करें,
आदमी को आदमी का प्यार दें॥

द्वेष और शोषण की वायु अब शान्त हो,
देश में प्रेम पारस्परिक नितान्त हो।
हिंसा और युद्धों की नहीं आवश्यकता,
प्यार ही हमारा हो एक देवता॥

पूजन का लक्ष्य हो मानवता,
वैमनस्य का न हो निशाँ पता।
अब न हो विखण्डन, न विषाद हो,
सर्वत्र एक सुखदायी आह्लाद हो।।

वह स्वर्णिम प्रासाद तो अभी हमने देखा नहीं,
जिसकी ध्वजा पर हो अंकित त्याग, भोग नहीं।
हाँ मित्र, वह प्रासाद है दूरस्थ बहुत,
थोड़ा नहीं, चलना है अभी बहुत।।

पथ अभी चलने को बहुत शेष है,
मात्र आश्रय हमारा वह विश्वेश है।
अभी चलना है बहुत, पर राह का भी अन्त है,
चलते चलें जीतने को विश्व राह अनन्त हैं।।

———

सृष्टा ने जन्म के समय ही एक पारसमणि तुम्हें प्रदान की है। जिसके आजीवन छिनने या गुमने का कोई खतरा नहीं है।

इस पारसमणि का नाम है— विचारणा। जो मस्तिष्क की बहुमूल्य पिटारी में इस प्रकार सुरक्षित रखी रहती है जहाँ किसी चोर की पहुँच न हो सके। इसके रहते तुम्हें किसी पराभव का संकट आने की आशंका नहीं है।

आओ इस देश को संवार लें

--संचय धूपड़
द्वादश 'क'

आओ इस देश को सँवार लें,
आदमी को आदमी का प्यार दें।
द्वेष - कलुष को छोड़ दें हम,
खुद प्यार दें और प्यार लें॥

इस पावन धरती पर पसीना बहा,–
हम अपनी तकदीर को निखार लें।
हम चाहें अपने दृढ़ संकल्पों से,–
अंगारों पर भी फूलों को पसार दें॥

आपस में मिल संगठित होकर,
मानवता को प्रेम का उपचार दें।
दुःखों की इस कारा से हटकर,
इस धरती की दरिद्रता को उजाड़ दें॥

धर्म जाति के बन्धन छोड़,
इस देश के कोने-कोने पर।
'हम सब एक हैं'–
इस प्रश्न को उभार दें॥

अपनी मातृ-भूमि की पूर्ण रक्षा के लिए,
आओ दृढ़-प्रतिज्ञा एक बार लें।
वीरों की इस अमर धरती पर,
अपना लहू भी अब वार दें॥

मैत्री के इस वातावरण में,
अपने भेदों को बिसार दें।
एक भाषा एक रूप संगठित होकर,
इस विश्व को एक मिसाल दें॥

हम आग का एक शोला बनकर—
हर खतरे को भी टाल दें।
विज्ञान के इस युग में विश्व को,
भीषण विस्फोट से उबार लें॥

आपत्तियों की इस भीषण घड़ी से,
अपने देश को निकाल लें।
आओ इस देश को सँवार लें,
आदमी को आदमी का प्यार दें॥

———

हे प्रभो ! मेरी केवल एक ही कामना है कि मैं संकटों से डर कर भागू नहीं, उनका सामना करूँ। इसलिये मेरी यह प्रार्थना नहीं है कि संकट के समय तुम मेरी रक्षा करो बल्कि मैं तो इतना चाहता हूं कि तुम उससे जूझने का बल दो। मैं यह भी नहीं चाहता कि जब दुःख सन्ताप से मेरा चित्त व्यथित हो जाय तब तुम मुझे सान्त्वना दो। मैं अपनी अंजलि के भाव सुमन तुम्हारे चरणों में अर्पित करते हुये इतना ही माँगता हूं कि तुम मुझे अपने दुःखों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति दो।

जाड़ा आया जाड़ा आया

—राजेश शुक्ल
अष्टम 'क'

[अन्तः विद्यालयीन कविता-प्रतियोगिता में 'भरत वर्ग' के चि० राजेश की 'जाड़ा आया - जाड़ा आया।' शीर्षक रचना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बाल कवि की संवेदनाशीलता दृष्टव्य है। —सं०]

जाड़ा आया – जाड़ा आया,
साथ में अपने खुशियाँ लाया।
रंग बिरंगे फूल खिलाया,
तन-मन में चंचलता लाया।
धरती को भी स्वर्ग बनाया,
जाड़ा आया – जाड़ा आया॥

स्वच्छ गली और स्वच्छ नगर,
तन-मन को भी स्वच्छ बनाया।
बच्चों में खुशियों को लाया,
जगह जगह उत्साह बढ़ाया,
जाड़ा आया - जाड़ा आया॥

पर मेरे ऐसे भाई ने–
जिसने सम्पत्ति नहीं बनाई।
ठिठुर रहे सड़कों पर नंगे–
लिये सत्य – ईमान – कमाई।
ईश्वर को भी तरस न आया,
जाड़ा आया - जाड़ा आया॥

चार माह की ये पावन ऋतु,
करती हमको आकर्षित।
परन्तु कहीं है सुख की घड़ियाँ,
कहीं भरा है दुख ही दुख।
सुख और दुख का महल बनाया,
——— जाड़ा आया - जाड़ा आया॥

हमको प्यार है !

--आदर्शकुमार श्रीवास्तव
षष्ठ 'ख'

[चि० आदर्श की रचना 'भरत वर्ग' में तृतीय स्थान पर रही। विद्यालय परिवार में आयु से छोटे व भावना में बड़े बाल कवि की रचना ··· ··· —सं०]

इस धरती से हमको प्यार है,
गंगा - यमुना नदियाँ बहती।
फल - फूलों से लदी है धरती॥
इस धरती पर जन्म लिया है,
माता इसे पुकारेगें॥ १॥

शत्रुओं ने आँख उठायी,
हमने जान की बाजी लगायी।
प्राणों की परवाह नहीं की,
शत्रुओं को मार - भगाया।
भारत माँ की रक्षा की॥ २॥

इस धरती से हमको प्यार है,
इस धरती पर अन्न उगाया।
धरती को हरा - भरा बनाया,
भारत माँ की शान बढ़ायी।
इस धरती से हमको प्यार है॥ ३॥

जाड़ा आया

–पंकज 'भारती'
कक्षा–अष्टम 'क'

[चि पंकज की इस रचना ने 'भरत वर्ग' की कविता प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बाल-कवि को जाड़े की सुखद अनुभूति है। –सं०]

जाड़ा आया – जाड़ा आया।
घर - बाहर है कुहरा छाया॥
चार मास उल्लास पर्व है।
फिर गर्मी का भीषण दुःख है॥
जाड़ा बहुत भला है हमको।
दुःख में सुख देता है सबको॥

पौधों के जीवन को दान।
गतिमय हो मानव के प्राण।
देता है जाड़ा भगवान–
जाड़ा आया – जाड़ा आया।
घर - घर में खुशहाली लाया।
प्यारे त्योहारों को लाया।
सबने मिलकर मीठा खाया॥

सबने जाड़े का गुण गाया।
जाड़ा सब ऋतुओं का प्राण।
देता हम सबको वरदान।
सब ऋतुओं से प्यारा।
मेरे दिल का न्यारा॥
यह आता है बार - बार,
बनकर हम सबका सहारा।
जाड़ा आया – जाड़ा आया॥

बापू के प्रति

–दिनेश मिश्रा
दशम 'क'

हे ! नवभारत के निर्माता,–
हे ! दीनबन्धु सुख के दाता।
हे ! हरिजन के दुःखहर्ता,–
हे ! रामराज्य के अभियन्ता ।।

आवश्यकता है तुम्हारे जनम की।
आवश्यकता है तुम्हारे मनन की ।।

क्या देश आज त्रस्त नहीं है ?
क्या मानव समाज पथभ्रष्ट नहीं है ?
क्या हम सब वही भारतवासी हैं ?
जो विकसित भारत के अभिलाषी हैं।

नहीं - नहीं यह सत्य नहीं है।
हम सब में मानवता नहीं है ।।

मानवता समाप्त हो चुकी है,–
भाई-भाई में सौहार्द नहीं है।
मित्र-मित्र में विश्वास नहीं है,–
क्या नवभारत में यह सब नहीं है ?

शायद आधुनिकता के नाम का,–
सच्चा स्वरूप यही है ।।

चारों ओर छीना झपटी है,–
सर्वत्र त्राहि - त्राहि मची है।
अतः मानवधर्म जगाने को,–
रामराज्य फैलाने को ।।

आवश्यकता है तुम्हारे जनम की।
आवश्यकता है तुम्हारे मनन की ।।

जाड़े की कविता

—सतीश चन्द्र गुप्त
सप्तम 'ख'

चि० सतीश की जाड़े की कविता, 'भरत वर्ग' में तृतीय स्थान पर रही। कविता कहती है कि कवि और मैं अनुभव के साथ पकती हूं। (सं०)

जाड़ा आया – जाड़ा आया,
स्वेटर, रजाई, कम्बल लाया,
गरमी और बरसात भगाया।
होली - दीपावली संग लाया।

जाड़ा आया – जाड़ा आया,
खूब खुशियां है ये लाया,
मेरे मन आनन्द समाया।
जैसे हमने सब कुछ पाया।
इसने मन भी बहलाया।

जाड़ा आया – जाड़ा आया,
रात बड़ी दिन छोटे आये,
साथ ठंड भी खूब है लाये,
घर-घर में अलाव जलवाया।

इस धरती से हमको प्यार !

--आशीष सिंह
अष्टम 'क'

['भरत वर्ग' में द्वितीय स्थान पर रही चि० आशीष की कविता ··· ··· —सं०]

इस धरती से हमको प्यार–
इसके पाँव पखारे सागर।
इसका ताज हिमालय, नागर,
गंगा इसका सुन्दर हार॥

इस धरती से हमको प्यार–
यह धरती है कृष्ण-राम की।
यह जननी दधीचि, कर्ण की,
गाँधी, सुभाष की जन्मभूमि॥
इस धरती में जन्में वीर अपार,
इस धरती से हमको प्यार।

यह तपोभूमि है मुनियों की,
यह कर्मभूमि है अर्जुन की॥
यह युद्धभूमि है वीरों की,–
यह हरित भूमि है कृषकों की।
इसमें ऊर्जा का है प्रसार–
इस धरती से हमको प्यार॥

ऐसी धरती में मेरा जन्म,–
इसका मुझे अभिमान है।
ऐसी पुण्य धरती को मेरा,
शत-शत बार प्रणाम है॥
इस धरती से हमको प्यार।

———

हाजिरजवाब वैज्ञानिक

—पुनीत विद्यार्थी
एकादश क'

सामान्यतया लोग सोचते हैं कि वैज्ञानिक नीरस होते हैं परन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जो सरस भी थे। प्रस्तुत हैं कुछ संस्मरण:

● आइजक न्यूटन के फटे कोट के एक छेद की ओर संकेत करते हुए एक व्यक्ति ने कहा, 'न्यूटन साहब! इस छेद से आपकी निर्धनता झांक रही है"

'जी नहीं आपकी मूर्खता अंदर जा रही है" न्यूटन का जबाब था।

● एक सभा में आईस्टीन जैसे ही भाषण देने को खड़े हुए पीछे से आवज आयी—

'मिस्टर आईस्टीन।, आपको याद होगा, आपके पिता गधे की सवारी करते थे।"

आईस्टीन ने कहा, "जी हाँ, याद है लेकिन आप उन्हे छोड कर क्यों चले आये ?"

● प्रसिद्ध इटालियन वैज्ञानिक गैलेलियो से उनके एक मित्र ने पूछा, "कृपया विश्व के दस श्रेष्ठ वैज्ञानिकों के नाम बतायें।"

"यह मुझसे सम्भव नहीं है क्योंकि मैंने अभी तक कोई आविष्कार नहीं किया है।" गैलीलियो का उत्तर था।

● एक सभा में डार्विन के विरोधी ने कहा, "मैं डार्विन का दिमाग बाहर निकाल दूँगा।"

"जी हाँ आपको उसकी सख्त जरूरत भी है"

डार्विन ने कहा।

● एकबार अलैक्जेंडर ग्राहम बैल ने अपने मित्र से कहा, "टेलीफोन के आविष्कार के बाद अधिकांश विवाहित पुरुष मुझसे नाराज हैं।"

"दरअसल उनकी पत्नियाँ फोन पर ही उनका दिमाग चाटती रहती हैं"

● एकबार सी० वी० रमन से एक वृद्ध बोले, "आज के नये वैज्ञानिक पुराने अविष्कारों को ही तो नया रूप दे रहे हैं।"

"महोदय ! माफ कीजियेगा, वे आपके द्वारा चलायी गई परम्परा को ही आगे बढ़ा रहे हैं।" झट से डा० रमन ने कहा।

विश्व पुरुष महात्मा गांधी ने कहा था—

उद्योगवाद : मानव-जाति के लिए अभिशाप

प्रस्तुति—विवेक आनन्द
अष्टम 'क'

मुझे भय है कि उद्योगवाद मानव जाति के लिए अभिशाप बन जाने वाला है। उद्योगवाद सर्वथा इस बात पर निर्भर है कि आपमें दूसरों का शोषण करने की कितनी क्षमता है, विदेशी मंडिया आपके लिये कहाँ तक खुली हैं और प्रतिस्पर्धियों का कितना अभाव है। इंग्लैण्ड में ये बातें दिनोंदिन बढ़ रही है। फलतः वहाँ पर बेकारी बढ़ रही है। भारतीय बहिष्कार तो केवल मामूली बात है और जब इंग्लैण्ड की यह हालत है तो इस विशाल देश भारत के औद्योगीकरण होने से लाभ होने की आशा ही नहीं की जा सकती। सच तो यह है कि जब भारत दूसरों का शोषण करने लगेगा—और भारत में औद्योगीकरण हो गया तो वह जरूर शोषण करेगा—तब वह अन्य राष्ट्रों के लिए शाप और संसार के लिए खतरा बन जायेगा। तब दूसरे राष्ट्रों का शोषण करने के लिए भारत के कल-कारखानों को बढ़ाने का विचार मैं क्यों करूँ ? क्या आप यह करुण स्थिति नहीं देख रहे हैं कि हम अपने ३० करोड बेकारों के लिए लाभ जुटा सकते हैं परन्तु इंग्लैण्ड अपने ३० लाख के लिए काम नहीं जुटा सकता, और उसके सामने ऐसी समस्या खड़ी है जिसके आगे इंग्लैण्ड के बड़े से बड़े बुद्धिमान चक्कर खा रहे हैं। उद्योगवाद का भविष्य अंधकार मय है। अमेरिका, जापान, फ्रांस और जर्मनी इंग्लैण्ड के सफल प्रतिद्वन्दी हैं। और जैसे भारत में जागृति हो गयी है वैसे दक्षिण अफ्रीका में भी जागृति होगी। और वहाँ तो प्राकृतिक खनिज और मानवीय साधन भी कहीं अधिक विपुल मात्रा में हैं। अफ्रीका की बलवान जातियों के सामने कड़ावर अंग्रेज बिल्कुल पिद्दी जैसे दिखाई देते हैं। आप कहेंगे कि अन्त में अफ्रीका वाले भले जंगली ही हैं। वे भले जरूर हैं परन्तु जंगली नहीं हैं और शायद कुछ ही वर्षों में पश्चिमी राष्ट्रों को अफ्रीका में अपने माल का सस्ता बाजार मिलना बन्द हो सकता है। और यदि उद्योगवाद का भविष्य पश्चिम के लिए अंधकारमय है तो भारत के लिए क्या वह और अधिक अंधकारमय नहीं होगा। आज की इस अराजकता और अंधाधुंधी का कारण क्या है ? मैं कहूँगा कि बलवान राष्ट्रों द्वारा निर्बल राष्ट्रों का शोषण नहीं अपितु एक ही परिवार के राष्ट्रों द्वारा आपस में एक दूसरे का शोषण इस अराजकता और अन्धाधुन्धी का कारण है। और यन्त्रों ने ही राष्ट्रों को दूसरे राष्ट्रों का शोषण करने की शक्ति दी है। यन्त्र अपने-आप में एक जड़ चीज है और उसका अच्छा या बुरा दोनों प्रकार से उपयोग हो सकता है। लेकिन हम जानते हैं कि इसका बुरा उपयोग आसानी से कर लिया जाता है।

निस्सन्देह पश्चिमी देशों में उद्योगवाद ओर दूसरी प्रजाओं के शोषण की हद हो चुकी है। हकीकत यह है कि यह औद्योगिक सभ्यता इसलिए एक रोग है कि उसमें निरी बुराई ही बुराई भरी है। मनोहर नारों और शब्दों से हमें भ्रम में न पड़ जाना चाहिए। मेरा तार या जहाज से कोई विरोध नहीं है वे यदि उद्योगवाद तथा उससे सम्बन्धित अन्य कारखानों और धन्धों के बिना अगर टिक सकें तो भला रहे। वे स्वयं अपने में लक्ष्य नहीं है। वे मानव जाति के स्थायी कल्याण के लिए किसी भी प्रकार से अनिवार्य नहीं हैं। चूँकि हम भाप और बिजली का उपयोग करना जानते हैं, इसलिए उचित अवसर आने पर तथा उद्योगवाद से बचना सीख जाने पर, हमें उनका उपयोग करने योग्य बन जाना चाहिए। इसलिए हमारी चेष्टा किसी भी कीमत पर उद्योगवाद को नष्ट करने की होनी चाहिए।

दुनिया में ऐसे विवेकी पुरुषों की सख्या लगातार बढ़ रही है जो इस सभ्यता को–जिसके एक छोर पर तो भौतिक समृद्धि की कभी तृप्त न होने वाली आकांक्षा है और दूसरे छोर पर उसके फलस्वरुप पैदा होने वाला युद्ध है–अविश्वास की निगाहों से देखते हैं। लेकिन यह सभ्यता अच्छी हो या बुरी, भारत को पश्चिमी जैसा उद्योगीकरण करने की कोई आवश्यकता नहीं है। पश्चिमी सभ्यता शहरी सभ्यता है। इंग्लैण्ड और इटली जैसे देश अपनी व्यवस्थाओं का शहरीकरण कर सकते हैं। अमेरिका बहुत बड़ा देश है परन्तु वहाँ की आबादी अत्यन्त कम है। इसलिये उसे भी शायद वैसा ही करना पड़ेगा। लेकिन कोई भी आदमी सोचेगा तो यह मानेगा कि भारत जैसे बड़े देश को जिसकी आबादी बहुत ज्यादा है और ग्राम्य जीवन की ऐसी पुरानी परम्पराएँ पोषित हुई हैं जो उसकी आवश्यकताओं को बराबर पूरा करती आयी हैं, उद्योगों के पश्चिमी नमूने की नकल करने की कोई जरुरत नहीं और उसे न ऐसी नकल करनी चाहिए। विशेष परिस्थितियों वाले एक देश के लिये जो बातें अच्छी हों वे ही दूसरे भिन्न परिस्थितियों वाले देश के लिये भी अच्छी हों, यह जरूरी नहीं। जो चीज किसी एक आदमी के लिये पोषक आहार का कार्य करती है वही दूसरे के लिए जहर जैसी सिद्ध होती है। किसी देश की संस्कृति को निर्धारित करने में उसके प्राकृतिक भूगोल का बहुत बड़ा हिस्सा होता है। ध्रुव प्रदेश के निवासियों के लिये कोट जरूरी हो सकता है परन्तु भूमध्य रेखा के निवासियों का तो उससे दम ही घुट जायेगा।

हमारा वर्तमान दुःख बेशक असह्य है। दरिद्रता तो किसी भी हालत में जानी ही चाहिये। लेकिन उसका इलाज उद्योगवाद नहीं है। बुराई बैलगाड़ी के उपयोग में नहीं है। बुराई हमारे स्वार्थ में है और अपने पड़ोसी के प्रति उदारता के अभाव में है। यदि हममें पड़ोसियों के प्रति प्रेम नहीं है तो किसी भी प्रकार का परिवर्तन–वह कैसा भी क्रान्तिकारी क्यों न हो-हमें लाभ नहीं पहुँचा सकता।

अगर मुझमें शक्ति होती तो इस पद्धति को मैं आज ही नष्ट कर देता। अगर मुझे विश्वास होता कि अत्यन्त संहारक अस्त्रों से इसका नाश सम्भव है तो मैं उन अस्त्रों का प्रयोग अवश्य करता। उन अस्त्रों का व्यवहार मैं यह सोचकर कर ही नहीं सकता कि वे इस पद्धति को कायम रखेंगे, भले आज के शासकों का नाश वे कर दें। जो लोग पद्धतियों के बदले उनके नियमकों का नाश करना चाहते है वे खुद उनके पंजे में पड़कर, उन लोगों से बुरे बन जाते हैं, जिनका वे इस गलत विश्वास के कारण नाश करते है कि आदमियों के साथ उनकी नीति भी मर जाती है, जोकि पाप के मूल को नहीं पहचानते।

बड़े पैमाने पर उद्योगीकरण करने का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि ज्यों-ज्यों प्रतिस्पर्धी और बाजार की समस्याएँ खड़ी होंगी, त्यों-त्यों गाँवों का प्रकट या अप्रकट शोषण होगा। इस लिए हमें अपनी शक्ति

इसी प्रयत्न पर केन्द्रित करनी चाहिये कि गाँव स्वयं पूर्ण बनें और वस्तुओं का निर्माण एवं उत्पादन अपने उपयोग के लिए करें। यदि उत्पादन की ऐसी पद्धति स्वीकार कर ली जाये तो फिर गाँवों के ऐसे आधुनिक यन्त्रों और औजारों का उपयोग खुशी से करें, जिन्हें वे बना सकते हों और जिनका उपयोग उन्हें आर्थिक दृष्टि से पुसा सकता हो उस पर आपत्ति नहीं की जा सकती। अलबत्ता उनका उपयोग दूसरों के शोषण के लिए नहीं होना चाहिए।

मैं नहीं मानता कि उद्योगीकरण हर हालत में किसी भी देश के लिए जरूरी है। भारत के लिए तो वह और भी कम जरूरी है। मेरा विश्वास है कि आजाद भारत दुःख से कराहती हुई दुनिया के प्रति अपना कर्त्तव्य लाखों गाँवों का विकास करके और दुनिया के प्रति मित्रता का व्यवहार करके सादा परन्तु उदात जीवन अपना कर ही पूरा कर सकता है। धन की पूजा ने हमारे ऊपर भौतिक समृद्धि के जिस जटिल और शीघ्रगामी जीवन को लाद दिया है, उसके साथ उच्च चिन्तन' का मेल नहीं खाता। जीवन का सम्पूर्ण सौन्दर्य तभी खिल सकता है जब हम उच्च कोटि का जीवन जीना सीखें।

किसी अलग-थलग रहने वाले देश के लिए, भले वह भूविस्तार और जन संख्या की दृष्टि से कितना भी बड़ा क्यों न हो, ऐसी दुनिया में जो सिर से पाँव तक शस्त्रास्त्रों से लदी है और जिसमें सर्वत्र वैभव-विलास का ही वातावरण नजर आता है, ऐसा सादा जीवन जीना संभव है या नहीं—यह ऐसा सवाल है जो संशयशील आदमी के मन में अवश्य उठ सकता है-लेकिन इसका उत्तर सीधा है। यदि सादा जीवन जीने योग्य है तो यह प्रयत्न करने योग्य भी है, चाहे वह प्रत्यन किसी एक ही व्यक्ति या किसी एक ही समुदाय द्वारा क्यों न किया जाये।

बेशक यूरोपीय सभ्यता यूरोप वालों के लिए अच्छी है, लेकिन अगर हम उसकी नकल करेंगे तो वह भारत को बरबाद कर देगी। मेरा यह मतलब नहीं कि उस सभ्यता में जो कुछ अच्छा हो और हमारे पचाने लायक हो उसे अपना कर हम न पचायें। न मेरे कहने का यह मतलब है कि यूरोपीय सभ्यता में जो कुछ बुराई बैठ गयी है उसका यूरोप के लोगों को त्याग नहीं करना पड़ेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं की निरन्तर खोज उनकी वृद्धि यूरोपीय सभ्यता में घुसी हुई एक ऐसी बुराई है और मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि यूरोप के लोग जिन सुख-सुविधाओं के दास बनते जा रहे हैं, उनके बोझ के नीचे दबकर यदि उन्हें नष्ट नहीं होना है तो उनको अपने आज के दृष्टिकोण में सुधार करना पड़ेगा। संभव है मेरी यह राय गलत हो परन्तु मैं यह जानता हूँ कि भारत के लिए इस सुनहली माया के पीछे दौड़ना निश्चित मृत्यु को निमन्त्रण देने के समान होगा। हम एक पश्चिमी दार्शनिक के विचार को अपने हृदय पर अंकित करलें "सादा जीवन और उच्च विचार"। आज इतना निश्चित है कि भारत के करोड़ों लोग ऊँचे रहन-सहन वाला जीवन नहीं जी सकते और हम मुट्ठीभर लोग जो आम जनता के लिए सोचने विचारने का दावा करते हैं, उच्च स्तर के जीवन की मिथ्या शोध में उच्च विचार को भी भूलने के खतरे में बह जायेंगे।

मैंने अपने कई देश बन्धुओं को यह कहते सुना है कि हम अमेरिका का धन तो प्राप्त करेंगे, परन्तु उसकी नीतियों को नहीं अपनायेंगे। मैं यह कहने की हिम्मत रखता हूँ कि अगर ऐसा प्रयत्न किया गया तो वह जरूर असफल होगा। हम एक ही क्षण में बुद्धिमान, शान्त और और क्रोधी नहीं हो सकते। ..... ऐसी भूमि में देवों के निवास की कल्पना नहीं की जा सकती, जो मिलों और कारखानों के धुएँ और शोरगुल से घृणा के

लायक बना दी गयी है और जिसके मार्गों पर मुशाफिरों की भीड़ से भरी बेशुमार मोटर–गाड़ियों को खींचते रहने वाले इंजन हमेशा तेजी से दौड़ते रहते हैं।

पं० नेहरू उद्योगीकरण इसलिए चाहते थे कि उनके खयाल में अगर वह समाजवादी ढंग का हो जाये तो वह पूँजीवाद से मुक्त रहेगा। मेरी खुद की दृष्टि यह है कि उद्योगवाद में ये बुराइयाँ जन्मजात हैं और उद्योगों पर समाज के स्वामित्व का कितना ही विस्तार क्यों न किया जाये, तो भी ये बुराइयाँ दूर नहीं की जा सकती।

रूस की ओर जब मैं दृष्टिपात करता हूँ तो वहाँ का जीवन मुझे आकर्षक नहीं लगता। बाइबिल के शब्दों में कहूँ तो 'मनुष्य सारी दुनिया को जीत ले परन्तु अपनी आत्मा को खो दे, तो उसे उससे क्या फायदा होगा। आधुनिक भाषा में कहें तो मनुष्य अपना व्यक्तित्व खो दे और यन्त्र की एक जड़ कील की भाँति बन जाए, तो उसके मानवीय गौरव के लिए यह कलंक की चीज होगी। में चाहता हूँ कि हर एक व्यक्ति समाज का पूर्ण विकसित, पूर्ण संस्कारी सदस्य बन जाये। गाँवों को स्वावलम्बी और स्वयंपूर्ण बनना ही चाहिये। यदि अहिंसा से ही काम लेना है, तो कोई दूसरा हल मैं देखता ही नहीं। मेरे मन में तो इस विषय में लेश मात्र भी सन्देह नहीं है।

ईश्वर हिन्दुस्तान को पश्चिम के तरीके से यन्त्र युग में प्रवेश करने से बचाये। आज एक छोटे से द्वीप (इंग्लैण्ड) के आर्थिक साम्राज्यवाद ने सारे ससार को गुलामी की जंजीरों में बांध रखा है। यदि ३३ करोड़ लोगों का यह समुदाय भी इसी मार्ग को अपना ले तो वह सम्पूर्ण संसार को तबाह कर देगा।

भारत का भविष्य पश्चिम के उस रक्त रंजित मार्ग पर आधार नहीं रखता जिस पर चलते–चलते आज वह थका हुआ सा मालूम देता है, किन्तु शान्ति के उस अहिंसक मार्ग पर आधार रखता है जिसकी प्राप्ति केवल सादगी और धार्मिक जीवन से होती है। भारतवर्ष के सामने इस समय उसकी आत्मा के नाश का खतरा मुह बाये खडा है। आत्मा खोकर वह जीवित नहीं रह सकता। इसलिए आलसी के समान निरुपाय होकर वह यह नहीं कह सकता कि "पश्चिम की इस बाढ़ से मैं बच नहीं सकता" अपने संसार की भलाई रोकने के लिए उस बाढ़ को रोकने योग्य शक्तिशाली उसे बनाना ही होगा।

पत्रों के आइने से–

गाँधी जी के चुनौती भरे क्षण

प्रस्तुति—राजीव अग्रवाल

पत्र काफी कड़ा था और यदि इसको भी याद रखा जाये कि वह एक गुलाम देश हिन्दुस्तान में रहने वाले ब्रिटिश सम्राट के भारतीय प्रतिनिधि को लिखा था तो उसे कड़े के अलावा देश द्रोहात्मक भी कहा जा सकता था।

पत्र लेखक थे मोहनदास करमचन्द गांधी, और जिन्हें लिखा गया था वे थे लार्ड इर्विन, भारत के वायसराय।

२ मार्च १९३० को लिखे गये इस पत्र में बिना किसी वाक्छल के गांधी ने साफ-साफ लिखा था 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन को आरम्भ करने और जोखिम लेने के पूर्व, जिससे मैं वर्षों से डरता आया हूँ, मैं आपके पास आने और कोई रास्ता ढूँढ़ निकालने की बिनती करने का अभिनय नहीं करूँगा.....'

पत्र में आगे गाँधी जी ने संक्षेप में ब्रिटिश राज्य के अन्यायों का उल्लेख किया था। भारत के योजनाबद्ध शोषण का भी उल्लेख किया था। जो ब्रिटेन के लाभ के लिये अंग्रेज शासक करते आ रहे थे। फिर उन्होंने पत्र में ऐसी बात लिखी, जिसे पढ़कर हर रविवार को चर्च जाने वाले वायसराय को जबर्दस्त ठेस पहुँची होगी।

.....'अपने वेतन को ही लिजिये। आपको २१,००० रु० प्रतिमाह वेतन मिलता है। अन्य अप्रत्यक्ष लाभ ऊपर से। ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री का वेतन ५४०० रु० प्रति माह है। आप ७०० रु० प्रतिदिन कमाते हैं। जबकि औसत हिन्दुस्तानी की रोजाना आमदनी आने से भी कम है। आपकी आय एक औसत हिन्दुस्तानी की आय के औसत से ५००० गुना ज्यादा है। एक औसत ब्रिटेनी की दैनिक आय प्रायः दो रुपये है। ब्रिटानी प्रधान-मन्त्री की दैनिक आय एक औसत ब्रिटानी की आय से सिर्फ ९० गुना ज्जादा है। मैं आपके सामने घुटने टेक कर इस अद्भुत घटना पर विचार करने की प्रार्थना करता हूँ.....'

और पत्र में जबर्दस्त प्रहार गाँधी जी ने इन शब्दों द्वारा किया था, 'लेकिन यदि आप इन बुराइयों को दूर नहीं कर सकते और मेरे पत्र का आपके हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, तो मैं इस महीने की ११ तारीख को, अपने आश्रम के साथियों के साथ नमक-कानून का उलंघन करूँगा। मैं नमक पर लगाये गये इस कानून को गरीब आदमी के लिये सबसे ज्यादा अन्यायपूर्ण मानता हूँ।'

वायसराय ने अपने उत्तर में इस बात पर खेद व्यक्त किया था कि गांधी एक ऐसा काम करने जा रहे हैं, जिससे कानून का उल्लंघन तो होगा ही, सार्वजनिक शान्ति को भी खतरा पैदा हो जायेगा।

वायसराय की इस कर्तव्य परायण समान्योक्ति का गाँधी जी का उत्तर और भी सीधा-साधा और स्पष्टवादी था। 'इसमें शक नहीं जो काम मैं करने जा रहा हूँ, उससे कानून का उल्लंघन होगा, और सार्वजनिक शान्ति को खतरा पैदा हो जायेगा। यूं तो अनगिनत किताबें हैं कानून की मगर इस मुल्क में एक ही कानून चलता है, और वह है अंग्रेजी हुकूमत की मर्जी और एक ही शान्ति है— जेल की शान्ति। सारा हिन्दुस्तान एक जेल बना हुआ दमघोटू शान्ति को जो हम पर थोप दी गयी है, भंग करना मुझे अपना पावन कर्तव्य लग रहा है।

इस तरह हुई– मोर्चाबन्दी गाँधी जी का इरादा साबरमती आश्रम से डांडी तक जहां पहले एक लाइट हाउस था और जो गुजरात के समुद्री तट पर एक था, और जो गुजरात के समुद्री तट पर एक निर्जन गाँव था, जाने का था। पहले दल में ७९ सत्याग्रही थे। उनमें दो मुस्लिम भी थे। जिसमें से एक थे बड़ौदा के न्यायधीश अब्बास तैयबजी। एक ईसाई था, दो अछूत थे और शेष हिन्दू थे। सबसे कम आयु के सत्याग्रही की आयु १६ वर्ष थी। सबसे अधिक आयु के थे, गाँधी जी, जिनकी आयु ६१ वर्ष थी :

यह एक शानदार यात्रा थी मार्ग में जो गाँव और नगर पड़े उनके लीगों ने सत्याग्रहियों को फल-फूल अर्पित किये, और देश की आजादी के लिये काम करने की सौगन्ध खायी।

सत्याग्रहियों का दल ४०० किलोमीटर का फासला तय करके ५ अप्रैल को दांडी पहुँचा। इस यात्रा को पूरी करने में २४ दिन लगे।

समुद्रतट पर पहुँचकर गाँधी जी ने प्रार्थना की और फिर नीचे झुककर प्राकृतिक नमक का एक टुकड़ा जमीन से उठाया। इस एक साधारण से कृत्य से जैसे उन्होंने ब्रिटिश शासन को चुनौती दी। लोग उत्सुकता से इस प्रतीक्षा में थे कि देखें ब्रिटिश सरकार अब क्या करती है।

पर सरकार ने कुछ नहीं किया। यह पहला अवसर था, जब उसकी समझ में नहीं आ रहा था। कि वह क्या करें। एक विश्व विख्यात नेता को प्राकृतिक नमक के एक टुकड़े को उठाने के जुर्म में गिरफ्तार करना बड़ा अजीब सा लगता है दुनियां को। उन्होंने इन्तजार किया साम्राज्य की शक्ति प्रदर्शित करने के मौके का।

———

उद्‌बोधन

प्रस्तुति—शुभाशीष गुप्त
एकादश 'ख'

[मद्रास के विक्टोरिया हाल में दिये गये स्वामी विवेकानन्द के भाषण का सार संक्षेप—

मैं यह नहीं जानता कि अभिनन्दन पत्रों में मेरे लिये जो सुन्दर-सुन्दर विशेषण प्रयुक्त हुए हैं, उनके लिए किस प्रकार अपनी कृतज्ञता प्रकट करूँ। मैं प्रभु से इतनी ही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इन प्रसंसाओं के योग्य बना दें और इस योग्य भी कि मैं अपना सारा जीवन अपने धर्म और मातृभूमि की सेवा में अर्पण कर सकूँ।

मेरी सुधार प्रणाली— मैं सुधार में विश्वास नहीं करता, मैं विश्वास करता हूँ स्वाभाविक उन्नति में। मैं अपने को ईश्बर के स्थान पर प्रतिष्ठित कर अपने समाज के लोगों के सिर पर यह उपदेश मढ़ने का साहस नहीं कर सकता कि "तुम्हें इसी भाँति चलना होगा, दूसरी तरह नहीं।" मैं तो सिर्फ उस गिलहरी की भाँति होना चाहता हूँ, जो श्रीरामचन्द्र जी के सेतु बाँधने के समय थोड़ा बालू लाकर—अपना भाग पूरा कर - संतुष्ट हो गयी थी। यही मेरा भाव है।

हमारे समाज में बहुत सी बुराइयाँ है, पर इस तरह बुराइयाँ तो दूसरे समाजों में भी हैं। यहाँ की भूमि विधवाओं के आँसू से कभी-कभी तर होती है, तो पाश्चात्य देश का वायु-मण्डल अविवाहित स्त्रियों की आहों से भरा रहता है। यहाँ का जीवन गरीबी की चपेट से जर्जरित है, तो वहाँ पर लोग विलासिता के विष से जीवन्मृत हो रहे है। यहाँ पर लोग इसलिये आत्म-हत्या करना चाहते है कि उनके पास खाने का कुछ नहीं है, तो वहाँ खाद्यान्न की प्रचुरता के कारण लोग आत्महत्या करते है। बुराइयाँ सभी जगह है।

हमारे दर्शनशास्त्रों में लिखा है कि अच्छे और बुरे का नित्य सम्बन्ध है। यदि तुम्हारे पास एक है, तो दूसरा अवश्य रहेगा। जब समुद्र में एक स्थान पर लहर उठती है, तो दूसरे स्थान पर गडढा होना अनिवार्य है। इतना ही नहीं, सारा जीवन ही दुःखमय है। बिना किसी न किसी की हत्या किये एक साँस तक नहीं ली जा सकती। बिना किसी का भोजन छीने हम एक कौर भी नहीं खा सकते। यही प्रकृति का नियम है, यही दार्शनिक सिद्धान्त है।

ऐसा कौन सा समाज है, जिसमें दोष न हो ? आज का बच्चा भी इसे जानता है, वह भी सभामंच पर खड़ा होकर हमारे सामने हिन्दू धर्म की भयानक बुराइयों पर एक लम्बा भाषण दे सकता है। जो भी अशिक्षित विदेशी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता हुआ भारत वर्ष में पहुँचता है, वह रेल पर से भारतवर्ष को उड़ती नजर से देख भर लेता है, और बस, फिर भारतवर्ष की भयानक बुराइयों पर बड़ा सारगर्भित व्याख्यान देने लगता है ! हम जानते हैं कि यहाँ बुराइयाँ है। हर बुराई तो हर कोई दिखा सकता है। मानव समाज का सच्चा हितैषी तो वह है, जो इन बुराइयों को दूर करने का उपाय बताये। कोई एक दार्शनिक एक डूबते हुए लड़के को गम्भीर भाव से उपदेश दे रहा था, तो लड़के ने कहा, "पहले मुझे पानी से बाहर निकालिये, फिर उपदेश दीजिये।" बस ठीक इसी तरह भारतवासी भी कहते है, 'इस लोगों ने बहुत व्याख्यान सुन लिये, बहुत सी संस्थाएँ देख लीं, अब तो हमें ऐसा मनुष्य चाहिये, जो अपने हाथ का सहारा दें, हमें इन दुखों से बाहर निकाल दे। कहाँ है वह मनुष्य, जो हमसे वास्तविक प्रेम करता है, जो हमारे प्रति सच्ची सहानुभूति रखता है ?"

देश-भक्त बनने के लिये— लोग देश भक्ति की चर्चा करते है, मैं भी देशभक्ति में विश्वास करता हूँ,..... क्या तुम हृदय से अनुभव करते हो कि लाखों आदमी आज भूखों मर रहें हैं ? क्या तुम यह सोचकर द्रवित हो जाते हो ? क्या यह भावना तुम्हारी रक्त के साथ मिलकर तुम्हारी धमनियों में बहती है ? क्या उसने तुम्हें पागल बना दिया है ? क्या सचमुच तुम ऐसे हो गये हो। यदि हाँ, तो जानो कि तुमने देशभक्त होने की पहली सीढ़ी पर पैर रखा है— हाँ, केवल पहली ही सीढ़ी पर।

राष्ट्रीय जहाज— मुझे डर है कि तुम्हें देर हो रही है। बस एक बात और। ऐ मेरे स्वदेशवासियों, मेरे मित्रों, मेरे बच्चो, राष्ट्रीय जीवन रूपी यह जहाज लाखों लोगों को जीवन रूपी समुद्र को पार करता है। पर आज शायद तुम्हारे ही दोष से इसमें कुछ खराबी आ गयी है, इसमें एक दो छेद हो गये है, तो क्या तुम इसे कोसोगे ? यदि हमारे इस समाज में, इस राष्ट्रीय जीवन रूपी जहाज में छेद है, तो हम तो उसकी सन्तान है। आओ चलें, उन छेदों को बन्द कर दें— उसके लिये हँसते-हँसते अपने हृदय का रक्त बहा दें। हम उसकी डाट अपने अंगों से बनायेगें और उन छेदों में भर देगें। पर उसे कोसना ? नहीं, नहीं, कभी नहीं ! इस समाज के विरुद्ध एक शब्द तक न निकालो। मैं तुम सबको प्यार करता हूं, क्योंकि तुम देवताओं के सन्तान हो, महिमाशाली पूर्वजों के वंशज हो। तुम्हारा सब प्रकार से कल्याण हो ! ऐ मेरे बच्चों. मैं तुम्हारे पास आया हूँ अपनी सारी योजनाएँ तुम्हारे सामने रखने के लिये। तुम उन्हें सुनो, तो मैं तुम्हारे साथ काम करने को तैयार हूँ। पर यदि न सुनो, और मुझे ठुकराकर देश से निकाल दो, तो भी मैं तुम्हारे पास आकर यही कहूँगा, भाई, हम सब डूब रहे हैं। मैं आज तुम्हारे बीच बैठने आया हूँ ! और यदि हमें डूबना है, तो आओ, हम सब साथ ही डूब, पर सावधान ! एक भी कटु शब्द हमारे ओठों पर न आये ?

एक संस्मरण

--अनुराग चतुर्वेदी
षष्ठ 'ख'

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हमारा विद्यालय देश दर्शन की यात्रा पर दक्षिण की तरफ रवाना हुआ। मुझे यह जीवन का एक महत्व-पूर्ण समय लगा। विद्यालय से प्रस्थान कर हम चित्रकूट को रवाना हुए चित्रकूट में हमने रात्रि प्रमोदवन स्थित "मन्दाकिनी विश्राम गृह" में गुजारी। "मन्दाकिनी विश्राम गृह" मन्दाकिनी नदी के ऊपर स्थित है। प्रातः हम लोग "स्फटिक शिला" पहुँचे। "स्फटिक शिला" पर माँ सीता के चरणों के निशान, घुटनों तथा बाहों के भी निशान थे। वहाँ से चलकर हम "सतीअनुसुइया आश्रम में आये जहाँ अनेक भगवान की मूर्तियाँ थी। फिर हम "गुप्त गोदावरी" रवाना हुए "गुप्त गोदावरी" में दो गुफायें है। प्रथम गुफा का द्वार इतना छोटा है कि अन्दर से कोई पत्थर लगा देने पर गुफा का द्वार बन्द हो जाता था। अन्दर गुफा इतनी बड़ी थी कि १००० आदमी अन्दर आ सकते थे। अन्दर जाने पर "सीता कुण्ड" के पास एक ऊँची शिला की तरह थी। उसके ऊपर जाने पर मालूम पड़ा कि वहाँ पर एक शिला ऊपर लटकी हुई थी। वह शिला, शिला न होकर एक राक्षस था। सीता कुण्ड में सीता जी नहा रही थी। भयंकर राक्षस सीता जी के कपड़े चुराकर भाग रहा था। लक्ष्मण जी पहरे पर थे उन्होंने अग्नि बाण मारकर उसको उल्टा लटका दिया। ऐसा कहा जाता है।

उस शिला पर मेरा पैर फिसलते-बचा फिर हम द्वितीय गुफा को रवाना हुये। द्वितीय गुफा पर पंचमुखी शंकर जी की मूर्ति थी। अन्दर जाने पर पानी ही पानी था। पानी घुटनों तक था। अन्दर धनुषाकार कमरा शेषनाग दरबार व अन्दर लक्ष्मण-कुण्ड तथा राम-कुण्ड था। बाहर आने पर हम अपनी यात्रा पूरी करने के लिये आगे बढ़े।

———

स्वामी रामतीर्थ : एक प्रेरक प्रसंग

— मनीष पाण्डेय
सप्तम 'ख'

स्वामी रामतीर्थ जब शिशु अवस्था में थे तभी उनकी माँ का देहावसान हो गया। दस वर्ष की अवस्था में विवाह भी हो गया। उनके पिता के सामने उन्हें पढ़ाने में आर्थिक कठिनाइयाँ थी फलतः उन्होंने मैट्रिक पास करने के बाद स्वामी रामतीर्थ से नौकरी करानी चाही। लेकिन बालक रामतीर्थ ने नौकरी करने से इन्कार कर दिया। उनकी सौतेली बहन उनकी थोड़ी सहायता करती थी, उसी से उन्होंने अपनी शिक्षा पूर्ण करने का संकल्प किया। फीस, मकान का किराया, पुस्तकों का खर्च निकालकर तीन पैसे प्रतिदिन के हिसाब से उन्होंने धन बचाया, वे दो पैसे की सुबह और एक पैसे की शाम को रोटी खाकर रहने लगे। एक दिन होटल वाले ने कहा-कि ऐ लड़के ! तू दाल का पैसा तो देता नहीं ऐसे मैं तुझे रोटी नहीं खिलाऊंगा। अब तक तू रोटी के पैसे देकर दाल फोकट में लेता रहा। अब तू अपना प्रबन्ध और करले इस बात के बाद वे केवल एक समय भोजन करने लगे।

बालक रामतीर्थ का गणित से अगाध प्रेम था। जब तक कोई प्रश्न हल न हो जाता वे उसे छोड़ते न थे। एक बार गणित का एक प्रश्न हल न हो सका। वे आत्मग्लानि से भर उठे, और चाकू से अपना गला काटने का निश्चय कर लिया। ज्यों ही चाकू अपने गले पर रखा उन्हें प्रतीत हुआ मानों आकाश में उनके प्रश्न का उत्तर लिखा हुआ है और उन्होंने फौरन वह उत्तर लिख लिया जब किताब से मिलाया तो वही था।

विद्यार्थी जीवन में शिक्षा के प्रति ऐसी आग्रह-युक्त लगन के कारण बालक रामतीर्थ आगे चलकर गणित के एक प्रमुख विद्वान हुए। यही बालक आगे चलकर स्वामी रामतीर्थ के नाम से भी विख्यात हुए।

———

ऐसे थे गांधी जी

--प्रदीप दीक्षित
दशम 'ख'

यह बात तब की है जब गाँधी जी नवीं कक्षा में पढ़ते थे। एक दिन शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर जाइल्स, विद्यालय का निरीक्षण करने आये। उन्होंने गांधी जी की कक्षा में सब विद्यार्थियों को अंग्रेजी के पाँच शब्द लिखने को दिये। उनमें से एक शब्द "केटल" (Kettle) था। गाँधी जी ने उसकी हिज्जे (स्पेलिंग) गलत लिख दी। तो शिक्षक ने बूट की ठोकर मार कर उन्हें सावधान किया। गांधी जी ने समझा कि शिक्षक नकल न करने को कह रहे हैं। परन्तु शिक्षक का उन्हें सावधान करने का अर्थ, अपने पास वाले लड़के की पट्टी देखकर सुधार लेने का था। सब छात्रों के पाँचों शब्द सही निकले पर, एक अकेले गाँधी जी के ही शब्द गलत निकले। बाद में शिक्षक ने उन्हें उनकी बेवकूफी समझायी। परन्तु उनके समझाने का गाँधी जी के ऊपर बिलकुल असर न पड़ा। उन्होंने जीवन पर्यन्त चोरी करना कभी नहीं सीखा। ऐसे थे मोहनदास करमचन्द गांधी।

× × × ×

सुभाष-वचन

-राजेश कुमार
दशम 'ख'

- अत्याचार सहने वाला अपराधी होता है।
- अपने अधिकार के लिए संघर्ष करना पुण्य है।
- तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।
- हम भारत की आजादी के लिये लड़ रहे हैं।
- संघर्ष करो तब न्याय मिलेगा।

प्रतिभाएँ :– इण्टर मीडिएट सन् १९८४ – ८५

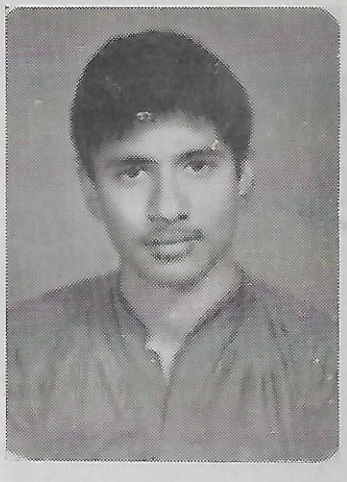

शैलेश गुप्त
उ०प्र०मा०शि० परिषद, इलाहाबाद
की परीक्षा में ६वाँ स्थान ४०८/५००
विशेष यो०– भौतिक विज्ञान, रसायन
विज्ञान व गणित

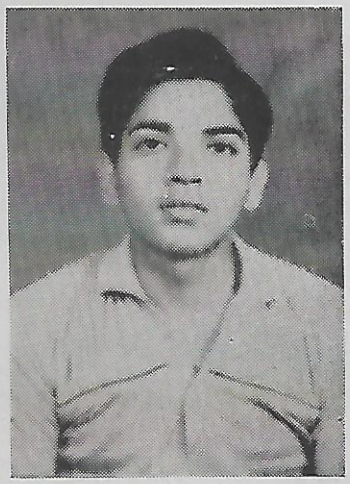

दीपक गंगल
४०१/५००
विशेष यो०– भौतिक विज्ञान, रसायन
विज्ञान व गणित

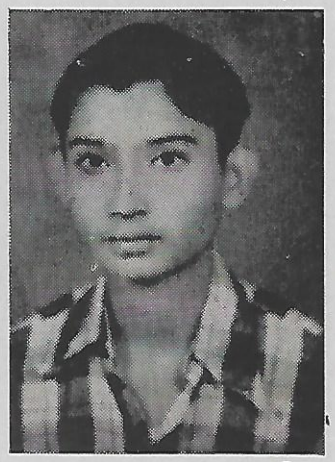

दिनेश दीक्षित
उ०प्र०मा०शि० परि०, इलाहाबाद
की परीक्षा में ८वाँ स्थान ४०६/५००
विशेष यो०– भौतिक विज्ञान, रसायन
विज्ञान व गणित

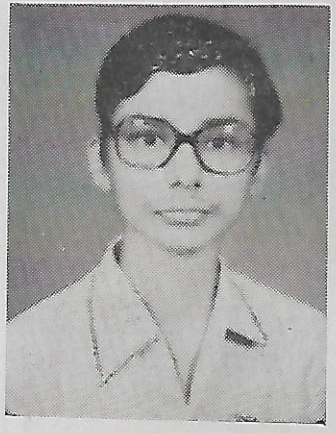

जितेन्द्र कुमार
३९८/५००
विशेष यो०– भौतिक विज्ञान, रसायन
विज्ञान व गणित

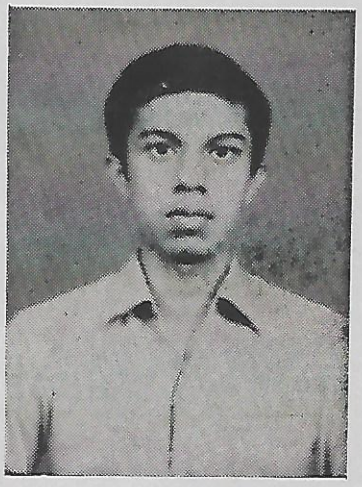

अनूप कुमार
३९४/५००
विशेष यो०– भौतिक विज्ञान, रसायन
विज्ञान व गणित

प्रतिभाएँ : इण्टर मीडिएट सन् '८४–८५

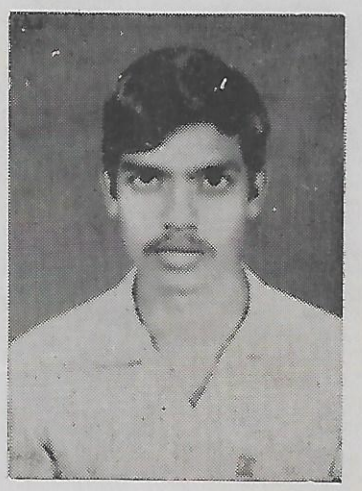

संजय कुमार सिंह
३८९/५९०
विशेष यो०– भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान व गणित

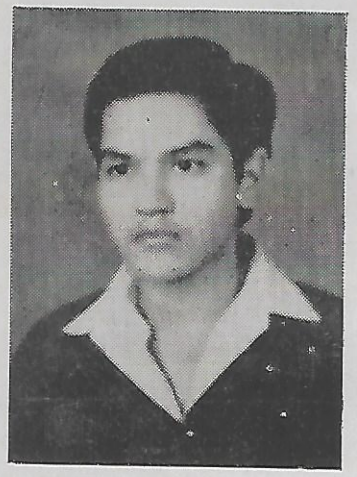

पुनीत श्रीवास्तव
३८६/५००
वि० यो०– भौतिक वि० व गणित

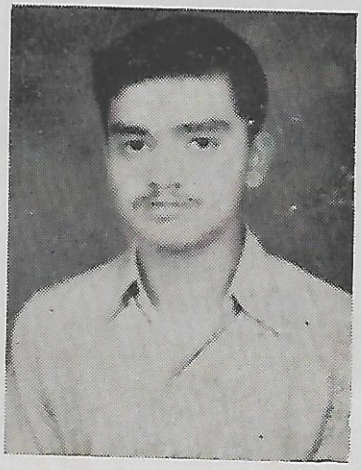

समीर सक्सेना
३८७/५००
वि० यो०– भौतिक वि०, रसायन विज्ञान व जीव वि०

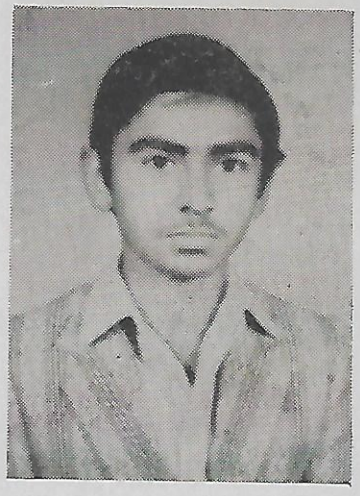

समीर राय
३८२/५००
वि०यो०–भौतिक वि०, रसा० वि० व गणित

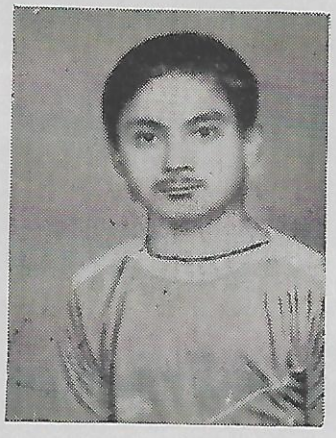

अनिल महाजन
३८१/५००
वि०यो० - गणित व भौतिक वि०

चुटकुले

न हँसो तो जानूँ

नितिन कपूर
षष्ठ 'ख'

● तीन मित्र जो गप्पी थे, आपस में बातचीत कर रहे थे। उनमें से एक अमेरिका, एक जापान का और एक भारत का निवासी था। बात जब पानी के जहाजों की होने लगी तो अमेरिका का निवासी बोला, "हमारे यहाँ पानी के जहाज समुद्र में दो इंच नीचे चलते हैं।"
तो जापान वाला बोला, "वह कैसे ?"
अमेरिका वाला बोला, "यानी कि २ इंच ऊपर से।"
जापान वाला बोला, "हमारे यहाँ पानी के जहाज समुद्र से २ इंच ऊपर चलते हैं।"
तो अमेरिका वाला बोला, "वह कैसे ?"
जापान वाला बोला, "आप लोगों को मालूम होगा कि हमारे यहाँ लोग नाक से खाना खाते हैं।"
अमेरिका वाला तथा जापान बोला, "वह कैसे ?"
भारतीय बोला, "यानी कि २ सेमी० नीचे से।"

● एक पति गुस्से में अपनी पत्नी से बोले, "तुमने अभी खाना नहीं बनाया।" मैं होटल में खाने जा रहा हूँ।
पत्नी बोली, "एक मिनट ठहरिए तो।"
पति बोले, 'क्यों ? क्या खाना बनाने जा रही हो।"
पत्नी बोली, "नहीं ! मैं भी साथ चलने के लिए तैयार हो जाऊँ।"

● एक माँ अपने बेटे से बोली, "बेटा ! तुम इतना उछल क्यों रहे हो।"
बेटा बोला, "माँ, डाक्टर साहब ने दवाई पीने के पहले हिलाने को कहा था। मैं उसे हिलाना भूल गया हूँ। पेट में रहकर भी हिल जाएगी।

● आचार्य जी–(बच्चों से)—हमें प्रतिदिन भगवान की पूजा करनी चाहिए।
बच्चे–क्यों ?
आचार्य जी–क्योंकि भगवान हमारी रक्षा करते हैं।
बच्चे–जब आप मारते हैं तब वे हमारी रक्षा नहीं करते।

———

एक कालेज छात्र संघ के अध्यक्षतायें–

एक खुला साक्षात्कार

––अनुपम मिश्र 'दशम क'

आजकल के विद्यार्थियों में बढ़ती हुयी अनुशासनहीनता और चरित्रहीनता में छात्र नेताओं के योगदान के विषय में कुछ रोचक जानकारियाँ–[सं०]

एक अध्यक्ष महोदय से एक वरिष्ठ पत्रकार का साक्षात्कार––

पत्रकार :––अध्यक्ष महोदय, छात्रों ने आपको किस आधार पर पसंद किया और चुना ?

अध्यक्ष :—मैं शुरू से ही छात्रों के लिए संघर्ष करता रहा हूँ। कालेज में मेरे पिछले दो वर्षों का इतिहास देख लीजिये मैंने कालेज में पाँच हड़तालें कराईं। तीन बार प्रिन्सिपल का घेराव किया। कालेज के सारे शीशे मैंने ही तुड़वाये थे। पिछले सत्र में बहुत से लड़कों को नकल भी कराई। एक बार जेल भी हो आया। इन सब कारणों से मुझे बेहद लोकप्रियता मिली छात्रों का समर्थन मिला।

पत्रकार :—सुना है, चुनाव जीतने के लिए काफी भाग-दौड़ करनी पड़ती है। आप ने इस सम्बन्ध में क्या-क्या किया ?

अध्यक्ष :—बहुत से नुस्खे इस्तेमाल किये। विरोधी उम्मीदवारों को धमकियाँ दिलवाईं, उनके चमचों को पिटवाया। उन सब के निजी जीवन पर कीचड़ उछलवाया। उन्हीं जैसे नामों के कई उम्मीदवार खड़े करवा दिये। इसके अलावा सभी मतदाताओं को दस दिन कैंटीन में मुफ्त चाय पिलाई। घर घर जाकर उनसे प्रार्थना की। उनके मित्रों, परिचितों एवं रिश्तेदारों से उनपर दबाव डलवाया। अपने प्रचार के लिए हजारों पोस्टर छपवाए। शहर की सारी दीवारें रंग दी। जीतने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है पत्रकार महोदय ! चौबीसों घंटे मजदूर की तरह खपना पड़ता है।

पत्रकार :—प्रचार तो वाकई आपका बड़े पैमाने पर था। इतना पैसा आपको कहाँ से मिला ?

अध्यक्ष :—बात यह है कि हमारे मौसाजी के दोस्त सत्तारूढ़ पार्टी के विधायक हैं। उन्होंने कुछ

पैसा पार्टी से दिलवा दिया, कुछ अपने पूँजीपति मित्रों से। वैसे हमने अपने बलबूते पर भी काफी चंदा मार लिया था। हर रोज मैं और मेरे सात आठ मित्र जीप पर सवार होकर बाजार जाते थे। सभी व्यापारियों से चंदा लेते; जो अनाकानी करता, उसकी दूकान अस्तव्यस्त कर देते। चंदे के अलावां कुछ पैसा मैंने अपनी ओर से भी लगाया था। पानी की तरह पैसा बहाया। मुझे मालूम था कि बाद में पाई-२ मय ब्याज के वापस मिल जाएगी।

पत्रकार :—वापस मिल जायगी। क्या मतलब ? जरा स्पष्ट कीजिये, अध्यक्ष महोदय !

अध्यक्ष :—मेरा इशारा दस हजार के यूनियन फंड की ओर है। मेरे ख्याल में इतना काफी·····

पत्रकार :—ओह ·····समझ गया। अच्छा, यह बताइये कि आपने जब पहली बार सुना कि आप अध्यक्ष चुन लिए गये हैं, तब कैसी अनुभूति हुई आपको ?

अध्यक्ष :—वैसी ही जैसे किसी शहनंशा को नया मुल्क फतह करने पर होती है। बहुत से दृश्य झिलमिला गए हमारे सामने। हमें लगा कालेज फंड हमारी पाकेट में हैं। प्रिंसिपल हमारे सामने हाथ जोड़े खड़ा है। अध्यापक नतमस्तक हैं। सभी अखबारों में हमारा फोटो छपा है। लड़के हमारे आगे पीछे घूम रहे हैं इत्यादि·····।

पत्रकार :—अपने कार्यकाल में छात्रों के लिए क्या-क्या करने का विचार है आपका ?

अध्यक्ष :—बहुत कुछ करने का इरादा है। मसलन, 40 मिनट के पीरियड में छात्र ऊब जाता है। उसे घटवाकर हम 30 मिनट का करवाएंगे। उपस्थिति की अनिवार्यता भी समाप्त कराएंगे। हर शनिवार को कालेज में फिल्म शो होना चाहिए। और भी बहुत सी जरूरतें हैं हमारी।

पत्रकार :—मान लीजिए, आपकी इन मांगों को स्वीकार नहीं किया जाता है। फिर आप क्या करेंगे ?

अध्यक्ष :—यदि हमारी मांगे नहीं मानी गई तो हम हड़ताल कर देंगे, घेराव करेंगे, फर्नीचर तोड़ेंगे, तिस पर भी मांगे नहीं मानी गईं तो आफिस पर धावा बोल देंगे। फाइलें जला देंगे। प्रिंसिपल का कालर पकड़ लेंगे। अन्त में उन्हें झुकना ही पड़ेगा वैसे हमें अपने ऊपर पूरा विश्वास है कि हमारी मांगे मान ली जायगी। लोकतन्त्र का यही तो मजा है।

पत्रकार :—सुना है, जो छात्र राजनीति के चक्कड़ में पड़ जाते हैं, वे पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं दे पाते और शिक्षा की दृष्टि से उनका जीवन चौपट हो जाता है, आपका क्या ख्याल है ?

अध्यक्ष :—कैसी उल्टी बातें कर रहे हैं आप ? राजनीति में आने पर तो जीवन बन जाता है, वैसे भले ही चौपट हो रहा हो। आप मुझे ही देखिये, परीक्षाओं में नकल करने से आजतक मुझे किसी ने नहीं रोका, जिसने रोका, वह निरीक्षक की ड्यूटी पर फिर कभी नहीं आया। अब तो मैं छात्र संघ का अध्यक्ष बन गया हूँ। रोकना तो दूर, क्या मजाल कोई टोक भी दे। अभी तक मेरा प्रतिशतांक ६२ चल रहा है। इस बार मुझे

विश्वास है कि ६५ तक खींच लूंगा। इसके अलावां खेलकूद और वाद-विवाद के जितने प्रमाणपत्र चाहूँगा मिल मिल जायेंगे। भविष्य मेरी मुट्ठी में है।

पत्रकार :—छात्रों में बढ़ती चरित्रहीनता और अनुशासनहीनता के बारे में आपका क्या विचार है।

अध्यक्ष :—इसके लिए पूरी तरह यह शिक्षा प्रणाली, ये शिक्षक और यह प्रशासन जिम्मेदार है। इन सबके विरुद्ध लोहा लेने की हम ठान चुके हैं। जब तक हमारे जिस्म में लहू का एक भी कतरा है, हम इन्साफ की आवाज बुलंद करते रहेंगे, पर झुकेंगे नहीं। छात्र एकता जिन्दाबाद।

[इस व्यंग्यपूर्ण साक्षात्कार का मेरा उद्देश्य यह है कि छात्र नेताओं का चयन उनकी योग्यता, कार्यकुशलता के आधार पर ही होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि चयन मतदान द्वारा हो अन्यथा ऐसे छात्र नेता बनकर विद्यालय को बरबाद करने व शिक्षा के स्तर के गिराने में पूर्ण योगदान देते हैं। इस रचना में मैंने गागर में सागर भरने का प्रयत्न किया है। ऐसे ही नेतागण जब देश की राजनीति में पदार्पण करते रहे हैं तो समाज का कल्याण हो जाता है।]

———

हँसिकाऐं

बहती गंगा—

गंगा में बाढ़ आने पर नेताजी बहुत खुश होते हैं।
चंदा अभियान चलाकर बहती गंगा में हाथ धोते हैं॥

भिखमंगे—

मंदिर क्षेत्र में हम भिखमंगे ही भिखमंगे पाते हैं।
कुछ बाहर मांगकर खाते हैं कुछ मांगने के लिए मंदिर में जाते हैं।

हवाई जहाज—

वायु सेना के लिए जहाजों की खरीदी में एक मजे की बात सामने आई।
जहाज बाद में उड़े कहा गया यारों ने पहले रकम उड़ाई॥

उल्टा—

मंत्री बनने पर लोग उल्टा-उल्टा चलते हैं।
बाढ़ जमीन पर आती है दौरा आसमान का करते हैं॥

एक अच्छा - खराब पत्र

--राजेश मौर्य
दशम 'ख'

प्यार जलन की कामनाओं के साथ

निर्देश– एक बार पूरा पढ़िये व एक बार (X) निशान वाली पंक्तियों को छोड़ कर

प्रिय 'रचना'

जय भारत;

तुम्हारा खत प्राप्त हुआ व यह पढ़ कर खुशी हुई;

X कि तुम्हारे छमाही में अच्छे अंक प्राप्त हुए। यह जान कर दुःख हुआ
कि तुम ज्वर से पीड़ित हो। ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम;

X शीघ्र स्वास्थ्य का लाभ उठाओ व आगामी टेस्टों में किसी की अंक तालिका तुमसे
कभी अच्छी न हो। यदि मेरे दिल में सच्चा प्रेम है तो अवश्य ईश्वर मेरी प्रार्थना
स्वीकारेगें। अगला पत्र यह समाचार लाये कि आपका समय;

X ठीक प्रकार से बीतता है, अब यह दिल की चाह है कि संसार देखे कि यह मेरा अरमान;
पूरा हो गया है तभी मेरा दिल पूर्णतया सुखी रहेगा। यह सुनकर मम्मी जी;

X व्याकुल हो उठेगी। तुम्हारे स्वस्थ होने का समाचार मिलने पर उन
की खुशी का ठिकाना न रहेगा। इस कारण वह निश्चित मि ठान बाँटेगी

X और ऐसा होना स्वाभाविक है। वह इस बात को भूली नहीं है कि, अब भी
उन्हें ठीक प्रकार याद है जब हम दोनों साथ-साथ पढ़ते थे उस समय;

X तुम मुझे भैया कहती थी व कहने तथा व्यवहार में उस समय मैं
तुम्हारा भाई था। जिसे तुम अत्यन्त प्यार करती थी।

X मेरी त्रुटियों से खिन्न होकर तुम्हारे दिल को जो ठेस पहुंची थी
उसका भी अन्त हो गया। यह सुनकर बड़ी खुशी हो रही है;

X मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ। तुम्हारा गुस्सा होना उचित था।

———

एक अनार छः सौ पचीस बीमार

--ऋषिरूप त्रिपाठी
एकादश 'ख'

[अन्तः विद्यालयीन स्वतन्त्र लेखन प्रतियोगिता में चि० ऋषिरूप त्रिपाठी का यह व्यंग लेख प्रथम स्थान पर रहा। व्यंग का मौलिक तेवर दृष्टव्य है--]

वैसे तो यह शीर्षक अत्यन्त ही रोचक है, परन्तु इसमें एक अत्यन्त गूढ़ अर्थ भी छिपा है। इस अनार का पेड़ हमारे विद्यालय में ही लगा हुआ है और इसका साथ निभाने के लिये साथी बन्धु भी मैदान में डटे खड़े हैं। ऐसा नहीं है कि ये वृक्ष नपुंसक हैं या इनमें फल नहीं लगे हैं। इन वृक्षों में फल तो खूब हैं लेकिन शुष्क और रस रहित। यह तो सभी लोग जानते हैं कि वृक्ष वही लोक प्रिय होता है जिसमें रसदार फल होते हैं। ये वृक्ष तो मेरे विचार से चतुर्थक मलेरिया के शिकार हैं, जो चार महीने या चार सप्ताह बाद फलों में रस भर कर हम विद्यार्थियों की सेवा करने लगते हैं। छात्रों के हाथों और ओष्ठों के घातों को सहने से जब इनकी बीमारी ठीक हो जाती है तो पुनः सचेत होकर सेवा न करने का प्रण कर लेते हैं। वैसे, मैं इन वृक्षों को दोष नहीं देता हूँ क्योंकि यह तो इनका स्वभाव बन चुका है। आप सब तो जानते ही हैं कि एक मनुष्य का स्वभाव बदलना कितनी टेढ़ी खीर होता है, फिर ये वृक्ष तो वृक्ष ही है।

अब जरा इन वृक्षों की स्थिति व स्थान पर विचार किया जाये कि ये कहाँ स्थित है। पहला पेड़ तो उसी स्थान की दीवार से संलग्न है जहाँ पर छात्र लोग प्रायः निवृत्ति, स्थान आदि के लिये जाते हैं। इसके चारो ओर का वातावरण इतना स्वच्छ और साफ है कि आप देखकर व सुनकर प्रसन्न हो जायेगें। इनके सामने लगे चमेली के घने पेड़, फिर कीचड़ और काई की एक नाली। वैसे इनके आस-पास का स्थान भी हरियाली से युक्त है परन्तु हल्के कालेपन सहित जब कभी इसके फल रस देने लगते हैं तो इसका रस पड़ने पर सूर्य की रोशनी में ऐसे चमकते हैं जैसे कोई शीशा। अब आप ही बताइये ऐसे उत्तम स्थान पर कौन बेचारा ऐसा होगा जो वहाँ जाकर अपनी इच्छा का मर्दन कर सके। परन्तु कुछ ऐसे भी दुःसाहसी छात्र हैं जो वहाँ जाकर उनका रस पान करते हैं। फिर रपट कर अथवा कपड़ों पर गन्दी छींटे पड़ने पर फल भी भुगतते हैं। खैर अब दूसरे वृक्ष की बात करें। वह स्थित तो ठीक स्थान पर है लेकिन उसके चारो ओर जब जूठा और गन्दा जल भर जाता है तो वह उसी प्रकार सुशोभित होता है जिस प्रकार कीचड़ में कमल।

अब खैर तीसरे वृक्ष की बात करें। उसमें फल तो एक ही लगा है लेकिन एक सच्चे मानवतावादी की भाँति हम छात्रों की इच्छा को पूरा करने के लिये तत्पर रहता है। उसके ऊपर हाथ रखिये और वह अपनी मृदुल रसधार बहाने लगता है। परन्तु जब मैं उसकी भविष्य की स्थिति के बारे में चिन्ता करता हूँ तो मेरा हृदय भर आता है। उस तक पहुँचने का मार्ग इतना दुष्कर है कि पैर फिसलने से दुर्घटना की संभावना बनी रहती है। परन्तु शुक्र है ईश्वर का, कि अभी तक ऐसी कोई घटना न हुई। उसके नीचे पत्थरों पर चिकनाहट की हल्की परत जम गयी है। अब जमीन तो फूट-कर या कहिये टूट कर नीचे गिर रही है। पदाघातों को सहते-सहते उसका स्वाभाविक गुण 'क्षमा' समाप्त हो गया है। जिससे भूमि ढाल हो गयी हैं। उसके नीचे जो नाली बहती है। उसमें कभी-कभी मिर्चे व अनार के जूठे टुकड़े बहते हैं। इसका उपयोग बड़े व लम्बे छात्रों के लिए बहुत सरल है परन्तु छोटे छात्रों के लिए ध्रुव प्रयत्न के समान। मैं विद्यालय से आशा करता हूँ कि विद्यालय की तरफ से उचित स्थान व समय पर फलदार वृक्ष लगाये जायेंगे।

———

संस्मरण

—राजीव कुमार
सप्तम 'ख'

अभी कुछ ही दिनों पहले की बात है। मैं बस द्वारा कानपुर से मेरठ की यात्रा कर रहा था। बस में बहुत भीड़ थी परन्तु मुझे कोई कष्ट नहीं था, क्योंकि मैं आराम से बैठा हुआ था। कुछ ही देर बाद बस अलीगढ़ रुकी वहाँ से कुछ आदमी बस में चढ़े जिसमें से एक बूढ़ा व्यक्ति मेरे पास आकर खड़ा हो गया उस बूढ़े व्यक्ति ने मुझसे कहा कि बेटा मुझसे खड़ा नहीं हुआ जाता कृपया अपनी जगह दे दो मैंने उस बूढ़े की ओर मुँह बिचका कर कहा कि बाबा मेरे पैर में भी दर्द हो रहा है।

आइए यहाँ बैठ जाइए तभी पीछे से यह आवाज आई जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मेरा सिर शर्म से झुक गया क्योंकि उस व्यक्ति की एक टाँग नहीं थी और वह बैसाखियों के सहारे बस में खड़ा हो गया उस दिन से जब भी मैं बस में आता हूँ तो सदा अपने बुजुर्गों को बैठने की जगह दे देता हूँ।

———

संसार

--मुकेश सिंह
एकादश 'ख'

१– विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय 'मास्को' (सोवियत रूस) में हैं, जिसका नाम दि एम० वी० लोमनोसोव स्टेट यूनीवर्सिटी है।

२– विश्व का सबसे बड़ा सिनेमाहाल 'न्यूयार्क सिटी' (अमेरिका) में है, जिसका रेडियो सिटी म्यूजिक हाल है।

३– विश्व का सबसे बड़ा महल चीन के पेकिंग शहर में है, जिसका नाम 'इम्पीरियल पैलेस' है।

४– विश्व का सबसे बड़ा होटल 'मास्को' (सोवियत रूस) में है, जिसका नाम 'होटल रोशिया' है।

५– विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'वासिंगटन' (अमेरिका) में है, इसका नाम 'यूनाइटेड स्टेट्स लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस है।

६– विश्व का सबसे लम्बी सड़क कनाडा में है, इसकी लम्बाई ४६२५ किमी० है।

७– विश्व की सबसे ऊँची इमारत शिकागो (अमेरिका) की 'सीयर्स टावर' है।

८– विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा 'मदरलैण्ड' है जो यू० एस० एस० आर० में है।

९– विश्व का सबसे बड़ा पन बिजली घर वोल्गा (यूरोप) में है।

१०– विश्व की सबसे छोटी पुस्तक 'दि ब्लाइण्ड मिस' है।

११– विश्व की सबसे बड़ी पुस्तक 'सुपर बुक' है। इसका वजन २५२.६० किग्रा० है।

१२– विश्व की सबसे महंगी पुस्तक 'गुटेन वर्ग बाइबिल है, इसकी कीमत १ करोड़ ९२ लाख ८० हजार रुपये है।

१३– विश्व में सबसे अधिक भाषाएं यूरोप में ही वोली जाती हैं।

१४– विश्व का सबसे व्यस्त स्टेशन 'मास्को' (सोवियत रूस) है। जहाँ प्रतिदिन ३० लाख लोग आते-जाते हैं।

१५– विश्व की सबसे बड़ी घड़ी 'मास्को' (सोवियत रूस) में है, इसका वजन २०० टन है।

१६– विश्व का सबसे बड़ा सर्प 'पाइथन' है।

१७– विश्व में सर्वप्रथम छाते का उपयोग करने वाले का नाम 'हानवे' था।

१८– विश्व का सबसे बड़ा 'सौर बिजली घर' इजरायल में है।

१९– विश्व में सर्व प्रथम रुपये का आविष्कार करने वाला थामस डीला है। यह इंगलैण्ड का रहने वाला था।

———

वैज्ञानिक पहेलियां बुझाइये

—अरविन्द कुमार शुक्ल
नवम 'क'

(१) क्यूरी दम्पत्ति जनक - जननी,
तारीफ का पहिना जामा।
तीन नाम मेरे बेटे के,
एल्फा, बीटा, गामा॥

(३) बड़ा रसीला मेरा नाम,
अति चमकीला गात।
मुझे न छूना मेरे बन्दे,
शरमायेगा हाथ॥

× × × × × ×

(२) आक्सीजन को जानिये,
जीवन का आधार,
हाइड्रोजन को मानिये,
सब तत्वों का हार,
कान उमेठे दोनों को,
वाह विद्युत बलबीर,
अब बेचारे क्या करें,
बन गये खुद नीर।

(४) क्षारीयता का गुण लिये,
मिलनशील है एक,
यकीन अगर न हो तो,
जल में जलता देख,
तू तो ज्ञानी बनता है,
मेरा नाम भी खोज,
प्रिय क्लोरीन से मिल जाऊँ,
तू खाये रोज।

× × × × × ×

(५) काला हूँ तो क्या हुआ,
हूँ बहुत बलवान,
कार्बनिक शास्त्र में हूँ,
मैं विराट भगवान,
अपने जीवनधार लेकर,
मिलवा देना मुझसे,
तो दूँगा ऐसी चीज बिरंगी,
तू भागेगा उससे,

उत्तर—(१) रेडियम (२) प्रतिक्रिया (३) पारा (४) सोडियम (५) कार्बन

बुद्धि परीक्षा

१– विभिन्न प्रकार की १५ वस्तुओं को किसी भी क्रम में रखकर कितने अधिक से अधिक क्रम बना सकते हो ?

२– एक टोपी, एक रूमाल व एक एक जोड़ी दस्ताने का मूल्य २० रु० है। एक जोड़ी दस्ताने का मूल्य टोपी के मूल्य से १ रु० अधिक है। एक रूमाल एक जोड़ी दस्ताने व टोपी के मूल्य से १६ रु० कम है। टोपी, रूमाल व एक जोड़ी दस्ताने का अलग-अलग मूल्य वताओ ?

३– विभिन्न भारो ५ ऐसे बाट बताइये जिनका भार १२१ कि० ग्रा० हो। उनसे १ से १२१ कि० ग्रा० तक सभी के भार तौले जा सके ?

४– वह ३ अंक बताओ जिनका गुणनफल और योगफल एक ही संख्या आये ?

५– दो ऐसे पूर्णांक बताओ जिनका गुणनफल ५९ हो ?

६– ५ लड़के ५ दिन में ५ बिस्कुट के पैकेट खाते हैं। १०० बिस्कुट के पैकेट १०० दिन में कितने लड़के खायेंगे ?

७– ५ लड़के ५ दिन ५ बिस्कुट के पैकेट खाते है। १०० लड़के १०० दिन में कितने बिस्कुट पैकेट खायेंगे ?

८– एक नगर की जनसंख्या ५०००० है। ८ बजे एक व्यक्ति को एक रोचक घटना मालूम हुयी। उसने १५ मिनट में ३ व्यक्ति को सूचना दी। जिसने ३ व्यक्तियों को सूचना दी वह किसी को दुबारा सूचना नहीं देगा। यह घटना कितने समय में नगर में फैल जायेगी।

९– एक शंतरज के प्रथम खाने पर एक, दूसरे खाने पर २, तीसरे खाने पर ४, इसी प्रकार हर खाने में पिछले खाने का दूना रखते गये अन्त ६४ खानों की संख्या का योग क्या होगा ?

१०– एक ग्वाले के पास २० जानवर हैं। जिनमें कुछ गाय, कुछ भैंस, कुछ बकरियां हैं। एक गाय ३ ली० एक भैंस ५ लीटर और एक बकरी १ लीटर दूध देती है। कुल दूध ४० लीटर हो जाता है। गाय भैंस और बकरी की अलग-अलग संख्या बताओ ?

११– वह समय बताओ जब घण्टे और मिनट की सुई एक रेखा में हो जितने बजने वाले हो उतने ही मिनट शेष हो।

उत्तर— [१] १३०७६७४३६५००० बार [२] एक जोड़ी दस्ताने का मूल्य १३.५० रुपये हैं। टोपी का ४५० व रूमाल का २०० रु० मूल्य है। [३] १, ३, ९, २७, ८१ [४] १, २ व ३
[५] १ व ५९ [६] ५ लड़के [७] २००० बिस्कुट के पैकेट [८] २.३० घण्टे में
[९] १८४४६७४४०७३७०९५५१६१५ [१०] १३ बकरी, ४ गाय व ३ भैंस
[११] ५ बजने में ५ मिनट।

———

'अंतरिक्ष-यात्रा में भारत के बढ़ते कदम'

—अमित गुप्त
नवम 'ख'

भारत, राकेश शर्मा के बाद इसी जुलाई में अपना दूसरा अन्तरिक्ष यात्री भेज रहा है। राकेश शर्मा ३ अप्रैल १९८४ में अन्तरिक्ष यात्रा करने वाले प्रथम भारतीय थे। राकेश शर्मा अपनी अंतरिक्ष-उड़ान से विश्व के १३८ अंतरिक्ष यात्रियों के परिवार में प्रवेश पा गये थे। भारत उनके साथ १४ वाँ देश हो गया था, जिसने अपने नागरिक को अंतरिक्ष में भेजने में सफलता पायी थी।

राकेश शर्मा रूसी अंतरिक्ष-यान सोयूघटी–११ में गये थे। अब नया भारतीय अंतरिक्ष-यात्री अमरीकी स्पेसशटल से छोड़े भारतीय उपग्रह इन्सेट आई० सी० सी० से जायेगा। जिसे भारत ने फोर्ड एयरो स्पेस से ७० करोड़ में खरीदा है अंतरिक्ष-यात्री भेजने पर २ करोड़ और व्यय आयेगा।

जिस प्रकार प्रथम भारतीय अंतरिक्ष-यात्री के रूप में राकेश शर्मा व रवीश मल्होत्रा दो लोग चुने गये थे। जिनमें से राकेश शर्मा भेजे गये थे। अब प्रस्तुत यात्रा के लिये चिदम्बर भट्ट एवं पी० राधाकृष्णन् दो लोग चुने गये थे इनमें से एक को भेजा जायेगा। जहाँ राकेश शर्मा व रवीश मल्होत्रा दोनों टेस्ट पायलट थे। अब चिदम्बर भट्ट व पी० राधाकृष्णन् दोनों भारत के स्पेस विभाग में वैज्ञानिक हैं। दोनों को स्पेश इंजीनियरिंग का अनुभव है।

राकेश शर्मा ने जहाँ ८ दिन की अंतरिक्ष-यात्रा की थी। प्रस्तुत भारतीय यात्री केवल ५ दिन की यात्रा करेगें। स्पेस शटल ९० मिनट में पृथ्वी का एक चक्कर लगायेगा। मार्च तक यह घोषित कर दिया जायेगा कि राधाकृष्णन् व भट्ट में कौन जायेगा ?

———

ज्ञान और विज्ञान

--आदित्य सचान
एकादश 'क'

१– 'वाराणसी' को हिन्दू धर्म की धार्मिक राजधानी माना जाता है।
२– इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री के निवास स्थान को "बकिंघम पैलेस" कहते हैं।
३– काँच केवल हाइड्रोक्लोरिक एसिड (Hcl) में घुल पाता है।
४– ब्लड प्रेशर नापने के यन्त्र को "सिकमैनो मीटर" कहते हैं।
५– गर्भ निरोधक गोलियाँ गर्भ रोकती हैं, पर पौधों की वृद्धि करती हैं।
६– यू० एस० ए० की एम्पायर स्टेट बिल्डिंग १०२ मंजिल की है, जो विश्व की सबसे ऊँची बिल्डिंग है।
७– विश्व स्वास्थ्य दिवस ६ अप्रैल को मनाया जाता है।
८– ३ फरवरी १९८४ को असम की नई राजधानी प्रयाग ज्योतिषपुर का शिला न्यास हुआ।
९– १ दिसम्बर १९८२ को एशियाई हाकी के इतिहास में भारत की पाकिस्तान के हाथों सबसे शर्मनाक पराजय।

———

उपग्रह इनसैट १–बी

भारत का राष्ट्रीय उपग्रह इनसेट १–बी न केवल टेलीविजन के प्रसारणों के लिये सहायक है बल्कि इससे दूर संचार विधाग और मौसम विभाग को भी सहायता मिली है।

दिल्ली या किसी अन्य केन्द्र से प्रसारित किये जाने वाले कार्यक्रम सी बैंड (५९००–६४०० बैंड) द्वारा उपग्रह को भेजे जाते हैं उपग्रह में यह आवृन्ति एस बैण्ड (२५७५ या २६१५ बैण्ड) में परिवर्तित हो जाती है।

उपग्रह प्रसारण के संकेतों को इस प्रकार वापस भेजता है कि ये संकेत देश के किसी भी केन्द्र में प्राप्त किये जा सकते हैं। इन केन्द्रों से उच्च, दरमयाने या कम शक्ति के प्रेषित्रों (ट्रांसमिटरों) के माध्यष से प्रसारित होकर ये कार्यक्रम टेलीविजन सेटो में पहुँचते हैं।

जिन क्षेत्रों में ट्रांसमिटर के संकेत नहीं पहुँचते, वहाँ प्रत्यक्ष प्राप्ति प्रणाली (टायरेक्ट रिसेप्शन सिस्टम) द्वारा इनसैट उपग्रह से सीधे संकेत प्राप्त किये जा सकते हैं इस प्रणाली में ३.३ मीटर व्यास का एंटेना तथा बाहर और केन्द्र के अन्दर रखे जाने वाले इलेक्ट्रानिक उपकरण होते हैं।

———

ज्ञान की बातें

—आलोक व अविरल

१— विश्व का सबसे लम्बा मनुष्य जैंर्क—आल ८ फीट ७ इंच का है।

२— एशिया के बाद सबसे बड़ा महाद्वीप अफ्रीका है।

३— टिट्डी का रक्त सफेद होता है।

४— खटमल का काला ज्वर होता है।

५— सर्वप्रथम कार्टून फिल्म वाल्ट-डिजनी ने बनायी थी।

६— भारत में अन्तिम मुसलमान राजा बहादुर शाह जफर था।

७— सर्वप्रथम अन्तरिक्ष यात्रा यूरी गागरिन ने की थी।

८— सर्वप्रथम अन्तरिक्ष में यात्रा करने वाला जानवर कुतिया थी जिसका नाम लाइका था।

९— आजकल भारत में लोकसभा के सदस्यों की संख्या लगभग ५४२ है।

१०— विश्व का सबसे गर्म स्थान जेकोवाबाद है।

११— विश्व की सबसे बड़ी नहर स्वेज है।

१२— सर्वाधिक शिकारी चिड़िया कैण्डोर है।

१३— विश्व का भयंकर जानवर सी वाष्प है।

१४— भारत में सर्वप्रथम आक्रमण सैरीमिस नामक महिला ने किया था।

१५— आष्ट्रेलिया की दो प्रमुख नदियाँ मरे व डार्लिंग है।

१६— श्री लंका की फेसी मछली १ किलोमीटर भूमि पर चल सकती है।

१७— रिवाल्वर का अविष्कार कोल्ट ने किया था।

१८– हवाई जहाज के अविष्कार राइट ब्रदर्स व ओखिल राइट ने किया था।

१९– एवरैस्ट की पहाड़ी में अभी तक ३५ लोग जा चुके हैं।

२०– अभी तक लम्बे नाखून-पाकिस्तान के श्रीधर चिक्लाल के हैं।

२१– मृत सागर (Dead Sea) में केवल एक मात्र नदी जोर्डन गिरती है।

२२– मृत सागर इजराइल और जोर्डन के बीच स्थित है।

———

इन्हें भी जानियें

——'आशुतोष सचान
सप्तम 'ख'

१– विश्व का सबसे चौड़ा जल प्रपात 'खोनी प्रपात' है।

२– दक्षिणी आस्ट्रेलिया का 'लैम्बर्ट ग्लेशियर संसार का सबसे बड़ा ग्लेशियर है जो कि ४०० किलो मीटर लम्बा और ६४ कि० मी० चौड़ा है।

३– संसार की सबसे बड़ी झील कैस्पियन सागर है। इसकी लम्बाई १२१६ किलोमीटर है।

४– संसार की सबसे गहरी झील बैकाल झील है।

५– संसार का सबसे ऊँचा प्रसुप्त ज्वालामुखी अर्जेन्टाइना में है, जो ६९६० मी० ऊँचा है।

६– विश्व का सबसे छोटा देश वैटिकन सिटी है।

७– पृथ्वी का द्रव्यमान (वजन) ५९८० करोड़ अरब टन है।

८– फ्रांस की ऐरो ट्रन संसार की सबसे तेज चलने वाली रेल गाड़ी है। यह ३७५ किलो-मीटर प्रतिघण्टा के वेग से चलती है।

९– २० मार्च १९७१ को इंगलैण्ड की एक छात्रा ने बेहद छोटे छेद वाली सुई में दो घंटे में ३७९५ बार धागा डालकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

१०– 'जनगण मन अधिनायक को राष्ट्रगीत के रूप में २१ जनवरी १९५० को स्वीकार किया गया।

———

मिक ने मारा भोपाल को

--गोपाल कृष्ण
दशम 'क'

किसी शहर के लिये इससे बड़ी बदनसीबी और क्या होगी कि उसके बाशिंदे ही वहाँ की हवा, पानी फूलों और पत्तियों पर शक करने लगे। अपनी बस्ती, अपना मोहल्ला और अपना घर भी पराया लगने लगे।

यह बदनसीबी तालाबों और पहाड़ों की नगरी भोपाल को झेलनी पड़ी। इस नगरी को लोग छोड़ कर भागे जब सैंकडों लोग जहरीली गैस से मरने लगे।

वास्तव में यह जहरीली गैस मिथाइल आइसो साइनेट है। रसायन बिज्ञान की भाषा में इसे C H C N O है इसका फार्मूला

मिक एक रंगहीन तरल कार्बनिक यौगिक है। इसकी गंध बहुत तीक्ष्ण होती है। मिक ४२–४४ डिग्री पर उबलने लगता है और गैस में परिवर्तित होने लगता है। यह बहुत जल्दी आग पकड लेती है। यह गैस हवा से भारी होने के कारण हवा बहने पर जमीन के साथ-साथ चलती है। मिक ज्यादा समय तक वातावरण में नहीं ठहरती। हवा की नमी मिक को खण्डित कर देती है।

मिक का इस्तेमाल कीटनाशक दवा के रूप में किया जाता है। छोटा सा अंश भी सांस के साथ शरीर के अन्दर चला जाए तो यह जानलेवा हो सकता है।

इसके प्रभाव से आंखों में जलन, फेफड़ों में आक्सीजन की कमी, हृदय में घातक प्रभाव, त्वचा पर कैंसर तथा जिगर और गुर्दे फेल हो जाते हैं। मिक गैस के कारण यदि किसी व्यक्ति का दम घुटने लगे तो सोडियम थायोसल्फेट से उपचार के साथ-साथ आक्सीजन की तेजधार छोड़ने से ७२ घण्टे में इस गैस का असर दब जाता है। परन्तु भविष्य में यह कभी भी उभर सकता है। ऐसा नहीं है कि शहर के लोग बचे न हों लेकिन जो बचे हैं वे दिलों में धड़कन के बजाय आतंक की धुकधुकी महसूस कर रहे हैं।

बूझो तो जाने

--मोहित कुमार
नवम 'क'

१– किसी झील में एक कमल खिला है जो हर दिन दुगुना हो जाता है यदि वह १ माह में पूरी झील को ढक लेता है तो दो कमल कितने दिनों में झील को ढक लेगें ।

२– एक सीधी सड़क पर दो धावक 8 Kms/hour की गति से एक–दूसरे की ओर दौड़ रहे हैं । एक मक्खी एक धावक को छूने के पश्चात दूसरे धावक की ओर जाती है तथा वह पुनः मुड़कर पहले धावक की ओर जाती है । यदि प्रारम्भ में धावकों के मध्य 16 Kms. की दूरी हो तो जब धावक एक–दूसरे तक पहुँचेगे तब तक मक्खी कितनी दूरी तय कर चुकी होगी ?

३– किसी ट्रेन में सफर करने वाले ३ यात्रियों ने भोजन का कार्यक्रम बनाया । पहले ने ५ प्रकार की तथा दूसरे ने ३ प्रकार की भोजन सामग्री निकाली तथा तीसरे ने ८ रुपये दिये । यदि तीनो को बराबर मूल्य का भोजन मिला हो तो पहले दोनों यात्री ८ रुपया किस तरह से बाँटेगे ।

४– एक बादशाह अपने वजीर को निकालना चाहता है । उसने उसे दरबार में बुलाकर दो पर्चियां दी तथा कहा कि एक पर : "चले जाओ" तथा दूसरी पर : "मत जाओ" लिखा है । परन्तु वजीर को विश्वास था कि दोनों पर "चले जाओ" लिखा है । उसने अपने पद पर बने रहने की कौन सी विधि अपनायी ?

उत्तर– (१) पहले दिन से दूसरे दिन कमल दो कमलों के बराबर हो जायेगा अत झील को ढकने में महीने से १ दिन कम लगेगा ?

(२) दोनों धावक १ घण्टे बाद एक–दूसरे तक पहुँचेगें तब तक मक्खी 65 Kms. का फासला तय कर चुकी होगी ।

(३) चूँकि तीसरे यात्री ने ८ रु० दिये थे अतः कुल भोजन की कीमत २४ रु० होगी परन्तु यह (५ + ३ = ८) प्रकार की सामग्रियों की कीमत है अतः एक सामग्री ३ रु० की होगी अतः पहला व्यक्ति १५ – ८ = ७ तथा दूसरा ९ – ८ = १ रु० लेगा ।

(४) वजीर ने एक पर्ची ली तथा बिना देखे निगल ली । जो पर्ची बची थी उस पर लिखा था "चले जाओ' । अतः बादशाह को सबके सामने मानना पड़ा कि वजीर ने "मत जाओ" वाली पर्ची उठायी थी ।

———

भारत में सबसे बड़ी और सबसे ऊँची

--संतोष भट्ट
अष्टम 'ख'

१-	सबसे बड़ी कृत्रित झील	गोविन्द सागर भाखरा
२-	सबसे बड़ा डेल्टा	सुन्दर बन का डेल्टा
३ -	सबसे बड़ी सुरंग	जवाहर सुरंग
४-	सबसे बड़ा अजायबघर	इण्डियन म्यूजियम
५-	सबसे बडी गुफा	एलोरा गुफा
६-	सबसे बड़ी झील	चुलर झील
७-	सबसे ऊँचा झरना	गरसोपा झरना
८-	सबसे ऊँची चोटी	कंचन जंघा चोटी
९-	सबसे ऊँचा पुल	चम्बल पुल

विश्व में सबसे बड़े एवं ऊँचे

१-	सबसे बड़ा महाद्वीप	एशिया
२-	सबसे बढ़ा रेगिस्तान	सहारा
३-	सबसे बड़ा द्वीप	ग्रीनलैण्ड
४-	सबसे बड़ा महासागर	प्रशान्त महासागर
५-	सबसे बड़ा प्रायद्वीप	भारत
६-	सबसे बड़ा महल	वेटीकिन (इटली)
७-	सबसे ऊँचा झरना	वेनेजुला
८-	सबसे ऊँचा देश	तिब्बत

किस खाद्य पदार्थ से कितनी ऊर्जा प्राप्त होती है

—रजत पाण्डेय
अष्टम 'ख'

खाद्य पदार्थ			किलो कैलोरी प्रति १०० ग्राम
चावल	—	—	३४६
गेहूं का आटा	—	—	३७०
मछली	—	—	१७०
भैंस का दूध	—	—	१७७
'केला' पका हुआ	—	—	११६
फूल गोभी	—	—	२७
घी	—	—	९००

नोट :— एक वयस्क आदमी को औसतन प्रतिदिन २५०० से ३५०० किलो कैलोरी ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

कब कितनी ऊर्जा खर्च करते हैं

सोने में	—	७० कैलोरी प्रति घण्टा	
बैठने में	—	१०० कैलोरी	,,
खड़े होने में	—	११० कैलोरी	,,
धीरे चलने में	—	१.७० कैलोरी	,,
दौड़ने में	—	८०० कैलोरी	,,
फुटबाल खेलने में	—	१००० कैलोरी	,,

किससे कितती ऊर्जा प्राप्त होती है

पदार्थ		किलो कैलोरी प्रति १०० ग्राम
हाईड्रोजन	—	३४१९.४
पेट्रोल	—	१०००.८
कोयला	—	८३४.०
लकड़ी	—	४००.०
प्राकृतिक गैस	—	९११०.० प्रति घन मी०

———

परखनली पौधशाला में बेल-वृक्ष

--रमेश चन्द्र मिश्र

दशम 'ख'

प्राचीन काल से ही बेल हिन्दुओं का पवित्र पेड़ माना जाता है। रूटेसी कुल के इस बहुपयोगी पेड़ का वानस्पतिक नाम "इजिल आरमेलौज" है। इसको संस्कृत भाषा में बिल्व भी कहा जाता है। जहाँ एक ओर हिन्दू इसकी पत्तियाँ भगवान शिव की पूजा में चढ़ाते हैं। तथा फलों का औषधीय दृष्टि से बहुत ही महत्व है।

हाल ही में बेल के पौधे को वनस्पति विज्ञान विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय की पादप उत्तक संवर्धन प्रयोगशाला में उत्तक संवर्धन को नवीनतम तकनीक द्वारा परखनली में सफलतापूर्वक उगाया गया है। पिछले कुछ वर्षों में 'पादप उत्तक संवर्धन' तकनीकी एक बहुत ही महत्वपूर्ण व उपयोगी तकनीकी के रूप में सामने आयी है। इस तकनीक के द्वारा पादप के किसी अंग या उत्तको को लेकर उनको परखनली या शंकुफ्लास्क में पोषक माध्यम के ऊपर प्रयोगशाला की नियन्त्रित परिस्थितियों में उगाया जाता है। किसी उन्नत व अच्छे किस्म के पेड़ की कलिका को कल्चर कर कम समय में ही कई पेड़ उत्पन्न किये जा सकते है। ऐसे उत्पन्न पौधों में अपने पितृ-वृक्ष के समान गुण मौजूद रहते है। इसके पके हुये फल मीठे, गूदेदार होते है। इसके फलों में कई विटामिन पाये जाते है। इसमें विटामिन सी' पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इसके गूदे में 'ऐलोइम्पेरेटोरिन' होता है। जिसका गलनांक 226'–270 होता है। इसका रासायनिक सूत्र C_{18} H_{18} O_4 है। यह पीलिया रोग में रोगी को दिया जाता है। ऐलोइम्पेरेटोरिन के अलावा बीटा-सीटोस्टीरोल नामक ऐस्केलाइड भी इससें पाया जाता है। इसका सूत्र C_{29} H_{50} O है। इसको दस्त आने पर भी रोगी को दिया जाता है।

———

कुछ यन्त्रो के नाम व कार्य

--अजय कुमार

अष्टम 'क'

ओडोमीटर	—	गाड़ी के पहियों द्वारा तय की गई दूरी मापने वाला यन्त्र
आल्टीमीटर	—	वायुयान की ऊँचाई मापने वाला यन्त्र
ओडियोमीटर	—	ध्वनि की तीव्रता ज्ञात करने वाला यन्त्र
इलेक्ट्रोमीटर	—	विद्युत शक्ति मापने वाला यन्त्र
एमीटर	—	विद्युत धारा नापने वाला यन्त्र
कारबोरेटर	—	आन्तरिक दहन इन्जन में पेट्रोल नियन्त्रक
कार्डियोग्राफ	—	हृदय की धड़कने अंकित करने का यन्त्र
ग्राबोमीटर	—	जल की सतह पर तेल की उपस्थिति नापने वाला यन्त्र
गाइरोस्कोप	—	घूमती हुई वस्तुओं की गति ज्ञात करने का यन्त्र
गाइगर मूलर काउन्टर	—	रेडियो धर्मिता नापने का यन्त्र
रेचोमीटर	—	मोटर बोट व वायुयान की गति नापने का यन्त्र
टेलिस्कोप	—	दूरस्थ वस्तुएं देखने का यन्त्र
ट्रान्समीटर	—	समाचार भेजने का यन्त्र

———

ज्ञान - वार्ता

--सुमीत कक्कड़
नवम 'क'

१– संसार का सबसे ऊँचा पेड़ कैलीफोर्निया में पाया जाने वाला 'रेडवुड' नामक पेड़ है जिसकी ऊँचाई २०० फुट तक होती है।

२– संसार का सबसे जहरीला सर्प 'टाइगर स्नेक' है जो आस्ट्रेलिया में पाया जाता हैं।

३– भारत आरक्षित देश 'भूटान' संसार का सबसे गरीब देश है।

४– भारत में एक तितली पाई जाती है। जिसका नाम 'रेनबी' है जो कि मात्र १५ घण्टे तक जीवित रहती है, इसे संसार की सबसे सुन्दर तितली कहते हैं।

५– ससार में सर्व प्रथम चीन में कागज की मुद्रा का प्रचलन हुआ।

६– भारत एक ऐसा देश है जहाँ पर लगभग ६०० बोलियाँ बोली जाती है।

७– हाथी की ऊँचाई उसके पैर की परिधि के दुगुने के बराबर होती है।

८– महाभारत में एक लाख बीस हजार श्लोक हैं।

९– मेंढ़क रंग भेद नहीं कर पाता है।

१०– असम की नई राजधानी 'प्रयाग ज्योतिषपुरा' है। यह नगर निर्माणाधोन है।

११– चार्ली चैपलिन विश्व का सबसे सफल हास्य अभिनेता था।

१२– नोबल पुरस्कार 'अलफ्रेड' नोबल' की याद में दिया जाता है। यह नार्वे के सम्राट प्रदान करते हैं। उसमें ८००,००० क्रोनर की राशि होती है।

१३– कांगो नदी विश्व में सर्वाधिक जल बहा कर ले जाने वाली नदी है।

१४– भारत की सबसे बड़ी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' है। जो कि लगभग ४ घण्टे ४५ मिनट की है।

१५– नवीनतम खोजी के अनुसार विश्व का सबसे खतरनाक जहर 'प्रसिक एसिड' है जिसकी हलकी सी गन्ध मात्र लेने से मनुष्य मर जाता है।

१६– बिश्व में अब तक सबसे प्रतिभावान व्यक्ति लियोनार्डो विंची माना जाता है।

१७– मयूर सिंहासन में गये हीरे जवाहरातों का वजन १८ सेर था।

१८– कबूतर की उड़ने की गाते ९० मील १ घण्टा होती है जो कि सर्वाधिक है।

१९– पामीर की गांठ को विश्व की सभी पर्वत मालाओ का उद्गम स्थान माना जाता है।

२०– डेन्यूब एक ऐसी नदी है जो पाँच देशों में बहती है।

२१– बी० बी० सी० रेडियो स्टेशन २६ जनवरी १८८४ को प्रारम्भ किया गया था।

———

क्या भारत को एटमबम बनाना चाहिये

—संजीव शुक्ल
एकादश 'ख'

प्रस्तावना:— एटमबम अर्थात् नाभिकीय बम जिसकी कल्पना करते ही मन भय से काँप जाता है। आज जब विश्व तृतीय विश्व युद्ध की कगार पर खड़ा है, भारत अपना एक अलग महत्व बनाये हुये है। इसका मुख्य कारण भारत की तटस्थता की नीति और निःशस्त्रीकरण की नीति है। यद्यपि विश्व के अनेक बड़े देश अणुबम बना चुके हैं फिर भी भारत ने अभी तक ऐसा कोई कदम नहीं उठाया है। यह भारत के धैर्य की ही बात है कि उसने सन् १९७४ में १८ मई को 'पोखरन' में अणु विस्फोट करने के बाद अभी तक परमाणु बम नहीं बनाया है। विश्व की दो महाशक्तियों अमेरिका व रूस परस्पर तालमेल रखने में जुटी हुयी है क्योंकि इस तालमेल के बिगड़ते ही विश्व का सुन्दर स्वरूप कभी भी नष्ट हो सकता है। भारत ही विश्व का एक ऐसा देश है जो इन दो महाशक्तियों को विश्व युद्ध करने से रोक सकता है।

भारत के पड़ोसी देश :— भारत के सात पड़ोसी देश हैं, जिनसे भारत सदैव मधुर सम्बन्ध बनाये रखने का प्रयास करता रहा है। बर्मा, नेपाल, श्रीलंका तथा पाकिस्तान आदि भारत के पड़ोसी देश है। यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि पाकिस्तान जो कि उसका पड़ोसी देश है सदैव हिंसात्मक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख रहा है। पाकिस्तान के वर्तमान राष्ट्रपति जनरल जियाउलहक सदैव से परमाणु बम बनाने के प्रयास में लगे हैं इसीलिये पाकिस्तान में जनरल जिया के बाद सुरक्षा का सबसे कड़ा प्रबन्ध वहाँ के वैज्ञानिक "डा० अब्दुल कादिर खान" के घर में है। अब्दुल कादिर वह व्यक्ति है जिसने विभिन्न देशों की गुप्त प्रयोगशाला से यूरेनियम परिष्कृत करने का फार्मूला चुराया है और पाकिस्तान में अणुबम बना रहा है। पाकिस्तान के अणुबम बनाने से भारत की सुरक्षा को काफी खतरा पैदा हो गया है। यद्यपि भारत में पाकिस्तान द्वारा हिंसा की घटनाओं को प्रोत्साहन दिया जा रहा है फिर भी भारत शान्त है।

अणुबम बनाने के कारण :— पाकिस्तान के अणुबम से उत्पन्न खतरे के कारण भारत यह सोचने के लिये मजबूर हो गया है कि— क्या उसे परमाणु बम या अणु बम बना लेना चाहिये। पाकिस्तान को अमेरिका का सहयोग प्राप्त है जिसके कारण वह लगातार भारत की सुरक्षा के लिये खतरा उत्पन्न कर रहा है। यद्यपि जनरल जिया सदैव यही कहते हैं कि पाकिस्तान अपने बम का प्रयोग शान्तिपूर्ण कार्यों के लिये करेगा। परन्तु उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि वह तीन बार भारत पर आक्रमण कर चुका है और अक्सर सीमा पर आक्रमण करता रहता है। अतः भारत के प्रधान मन्त्री ने स्पष्ट घोषणा कर दी है कि यदि पाकिस्तान परमाणु बम बनायेगा तो मजबूर होकर भारत को भी परमाणु बम बनाना पड़ेगा जबकि भारत ऐसा नहीं चाहता।

परमाणु बम बनाने में विचार धारायें :— परमाणु बम के बनाने में लोगों में दो तरह की विचार धाराएं हैं— कुछ लोगों का कहना है कि भारत को परमाणु बम नहीं बनाना चाहिये क्योंकि "हिंसा हिंसा को जन्म देती है।" और यदि भारत परमाणु बम बनाता है तो वह गाँधी के आदर्शों को नष्ट कर रहा है ऐसा समझा जायगा जबकि भारत की समस्त विश्व में पहचान अपनी अहिंसा की प्रवृत्ति के कारण ही है।

दूसरे लोगों के अनुसार भारत को परमाणु बम जल्द से जल्द बनाना चाहिये क्योंकि भारत की सुरक्षा के लिये अब इसके अलावा कोई उपाय नहीं है। तथा ये लोग "सठे शाठ्यं समाचरेत्" की भावना को अधिक महत्व दे रहे हैं। उनका कहना है कि जब समस्त विश्व इस युग में नये-नये हथियार व बम बना रहे हैं तो भारत के द्वारा परमाणु बम न निर्मित करना मूर्खता ही नहीं वरन् कायरता भी है।

अतः यदि भारत परमाणु बम नहीं बनता तो पाकिस्तान अवश्य हमला करेगा क्योंकि कई देशों के विरोध के बावजूद पाकिस्तान परमाणु बम बना रहा है। अतः भारत को परमाणु बम बनाने की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिये।

परमाणु बम के बनने से उत्पन्न प्रभाव :— अनेक महान वैज्ञानिको तथा विचारकों ने निम्न विचार भारत के बारे में रखे हैं—

- पहले पाकिस्तान के सैनिकों द्वारा सीमा पर आक्रमण।
- पाकिस्तानी सैनिकों से निबटने के लिये भारतीय सैनिकों का पाकिस्तान में प्रवेश।
- पाकिस्तानी सरकार द्वारा भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में दंगे भड़काने की साजिश तथा भारत पर आक्रमण।
- इस आक्रमण को निष्फल करने के लिये भारत के पास एकमात्र उपाय परमाणु बम है।
- अतः परमाणु बम के प्रयोग से धन-जन की भारी क्षति।
- पाकिस्तान के समर्थक देशों द्वारा भारत पर आक्रमण का प्रयत्न।
- भारत द्वारा रूस से सहायता। भारत द्वारा इन देशों का मुकाबला।
- इन देशों की सहायता के लिये युद्ध में अमेरिका का प्रवेश।

और तब भड़केगी विश्व युद्ध की ज्वाला जो सम्पूर्ण विश्व का विनाश कर देगी और सदियों तक विश्व श्मशान बना रहेगा।

उपसंहार :— इस प्रकार यदि भारत को विश्व युद्ध रोकना है तो उसे स्वयं अभी परमाणु बम नहीं बनाना चाहिये। यदि पाकिस्तान परमाणु बम बना लेता है तो भारतको जवाब में परमाणु बम बनाना चाहिये। ऐसा न करने पर भारत की जो छवि संसार में है वह धूमिल पड़ जायेगी और सभी देश भारत को ही दोषी ठहरायेंगे।

विद्यार्थी और राजनीति

—सूरज अग्रवाल
एकादश 'ख'

[अन्तः विद्यालयीन स्वतन्त्र लेखन प्रतियोगिता में चि० सूरज के प्रस्तुत लेख ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। आज हमारे सम्पूर्ण समाज को हर स्तर पर प्रभावित करने वाली शक्ति कहीं न कहीं किसी 'राजनीति से जुड़ी है। 'विद्यार्थी राजनीति को विश्लेषित करता हुआ यह लेख..... सं०]

किसी भी देश के उत्थान एवं संस्कृति की उन्नति के लिये जो शब्द हमारे समक्ष दृष्टिगोचर होता है वह है राजनीति। समाज के लिये, अर्थ व्यवस्था के लिये राजनीति आवश्यक है। राजनीति वह धारा है जिसके प्रवाह में अपनी-अपनी नाव पर बैठकर हमको एक दूसरे का सहयोग करते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ना है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है! राजनीति का अर्थ है "राष्ट्र की नीति"।

आज का छात्र ही कल का नागरिक होगा, और नागरिक होने के फलस्वरूप उसे देश की राजनीति को पल्लवित करके हमारे समक्ष प्रस्तुत करना है। आज के राजनीतिज्ञ आने वाले कल की प्रतीक्षा तो नहीं करेंगे अपितु हमें ही भविष्य में राजनीति का कार्य संभालना है।

राजनीति का शब्द एवं उस शब्द का व्यापक एवं विस्तृत अर्थ जो कि छात्र के मस्तिष्क को झझकोर दे, राष्ट्र को संजाने एवं संवारने की भावना भर दे, सुसंस्कृत नागरिक बनने की प्रेरणा दे ऐसा अर्थ छात्रों को पहले से ही शिक्षा के साथ-साथ देना चाहिये! उदाहरण के लिये जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुत्री को राजनैतिक शिक्षा बचपन से ही दी परिणामस्वरूप वे हमारे देश की कुशल प्रधानमन्त्री बनी। (चाहे विपक्षी दलों की दृष्टि में निन्दा की पात्र क्यों न हों)

हम इजरायल का उदाहरण ले सकते है, वहाँ पर जनसंख्या बहुत कम है और यह नियम है कि अध्ययन, सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ राजनीति भी आवश्यक है। यही कारण है कि वहाँ जितने इंजीनियर हैं उतने सैनिक और राजनीतिक भी!

आज राजनीति शब्द घृणा का पर्याय बन गया है। स्कूली चुनाव हों या विश्वविद्यालय के चुनाव इन सब को तो छोड़िये लोक सभा व राज्य सभा के चुनावों में भी टिकट की हाड़ लगी रहती है। जो एक बार

(शेष पृष्ठ ८९ पर)

जी हाँ! जब समुद्र के नीचे नगर बनेगा

--अरविन्द कुमार
नवम 'क'

हम जानते रहे हैं कि धरती पर प्रति सेकेण्ड २ बच्चे जन्म लेते हैं। अनुमान है कि सन २००० तक पृथ्वी की आबादी ७० अरब हो जायेगी।

फ्रांस के कैप्टिन जैकूयेस कुस्तू ने समुद्र की तली में रहने की बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया। समुद्री सर्वेक्षणों के दौरान वैज्ञानिकों ने पाया कि पृथ्वी के वातावरण में "बादल" होने के बावजूद सूर्य प्रकाश २६० मी० की गहराई तक जाता है और इतना ही नहीं ४५० मी० की गहराई में भी सूर्य प्रकाश तो था, पर गौधुलि की तरह। अत समुद्र के गर्भ में बसे नगरों में प्रकाश की कमी तो नहीं रहेगी, किन्तु समुद्र जल के कारण जरा नीलापन अवश्य लिये होगा जो समुद्री नगर के लिये आकाश का काम करेगा।

सन १९६३ में कुस्तू ने महाद्वीपीय जलयान क्षेत्र में "जलमग्न" गाँव ही स्थापित कर दिया। सतह से लगभग ११ मीटर नीचे उसने चार कमरे वाला एक घर बनाया। उसने गहराई में जाने के लिये एक "गोता लेने वाली तश्तरी (डायविंग सासर) बनाई, जो दो आदमियों को लगभग ३०० मीटर तक की गहराई में ले जाने वाली एक पनडुब्बी थी। फिर उसने ३० मीटर गहराई पर एक केबिन बनाई। इसके पश्चात ११० मीटर की गहराई पर चार कक्ष वाला तारा मछली भवन (स्टारफिस हाउस) बनाया। इसमें एक माह तक लगातार कुछ व्यक्ति रहे, जिनका सम्बन्ध तैरने वाले जहाजों से बना रहा।

सन् १९६४ में अमेरिका ने अपने समुद्र में 'मानव" कार्यक्रम के अन्तर्गत बरमूडा के निकट ५९ मीटर नीचे पहली समुद्री प्रयोगशाला (सी-लैब १) बनायी। इसमें ४ व्यक्ति ११ दिन तक रहे। दूसरी प्रयोग शाला (सी-लैब २) अक्टूबर १९६६ में ला-जोला के निकट बनी। इस प्रयोगशाला के प्रशिक्षणार्थियों ने संदेश भेजने के लिये डालफिनों का प्रयोग किया। यह एक मजेदार बात थी। गोताखोर एक विशेष प्रकार का संकेत देते थे, तो डालफिन उनके पास चला आता। वह उसे दूसरे गोताखोर के पास ले जाने के लिये रिंच जैसा औजार देता। (सधा हुआ डालफिन रिंच को दूसरे गोताखोर के पास पहुँचा देता और उसे इनाम में एक मछली मिलती।

वैज्ञानिकों का विचार है, कल्पित समुद्र नगर में मकान गुम्बदों की तरह होंगे। तथा प्लाटिक के बने होंगे। उनकी दीवारें दोहरी होंगी, ताकि अन्दर या बाहर की दीवारों के क्षतिग्रस्त होने पर बाढ़ का खतरा उत्पन्न न हो।

एक मकान से दूसरे मकान में आवागमन के लिये "ट्यूब" रहेगी। इन "ट्यूब" रास्तों में सामान्य माल आदि ढोने के लिये वैद्युतिक गाड़ियां चला करेंगी। लेकिन अंतर्दहन इंजन वाले वाहन चलाना निषिद्ध होगा। स्थलीय नगरों में जल निष्कासन की जो व्यवस्था रहती है वही व्यवस्था जलीय नगरों में वायु के आवागमन के लिये रहेगी। इस व्यवस्था के अनुसार वायु का आना जाना तो रहेगा ही, साथ ही साथ स्टोव आदि का धुआं भी एक मेन लाइन से होते हुए उसी व्यवस्था द्वारा सतह के ऊपर वायुमण्डल में जा निकलेगा, इससे मकानों के अन्दर धुआँ नहीं फैलेगा। आणविक शक्ति के सहारे समुद्र में एक ऐसा कृतिम वातावरण तैय्यार किया जायेगा, जिसमें विशुद्धता, उष्णता, आर्द्रता आदि सभी नियन्त्रण में रहेंगे। वहाँ के लोग न तो अंधड़ और तूफानों से तबाह होंगे और न ही उन्हे कभी स्थल वासियों की सतह भीषण गर्मी अथवा भीषण सर्दी का सामना करना पड़ेगा। अतः वे सर्दी खांसी, इंफ्लूएंजा आदि से दूर रहेंगे। वैज्ञानिक-गण ऐसे पेड़ पौधों की खोज कर रहें हैं जो समुद्री नगर में रह सकें। उन्हें आकाश की वर्षा तो मिलेगी नहीं अतः सिंचाई के लिये प्रत्येक घर में जल की विशेष व्यवस्था की जायेगी। उस जल से आग आदि की घटनाओं से, आवश्यकता पड़ने पर निपटा जायेगा। वैज्ञानिकों का मत है कि समुद्र तल में आग बुझाने के काफी उन्नत उपायों की आवश्यकता होगी, वरना वहाँ अग्नि से भारी तबाही हो सकती है। आज भले ही समुद्री बस्तियों की कल्पना एक स्वप्न सी लगती है। परन्तु है यह कल का सत्य।

———

पृष्ठ ८७ का शेष

(विद्यार्थी और राजनीति)

५ साल के लिए मन्त्री बन गया फिर वह क्या उसकी आने वाली पीढ़ियाँ भी बिना काम करे अपनी रोजी-रोटी चला सकती है। आज की राजनीति देश को विकसित करने में पूरी तरह सक्षम नहीं है यही कारण है कि आज का छात्र इस खींचातानी से दूर है ?

विश्वविद्यालयी चुनावों में छात्र नेताओं के ऊपर भी कुत्सित राजनीति का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। साथ ही साथ राज्य के चुनावों में तो टिकट लेने के लिये हालत यहाँ तक पहुँच जाती है कि वे एक दूसरे की जान लेने को भी दुष्कर कार्य नहीं समझते !

आज हमें आने वाले छात्रों से ऐसी आशायें हैं कि वे इस अपवित्रता को दूर करेंगे और देश में शान्ति सद्भाव एवं कुशल नेतृत्व दे सकेंगे। आज की राजनीति पंजाब व असम के दंगों से स्पष्ट है। न जाने कितने लोगों को राजनीति में मौत के घाट उतार दिया गया है परन्तु अब युवा वर्ग जाग रहा है और अब देश में स्वच्छ राजनीति के लिये आवश्यक है मेरे विचार से छोटे-छोटे केन्द्र स्थापित किये जाने चाहिये जो कि राजनीति एवं सैनिक शिक्षा के विषय में छात्रों को प्रोत्साहित करें !

मुझे गर्व है कि मुझे इस देश में जन्म मिला

—अभिषेक
अष्टम 'क'

[चि० अभिषेक 'भरत वर्ग' के उभरते निबन्धकार है। अतः विद्यालयीन निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में यह लेख भी प्रथम स्थान पर रहा है..... सं०]

विश्व में अनेक देश है परन्तु उनमें स्वदेश भारत का सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण स्थान है। आम जनता का सोचना यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका या सोवियत संघ या ब्रिटेन आदि संसार के सबसे धनी, विकसित व अच्छे देश हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि धन व विज्ञान व आधुनिक युग की कसौटी पर तो ये देश समृद्ध व विकसित हैं परन्तु ये देश अच्छे हैं इस पर मुझे शंका है। मैं तो इस युग में भी अपने देश भारत को ही अच्छा मानता हूँ और इसके कई कारण हैं। अपने देश के बारे में गम्भीरता पूर्वक हर दृष्टिकोण से विचार करने पर यह बात दृष्टिगोचर होती है कि विश्व के सभी देशों में अपना देश किसी भी मायने में उन्नीस नहीं है।

अपना देश वैदिक काल में ही जगतगुरू रहा था। सारे संसार में उसने अपनी विद्वता, शौर्य एवं महानता की अमिट छाप छोड़ी थी। हमारे देश के ऊपर प्रकृति ने अपनी सम्पूर्ण रचनात्मक प्रवृत्ति को केन्द्रित कर दिया जिससे इस मनोहर, शस्य श्यामला भारत का निर्माण हुआ। भारत के उत्तरी क्षेत्र जो कि आकाश को नापने वाले गगनचुम्बी पर्वतों से आच्छादित है संसार का स्वर्ग कहा जाता है। कश्मीर की रमणीय अत्यधिक सुन्दर वादियों के दृश्य देखकर सारा मन झूम उठता है कहीं फूल तो कहीं पत्ती, कहीं वृक्ष कहीं हरी-भरी घास इन सभी को देखकर हृदय तरंगित हो उठता है। आनन्द के सागर में हृदय गोते लगाने लगता है। ऐसा लगता है कि जैसे हम परी-लोक में आ गये हैं। पहाड़ों से निकलती हुई पवित्र नदियों की शोभा भी दर्शनीय होती है। इसी प्रकार भारत वर्ष के सुदूर दक्षिण कन्याकुमारी के दृश्य भी अतीव सुन्दर होते हैं। प्रातः जब सूर्योदय होता है तो लगता है कि जैसे पानी से भरे एक थाल में जल के लहरों का नृत्य हो रहा हो, पहले अरुणिमा आती है तो उसका सौन्दर्य वास्तव में दर्शनीय होता है। उसके बाद लगता है कि कोई लाल दहकती हुई गेंद समुद्र की गोद से निकल रही है यह दृश्य देखने सारा का सारा शहर समुद्र तट पर आ जुटता है। सायंकाल का सूर्यास्त तो इससे भी एक कदम आगे होता है।

अर्थात् प्राकृतिक सौन्दर्य की हमारे देश में कमी नहीं है अपितु मैं तो यही कहूँगा कि विश्व में इससे सुन्दर और कोई देश हो ही नहीं सकता।

यह भारत माँ विश्व के सर्वाधिक महापुरुषों की जननी रही है। वैदिक काल में यहाँ भगवान राम, कृष्ण, राजा हरिश्चन्द्र, राजा अम्बरीष, परशुराम, वशिष्ठ, विश्वामित्र, राजा दिलीप आदि महापुरुषों का प्रादुर्भाव हुआ। ऐतिहासिक काल में गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, सम्राट अशोक, विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, महात्मा गाँधी आदि। इन महापुरुषों की वीरता व ज्ञान का आज भी संसार लोहा मानता है। भारतवर्ष के लिये तो ये पूज्य ही हैं।

ज्ञान व विद्वता के क्षेत्र में तो यह संसार का जगद्गुरु रह चुका है। यहाँ के ऋषियों, मुनियों, विद्वानों तथा दार्शनिकों ने सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान का प्रचार किया आज भी ज्ञान के क्षेत्र हमारा कोई सानी नहीं है।

भौगोलिक दृष्टि से भी हमारा देश सर्वश्रेष्ठ है यहाँ पर संसार में पाई जाने वाली हर प्रकार की जलवायु पाई जाती है। यहाँ पर सर्वाधिक छह ऋतुएँ पाई जाती है, शिशिर, हेमन्त, वसन्त, शरद, ग्रीष्म, वर्षा। हमारे देश में सर्वाधिक नदियाँ, सर्वोच्च पर्वत शिखर, सबसे उपजाऊ मैदान आदि भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण विविधताएँ पाई जाती है। भूमिगत रत्नों में भी हमारा देश अत्यन्त धनी है। यहाँ पर कोयला, मैगनीज, लोहा, अभ्रक आदि प्रचुर मात्रा में होता है।

हमारे देश की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि हमारा देश संसार के पवित्रतम धार्मिक स्थलों में गिना जाता है। यहाँ पर वैदिक काल से ही लोग धार्मिक रहे हैं तथा उन्होंने धर्म की कभी भी अवहेलना नहीं की है। इसीलिये इसी भूमि में जन्म लेने की देवताओं को भी उत्कष्ट इच्छा रही है। इसीलिए कहा गया है कि—

गायन्ति देवाः किलगीत कानि।
धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे॥

भारत में इतने देवताओं, महापुरुषों का जन्म हुआ है जिससे भारत का कण-कण पवित्र हो गया है इसीलिये हम गाते हैं—

चन्दन है इस देश की माटी,
तपो भूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा,
बच्चा बच्चा राम है॥

इतना ही नहीं, भारत में विविधताओं में एकता भी है भारत एक विशाल देश है इसमें प्रत्येक प्रान्त के लोगों का खान-पान, रहन-सहन वेश-भूषा, रीति-रिवाज अलग है तो भी वह गर्व से कहते हैं हम भारतीय है। इस प्रकार भारत अत्यधिक विषमताओं के होते हुये भी एक देश है यह कोई महान कार्य नहीं है तो क्या है ?

इस प्रकार मैं ही नहीं प्रत्येक भारतीय गर्व के साथ यह कह सकता है कि मैं भारतीय हूँ। क्योंकि उसे भारत की महानता का ज्ञान है। आज यह जरूर है कि भारत अणुबम, परमाणुबम उतने बड़े पैमाने पर बनाने में अक्षम है जितने अन्य देश हैं। बास्तव में भारत का रवैया वैसे भी कभी आक्रमणकारी नहीं रहा। इतिहास गवाह है कि भारत पर न जाने कितने आक्रमण होते आये हैं परन्तु भारत ने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। भारत एक उदार लोगों का देश अकारण ही नहीं कहा जाता है।

भारत वर्ष की इन महानता को नजर अन्दाज न करते हुये मैं सगर्व कह सकता हूँ कि मैं भारत में जन्मा हूँ और आज भी ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यदि वह मुझे इस धरती पर जन्म दे तो इस परमपूज्य भारत माता की गोद में जन्म दे।

———

मैं क्या बनूँगा

—आनन्द कुमार
सप्तम 'क'

मैं एक किसान बनूँगा। शायद आप मेरी बात को पढ़कर चौंके। क्योंकि मैं साधारण किसान नहीं बनूंगा, मैं एक पढ़ा लिखा, जानकार तथा समझदार किसान बनूंगा।

कई लोगों का कहना है कि हिन्दुस्तान गाँव में निवास करता है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। अतः हमारा देश तभी उन्नति कर सकता है जब गाँवों का विकास हो। अतः मैं अपने गाँव का विकास करना चहता हूँ यह काम मैं तभी कर सकता हूँ जब मैं स्वयं ही किसान बनूं। क्योंकि आज बहुत से किसान या हमारे ग्राम भाई खेती की कई कृत्रिम मशीनों के बारे में नहीं जानते हैं। यदि इनको मशीनों के विषय में मालूम होगा तभी ये इन मशीनों का प्रयोग करेंगे और अधिक से अधिक अनाज पैदा करेंगे। जिससे कि हगारा देश उन्नतिशील बनेगा।

मुझे शहरों की अपेक्षा गाँवों में रहना अधिक पसन्द है। क्योंकि शहरों का वातावरण शोर युक्त होता है परन्तु गाँव का वातावरण शान्त और लुभावना होता है। यहाँ पर हरे-भरे लहलहाते खेत, तथा विभिन्न प्रकार के हरे-भरे वृक्ष हमारे मन को अपनी तरफ आकर्षित कर लेते हैं।

बहुत से कम विकसित ग्रामों में सिचाई केवल वर्षा के माध्यम से ही की जाती है। जब कभी किसी वर्ष पानी नहीं बरसता है तो उनकी फसलें सिचाई के बिना ही सूख जाती है जिससे कि उनकी मेहनत पर पानी फिर जाता है तथा वे निराश हो जाते हैं। फिर वे अपना काम पूरे उत्साह से नहीं कर पाते। अतः मुझे ही नहीं बल्कि सभी लोगों को चाहिये कि वे इन कम विकसित ग्रामों में जाएँ और उन्हें सिचाई के नये-नये तरीके बताएँ या सिखाएँ। यदि हम इन्हें नये-नये सिचाई के तरीके बतायें तो ये लोग अपनी फसलों की सिचाई करेंगे। हमें इन्हें सिचाई के अतिरिक्त अन्य कई चीजों को विस्तार पूर्वक बताना चाहिये। जैसे— कृत्रिम खाद ट्रैक्टर, ट्यूबेल, पम्प सेट, तथा इनके अतिरिक्त अन्य कृषि सम्बन्धी चीजें। इन्हीं बातों का स्मरण कर मुझे लगता है कि हम पढ़ लिख कर योग्य बनकर इन्हे इन चीजों के विषय में विस्तार से बतायें।

बहुत से हमारे ग्राम में कई निरक्षर ग्रामीण भाई हैं। अतः उन्हें फलों तथा सब्जियों की उपयोगिता का ज्ञान न होने से वे अपने फलों तथा सब्जियों को बाजारों या दुकानों में बेच आते हैं। अतः मेंने कुछ दिनों पहले उन्हें सब्जियों तथा फलों की उपयोगिता बताई। अब हमारे कई ग्रामीण भाई सब्जियों तथा फलों की उपयोगिता को समझने लगे हैं तथा अब वे इनको अपने उपयोग में लाने लगे हैं।

बहुत से ग्रामीण भाइयों को बैंकों इत्यादि का ज्ञान नहीं है बहुत से किसान जानते हुए भी इन बैंकों में धन नहीं जमा करते। वे सोचते हैं कि बैंक में पैसा जमा करने से उनका पैसा सरकार ले लेगी। अतः मैं चाहता हूँ कि मैं पढ़ लिखकर उन्हें इनके बारे में समझाऊँ। बहुत से लोग निरक्षर ग्रामीणों को कई प्रकार से ठग लेते हैं। अतः हम समझदार व्यक्तियों को इन्हें ठगों से बचाना चाहिये। इन सब बातों का स्मरण कर मुझे ऐसा लगता है कि हमारा भारत वर्ष इन्हीं ग्रामीणों के कारण अत्यन्त प्रगतिशील नहीं है। हमारा देश तभी प्रगतिशील हो सकता है जब हमारा गाँव प्रगतिशील हो। अतः मैं अपने देश की उन्नति के लिये स्वयं किसान बनना चाहता हूँ।

———

जीवाणु हमारे मित्र या शत्रु

—अजय कुमार

अष्टम 'क'

सबसे पहले सन् १६८३ में हालैण्ड के निवासी एण्टोनी वॉन लीवेनहाक ने अपने बनाये हुये साधारण से माक्रोस्कोप के द्वारा जीवाणुओं को देखा था। एरनवर्ग नामक वैज्ञानिक ने उसको सबसे पहले 'बैक्टीरिया' का नाम दिया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक राबर्ट कोच ने यह सिद्ध किया कि क्षय रोग तथा हैजा जैसी भयानक बीमारियाँ भी इन्हीं जीवाणुओं के द्वारा होती है। आज जीवाणुओं का अध्ययन इतना महत्वपूर्ण है कि यह अध्ययन की एक अलग शाखा ही बन गयी है जिसे बैक्टीरियोलॉजी कहा जाता है।

जीवाणु सर्वत्र विद्यमान होते है— हवा में, जल में और वस्तुतः सभी पदार्थों पर ये अदृश्य रूप से पाये जा सकते है। मनुष्य तथा जानवरों के शरीर पर ये अदृश्य रूप में वास करते हैं। आकार में ये बहुत ही छोटे होते हैं। एक ग्राम मिट्टी में लगभग २०० करोड़ तक जीवाणु पाये जाते हैं।

जीवाणु सबसे छोटी एककोशीय जीव है। परिमाण में जीवाणुओं की कोशिकायें चौड़ाई में ०.२ माईक्रान से लेकर २ माईक्रान तक और लम्बाई में २ माइक्रान से लेकर १० माइक्रान तक होती है। गोलाकार जीवाणु १ माइक्रान व्यास के होते है।

जीवाणु प्रायः तीन प्रकार के होते हैं—

१— गोलाकार या कोकाई— ये गोल आकृति के जीवाणु होते हैं ये अलग-अलग जोड़ों या जंजीर के रूप में रहते हैं।

२— बैसिलाई— ये छड़ के आकार के होते है। कभी-कभी समूह में एक दूसरे से जुड़े रहते है और तन्तुमय संरचना बनाते हैं।

३— स्पाईरिया— इनका आकार सर्पिल अथवा पेंचदार होता है। जीवाणु एक कोशकीय प्राणी है। इनकी कोशिकाभित्ति एक जटिल कार्बोहाइड्रेट की बनी होती है जिसे सेमीसेलुलोज कहते है। कोशिकामिति काफी मोटी होती है जिसमें जीवद्रव्य उच्च पौधों के समान संगामी होता है। रिक्तकायें प्रायः पायी जाती है परन्तु प्लास्टिक का अभाव होता है। कोशिकाद्रव्य में राइबोसोमज, वसा डी० एन० ए० (डी आक्सीराइब्रोन्यूक्लिक एसिड) की लच्छियां आदि पायी जाती है।

जीवाणु– कोशिकाये सरलतम अवश्य है परन्तु इनके अन्दर होने वाली जैविक क्रियाये उच्च पादपों की कोशिकाओं के समान ही होती है। जीवाणु परपोषित एवं स्वपोषित दोनों ही प्रकार के होते है अधिकतर जीवाणु परपोषित या परजीवी होते है। स्वपोषित जीवाणुओं की सख्या बहुत कम है।

मानव जाति के लिये जीवाणुओं का महत्व– मनुष्य जाति के लिये जीवाणुओं का बड़ा महत्व है। इनसे हमें अनेक लाभ तथा अनेक हानियाँ है। इन्हें दो वर्गों में बाँटा जा सकता है।

उपयोगी जीवाणु (उत्तम स्वास्थ्य)– कुछ जीवाणु अपनी कोशिकाओं में 'विटामिन बी' का निर्माण करते है। इसका प्रयोग रक्तहीनता में किया जा सकता है। जीवाणु मनुष्य की छोटी आंत तथा बड़ी आंत दोनों में स्थाई रूप से रहते है। ये यहाँ विटामिन और एन्जाइम का निर्माण करते है।

व्यवसाय में (भोज्य पदार्थ)– दूध का खट्टा होना जीवाणुओं की क्रिया पर निर्भर है। ये जीवाणु दुग्ध शर्करा को स्वयं पचाकर लौक्टिक अम्ल उत्पन्न करते है। एक जीवाणु स्ट्रेप्टोकोकस लैक्टिक दूध को दही में बदल देता है। डेरी व्यवसाय में जीवाणुओं की इसी प्रक्रिया द्वारा मक्खन तथा पनीर बनाया जाता है।

एसिटिक अम्ल या सिरका उत्पादन– फलों के रसों में ईस्ट पाया जाता है। ये ईस्ट कोशिकायें शर्करा का तिरखंडन करके एथिल एल्कोहल बनाती है, और एसीटोबैक्टर नामक जीवाणु एल्कोहल का आक्सीकरण करके सिरका बनाते है।

एल्कोहल एवं एसीटोन का निर्माण– शर्करा के घोल से एल्कोहल और एसीटोन का निर्माण क्लास्ट्रीडियम एसिटोबैटालिकम द्वारा किया जाता है।

चर्म उद्योग– पशुओं की खाल से चमड़ा बनाने में भी जीवाणुओं का उपयोग होता है। कच्ची खाल को नांदो में सड़ने के लिये रख दिया जाता है। जीवाणु एन्जाइम स्रावित करते है जिससे खाल में लगे हुये रोम आदि गल जाते है।

तम्बाकू व्यवसाय– बैसिलस मेगथीरियम माईक्रोकोरस आदि की क्रिया से तम्बाकू की पत्ती में सुगन्ध और स्वाद बढ़ जाता है। यह इन जीवाणुओं की किण्वत की क्रिया के कारण होता है।

चाय उद्योग– माइक्रोकोस कैडीसन्स द्वारा चाय की पत्तियों पर किण्वन क्रिया की जाती है। इससे उसमें विशेष स्वाद आ जाता है।

औषधियां– कुछ प्रतिजैविकी औषधियां जीवाणुओं द्वारा बनायी जाती है। जैसे–ब्रेविस तथा बैसिलस एबटिलिस की कुछ जातियाँ।

हानिकारक जीवाणु

भूमि की उर्वरता को कम करना– कुछ जीवाणु जैसे–थायोबैक्सीलम डेनीट्रीजिकन्स और माइक्रा-

ककोस डेवीट्रीजिकन्स नाइट्रेट को स्वतन्त नाइट्रोजन व अमोनिया में बदल देते है। ये भूमि के लिये हानिकारक है। जीवाणुओं की यह क्रिया उर्वरता 'बिनाइट्रीकरण' कहलाती है। इससे भूमि में उत्पादन शक्ति कम होती है।

जीवाणु और रोग– परजीवी जीवाणु जन्तु के ऊतको में वास करते है, और बिष उत्पन्न करते है। जीवाणु बहुत से भयानक रोग उत्पन्न करते हैं। जैसे—

जीवाणुओं का नाम	**रोग का नाम**
डिप्लोकोकस न्यूमोनिया	निमोनिया
क्लास्ट्रीडियम टिटेनिया	टिटेनस
इबेनटोला टाइफोरा	टाईफाइड़ ज्वर
माइक्रोबैक्टीरियम डिप्टीरिया	डिप्थीरिया
भाइक्रोलैक्टोरियम ट्यूबरोकुलोसिस	टी० बी० (तपेदिक)
माइक्रोबैक्टीरियम पिपरल	कुष्ठ (कोढ)
हेमोफिलस परट्यूसिस	खांसी दमा
गइएरो कामा	हैजा
बैसिलस एन्थ्रसिस	कानस्फोट
ट्रीपोनिमा पैलाइडपम	सिफलिस

पौधो की बीमारियों वाले जीवाणु

स्यूडोमोनास सोलानासियम	आलू का शैथिल रोग
एनविनिया एमीलिवोरा	सेब व नाशपाती का अग्नि तीरज
एगटोकोबैक्टीरियम	क्राउन गाल
एन्थोमोनास कैम्पेकट्रीस	बन्द गोभी का काला विगलन
एग्जैमोनास सिट्री	नीबू का केंकर

भोजन का नाश– जीवाणुओं की बहुत सी जातियाँ खाद्य की वस्तुओं को नष्ट करती हैं। फ्लास्ट्रीडियम बोटलिनम मांस एवं अधिक प्रोटीन वाले पदार्थों का नाश करता है।

कपास का नाश– जीवाणु साइटोफेज रुई के रेशों का नाश करता है।

पैनिसिलीन का नाश– कुछ जीवाणु एंजाइम बनाते है जिससे पेनिसिलीन का नाश होता है।

अतः जीवाणु हमारे मित्र भी है और शत्रु भी है।

———

भारत और परमाणु ऊर्जा

—राजीव अग्रवाल
सप्तम 'ख'

[भारत की परमाणु ऊर्जा का उपयोग शांति के कार्यों में ही श्रेयस्कर होगा, पर 'जुगल देवी स्मारक वाद-विवाद प्रतियोगिता' के अन्तर्गत चि० राजीव अग्रवाल की प्रस्तुत 'वाद-विवाद सामग्री ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यहाँ प्रस्तुत है— विषय सामग्री लेख के रूप में····· —सं०]

हम शान्ति के पुजारी हैं। हम यही चाहते हैं कि संसार में शान्ति रहे, और सदैव से शान्ति-पाठी तथा मानवतावादी रहे हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' हमारी भगवान से प्रार्थना रही है। 'वसुधैव कुटुम्बकं' हमारी संस्कृति का एक मान बिन्दु रहा है।

परन्तु जहाँ हम सारे चराचर जगत में एक ब्रह्म का ही प्रसार मानते आये हैं, वहाँ हम दुष्टों का संहार करना भी जानते हैं। हमारे सभी देवता तथा अवतार सभी शस्त्रधारी रहे हैं। हमारा आदर्शवाद ठोस व्यावहारिक धरातल पर प्रस्थापित है। कोरी अहिंसा से समाज का संरक्षण नहीं हो सकता। जब तक समाज में दुष्प्रवत्तियाँ रहेंगी उनके दमन के लिये आयुधों की आवश्यकता रहेगी। जैसे आसमाजिक तत्वों को दण्ड देने के लिये पुलिस के पास नवीनतम शस्त्र होने चाहिये। इसी प्रकार देश की, राष्ट्र की रक्षा के लिये आधुनिकतम शस्त्रों की आवश्यकता होती है। आक्रमणकारी सेनाओं को गांधी जी के अहिंसात्मक सत्याग्रह से काम नहीं चलेगा। काश्मीर में पाकिस्तानी सेना के साथ जब सशस्त्र कबाइली लुटेरों ने १९४८ में आक्रमण किया था, तब भारत सरकार द्वारा सेना भेजे जाने को शान्ति के मसीहा गांधी जी का भी आशीर्वाद प्राप्त था।

जब हमें देश की सुरक्षा अथवा देश के अन्दर के असामाजिक तत्वों के दमन के लिये शस्त्रों की आवश्यकता होती है तो उनके आधुनिकतम होने की आवश्यकता को महत्व देना पड़ेगा।

मध्यकाल में बाहर से आये हुए आक्रमणकारियों के सामने भारतीयों के टिक पाने का कारण यही था कि हम युद्ध में श्रेष्ठतम एवं आधुनिकतम हथियारों का प्रयोग ही नहीं जानते थे। बाबर की तोपों के सामने राजपूतों के तीर, तलवार, और बरछे इनके सारे शौर्य साहस और बलिदान भाव के होते हुये भी काम नहीं आये थे।

आधुनिक काल में अंग्रेजी सेना जो अधिक सुसज्जित प्रशिक्षित एवं अनुशासित थी जिसके पास आधुनिकतम हथियार थे हमारी सेनाओं को हराने में सफल हुयी। आज का आधुनिकतम एवं संहारक हथियार परमाणु ब है। इसी की सहायता से पिछले महायुद्ध में अमेरिका ने मित्र राष्ट्रों को जर्मनी, इटली और जापान पर विजय दिलाई थी। जिसके पास अधिक संहारक एवं आधुनिकतम हथियार होंगे उसी की विजय निश्चित है।

यदि पाकिस्तान परमाणु बम बना लेता है और भारत विश्व शान्ति की दुहाई देता हुआ चुप बैठा रहता है, और अणु शक्ति का प्रयोग केवल शान्ति के कार्यों में करता है तो इसका क्या परिणाम होगा ? क्या पाकिस्तान का राज्य काश्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से बांगलादेश तक हो जाये ?

आज अमेरिका और रूस दोनों ही परमाणु ऊर्जा में लगभग बराबर हैं। दोनों ने ही विभिन्न प्रकार के पारवाणिक शस्त्र सहस्रों में बना लिए हैं। प्रत्येक को डर है कि यदि उसने आक्रमण किया तो दूसरा भी उतनी शक्ति से उसे नष्ट क ने की सामर्थ्य रखता है। इसीलिये महायुद्ध रुका हुआ है। प्रथम महायुद्ध के २० वर्ष पश्चात ही द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया था। परन्तु द्वितीय महायुद्ध के ४० वर्ष बीतने पर तृतीय महायुद्ध नहीं छिड़ रहा था। यदि रूस की स्थिति वही होती जो द्वितीय महायुद्ध के समय थी, और अमेरिका के पास ही पारमाणिक शस्त्र होते तो कब तक महायुद्ध छिड़ गया होता।

भारत को विश्व में यदि पुनः परम वैभव का स्थान प्राप्त करना है तो अपने को दुष्ट षडयंत्रकारियों से सुरक्षित रखने के लिए आधुनिकतम शस्त्रों से सम्पन्न होना ही होगा। और वे आधुनिकतम शस्त्र परमाणु शस्त्र ही तो होंगे। हम परमाणु ऊर्जा का उपयोग शान्तिमय कार्यों में तो करें, साथ ही साथ शत्रु का मान मर्दन करने हेतु भी क्यों न करें। यदि हम ऐसा करने के लिए तत्पर रहेंगे तो विश्व शान्ति भी कायम रहेगी और हम सुरक्षित भी रहेंगे।

———

शून्य

--विश्वजीत कुमार सिंह
दशम क'

'शून्य' भारत की देन है। 'शून्य', पूर्ण और अनन्त की कल्पना सर्वप्रथम भारतीय ज्योतिषियों, गणितज्ञों और विद्वानों ने की तथा इसे सिद्ध करने में भी सफल हुए। शून्य के सांकेतिक चिन्ह (०) का आविष्कार भी किन्हीं प्राचीन भारतीय विद्वानों ने किया था, किन्तु दुर्भाग्य से आज हम उसको नहीं जानते हैं।

कुछ लोग शून्य के आविष्कार का श्रेय आर्यभट्ट को देते हैं, जो उनके ग्रन्थ 'आर्यभट्टीयम्' के अनुसार सही प्रतीत नहीं होता है। सम्भवतः इनसे भी पहले किसी गणितज्ञ ने इसका आविष्कार किया था। सम्भवतः सूर्य, चन्द्र आदि खगोलिय पिण्ड के गोल आकार से शून्य को (०) इस प्रकार लिखने की प्रेरणा मिली हो। आर्यभट्ट ने ४९९ ई० में शून्य, स्थानीयमान सिद्धांत एवं दशमलव पद्धति का सर्वप्रथम विवेचन अपने ग्रन्थ में किया था।

ऋगवेद के अनुसार भी प्राचीन काल में गणना का आधार दस था। सम्पूर्ण अंक संख्याओं को १ से ९ तक और शून्य के माध्यम से लिखा जाता था। आर्यभट्ट ने वर्णाक्षरों को १, २.....२५ तक की संख्याओं में निर्धारित किया, "अ" वर्ग अक्षरों से ३०, ४०, ५०..... १०० को निरूपित किया और शून्य लगाने के लिये स्वरों से काम लिया।

प्राचीन काल के ग्रन्थों के अनुसार शून्य को 'ख' से भी प्रदर्शित किया गया था। लीलावती नामक पुस्तक में भी शून्य एवं पूर्ण का विवेचन है। नवीं शताब्दी में राष्ट्रकूट वंश के राजा अमोधवर्ष के समय आश्रय प्राप्त महान गणितज्ञ महावीर ने अपने ग्रन्थ 'गणित सार संग्रह' में शून्य 'ख' को अविकारी बताया है। उसे असीम, निःसीम, अविकारी, अविनाशी, महाशून्य भी कहा जाता था।

उज्जैन के गणितज्ञ-ब्रह्मगुप्त ने ७वीं शताब्दी में भी शून्य का उल्लेख किया है। श्रीधर ने विशटिका में शून्य के गुणों का विवेचन किया है।

आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द ने शून्य पर अपनी अभिव्यक्ति देकर उसके महत्व महत्व को सम्पूर्ण जग के सामने रखा। शून्य को एक पूर्ण व ब्रह्म सदृश मानकर ही कहा गया है।

ओम पूर्ण अदः पूर्ण इदं, पूर्णात् पूर्ण उदच्यते।
पूर्णस्य पूर्ण आदाय, पूर्ण एव बशिष्यते॥

———

उन्नति कैसे करें

—धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
एकादश 'ख'

आत्मविश्वास और मनोबल को बढ़ाने वाली आन्तरिक क्षमताओं और सद्गुणों को विकसित करने वाली सच्ची सरल और व्यवहारिक पद्धति हमको नई स्फूर्ति या नया उत्साह प्रदान करती है। यह हम लोगों के सम्मुख ऐसा मार्ग प्रशस्त करती है जिसका अनुसरण करने से हम लोग अपने जीवन को उन्नत सुखमय एवं सफल तथा समाज के सामने एक आदर्श रूप में प्रस्तुत कर सकने वाला बना सकते है तथा यह मनोबल को ऊपर उठाने वाला साहित्य है। हम उन्नति निम्न प्रकार से कर सकते हैं—

(१) चिन्ता से छुटकारा– चिन्ता और चिता यदि हम इन दोनों में अन्तर देखें तो हम पायेंगे कि चिता मृत व्यक्ति को जलाती है और चिन्ता जीवित व्यक्ति को जला डालती है। चिन्ता चिड़चिड़ेपन की जननी है, चिन्ता से बचने के लिये इस स्थिति को टाल दिया जाये, जैसे–सिनेमा या तमाशा देखने लगे या चिन्ता को दूर करने के लिये निद्रा औषधि का कार्य करती है।

(२) कर्म में लगना– गीता में श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि

"कर्मणवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।"

अर्थात् मनुष्य को फल की इच्छा रखे बिना, कर्म करना चाहिये। जैसे कर्म करेगा मनुष्य उसको भगवान द्वारा वैसा ही फल प्राप्त होगा, बच्चों में जो गुण पाये जाते है, वे सब माता-पिता के है अतएव माता-पिता को अपने आचरण पर नियन्त्रण रखना चाहिये, जिससे उनके बच्चे स्वयं नियन्त्रित हो जायेंगे। इस प्रकार कर्म द्वारा हम ऐसा आदर्श प्रस्तुत करें, जिससे हमारा समाज लाभान्वित हो सके।

(३) क्रोध से दुश्मनी:– जिससे हमारा नैतिक पतन होता है, वे हैं काम, क्रोध, मोह, लोभ। ये मनुष्य को पतन की ओर अग्रसर करते हैं तथा क्रोध के बाद मोह और लोभ है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है कि जब मनुष्य की कामनायें तथा वासनायें तृप्त नहीं होती तो क्रोध का जन्म होता है और क्रोध के लिये क्षमा से बढ़कर दूसरी कोई औषधि नहीं है, कहा भी गया है।

"क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात।
का रहीम हरि को घटी, जो भृगु मारी लात।।"

(४) रामचरित मानस में तुलसी दास जी एक स्थान पर कहा है:—

"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।
कर विचार देखो मन माही।।"

आज भारत की नारी इतनी दुखी क्यों है, यदि हम उसके जीवन को देखकर विचार करें तो हम पायेगें कि दुख का मूल कारण 'पराधीनता' है, स्वावलम्बन आलस्य का शत्रु है। मूर्ख लोग सदैव 'दैव की कल्पना करते हैं, जैसे—

"कातर मनकर एक अधारा।
दैव - दैव आलसी पुकारा ।।"

(५) आत्मविश्वास:— सफलता के साधनों में आत्मविश्वास का प्रमुख महत्व है, यदि हम इतिहास के स्वर्णिय पन्नो को पलटकर राणा प्रताप के जीवन को लें तो हम देखेंगे कि उस वीर की सेना छूटी, संगी-साथी छूटे, चित्तौड़ छूटा, लेकिन उसने आत्मविश्वास नहीं छोड़ा। गीता में कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते है कि जब तक मनुष्य को अपने अन्दर दृढ़ विश्वास नहीं होगा सफलता दूर भागेगी तथा यदि उसको आत्मविश्वास हो जाये, तो सफलता उसके चरण चूम लेगी।

(६) स्वास्थ्य:— स्वास्थ्य का जीवन में बड़ा मूल्य है। इस संसार में जो स्वस्थ है, वही सुखी है। स्वास्थ्य का एक बड़ा वसूल यह है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ्य मस्तिष्क निवास करता है अर्थात् सुचारु रूप से मानसिक कार्य वही करता है, इसलिये हमें अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिये नियमों का पालन करना आवश्यक है।

(७) समय :— समय अमूल्य है अर्थात् जिस प्रकार से तरकस से छोड़े गये तीर वापस नहीं आते उसी प्रकार बीता समय वापस नहीं आता। इसलिये मनुष्य को समय का सदुपयोग करना चाहिये, इस प्रकार कहा गया है—

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीम ताम।
व्यवसेन च मूर्खानां निन्देन कलहेन वा ।।

इसलिये मनुष्य को अपना समय खोना नहीं चाहिये।

(८) सत्संग :— संगति हमेशा अपने से अच्छे ही कि करनी चाहिये जब हनुमान जी लंका में पहुँचते हैं, तो चारो ओर केवल असुर-असुर दिखलाई पड़ते हैं, दूर से राम नाम अकित कुटिया दिखाई पडती है, देखते ही उनके मुख से निकलता है। 'साधु संग नहिं कारज हानी' अर्थात् सज्जनों का साथ करने से कभी हानि की सम्भावना नहीं होती। इस प्रकार हनुमान जी ने विभीषण से सीता का पूरा पता लगा लिया।

(९) सद्व्यवहार :— पशु भी सद्व्यवहार को समझता है, और यह भावना पशु में भी पाई जाती है, भूखे पेट पशु का व्यवहार, जब उसका पेट भरा होता है तो भिन्न होता है, पशुओं में भी प्रेम की भावना होती है, उदाहरण स्वरूप यदि हम एक पालतू कुत्ते को ले तो हम उसकी स्वामिभक्ति की प्रशंसा करते है। सद्व्यवहार करने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य पर भी अच्छा असर पड़ता है।

(१०) डायरी अच्छा मित्र :— डायरी वह मित्र है जो व्यक्ति को शीर्ष की ओर अग्रसित करती है। इससे व्यक्ति कोई दुख या छिपाव नहीं रखता। यदि व्यक्ति डायरी ईमानदारी से लिखी जाये, तो वह हृदय का वर्णन है, जिस प्रकार मनुष्य एक सच्चे मित्र को अपने दिल की सच्ची बात को बताता है उसी प्रकार व्यक्ति अपनी बात को डायरी में लिखता है। इस प्रकार डायरी भरने से व्यक्ति का जीवन सुधरता है।

———

किशोरावस्था में प्रवचन कितना सार्थक ?

—अविनाश 'अकेला'
द्वादश 'क'

[चि० अविनाश एक संवेदनशील किशोर लेखक व कवि है। कभी-कभी वह छात्रावास के मेरे कक्ष में प्रवेश करते ही दार्शनिक मुद्रा में कहते हैं— 'कुछ अच्छा नहीं लगता।' निश्चित ही इनमें सोचने की मौलिक क्षमता है। प्रस्तुत लेख इस कथन की सार्थकता ज्ञापित करेगा·····सं०]

कितना परिवर्तनशील है यह संसार और यह मानव-जीवन भी। परमात्मा भी अजीब है। अपने मजे के लिये उसने एक ऐसे जीव की रचना कर डाली जो सोच सकता है, विचार कर सकता है अपने हित-अहित का ख्याल रख सकता है, जिसमें भावनायें होती है और अपनी बात रखने की तर्क शक्ति।

मानव पैदा होता है और मर जाता है इस बीच वह अपनी जीवन अवस्था के कई पहलुओं (पक्षों) से गुजरता है इसी परिपेच्छ में जब वह अपनी बाल्यावस्था को समाप्त कर जिस नई अवस्था में पदार्पण करता है वह कहलाती है– "किशोरावस्था"। सामान्यतः यह अवस्था १२-१३ वर्ष से १९-२० वर्ष तक रहती है। इसी बीच उसके जीवन में कई शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन होते हैं। यही समय उसके लिये तेज, शक्ति साहस, वीरता व अन्य कई गुण सीखने के लिए उपयुक्त होता है, परन्तु इसके साथ एक बात और यही समय उसका तेज, शक्ति वीरता आदि गुणों के नष्ट होने का भी होता है अतः इसी अवस्था में मानव अपने आपको काफी बड़ा महसूस करने लगता है। उसके अन्दर उत्साह और निराशा की धारायें चलने लगती है। उसकी मानसिकता ही एक दूसरे प्रकार की बन जाती है, एक विशेष गुण जो उसके स्वभाव में आ जाता है– वह है 'विरोध'।

यह तो उस अवस्था की दशा है जो उसके जीवन में कुछ वर्षों के लिये आती है। परन्तु उसके 'बड़े' जो वास्तव में उसके हितों को समझते हैं, और किशोरावस्था की कमजोरियों को जानते हैं और चाहते हैं कि इस काल में– जिसमें वह शक्ति का महाभण्डार एकत्र कर सकता है इन सुअवसर से वंचित न रह जाये अतः यदि वह कुछ ऐसा करता है कि जिसे न करना चाहिये तो उनके दिल में दुःख होता है अतः वे उससे सही बात कहते हैं।

अब यहाँ उसकी स्थिति देखिये जो किशोर अवस्था को जी रहा है। एक तो उसकी अपनी योजनाएँ, अपना उत्साह और कुछ कर दिखाने की तमन्ना, तथा उसकी अपनी एक मानसिक स्थिति। मानसिक स्थिति से तात्पर्य यह कि उसकी अपनी कुछ प्रकृति होती है वह किस प्रकार की बातें पसन्द करता है, आदि। अब जो व्यक्ति उसको उपदेश देता है वह तो उसको अपना आत्मीय समझते हुये उसको, उससे सम्बन्धित कई बाते बताता है अब बिल्कुल ऐसा नहीं कि वह सभी बातें ग्रहण ही कर लेगा, क्योंकि ऐसा होता है कि जो कुछ आदमी के

शेष पृष्ठ १०३ पर

परमाणु युग और भारत :

इस दौड़ में हम कहाँ हैं

—संजय अवस्थी
एकादश 'क'

अगस्त १९८४ में भूतपूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने लोक सभा को बतलाया था कि "पाकिस्तान की परमाणु धमकी से कोई बड़ा अन्तर नहीं पड़ने वाला है।" करीब एक वर्ष बाद प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी ने कहा पाकिस्तान द्वारा बम बनाने के प्रयासों के कारण भारत को भी इस मुकाबले में सोचना पड़ेगा।"

तीन दशक पहले भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के जनक डा० होमी जहाँगीर भाभा ने भारत में शान्तिमय परमाणु युग की शुरुआत की थी। तब से भारत परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। हमारे पाँच परमाणु बिजली सयन्त्रों में कम से कम दो तो अभी संतोषजनक स्थिति में नहीं है। फिर भी हमने दो हजार ईश्वी तक १० हजार मेगावाट परमाणु बिजली पैदा करने की क्षमता विकसित करने का महत्वकांक्षी कार्यक्रम बना रखा है। परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डा० राजा रमन्ना इस उद्देश्य को यथा-संभवपूर्ण करने में कार्यरत है। यदि वे निश्चित अवधि तक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कार्यरत है तो उन्हें देशी प्रौद्योगिकी विकसित करना होगा तथा ईधन की जटिल समस्याओं को सुलझाना होगा।

परमाणु शक्ति के कारण सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त खतरे के बावजूद भारत जैसे परमाणु अस्त्रविहीन देश के लिये चुनाव करने के लिये कुछ नहीं रह जाता। न चाहते हुए भी भारत को शायद परमाणवीय हथियार न बनाने की नीति पर शायद पुनः विचार करना पड़े। १९७४ में पोखरन में परमाणु विस्फोट ने यह सिद्ध तो कर ही दिया था कि भारत परमाणु प्रौद्योगिकी में अनभिज्ञ नहीं है। अगर हम इसे परमाणु शस्त्रीकरण की शुरुआत माने तो हमारे समक्ष कुछ गम्भीर समस्यायें भी हैं।

भूमिगत विस्फोट करने तथा लक्ष्य पर मार करने के बीच कई प्रौद्योगिक कदम है। उन्हें भारत ने सफलतापूर्वक पूरा भी किया तो भी कुछ कठिनाइयाँ शेष रह जाती है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि प्लूटोनियम का इस्तेमाल बम बनाने में किया जा सकता है। यह ईधन परमाणु सयन्त्रो का अवशेष होता है। मगर लम्बी अवधि के कार्यक्रम में यूरेनियम को समृद्ध बनाने की प्रणाली में दक्षत पाना आवश्यक है। दुर्भाग्यवश भारत अभी इस सीमा को लांघ नहीं पाया है जब कि पाकिस्तान का दावा है कि उसने इस तकनीको को प्राप्त कर लिया है। इस सन्दर्भ में यह बहाना महत्वपूर्ण है कि भारत के पास यूरेनियम के पर्याप्त खनिज भण्डार हैं। अब तक भारत में १८ टन यूरेनियम खोज निकाला गया है।

व्यापक भण्डारों के कारण यूरेनियम को समृद्ध करने की प्रौद्योगिकी में भारत का आगे बढ़ना भारत के लिये अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगा। यदि यह प्रौद्योगिकी भारत को प्राप्त हो गयी तो परमाणु बिजली उत्पादन के साथ ही परमाणु शस्त्रों के क्षेत्र में भारत काफी आगे बढ़ सकेगा।

दूसरी समस्या परमाणु बम को लक्ष्य तक ले जाने वाले वाहनों की है। हिरोशिमा और नागासाकी पर बम विमानों से गिराये गये थे। अब इस प्रकार के विमान आसानी से उपलब्ध हैं, जिन्हें परमाणु अस्त्र उठाने योग्य बनाया जा सकता है। मगर इसके बचावी साधन इतने विकसित हो गये हैं कि विमान को लक्ष्य तक पहुँचाना एक टेढ़ी खीर है। इसके लिये सबसे कारगर तरीका अन्तर महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्र है। इनमें भारत केवल ५० % तक बढ़ पाया है। क्योंकि जिन प्रक्षेपास्त्रो के माध्यम से हम बाहरी अन्तरिक्ष में वैज्ञानिक परीक्षण करते हैं वे केवल स्थल से अन्तरिक्ष में जा सकते हैं लौट नहीं सकते। लौटने के लिये दूर नियन्त्रण के साथ एक धातु कवच की आवश्यकता पड़ती है जो वायुमण्डल में प्रवेश करते समय घर्षण द्वारा उत्पन्न ताप को सह सके। भारत को अभी इस प्रकार का कवच बनाने में सफलता नहीं मिली है। अनुसंधान का यह एक और क्षेत्र है जहाँ भारत को आगे बढ़ना होगा।

परमाणु हथियारों को शत्र सीमा तक ले जाने के लिये हवा में तैरने वाले विशेष प्रकार के प्रक्षेपण यानो का भी उपयोग होता है। ये विशेष यान वायुमण्डल के बाहर नहीं जा सकते हैं। वाशिंगटन में प्रकाशित एक पत्रिका "एरोस्पेस डेली" की दावा है कि भारत इस प्रकार के विमानों का परीक्षण कर रहा है जबकि भारत सरकार ने ऐसे कोई भी प्रयोग से इन्कार किया है। बहुत सम्भव है कि भारत में इसके पहले चरण में कार्य चल रहा हो। पहले चरण में चालक विहीन लक्ष्य विमान (पायलेट लैस टारगेट एयरक्राफ्ट) का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार के विमान का उपयोग प्रायः जासूसी के लिये किया जाता है। मगर अभी अधिकारिक रूप से यह ज्ञात नहीं है कि हम इन विमानों का परीक्षण कर रहे हैं। अपनी परमाणु नीति में व्यापक परिवर्तन करने के पश्चात भारत को इन सभी समस्याओं को हल करना होगा, और एक बहुपक्षीय शस्त्रीकरण कार्यक्रम प्रस्तुत करना होगा।

———

(पृष्ठ १०१ का शेष भाग)

किशोरावस्था में प्रवचन कितना सार्थक ?

मनोवृत्ति के अनुकूल होता है, वह उसको जल्दी ग्रहण कर अपना लेता है, और जो मनोवृत्ति के खिलाफ हैं, उसको त्याग देता है। अतः बताने वाला तो लगातार उसके हित को ध्यान में रखते हुये, उसे अच्छा ही बताता है, परन्तु वह उसके मनोवृत्ति के विपरीत होता है अतः उसको स्वीकार नहीं कर सकता है। इस प्रकार लगातार बताये जाने से वह प्रतिक्रिया में (अंग्रेजी में जिसे रिएक्शन कहते हैं) आ जाता है क्योंकि खून तो नया होने के कारण गरम होता है अत. जल्दी ही क्रिया कर जाता है। इसके विपरीत जो उपदेश उसकी मनोवृत्ति के अनुकूल हैं, उनको वह ग्रहण करता है फलस्वरूप उसको लाभ मिलता है और वह ऊपर उठने लगता है।

इस प्रकार हमने देखा कि उपदेश यदि अनुकूल है तो कितना सार्थक है। वह मानव जीवन को स्वर्ग बना देता है परन्तु यदि प्रतिकूल है तो उसका परिणाम भयंकर हो सकता है इसको हम इस प्रकार से समझ सकते हैं कि— यदि हम भोजन कर रहे हैं और हमारा पेट भर गया, परन्तु किसी के आग्रह से जबरदस्ती हमने बहुत ठूंस लिया, तो परिणाम क्या होगा ? वही बढ़िया भोजन उल्टी के रूप में बदबू मारता हुआ बाहर निकल आयेगा यही हाल उसके साथ है।

यदि उसके ऊपर जबरदस्ती कुछ लाद दिया गया हो तो उसमें कुण्ठा पनपने लगती है जहाँ इसकी मात्रा ज्यादा हुयी एक विकृत अवस्था में बाहर फूट पडती है।

अतः मेरे विचार से यदि किसी उपदेश को उसकी मनोवृत्ति के अनुकूल उसको बताया जाये तो उसके लिये संजीवनी से अधिक लाभप्रद सिद्ध हो सकता है अन्यथा वह उपदेश उस पर बुरा असर डालेगा।

———

विद्याध्यन ही सफलता की कुँजी है

– नवीन वर्मा
दशम 'ख'

"विद्याध्यन ही सफलता की कुंजी है।" विद्यार्थी अपने जीवन को पूर्ण परिपक्व बनाने के लिए विद्याध्यन करता है और सुखमय जीवन व्यतीत करता है। विद्यार्थी के लिये यह समय सफलता प्राप्त करने का होता है। इस समय विद्यार्थी विद्याध्यन द्वारा जितनी चाहे उतनी सफलता प्राप्त करके अपने जीवन को सुखमय बना सकता है।

विद्याध्यन के समय विद्यार्थी के मार्ग में जितनी भी बाधाएँ आती है उन सभी का समाधान विद्यार्थी तभी कर सकता है जब वह भली भांति विद्याध्यन करके सभी बाधाओं को समझ सके। आधुनिक विद्यार्थी के जीवन का यह प्रथम चरण है। मनुष्य को अपने जीवन रूपी मंजिल तक पहुँचने के लिए विद्याध्यन करना आवश्यक है।

विद्यार्थी इस समय उस समुद्री नौका के समान होता है जिसको अपने गन्तव्य तक पहुँचने के लिए एक नाविक की आवश्यकता है। उसी प्रकार मनुष्य को अपना जीवन सुखमय व्यतीत करने के लिए विद्याध्यन आवश्यक है। विद्याध्यन न करने से मनुष्य उस समुद्री नौका के समान हो जाता है जिसके लिए कोई नाविक नहीं है। जिस प्रकार बिना नाविक की नाव समुद्र की लहरों के थपेड़े खाती हुई इधर-उधर होती है उसी प्रकार विद्याध्यन न करने से मनुष्य चारों ओर से दर-दर के ठोकरें खाकर अपना कर्तव्य खो बैठता है।

विद्यार्थी विद्याध्यन करके उस पुष्प के समान यश प्राप्त कर सकता है जो कांटो में चारो ओर घिरा हुआ है परन्तु ये कांटे उसके सौन्दर्य में कोई बाधा नहीं उत्पन्न कर पाते। उसी प्रकार मनुष्य का अहित चाहने वाले उसके विद्याध्यन समय उसके मार्ग में बाधक नहीं हो सकते।

आज का विद्यार्थी विद्याध्ययन से विमुख होकर समाज की तड़क-भड़क में खो जाना चाहता है परन्तु उसे यह ज्ञात नहीं है कि संसार की यह तडक-भड़क तो सदैव रहेगी परन्तु बीता हुआ समय वापस नहीं आयेगा। यदि विद्यार्थी विद्या के महत्व को समझते हुए भली-भांति विद्याध्यन करे तो यह निश्चित है कि वह एक दिन सफलता की कुंजी अवश्य प्राप्त कर लेगा।

किसी ने ठीक ही कहा है कि,
"विद्या के बिना समस्त जीवन नरक के समान हो जाता है।"

'बरमूडा त्रिकोण' का रहस्योद्घाटन

पंकज गुप्त, द्वादश 'क'

बीसवीं सदी के वैज्ञानिक यह दावा करते हैं कि दुनियाँ का कोई रहस्य अब रहस्य नहीं रह गया है। विज्ञान ने हर रहस्य को वैज्ञानिक तरीकों से सुलझाया है। ये सच्चाई वही जाने, पर अब भी कुछ ऐसे रहस्य हैं, जिन पर से परदा नहीं हटा है। इन्हीं में से एक है, 'बरमूडा त्रिकोण' का रहस्य। [सं०]

अमेरिका के दक्षिण-पूर्वी तट के पास पश्चिम अटलांटिक महासागर का एक हिस्सा है, जो उत्तर में बरमूडा से दक्षिण फ्लोरिडा तक तथा पूर्व में बहामा और पोर्टोरिका से लगभग 40 अंश पश्चिमी देशान्तर तक फैला हुआ है, 'बरमूडा त्रिकोण' नाम से प्रसिद्ध यह क्षेत्र आज संसार की सबसे विवादास्पद, अविश्वसनीय और रहस्यमय घटनाओं का केन्द्र है। सन् 1945 ई० से आज तक 100 से अधिक जलयान तथा वायुयान गायब हो चुके हैं। इन पर सवार 1000 के लगभग लोगों का भी पता नहीं चला है।

सर्वप्रथम 1945 ई० में, अमेरिकी नौसेना के पाँच लड़ाकू विमान प्रशिक्षण उड़ान के दौरान गायब हुए। फ्लोरिडा के 'फोर्ट लाउर डेल' हवाई अड्डे स्थित कण्ट्रोल टावर को, उड़ान के कप्तान लेफ्टिनेण्ट चार्ल्स टेलर द्वारा भेजा गया आखिरी संदेश इस प्रकार था, 'हम बरमूडा क्षेत्र में थे, तभी हमें लगा कि हमारे विमान हम लोगों के दिये निर्देशों का पालन नहीं कर रहे हैं·····हमें जमीन नहीं दीख रही है और लग रहा है कि हम अपने निर्धारित रास्ते पर नहीं बढ़ रहें हैं, व अन्त में कहा 'अब हमारे पीछे मत आओ····· लग रहा है कि वे किसी दूसरी दुनिया के लोग हैं। इनको खोजने निकला 'मार्टिन मैरीनर' विमान भी लापता हो गया। जबकि इसके कप्तान लेफ्टिनेण्ट कोम का आखिरी व पहला संदेश जो मिला वह इस प्रकार है, "हम जहाँ उड़ रहे हैं, वहाँ अजीब तरह की हवा चल रही है।" "इसी प्रकार डी. सी. 3 यात्री विमान और उसके कप्तान का आखिरी संदेश था. 'हम तेजी से भूमि की ओर बढ़ रहे हैं' और हमें मियामी शहर की रोशनियाँ भी दिखाई देने लगी हैं।" यह क्रम 1985 तक चला है।

पहला जलयान 1800 ई० में गायब हुआ तथा 1880 ई० में चार अन्य विमान भी गायब हुए। 1880

के अन्त में 'यू. एस. एस. अटलाटा' नामक जहाज 210 यात्रियों सहित बरमूडा से इग्लैण्ड की ओर रवाना हुआ लेकिन वह थोड़ी देर बाद गायब हो गया। उसका मलवा आदि कुछ नहीं मिला। इसी प्रकार की घटनायें ब्राजीली युद्धपोत 'साओपाडले', व मछली पकड़ने वाले जहाज 'लकी एडर' आदि के साथ भी हुयी। 'साओपाडले' के गायब होने वाले स्थान पर वायुयानों के चालकों ने अजीब तरह की रोशियाँ देखी थी।

कुछ जलयान आदि ऐसे भी हुए जो गायब होने के बाद प्रकट तो हुए लेकिन.....

इसमें सबसे अजीबोगरीब घटना घटी, अमेरिकी जहाज 'एलेन आस्टिन' के साथ। इसने बरमूडा क्षेत्र में तैरते समय एक ऐसा जहाज देखा जिसमें कोई यात्री नहीं था। इस पर ऐलेन आस्टिन के कप्तान ने अपने अनुभवी आदमियों को जहाज किनारे लाने को भेजा। लेकिन नये कर्मचारियों द्वारा जहाज चलाते ही समुद्र में भयंकर तूफान उठा तथा दोनों जहाजों का सम्पर्क टूट गया। दो दिन की खोज के बाद वह मिला लेकिन नये कर्मचारी गायब थे। इस बार उसकी दिन भर निगरानी की गयी। लेकिन रात होते–2 पुनः समुद्री आंधी आयी और जहाज गायब।

इन सबके बावजूद कुछ लोग इससे बच गये। इसकी पहली घटना सन् 1964 ई० की है। हवाई जहाज के चालक थे 'चक वेकली'। उनके अनुसार, 'उसके विमान के पंख' अजीब सी रोशनी में चमकने लगे, जिससे कुछ दिखता नहीं था, तेल की सुई चारो तरफ घूमने लगी व आटो पायलेट ने जहाज को दाहिनी ओर मोड़ दिया, लेकिन उन्होंने शक्ति पूर्वक उसे सीधे रखा तथा कुछ देर बाद सब ठीक हो गया। इससे बचे लोगों के अनुसार विमान अथवा जहाज के यन्त्र ऐसे समय में बेकार हो जाते हैं तथा काम कर देना बन्द कर देते हैं। दिशा-सूचक सूई तेजी से गोलाई में नाचने लगती है। जलयान के किस्से में कुछ को पानी में भारी अशान्ति उत्पन्न होती दिखी, कुछ को वस्तु धुंध से घिरी प्रतीत हुयी तों कुछ को आकाश धुंधला होता नजर आया, तो कुछ को आकाश दिखना बन्द हो गया, तो कुछ को आकाश पर अजीबो-गरीब घटनायें होती दिखीं।

अभी कुछ वर्ष पहले (लगभग सात वर्ष) एक बोइंग 727 विमान बरमूडा से होकर हवाई अड्डे पर उतरने वाला था कि अचानक रडार के पर्दे से गायब हो गया। करीब दस मिनट वह पुनः रडार के पर्दे पर आया तथा दस मिनट देर से हवाई पट्टी पर उतरा। कण्ट्रोल के अधिकारी द्वारा विमान चालक से मजाक ही मजाक में पता चला कि दोनों की घड़ियों के समयों में 10 मिनट का अन्तर है बाद में पता लगाने पर चला कि सभी यात्रियों की घड़ियाँ 10 मिनट पीछे थी। ये 10 मिनट उनके गायब होने का समय था।

'हेराल्ड वाइकिंग' के अनुसार इस सबके गायब होने के दो कारण हैं। पहला यह कि विभिन्न ग्रहों के लोग पृथ्वी पर आते हों तथा उनको परीक्षण के लिए उठा ले जाते हो। दूसरा यह कि वह मानव के कृत्रिम विकास को देखने के लिए उठा ले जाते हैं। अब तक इस सम्बन्ध में केवल एक सूत्र मिला। वह है एक रेडियो संदेश जो 18 अप्रैल 1975 को फ्लोरिडा, अमेरिका के 'डब्लू एफ. टी. एल' स्टूडियो के प्रोग्राम डाइरेक्टर रे. स्मिथ को मिला था। वह संदेश इस प्रकार था 'हमारे लोक' में जीवित वस्तुओं की आभा होती है। इस लोक का नियन्त्रण मिलियन काउन्सिल करती है। बरमूडा इस लोक का नियन्त्रण क्षेत्र है। इस ग्रह के साथ काउंसिल का सम्पर्क प्राप्त करने का यही एक मार्ग है।' इसके बाद सम्पर्क टूट गया। आज भी वैज्ञानिक उस अनजाने लोक से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

पंजाब में आतंकवाद : कुछ दुर्लभ तथ्य

—सुनील गुप्त दशम 'ख'

गत वर्षों में पंजाब समूचे देश के लिए दैनिक घटनाक्रम का एक अनिवार्य केन्द्र बिन्दु रहा है। तमाम राजनैतिक, सामाजिक कारणों के परिणामस्वरूप पंजाब धीरे-धीरे खूनी आतंकवाद के शिकंजे में कसता गया और एक समय ऐसा आया जब लगने लगा था कि 'पंजाब' राष्ट्रीय अस्मिता एकता व अखण्डता के लिए चुनौती है। वास्तव में 'आतंकवाद' न किसी जाति, धर्म व सम्प्रदाय विशेष को विरासत में मिला है और ना ही कोई आतंकवादी अपने धर्म विशेष की 'पहिचान' है। सच्चाई यह है कि किसी हिंसक या आतंकवादी की न कोई जाति होती है न धर्म और न सम्प्रदाय। वह अपने आप में एक जाति, धर्म व सम्प्रदाय है।

'पंजाब' के बहाने समूचे देश को आतंकवाद की आत्मघाती राह पर धकेलने वाले का नाम है—जरनैल सिंह भिंडरवाले। यहाँ प्रस्तुत है चि० सुनील गुप्त द्वारा संकलित भिंडरवाले के उद्धरणों का हिन्दी अनुवाद जो किशोर मन की आतंकवाद के प्रति संवेदनशीलता ज्ञापित करता है। [स०]

श्री जनरैल सिंह भिण्डरवाले के वक्तव्यों के उद्धरणों का अनुवाद

टेप रिकार्ड की गई स्पीचों के कैसेट से लिए गये उद्धरणों का अनुवाद—

"सभी सिखों को चाहें वे शहरी क्षेत्रों के रहने वाले हों या ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले हों, यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम गुलाम हैं और किसी भी कीमत पर आजादी चाहते हैं। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हथियार सभाल लो और लड़ाई के लिए तैयार रहो तथा आदेशों की प्रतीक्षा करो।"

× × ×

"इस बात को अच्छी तरह से ध्यान रखो कि किसी प्रकार की गड़बड़ी होने पर, सेना और पुलिस के सभी सिक्खों की दुनालियां उसी की तरफ होंगी।"

× × ×

"आनन्दपुर साहिब संकल्प"—"12 बोर की बन्दूक के लिए लाइशेन्स की जरूरत नहीं है। लाइसेन्स लेने की कोई जरूरत नहीं है। यदि आपको 12 बोर गन के साथ पकड़ लिया जाता है और पूछा जाता है कि इसका लाइसेन्स कहाँ है तो आप यह आसानी से कह सकते हैं कि यह आनन्दपुर साहिब संकल्प के अनुसार है।"

× × ×

"मैं सिखों को इस चालाकी के प्रति सावधान रहने की चेतावनी देता हूँ। बातचीत जारी रखें, लेकिन साथ-साथ अपनी तैयारी भी पूरी रखें—तैयारी पूरी होनी चाहिए।"

× × ×

'ये तो केवल 35 बनते हैं और 100 भी नहीं। 66 करोड़ को विभाजित करें तो प्रत्येक सिख के हिस्से में केवल 35 हिन्दू आते हैं, 36 भी नहीं, तो फिर आप कैसे कह सकते हैं कि आप कमजोर हैं।"

× × ×

"मैंने पहले यह निर्देश दिये थे कि प्रत्येक गाँव में 3 युवकों का दल बनाया जाये, प्रत्येक के हिस्से में 1 रिवाल्वर, 1 मोटर साइकिल होनी चाहिए। कितने गाँवों में ऐसा किया गया है ?"

× × ×

"प्रत्येक सिख बालक को अपने पास 200 ग्रेनेड रखने चाहिए·····"

× × ×

"सिखों के विरुद्ध अपराध करने वालों से बदला लेने के लिए मोटर साइकिल ग्रुप तैयार किये जाने की आवश्यकता है।"

× × ×

"आप में से जो आतंकवादी बनना चाहते हैं, वे अपने हाथ ऊपर उठायें। आप में से जो इस बात पर विश्वास करते हैं कि वे गुरु के सिख हैं वे अपने हाथ ऊपर उठायें, बाकी बकरियों की तरह अपने सिर झुका लें।"

× × ×

प्रेस में प्रकाशित वक्तव्य

"हथियार के बिना सिख नंगा है बलि का बकरा है·····मोटर साइकिलें, बन्दूकें खरीदें और देशद्रोहियों को उन्हीं की भाषा में जवाब दें।"

(इण्टर नेशनल हैराइल्ट ट्रिब्यून" 24 अप्रैल 1984)

× × ×

"जिन्होंने यह महान कार्य किये हैं (बाबा गुरुवचन सिंह एवं लाला जगत नारायण सिंह की हत्या का सदर्भ) वे सिखों के सर्वोच्च आसन अकाल तख्त की ओर से सम्मान के पात्र हैं—यदि वे हत्यारे मेरे पास आ जायें आ जायें तो मैं उन्हें सोने से तौलूंगा।' ("इण्डिया टूडे" 3 अप्रैल 1983)

× × ×

मैं उनसे (ब्रिटेन के सिखों से) कहना चाहता हूँ कि वे एक अलग राष्ट्र के रूप में हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई में भाग लेने के लिए तैयार रहें। ("डली मेल" 12 अप्रैल, 1984 साक्षात्कार)

× × ×

सिख एक अलग राष्ट्र है और इस तथ्य को मान्यता दी जाये। सिखों को भारत संघ में विशेष दर्जा होना चाहिए। पजाब राज्य को वह दर्जा दिया जाना चाहिए जो सविधान के अनुच्छेद 370 के अधीन जम्मू और कश्मीर को दे दिया गया। ("वीक" 27 मार्च-2 अप्रैल 1984 को दिया गया साक्षात्कार)

× × ×

साफ साफ बात यह है कि मैं यह नहीं समझता कि हम भारत में या भारत के साथ रह सकते हैं। ("संडे आब्जर्वर" 3 जून, 1984 को दिया गया साक्षात्कार, 10 जून 1984 को प्रकाशित हुआ)

३० जून, १९८४ तक हताहत नागरिकों और सैनिकों तथा बरामद हुए हथियारों तथा गोला बारूद का विवरण

	स्थर्ण मन्दिर क्षेत्र में	अन्य धार्मिक स्थलों पर	अन्य क्षेत्रों में कर्फ्यू उल्लघन/बेरा और तलाशी की कायवाही	कुल
1 हताहत नागरिक/आतंकवादी				
(क) मारे गये	493	23	38	554
(ख) घायल	86	14	21	121
2. हताहत सैनिक				
मारे गये				
(क) अधिकारी	4	—	—	4 अधिकारी
(ख) जे० सी० ओ०	4	—	—	4 जे० सी० ओ०

(ग) रैंक अन्य	75	1	8	84 अन्य रैंक
घायल				
(क) अधिकारी	12	3	—	15 अधिकारी
(ख) जे० सी० ओ०	17	2	—	19 जे०सी०ओ०
(ग) अन्य रैंक	220	19	14	253 अन्य रैंक
3. गिरफ्तार नागरिक/आतंकवादी	1592	796	2324	4712
4 बरामद हुई वस्तुयें				
(क) लाइट मशीन गनें	41	—	—	41
(ख) स्टेन गनें	57	7	32	96
(ग) पायट 303 रायफलें	37	5	50	432
(घ) 7.62 एम एम सेल्फ लोडिंग राइफलें	83	—	15	98
(ङ) 12 बोर गने	88	51	204	343
(च) 7.62 एम एम चीनी राइ.	52	—	—	52
(छ) अन्य प्रकार की राइफलें	71	21	36	128
(ज) सभी प्रकार के रिवाल्वर	49	15	25	89
(झ) सभी प्रकार के पिस्तौल	33	10	65	108
(ञ) 12 बोर देशी पिस्तौल	61	17	11	89
(ट) आर० पी० जी०	2	—	—	2
(ठ) देशी 2 इंच के मोरटार	—	—	3	3
(ड) माइम	128	—	—	128
(ढ) गोलाबारूद/विस्फोटक	बहुत बड़ी	संख्या में हर	जगह	
(ण) एच० एफ० ट्रांसमीटर	1	—	—	1
(त) सोना	5.4 किलो	—	—	5.4 किग्रा०
(थ) चाँदी	1.14 किलो	—	—	1.14 "
(द) अमूल्य रत्न	1.442 किलो	—	—	1.442 "
(ध) नकदी	30 लाख	—	153559 रु०	3153559 रु०
(न) ग्रेनेड प्लांट	1	—	—	1
(प) स्टेन गन-शाप	1	—	—	1
(फ) पाक मुद्रा	—	—	129966 रु०	129966 रु०
(ब) नकाब	—	5	—	5

निबन्ध

भारतीय संस्कृति की विशेषतायें

सूरज अग्रवाल, एकादश 'ख'

हमारी संस्कृति 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की संस्कृति है। विश्व 'साहित्य की विभिन्न धाराओं को अपने में आत्मसात् करने वाली 'विश्व बन्धुत्व' की दृष्टि ने हमें दुनिया की श्रेष्ठ संस्कृतियों, सभ्यताओं में सम्मानजनक स्थान दिलाया है। चि० सूरज अग्रवाल की किशोर लेखनी भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को कागज पर उतारती हुई.....। (सं०)

अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही विभिन्न परम्पराओं एवं संस्कृतियों में केवल एक ही संस्कृति ऐसी है जो आज भी जीवित है एवं विश्व मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है – वह है भारतीय संस्कृति।

ईसा से लगभग 3000 वर्ष पूर्व सम्पूर्ण विश्व में सभ्यताओं का आरम्भ हो चुका था। मिश्र की सभ्यता, मैसोपोटामिया की सभ्यता जिस समय अपने विकास को तीव्र करने का प्रयास कर रही थीं उसी समय भारत में सिन्धुघाटी की सभ्यता का उदय हुआ जिसके चिन्ह आज भी हमें प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार हमारे ग्रन्थों में जो समाज व संस्कृति की विशेषतायें उस समय थीं उन्हें आज भी हम अपनी संस्कृति में देखते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है।

भारतीय संस्कृति अनेकताओं का अनुपम समन्वय है। भाषा, भोजन, वेश-भूषा, सामाजिक रीतियों में हम देखते हैं कि हमारे एक प्रदेश का नागरिक दूसरे प्रदेश के नागरिक से भिन्न है, परन्तु यह भिन्नता एकता में बाधक नहीं है। एकता रूपी परदे के पीछे वह इन विभिन्नताओं को दूसरे राष्ट्रों की दृष्टि में छुपाये हुए हैं। इस एकता के कारण ही विश्व में आज हमारा अस्तित्व है. सम्मान है और दूसरों की दृष्टि में हमारी संस्कृति भी सर्वश्रेष्ठ है। भारत का प्रत्येक नागरिक एक सूत्र में बंधी हुयी माला के मोतियों के तुल्य है।

भारतीय संस्कृति में सबको आत्मसात् करने की भावना है। आत्मसात् करने का अर्थ है किसी भी वस्तु

को अपनी तरह ग्रहण करने की क्षमता । ऐसे तत्व जो राष्ट्र के लिये उपयोगी है उन्हे भारतीय संस्कृति आत्मसात् कर लेती है । जिससे समाज की उन्नति सभव है ।

प्राचीन काल से आज तक हम देख सकते हैं कि भारतीय सस्कृति ने किसी का विरोध न करते हुए समन्वय की भावना को दृढ़ किया है ।

भाषा की दृष्टि से हम देखें तो हमारा देश विभिन्नताओं से घिरा है । क्षेत्र विशेष की भाषायें अलग-अलग हैं और वे एक दूसरे के लिए अग्रहणीय है परन्त सूक्ष्मता से विचार करने के पश्चात् हम देखते हैं कि वर्ण-माला सभी क्षेत्रों की एक ही है और भाषा किसी सस्कृति के उत्थान में महत्वपूर्ण कार्य करती है । इस परिप्रेक्ष्य में हमारी वर्णमाला में एकता होने के कारण आज हमारी संस्कृति विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखती है ।

हिमालय से कन्याकुमारी तक और आसाम से राजस्थान तक आज हमारे भारत की भौगोलिक सीमा है । परन्तु इससे पूर्व इस सीमा का और अधिक विस्तार था । पूर्व में वर्मा, बगलादेश पश्चिम में पाकिस्तान अफगानि-स्तान आदि भौगोलिक दृष्टि से आंशिक भिन्न होते हुए भी क्षेत्रों में रहने वाले नागरिक भौगोलिक दृष्टि से अनेकता के पथ पर अग्रसर नहीं थे अपितु एकतारूपी मार्ग पर भारतीय सस्कृति के दिव्य प्रकाश में वे नागरिक सफल देश का निर्माण कर रहे थे । अतएव हमारी संस्कृति भौगोलिक दृष्टि से देखने पर भिन्नात्मक नहीं कही जा सकती है ।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता रही है शरीर, मन और आत्मा के विकास में सामंजस्य स्थापित करना । एक ही प्रकार का विकास मानव को समाज के घेरे में बांधने के सक्षम नहीं है । इसके लिये हमारा सर्वा-गीण विकास चाहिये और उस विकास के लिए चाहिए एक ऐसी शक्ति जो हमे विकास की प्रेरणा दे सके और वह शक्ति है 'भारतीय समाज के आदर्श" । यूनान की सभ्यता का यदि हम उदाहरण लें तो उस समय जबकि यह सभ्यता आरम्भ हो रही थी । वहाँ के राजाओं का मुख्य उद्देश्य था कि नागरिकों को शरीर से बलवान बनाया जाये अतएव वहाँ प्रत्येक नागरिक को शारीरिक शिक्षा लेना अनिवार्य हो गया । परिणामस्वरूप उनका अन्य क्षेत्रों में विकास नहीं हो सका । फलस्वरूप वह सभ्यता समाप्त हो गयी परन्तु भारतीय सभ्यता में शरीर के साथ-साथ मन और आत्मा के ज्ञान पर विशेष बल दिया गया और प्रत्येक समाज के व्यक्ति में इसके विकास में सामं-जस्य स्थापित किया गया ।

भारतीय संस्कृति को पल्लवित करने में पुरुषों का विशेष योगदान रहा है अतएव पुरुषों के लिए चार पुरुषार्थों की व्यवस्था की गयी है । ये पुरुषार्थ हैं –

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।

समाज के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह धर्म का पालन करते हुए अपना सर्वांगीण विकास करे और फिर गृहस्थ जीवन में आकर धनोपार्जन करे और फिर गृहस्थ जीवन सफलतापूर्वक व्यतीत करते हुए मोक्ष को प्राप्त करे ।

यदि हम उपरलिखित पुरुषार्थों पर विचार करें तो हम पायेंगे कि जो व्यक्ति इनका पालन करता है

वह व्यक्ति ही वास्तव में समाज का सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित नागरिक कहलाने योग्य हैं। भारतीय संस्कृति को मानने वाले पुरुषों ने इन्हीं को अपनाकर एक संस्कृति के उत्थान में सफल योगदान दिया है।

भारतीय संस्कृति का प्रमुख उद्देश्य रहा है कि विश्व का कल्याण हो। अतएव कहा गया है—

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुखभागभवेत्।"

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी कल्याण देखें और कोई भी दुखी न हो।

इस प्रकार विश्व कल्याण की भावना हमारी संस्कृति में प्रबल रही है। फलस्वरूप जिस प्रकार हमने विश्व के अन्य लोगों को माना है, उनके प्रति कल्याण की भावना रखी है, उसी प्रकार उन्होंने भी हमें, हमारी संस्कृति को सम्मान दिया है, विश्व में प्रतिष्ठित किया है।

भारतीय सस्कृति की यह विशेषता रही है कि उसने प्रत्येक मानव को धर्म व कर्तव्य की प्रेरणा दी है। धर्म का पालन करते हुए कर्तव्य करना यह हमारे जीवन का प्रथम लक्ष्य होना चाहिये। कितने ही लोगों ने धर्म का बोध नागरिक को कराया है। भगवान कृष्ण ने गीता में भी अर्जुन से कहा है कि तुम प्रजा के लिए, समाज के लिए कर्तव्य का पालन करो।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन काल से आज तक भारतीय संस्कृति की धारा तीव्र गति से बहती आ रही है। भारतीय सस्कृति न जाने कितनों का मन कलमष ही बहा ले गयी। इसकी विशेषताओं ने सम्पूर्ण विश्व को अमृत से आप्लावित कर दिया है और यह संस्कृति अपनी विशेषताओं से आज भी जीवित है और उत्तरोत्तर प्रगति करती रहेगी। भारतीय संस्कृति इस सम्पूर्ण विश्व में अपने आप को दर्पण में प्रतिबिम्ब के तुल्य देखती है और यह प्रतिबिम्ब ही हमारी भावनाओं को हमारे कर्तव्यों के जगत में प्रतिष्ठित करने में सहायक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतीय सस्कृति का दीप अनेक हवाओं और आँधियों को सहन करने के पश्चात् भी आज उसी भांति हमें प्रकाश दे रहा है और हम कामना करते हैं एवं पूर्ण विश्वास के साथ प्रतिज्ञा करते हैं कि इस दीप की लौ को कभी बुझने नहीं देंगे।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

—०—०—

भारतीय स्वर्ग की यात्रा

विवेक पाण्डेय, एकादश [क]

'भारतीय स्वर्ग की यात्रा' चि० विवेक की दक्षिण भारत—यात्रा का 'यात्रा वृत्त' है। 'वृत्त' की स्वस्थ व प्रभावी भाषा के साथ 'किशोर यात्री' की शैली भी प्रभावित करने वाली है। [स०]

इस उन्मुक्त गगन में विहार करते हुए पक्षी कितने भले लगते हैं। उन जैसी स्वच्छन्दता, क्या हमें भी प्राप्त हो सकती है ? खुली धूप, अनन्त नील गगन ! हरे-भरे लहलहाते खेत, सघन वन ! चाँदी का मुकुट बाँधे विशाल भूधर, कल-कल, छल-छल दौड़ते झरने निस्सीम दूरी तक फैले विशाल सागर ! कैसे-कैसे सुन्दर, मनमोहक रूप हैं, प्रकृति के !

इन सभी बातों को मन में ही सोचकर ऐसा लगा मानों समुद्र की ऊँची-ऊँची लहरें उठ-उठ कर मुझे अपने पास बुला रहीं हैं। ऊँचे ऊँचे झरने, सघन वनों के मध्य बहती हुई हवायें मुझे पुकार रही हैं। प्रकृति-परी की इस छवि ने मेरे मन को अपनी ओर खींचा, मन ने 'इस्माइल मेरठी' का शेर चुपके से गुनगुनाया—

सैर कर दुनियां की ग़ाफ़िल, जिन्दगानी फिर कहाँ ?
जिन्दगानी गर कुछ रही, तो नौजवानी फिर कहाँ ?

दरवाजे पर हुई दस्तक ने मेरे सपने तोड़े। सामने खड़ा था डाकिया। उसने मेरे सपने तोड़े या उन्हें एक नया आकार दिया ? इस बात का अहसास मुझे तब हुआ जब मैंने पत्र पढ़ा। दर असल मेरे एक मित्र ने 'त्राबणकोट' से पत्र लिखकर बुलाया था। मैं इतना प्रसन्न हुआ कि .....खैर !

उस वसन्ती शाम को, मैं और मेरी रेलगाड़ी मध्य प्रदेश तथा हैदराबाद की सीमाओं पर दौड़ती गयी। और सुबह करीब 8 बजे विजयवाड़ा पहुँची। यहीं से मुझे लगने लगा मानो नयी दुनियाँ में मैंने प्रवेश कर लिया। विजयवाड़ा आन्ध्र का प्रमुख नगर है। यहाँ मैंने आन्ध्र प्रदेशीय संस्कृति के दर्शन किये। उत्तर भारतीय की भांति धोती पहने पुरुष तथा खुली साड़ी धारण किए हुए स्त्रियाँ। पहनावा तो कुछ पुरुषों ही जैसा। नाश्ते

में बहुतायत चावल की 'इडली' चाय के स्थान पर काफी तथा ऐसी अन्य कुछ विशेषताएं। आन्ध्र के निवासियों में भावुकता अधिक पायी जाती है। अपनी भाषा तथा संस्कृति उन्हें सर्वोपरि जान पड़ती है। फिर भी, वह समय की आवश्यकता के अनुरूप अपने को ढालने में कतई पीछे नहीं हटते हैं। 'पहले देश फिर मैं' की भावना पराकाष्ठा पर थी यहाँ।

हाँ तो हमारी गाड़ी ने दोपहर भर अनवरत दौड़ कर आन्ध्र, पार कर चुकी थी। फिलहाल हम 'गुडुर' [तमिलनाडु] में प्रवेश कर चुके थे। कोई खास अन्तर नहीं था तमिल तथा आन्ध्र की संस्कृति में, हाँ लोगों के रंग में कुछ श्यामता जरूर बढ़ी थी। दुकानदारों की ईमानदारी तथा स्पष्टवादिता ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। तमिलनाडु में एक सुन्दर मन्दिर के समीप सुन्दर झील दर्शनीय थी। नाम शायद 'वेल्लमूर'। दोनों ओर बगीचे, कुछ बहुत सघन। चाँदनी रात्रि में पेड़ों से टकराती ठंडी वायु। यकायक मन बोल उठा—

'क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध दिशा।
है स्वच्छन्द सुमन्द गन्ध वह निरानन्द है कौन दिशा ?
बन्द नहीं, अब भी चलते हैं, नियति नटी के कार्य-कलाप।
पर कितने एकान्त भाव से, कितने शान्त और चुपचाप॥'

अब हम तमिलनाडु पार कर केरल में थे। वाह ! क्या सुन्दर, हरे-भरे खेत थे हमारे मार्ग के दोनों ओर। वास्तविक शस्य श्यामला मातृभूमि के हमें वहाँ ही दर्शन हुए। त्रावणकोट पहुँचने पर मैं अपने मित्र से मिला। यात्रा क्रम तो जारी ही रहा। केरल के निवासियों की वेश-भूषा में कुछ अन्तर था पर भारतीय संस्कृति की पूरी छाप लोगों के हृदय में थी—आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु के ही समान। मैंने सोचा 'अनेकता में एकता हिन्द की विशेषता' शायद दक्षिण भारत के लिये ही सत्य है।

अब शुरू हुई हमारी सर्वाधिक रोचक, आनन्ददायक यात्रा त्रिवेंदम और कन्याकुमारी के मध्य की। समुद्र की अनेक सुन्दर क्रियाओं को देखने के लिए मन लालायित था। कुछ समय पश्चात् वह समय भी आखिर आ ही पहुँचा। दूर से कुछ क्षण मैंने समुद्र को निहारा। कितना विशाल, कितना उग्र। और अगले ही क्षण एक अनोखे उत्साह के साथ मेहमान, मैं और मेजबान अथाह समुद्र आमने-सामने। पहले कुछ डर था मेरे मन में, पर बाद में समुद्र भी मेरा मित्र हो गया। सामने दूर की लहरें छोटी-छोटी किश्तियों के समान हिल-डुल रही थीं। एक के बाद एक ऊपर उठ रही लहरें पहाड़ सा बना रही थीं और न जाने कितने पहाड़ बनते और बिगड़ते थे। समुद्र की लहरें चली आ रही थी, तेजी से, शायद मेरी ओर ही और मैं समुद्री लहरों से घिरा अत्यधिक प्रसन्न था। पर क्षण भर के पश्चात् वे लौट गयी लगा कि हमें छोड़कर सदा के लिए पर चन्द क्षणों में पुनः लहरों का प्रेम जगा और वह चल पड़ी फिर मेरी ओर। तीन घण्टों तक लहरों से क्रीड़ा कर मैं वहाँ से कन्याकुमारी को चला।

लगभग शाम को 5.30 बजे सूरज डूबने के कुछ पहले हम वहाँ पहुँचे। ऐसा सुन्दर दृश्य मैंने पहले

(शेष पृष्ठ १२० पर पढ़ें)

हमारे विद्यालय का स्काउट कैम्प-सन १९८४

—पंकज भारती अष्टम—क,

स्काउट कैम्प की एक महीने से तैयारियाँ शुरू हैं। स्कूल में जिस प्रकार दलों का विभाजन होना है आचार्य श्री सुभाष शर्मा द्वारा विभक्त है। अभी तो कक्षा के सभी छात्रों के मन में एक उत्साह की झलक दिखाई पड़ रही है, और दूसरी तरफ शिविर के चयन की चर्चायें चल रही हैं। उस समय सभी स्वस्थ एवं भार उठाने में समथ हैं। श्यामपट पर जिधर से जाना है, जहां रुकना है. कहां गंगा नदी है आदि-आदि का व्यवस्थित मानचित्र बना हुआ है।

इसके बाद बारी आती है चयन की। सभी अपना-अपना व्यवहार श्री सुभाष जी से बनाने में व्यस्त हैं। शारीरिक शिक्षा की चतुर्थ बेला है, पता है कि आज चयन होना है। प्रथम बेला से धड़कन बढ़ गई है, और आ गई इसी प्रकार चतुर्थ बेला। प्रत्येक कुंज से चार-चार दिग्गज छात्रों का चयन होना है। छात्रावासी अल्पसंख्यक होते हुये भी उनके लिये छ. स्थान आरक्षित हैं। अब दस छात्रों का चयन और होना है. उनमें चार छात्र कुंजों के प्रमुख हो गये। शेष वर्ग के 36 छात्रों में 6 छात्रों का भाग्य है और तीस अभागे हैं। इस प्रकार छ छात्रों का भी चयन हो गया। चयनित छात्रों में अपार प्रसन्नता की लहर दौड़ रही थी। खैर छोड़िये इन बातों को और देखिये बेचारे तीस छात्रों की जिनके अरमान हफ्तों पहले बन चुके थे और आज (शनिवार) के दिन आराम करने के लिये बिखेर दिए गए।

अब रूपरेखा बनती है चयनित सोलह छात्रों की। सभी को सहतार्थ पांच रु० जमा करने हैं। सभी के लिए सामान निर्धारित है।

रुपए जमा होते हैं, प्रत्येक कुंज के एक आचार्य निर्धारित हैं।

छात्र—आचार्य जी कल कैसी व्यवस्था होनी चाहिए। किस प्रकार के व्यंजन बनने चाहिए ताकि निर्णायक मण्डल उंगलियां चाटते रह जांय।

आचार्य—"गाजर का हलुआ, पनीर, केले की खीर, पूड़ी, मटर-टमाटर-आलू की शब्जी, पुलाव ठीक रहेगा।" सभी व्यवस्थायें इसी प्रकार पूर्ण होती हैं।

शुबह दोनों सप्तम, अष्टम कक्षाओं के छात्र उपस्थित हैं। सभी का सामान व्यवस्थित है। सभी शिविर के लिए पंक्तियों में प्रस्थान करते हैं।

रास्ते में कुछ अनपढ़ स्त्रियां मिलती हैं—"ये लरका कहां जात हैं ? देखौ लाठी लहे हैं। लगत है लड़ाई करन जाय रहे हैं।

"काय लरकौ तुम कहां जात हौ ?
"बढ़ी अम्मा हम कैम्प लगावन जाइ रहे है।"
"अरे वही गोबर की खैप लगामन जात हैं।"

आगे अमरूद के बाग हैं सभी अपनी-अपनी राग में ब्यस्त हैं। पके अमरूद देखते ही लार जमीन पर गिर पड़ती है। सभी में अमरूद तोड़ने का साहस बढ़ता है।

"अमरूद मत तोड़ना आचार्य जी से शिकायत कर दी जायगी।" प्रतिक्रिया होती है।

"अरे यार चुप रहो तुम भी तोड़ लो।"

आचार्य निर्देश देते है—पंक्ति में चलिए, कोई भी नुकसान नहीं करेगा।"

मन नहीं मानता तमात अमरूद पहुचते-पहुचते पेट में पच चुका होता है। इसी प्रकार कैंप सम्पन्न होता है। सभी अपनी पूरी शक्ति, योग्यता का प्रदर्शन करते हैं। कबड्डी खेल का आयोजन होता है जिसमें आचार्य लोग भी भाग लेते हैं। इसके बाद स्नान होता है और इसके बाद सभी खुद बनाए गए भोजन का आनन्द लेते हैं। गीत आदि होते हैं। प्रधानाचार्य जी शिविर का महत्व बताते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा करते हैं।

पहले की भांति सभी अपने-अपने समान को व्यवस्थित करते हैं। लौटते समय सभी के मन में एक उत्साह होता है जैसेकि कोई सिपाही जब किसी युद्ध को जीतकर लौटता है।

———

उत्तराँचल के संस्मरण

सुनील सिंह, एकदश (ख)

विभिन्न उत्कृष्ट प्राकृतिक छटाओं को अपने श्वेत एवं निर्मल आँचल में समेटे भारत माता अपना एक अभिन्न रूप सम्पूर्ण भारतवासियों के समक्ष प्रस्तुत करती है। वास्तव में इस पवित्र एवं निर्मल भारत माता के स्वरूप को किसी एक स्थान से देखना एवं परखना सम्भव नहीं। क्योंकि इस पवित्र भारत भूमि के प्रत्येक भाग से इस श्वेत एवं निर्मल आँचल के अलग-अलग रग-रूप दिखाई देते हैं। मस्तिष्क की भांति भारत के शिरो मौर्य पर स्थित हिमालय भी सम्पूर्ण प्राकृतिक छटा के सार को अपने अन्दर समाहित किए हुए भारत के उत्तरांचल में एक सशक्त प्रहरी के रूप में विद्यमान है।

प्रकृति के इसी मनोरम स्वरूप को दृष्टिगोचर करने एवं आनन्द की अनुभुति करने देश के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में लोग हिमालय की शरण में आते हैं। इसी क्रम में मैं अपना भी महान सौभाग्य ही कहूंगा कि मुझे अपने मित्र गण के साथ हिमालय के आँचल में स्थित कुछ रमणीयतम स्थान पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

मित्रों के साथ यात्रा में जो आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है वह और किसी परिवारिक जन के साथ नहीं होती। यात्रा में एक तो मित्रों का साथ एव प्रकृति के सौन्दर्य ने हमारी यात्रा को रोचकता से परिपूर्ण कर दिया। यात्रा क्रम में हिमालय के बिल्कुल चरण को स्पर्श करता, हल्द्वानी शहर जो कि मैदानी भागों का अन्त एवं पहाड़ी भाग के प्रारम्भ का द्योतक है। ये स्थान उस सम्पूर्ण हिमालय के भाग जिसे हम लोग कुमांयू के नाम से जानते हैं। वहाँ का ये प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है। इसके अतिरिक्त समस्त कुमायूं क्षेत्र के सरकारी कार्यालय भी इसी शहर में स्थित है।

इस प्रमुख एवं प्रसिद्ध स्थान से हम लोगों ने हिमालय पर्यटन के लिए वाहन प्राप्त किया एवं अपनी आगे की यात्रा का प्रारम्भ किया। एक असामान्य आयताकार डिब्बे की भाँति के स्वरूप वाली बस में हम लोग बैठे और नैनीताल की ओर अग्रसर हुए। विभिन्न प्रकार की प्रकृति के साथ झरनों का सामजस्य हमारे मन में एक उद्भुत आनन्द की अनुभूति कर रहा था और यदि सामने के सौन्दर्य पर दृष्टिपात करे तो एक काली एवं वक्राकार सड़क जो सामने से एक सर्पनुमा प्रतीत होती थी। हम बस में बैठे चले जा रहे थे हमारे बायें ओर स्तम्भ रूपी हिमालय की विशाल पर्वत शिखाएं एव दायीं ओर विशाल एवं असीम घाटियां जो महात्मा गांधी के इस कथन को सत्यापित करती थी—

'मानव का ज्ञान सुदृढ़ एवं असीम होना चाहिए'।

अपनी अनवरत यात्रा को समाप्त कर हम नैनीताल के उस मधुर एवं मगोरम वातावरण में प्रविष्ट हुए।

सूर्य की लालिमा विशाल शिखरों के कारण मद पड़ती जा रही थी और श्वेत मेघ हमारे सिर के के ऊपर बेरोक विचरण कर रहे थे। शीत काफी मात्रा में बढ़ती जा रही थी। इस लिए हम लोग शीघ्र ही अपने विश्राम के निर्धारित स्थान की ओर अग्रसर हुए और वर्षा से कुछ ऊनी वस्त्रों को धारण कर नैनीताल के प्राकृतिक सौंदर्य को आत्मसात करने निकल पड़े। वास्तव मे नैनीताल के बिल्कुल मध्य में एक ताल है जिसके दो किनारे क्रमशः तल्लीताल एवं मल्लीताल के नाम स प्रसिद्ध है। अपने विश्राम स्थल से नीचे आने पर सर्व प्रथम हम लोगों को ताल ही दिखाई पड़ा। जिसमें सम्पूर्ण नैनीताल का प्रतिबिम्ब इस प्रकार दिखाई दे रहा था जैसे सम्पूर्ण नैनीताल उस ताल में ही समाहित हो गया हो।

परन्तु रात्रि की तीव्रता बढ़ती जाने के कारण हम लोग उस रात्रि अपने विश्राम स्थल लौट आये। अगले दिन प्रातः जब सूर्य की रक्त वर्णित किरणें हिमालय की असीम चोटियों पर पड़ने लगी थी तब हम लोग पुनः नैनीताल की रमणीयता का दर्शन करने के लिए निकले। उसी समय हम लोगों के सम्पर्क में कुछ वहाँ के निवासी आये जो अपने आचरण एवं व्यवहार से मानवता की छाप हमारे मन पर छोड़ गये। उनका प्रत्येक के प्रति व्यवहार इतना सरल एवं मधुर था जो कि अवर्णनीय है।

इसी दिन हम लोग नैनीताल के उत्तुंग पर्वत श्रेणियों पर स्थित अनेक दर्शनीय स्थान देखने गये जिनमें प्रमुखतः टिपन टाप, चायना पीक, स्नो व्यू इत्यादि। इन सभी दर्शनीय स्थानों तक पहुंचने के लिए अनेक सुविधाएं उपलब्ध थी। परन्तु हम लोगों ने उन सभी रमणीयतम एवं मधुर स्थानों तक पहुंचने के लिए पैदल पथ ही नियुक्त किया।

पर्वत श्रेणियों के मध्य बने अत्यन्त सकरे एवं जटिल मार्ग पर आरोहण हम लोगों ने प्रारम्भ किया। हम लोगों ने जैसे-जैसे अपने मार्ग की पराकाष्ठा पर पहुंच रहे थे। मार्ग के विभिन्न रूपों के साथ साथ प्राकृतिक सौंदर्य भी अपने विभिन्न रूपों को हमारे समक्ष प्रस्तुत कर रहा था। मार्ग की जटिलता तो अवर्णनीय थी। जैसे-जैसे हम लोग उत्तुंग पर्वत श्रेणियों के शिखर की ओर अग्रसर हो रहे थे। हमारे शरीर में श्वास की क्रिया सम्पन्न होने में कुछ जटिलता का अनुभव हो रहा था। अपने उत्साह एवं साहस को संजोए हम लोग क्रमशः एक-एक करके क्रमबद्ध तरीके से उन रमणीयतम स्थानों तक पहुंचे जहाँ से चारों ओर प्राकृतिक सौंदर्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दृष्टिगोचर होता था। कुछ दूर तक दृष्टिपात करने से सशक्त प्रहरी हिमालय की हरीतिमा से परिपूरित श्रेणियाँ दृष्टिगोचर हो रही थीं। जिस पर हरीतिमा के ऊपर श्वेत एवं निर्मल बादलों की चादर उन श्रेणियों पर एक अनमोल सौंदर्य प्रकट कर रही थी। इन्हीं पहाड़ियों के मध्य के कहीं दूरी उन हिमालयी शिखरों की झलक मिल रही थी जो पूर्णरूप से हिमाच्छादित थी।

इन सभी प्राकृतिक छटाओं का आनन्द लेते हुए हम लोग पुनः वापस अपने प्रारम्भिक स्थान को लौट आये। नैनीताल के इन प्राकृतिक स्थलों के दर्शन करने में हम लोगों ने तीन दिन का समय व्यय किया।

इसके उपरांत हम लोग वाहन के द्वारा क्रमशः रानी खेत एवं अल्मोड़ा को प्रस्थान किया। दोनों ही स्थान प्राकृतिक सुषमा एवं शांतिप्रद वातावरण से परिपूरित थे। हिमालय के दृढ़ शिखर जो अत्यन्त स्वच्छ एवं मूक होते हुए भी एक ऐसा प्रेरक संदेश मानव को प्रदान कर रहे थे जो सामान्य व्यक्ति की समझ से परे थे। ऐसा वातावरण जो केवल ऋषियों की साधना के लिए उपयुक्त था। ऐसे शांत एवं स्वच्छ वातावरण की बड़ी तल्लीनता पूर्वक अनुभूति करने के पश्चात् हम लोगों ने यात्रा को समाप्त करने का निश्चय किया।

वास्तव में इस पर्यटन ने हम लोगों को एक अनमोल एवं नवीन अनुभव प्रदान किया। प्रकृति के जिन स्वरूपों की हम लोगों ने कल्पना मात्र की उन सभी का काल्पनिकता से साक्षात्कार किया। प्रकृति के जिन विभिन्न स्वरूपों को अपने में आत्मसात् किया वे चिर जीवन काल तक हम लोगों को अविस्मणीय रहेगा।

—०—०—

(पृष्ठ ११५ का शेष भाग)

कभी नहीं देखा। विभिन्न रंगों के पानी से युक्त तीन समुद्र आपस में मिल रहे थे। सम्मुख हिंद महासागर, दायीं ओर अरब सागर और बांयी ओर से बंगाल की खाड़ी का जल उछल-उछल कर तरंगित हो रहा था। उधर सूर्य की सुन्दरता अत्यधिक मोहक थी। यही वह स्थान है जहाँ सूर्य समुद्र में ही डूबता व समुद्र में निकलता है। लाल सूर्य आधा डूब चुका था। और अब, ·····सूर्य पूर्ण रूपेण डूब गया और इसी सूर्यास्त के साथ ही मेरी दक्षिण भारत बल्कि भारतीय स्वर्ग की यात्रा का भी अन्त हुआ। जहाँ मुझे सच्ची भारतीय संस्कृति के दर्शन हुये।

आज दो वर्ष व्यतीत हुए हैं। उस यात्रा के चित्र ज्यों के त्यों हृदय में अंकित हैं। एक-एक चित्र आल्हादित कर देता है। किसी सुरम्य स्थल की यात्रा एक वरदान है। काश! हम जीवन की जटिल समस्याओं को छोड़ कुछ ऐसा समय निकाल सकें जब प्रकृति को अपलक निहारें। जब कभी स्मृति की अंगुलियाँ मचलती हैं, हृदय पटल एलबम के पन्नों की भाँति खुलने लगता है। और इस्माइल मेरठी बोल उठतें हैं—

"सैर कर दुनियाँ कि ग़ाफ़िल·····।"

—०—०—

कक्षा–द्वादश सत्र–१९८५–८६

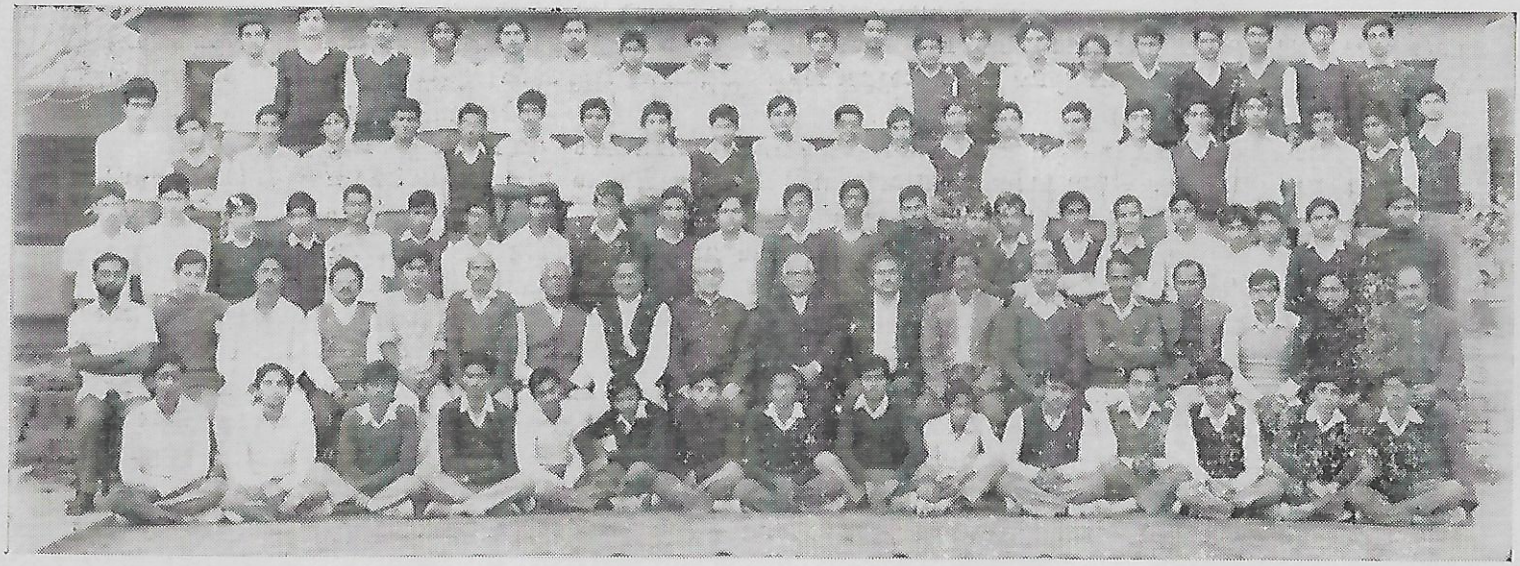

१– जमीन पर बैठे हुए (बायें से दायें) — मृदुल गुप्त आलोक मिश्र, राजीव प्रसाद, राजीव जैन, सुनील गुप्त, शैलेन्द्र जौहरी, प्रमेन्द्र श्रीवास्तव, महेश सिंह चौहान, सुरेन्द्र कुमार, संजय खण्डेलवाल, राजेश श्रीवास्तव, विपुल जैन, शैलेश सक्सेना, सजय डिमरी, हृयेश गुप्त ।

२– कुर्सी पर बैठे हुए (आचार्य वर्ग) बायें से दायें — सर्व श्री दिनेश कुमार, हेमन्त शुक्ल, विमलेन्द्र कुमार, प्रेमनारायण, लल्लूराम, बिहारी लाल, चन्द्रपाल सिंह (संरक्षक), ओमशंकर त्रिपाठी (प्रधानाचार्य), नरेन्द्रजीत सिंह (अध्यक्ष), शिवशरण शर्मा (उपाध्यक्ष), प्रयागसिंह (उप-प्रधानाचार्य), प्रकाशनारायण वाजपेयी, रामतीर्थ मिश्र, सुभाष शर्मा, राजेश, सतीश, प्रेमनारायण, महेश श्रीवास्तव ।

३– प्रथम पंक्ति बायें से दायें — राजेश यादव, अवधेश गौतम, शरद श्रीवास्तव, अक्षय अग्रवाल, कृष्ण कुमार, अनुराग वर्मा, प्रणयदीप खरे, नरेश यादव, सी रमेश, संजय सारस्वत, पुनीत गुप्त, आदित्य शुक्ल, सिद्धार्थ शुक्ल, विनीत, राजेश चन्द्र, जितेन्द्र गुप्त, अजीत सेंगर, प्रवीण द्विवेदी, अमित अग्रवाल, अनीष भाटिया, अनूप कुमार, अतुल अस्थाना, राजकुमार ।

४– द्वितीय पंक्ति बायें से दायें — रवीन्द्र सिंह, वीरेन्द्र सिंह, संजय कुमार, नरेन्द्र देव, संजीव अवस्थी, पकज मिश्र, अभय मिश्र, अनिल वर्मा, अरुण मिश्र, कपिल गुप्त, दीपक गुप्त, अनिल गुप्त, आलोक मोहन, मोहन कृष्ण मिश्र, गौरव चन्द्र, विवेक त्रिपाठी, भरत चतुर्वेदी, अनुपम मेहरोत्रा, शुभेन्द्र शेखर, ज्ञानेन्द्र सिंह कुशवाहा, कृष्णकुमार, प्रवीण भागवत ।

५– तृतीय पंक्ति खड़े हुये — ज्ञान प्रकाश, अम्बरीष मिश्र, सजय शर्मा, अरुण वर्मा, रवीन्द्र प्रकाश, श्रवण कौशल, अविनाश कुलकर्णी (अकेला) पंकज सिंह, गौतम चतुर्वेदी, देवेश मिश्र, विवेक गुप्त, विवेक द्विवेदी, अनुराग वाजपेयी, हरमिन्दर बेदी, भुवन जोशी, भरत साह, सत्यप्रकाश, अनुराग मिश्र, [illegible] ।

कक्षा–दशम–सत्र–१९८५–८६

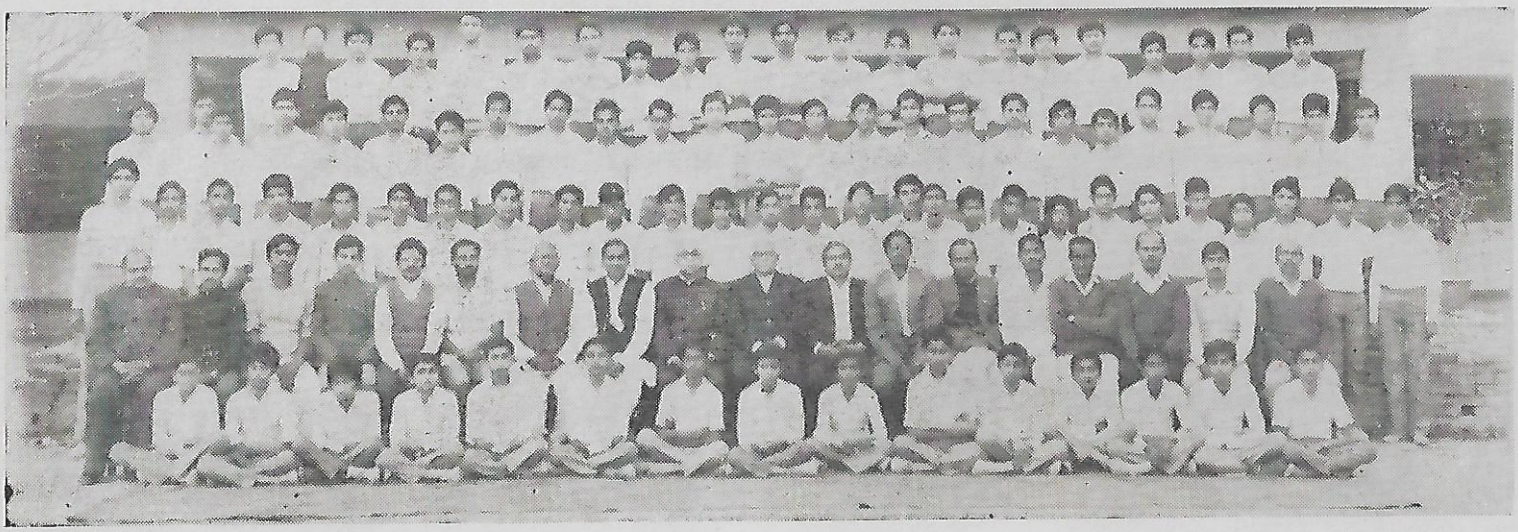

१– जमीन पर बैठे हुए (बायें से दायें) शैलेन्द्र पाण्डेय, राकेश मिश्र, राजीव सक्सेना, यशकुमार, रंजन खन्ना, तरुण सक्सेना, आशीष गुप्त, प्रवीण पाण्डेय, राजकुमार वर्मा, अनुराग पुरवार, नवनीत गुप्त, रवीन्द्र शर्मा, सजय सिंह, सुधीर गुप्त, दीपक तिवारी ।

२– कुर्सी पर (आचार्य वर्ग) (बायें से दायें) सर्व श्री महेश श्रीवास्तव, श्रीनारायण, लल्लूराम चन्देल, हेमन्त शुक्ल, प्रेमनारायण, दिनेश कुमार, चन्द्रपाल सिंह (संरक्षक), ओमशंकर त्रिपाठी (प्रधानाचार्य), नरेन्द्रजीत सिंह (अध्यक्ष), शिवशरण शर्मा (उपाध्यक्ष), प्रयाग सिंह, प्रकाशनारायण, राजेश शुक्ल, विमलेन्द्र कुमार, सुभाष शर्मा, रामतीर्थ, सतीश गुप्त, बिहारीलाल ।

३– प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) संजय सिंह गौतम, बिमल पाण्डेय, मनोज गुप्त, मनीष अग्रवाल, पंकज सक्सेना, गोपाल कृष्ण, अशोक त्रिपाठी, ब्रजेश बाजपेयी, दिनेश मिश्र, मोहित श्रीवास्तव, दुर्गाप्रसाद, हितेन्द्र केशव अवस्थी, दिनेशचन्द्र गुप्त, रीतेश शुक्ल, जयन्त सोमानी, हिमांशु अग्रवाल, संतोष मिश्र, चारुचन्द्र पाठक, साकेत श्रीवास्तव, अनुराग गुप्त, विवेक भाटिया, प्रवीण मेहरोत्रा, प्रभाकर विसेन, आलोक सांवल, मनीष तिवारी, सौरभ वाजपेयी, रमेश मिश्र ।

४– द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) पंकज विश्वकर्मा, सिंधु दमन, रामचन्द्र वाजपेयी, मनीष दीक्षित, अजीत सिंह, अशोक उत्तम, प्रदीप मेहता, विजय सर्राफ, आनन्द प्रकाश, नवीन शुक्ल, अनिल तिवारी, जय सिंह, अनुपम मिश्र, कैलाश जोशी, शिवप्रकाश, प्रवीण मिश्र, अमिताभ मुकर्जी, पंकज अवस्थी, सलिल सहाय, निलम पाण्डेय, नवीन वर्मा, अनूप खन्ना, सुनील गुप्त, आलोक जौहरी, अमित सिंह ।

५– तृतीय पंक्ति (बायें से दायें) विनीत त्रिपाठी, ऋषेश मिश्र, अरुण सिंह, शैलेन्द्र भदौरिया, जितेन्द्र त्यागी, अरविन्द देव, दुर्गाचरण, संदीप मेहरोत्रा, पंकज गुप्त, विश्वजीत सिंह, संतोष सिंह, दिवस सनबाल, संजय सिंह, पंकज शुक्ल, राजेश मौर्य, विनीत मेहरोत्रा नीलेश सांगुरी, प्रशान्त शुक्ल, रवीन्द्र गुप्त, प्रदीप दीक्षित, मनीष कृष्ण ।

दक्षिण भारत की एक झलक

—वीरेन्द्र नाथ अष्टम 'ख'

देशाटन शब्द देश और अटन शब्द के योग से बना है। अतः इसका अर्थ है कि देशों का अटन अर्थात भ्रमण। इस प्रकार विभिन्न प्रयोजनों से देश-विदेश में भ्रमण करना देशाटन कहलाता है। देशाटन ज्ञान की वृद्धि का सर्वोत्तम साधन है। विभिन्न देशों के निवासियों के आचार-विचार तथा विशिष्ट वस्तुओं का जितना सुन्दर और पूर्ण ज्ञान देशाटन से होता है उतना अन्य किसी साधन से नहीं होता। देशाटन के द्वारा विभिन्न स्थानों का भौगोलिक ज्ञान बड़ी सरलता से हो जाता है।

वास्तव में किसी स्थान की जलवायु तथा स्थिति का पूर्ण ज्ञान वहाँ के भ्रमण से ही सम्भव है। देशाटन से हमें विभिन्न वस्तुयें देखने को मिलती है। यदि कहीं तुषार-किरीट,-धारिणी पर्वत-श्रृंखलायें दिखाई देती हैं, तो कहीं अतल स्पर्शी सागर हिलोरें लेता है। कहीं गगनचुम्बी अट्टालिकायें तथा विशाल मन्दिर दिखलाई देते हैं तो कहीं दिन में भी अन्धकार को शरण देने वाली गुफाएँ। देशाटन से हमारा मनोरंजन होता है। मनोरंजन के द्वारा हमारा चित्त प्रसन्न रहता है। चित्त प्रसन्न रहने पर हमारे स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। देशाटन से विभिन्न स्थानों पर प्राप्त होने वाली वस्तुओं का हमें ज्ञान हो जाता है।

विभिन्न स्थानों में भ्रमण करने से वहाँ के निवासियों का परिचय हो जाता है। और परस्पर प्रेम, सहानुभूति उत्पन्न होती है। देशाटन में विभिन्न भाषा–भाषी मनुष्यों से मिलने से उनकी भाषाओं का ज्ञान सरलता से हो जाता है। देशाटन प्रत्येक मनुष्य के लिये अतिआवश्यक है। आज के औद्योगिक युग में देशाटन बहुत सरल, सस्ता और आसान हो गया है। आज भी अपने देश के कई ऐसे लोग हैं जो विदेशों का भ्रमण तो कर आये परन्तु अपने देश का भ्रमण आज तक नहीं कर पाये। देशाटन से अपने देश में चल रहे वास्तविक वातावरण को हम पहचान सकने में पूर्णरूपेण सफल हो सकते हैं। देशाटन से प्रत्येक स्थान का हमें वातावरण, सुन्दरता, भाषा, रहन-सहन, खान-पान आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

इसी वर्ष 21 अक्टूबर से मुझे भी दक्षिण भारत का वास्तविक सौन्दर्य, भाषा, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार आदि को अपनी आँखों से देखने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। 21 अक्टूबर की सुबह काफी इन्तजार करने के पश्चात प्रातः 8.30 बजे हमारी बस हम लोगों के गगन भेदी नारों के साथ विद्यालय से चित्रकूट के लिये रवाना हुई। रात में हम लोग उत्तर प्रदेश पार करके मध्य प्रदेश के चित्रकूट नामक स्थान पर पहुँचे। वहीं मन्दाकिनी नदी

के तट पर स्थित एक धर्मशाला में रात्रि बिताने हेतु हम लोग ठहरे। प्रात: 7.00 बजे हम लोग चित्रकूट में ही स्थित स्फटिक शिला के दर्शन करने गये।

स्फटिक शिला पर श्री रामचन्द्र जी और माता सीता जी के चरणचिह्न आज भी अंकित हैं।

स्फटिक शिला के दर्शन के पश्चात हम लोग अनसूया माता के मन्दिर में दर्शन हेतु गये। जैसा कि सभी को ज्ञात है कि अनसूया जी अत्रि मुनि की पत्नी थीं। उन्हीं के नाम पर यह मन्दिर बना है। अनसूया माता के मन्दिर में उनकी एक विशाल प्रतिमा है। वहां पर इनकी जीवन की रोचक घटनाओं का भी चित्रण देखने को मिलता है। यहाँ पर अत्रि मुनि का आश्रम भी हम लोगों ने देखा। तथा यहाँ पर हम लोगों ने सहस्रों धाराओं द्वारा मन्दाकिनी नदी का उद्गम स्थल भी देखा। यहाँ पर हम लोगों ने दृश्य चित्रण में सती नर्मदा उद्धार का भी वर्णन और चित्रण देखा। यहाँ पर अनेक ऋषि, महर्षियों की समाधि भी है।

इतना ही नहीं यहाँ पर सभी अवतारों के भी चित्र तथा वर्णन अंकित हैं। यहाँ पर 24 अवतार अंकित हैं। अनसूया माता के मन्दिर के दर्शन करने के पश्चात हम लोग गुप्त गोदावरी देखने गये. यहां दो गुफायें हैं। जहाँ से वर्ष भर लगातार पानी निकलता रहता है।

प्रथम गुफा में अन्दर जाने पर विद्युत व्यवस्था द्वारा रोशनी की जा रही थी। वहाँ ऊपर की ओर अनगिनत चमगादड़ लटके थे। तत्पश्चात आगे बढ़ने पर सती अनसूया की बहन सुननइया की प्रतिमा स्थापित है। तथा काफी आगे बढ़ने पर एक चट्टान पर एक छोटी सी प्रतिमा हनुमान जी की स्थित है। इस प्रतिमा के ऊपर भी एक बड़ी सी चट्टान लटकी है जिसके बारे में एक जनश्रुति है।

जब राम को 14 वर्ष का बनवास मिला, तो राम, लक्ष्मण और सीताजी ने इसी गुफा में कुछ दिन तक निवास किया था। ऐसा कहा जाता है कि इस गुफा को देवताओं ने ही राम के लिए बनवाया था। तो एक बार सीताजी यही स्नान कर रही थी। तो इसी चट्टान पर उनके कपड़े रखे थे। कपड़ों की रक्षा लक्ष्मण कर रहे थे। उसी समय मयंक नामक राक्षस सीताजी के कपड़े चोरी करके भागने लगा। किन्तु लक्ष्मणजी मयंक को बाण मार कर उल्टा लटका दिया। ऐसा कहा जाता कि जो चट्टान ऊपर लटका है वह मयक राक्षस ही है। अस्तु इस स्थान का नाम खटखटा चोर भी है।

प्रथम गुफा के पश्चात द्वितीय गुफा में भी हम लोग गये। इस गुफा में अन्दर प्रवेश करने पर लगभग 2 फुट ऊपर तक पानी भरा था। हम लोगोंने सर्वप्रथम धनुषाकार गुफा में प्रवेश किया। इस गुफा की आकृति धनुष के समान है अस्तु इस गुफा का नाम धनुषाकार गुफा है। तत्पश्चात हम लोग दूसरी गुफा में गए जो नीचे से पूर्णरूपेण शेषनाग तथा उनके फन के समान है। अस्तु यह गुफा शेषनाग फनाकार गुफा कहलाती है। इसी गुफा में आगे जाने पर एक रामदरबार नामक गुफा है। इसमें आगे जाने पर श्रीराम कुड तथा लक्ष्मण कुड और सीता कुड हैं जिनसे निरन्तर वर्ष भर लगातार पानी निकलता है। इन तीनों कुडों पर दीपक जलाये जाते हैं क्योंकि किसी कारणवश यहाँ पर ज्यादा अन्दर तक विद्युत व्यवस्था नहीं की गई है। वापस आने पर मार्ग पर शेषनागफनाकार गुफा से बाहर निकलने पर दायीं ओर गुप्तेश्वर नाथ जी शंकर की एक छोटी सी प्रतिमा है, जिसकी रोज पूजा की जाती है।

तत्पश्चात चित्रकूट से दोपहर 2.00 बजे हम लोगोंने मैहर के लिये प्रस्थान किया। दूसरे दिन दोपहर 3.00 बजे हम लोग मैहर पहुँचे। वहाँ से हम लोगों ने प्रसाद खरीदा। तत्पश्चात लगभग 400 फुट ऊपर स्थित शारदा देवी के दर्शन किये। मन्दिर तक जाने के लिये 565 सीढ़ियां थी तथा भीड़ भी वहाँ पर बहुत अधिक थी। संध्या 4.30 बजे हम लोगों ने हाथ-पैर धोकर जबलपुर के लिये प्रस्थान किया। रात्रि 10.00 बजे हम लोग जबलपुर पहुँचे। वहीं पर रात्रि विश्राम हेतु एक धर्मशाला में ठहरे। प्रातः 7.30 बजे हम लोगोंने नर्मदा नदी के "धुँआधार" नामक स्थान पर स्नान किया। यहाँ पर नर्मदा की धार को देखकर ऐसा लगता है जैसे आकाश में बादल मँडरा रहे हैं। यहां पर नर्मदा नदी की तेज धार ऊपर से गिरती है। जहाँ पर यह ऊपर से गिरती हैं वहां पर लगभग पानी का तल 1000 फुट नीचे तक है। यहाँ पर पानी की फुहार 20 फुट ऊपर तक उठती रहती है। साथ ही यहाँ पर पानी बहुत कोलाहल मचाता है।

दोपहर 1.00 बजे हम लोग नौका विहार हेतु भेड़ा घाट गये। जहां नर्मदा नदी की गहराई 500-600 फुट तक है। वहाँ पर नौका विहार करने में बहुत आनन्द आया। वहाँ पर एक पतली सी धारा जो साल भर चलती रहती है एक संगमरमर के पहाड़ से निकलती है। यहाँ सफेद, गुलाबी, काली सगमरमर लगभग 3 मील के क्षेत्र में फैली हैं। यहाँ पर जब नर्मदा का उद्‌गम हुआ था तो सारे देवतागण इसी स्थान पर आकर नर्मदा से मिले थे। अस्तु इस स्थान का नाम भेट से भेड़ाघाट पड़ गया। यह नदी विन्ध्याचल तथा सतपुड़ा पर्वत के मध्य से बहती है। नर्मदा नदी की उत्पत्ति इसी स्थान पर मृगु ऋषि ने तपस्या करके कराई थी। अस्तु इस स्थान का नाम भेड़ाघाट भी है। यह नदी पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है।

तत्पश्चात दोपहर 2.00 बजे हम लोगोंने भेड़ा घाट से हैदराबाद के लिये प्रस्थान किया। रात्रि 10.00 बजे हम लोग हैदराबाद पहुँचे। चारों तरफ रोशनी जगमगा रही थी। कहीं पर लाल तो, कहीं पर हरी, कहीं पर पीली रोशनी चारों ओर जगमगा रही थी। ऊँचे-ऊँचे मकान सारे शहर की शोभा बढ़ा रहे थे। आकाश में दो-तीन वायु-यान भी उड़ रहे थे। सम्पूर्ण दृश्य देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह दीवाली की रात है। चारों तरफ अपार जन समूह, या नगर की स्वच्छता व्यवस्था को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे हमारी बस स्वर्ग में प्रवेश कर गई है। रात्रि विश्राम हेतु हम लोग एक बड़ी सी धर्मशाला में ठहरे।

प्रातः 8.30 बजे हम लोग हैदराबाद भ्रमण हेतु धर्मशाला से चल दिये। सर्वप्रथम हम लोग वहाँ पर स्थित नेहरू चिड़ियाघर गये। चारों ओर शांति एवं धीमी गति से पवन चल रही थी। वहाँ पर हम लोगोंने रेलगाड़ी, शेर, चीता, भालू तथा अन्य और भी कई आश्चर्यजनक वन्य प्राणियों को देखा। तत्पश्चात हम लोगोंने गोलकोण्डा के किले के दर्शन किये, जो प्राचीन काल में हैदराबाद के निजामों द्वारा बनवाया गया था। यह किला बहुत बड़ा है। यहाँ पर और भी अन्य कई स्थानों का जैसे सालारजंग म्यूजियम, चारमीनार, हाइकोर्ट आदि का भ्रमण किया।

तत्पश्चात दोपहर 12.00 बजे हम लोग हैदराबाद से तिरूपति बालाजी के लिये चल दिये। रात्रि 10.00 बजे हम लोग तिरूपति तिरूमाला नामक शहर में पहुँच गये। तथा रात्रि विश्राम हेतु एक धर्मशाला में ठहरे। सायकाल 4.00 बजे हम लोग तिरूपति बालाजी गये। यह मन्दिर लगभग 800 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। सायंकाल 6.00 बजे हम लोग मन्दिर पहुँचे। अपार जनसमूह के कारण रात्रि 2.00 बजे हम लोगों को बालाजी के दर्शन मिले।

1892 ई० को यहाँ तपस्या की थी। तत्पश्चात हम लोगों ने वहां पर पुस्तकालय, ध्यान कक्ष, पार्वतीजी के पद चिन्ह, विवेकानन्दजी की धातु की मूर्ति, रामकृष्ण परमहंस और शारदा देवी की विशाल प्रतिमायें ध्यान की मुद्रा में एवं एकनाथजी रानाडे की समाधि स्थल के दर्शन किए।

तत्पश्चात वापस तट पर आने के बाद बस द्वारा हम लोग गाँधी मंडप गए। जिसकी नींव आचार्य कृपलानी जी द्वारा 20 जून सन् 1954 ई० में डाली गई थी। गाँधी मंडप में गाँधीजी के शरीर की राख रखी गई है। ऐसा कथानक है कि हर वर्ष 2 अक्टूबर को प्रातःकाल सूर्य की प्रथम किरण उसी अस्थिकलश पर पड़ती है। यहां पर हथकरघा उद्योग द्वारा निर्मित बैग, टोपी, पंखा, टोकरी आदि कई वस्तुयें उचित मूल्य पर विक्रय की जाती है। यहां पर गाँधीजी की एक विशाल प्रतिमा दीवार पर अंकित है। यह प्रतिमा अनेकों धातुओं द्वारा निर्मि है। तत्पश्चात हम लोगों ने वहीं सूर्यास्त का मनोहर दृश्य देखा। डूबते सूर्य को देखने से ऐसा लगता है कि जैसे कोई आग का बहुत बड़ा गोला समुद्र में जा रहा है। फिर हम लोग कन्याकुमारी जी के मन्दिर के दर्शन करने गए। यहां के मन्दिर में पार्वती जी की बहुत अधिक खूबसूरत मूर्ति बनी है जिसमें हीरा लगा है। यहां मन्दिर के अन्दर विद्युत व्यवस्था नहीं की गई है।

वहां से लौटकर हम लोग विवेकानन्द पुरम में स्थित विवेकानन्द चित्र प्रदर्शनी को देखने गए। यहां पर विवेकानन्दजी के जीवन का सचित्र वर्णन है।

अगले दिन पुनः सूर्योदय देखने के पश्चात प्रातः 7.00 बजे हम लोग विवेकानन्द पुरम के योग केन्द्र को देखने गए। यहां के लोग कर्मयोग को ही अपना आदर्श मानकर उसकी राह पर निरन्तर गतिशील रहते हैं। वहां के पूजा कक्ष में सोने का एक 1½ फुट का ॐ लटक रहा था। तथा दीवारों पर हिन्दी, तेलगु, अंग्रेजी में प्रियवचन अंकित थे। लोग वहां पर कर्मयोग का पाठ चल रहा था। पाठ खत्म होने पर हम लोगों ने वहां पर रखे अनेक देवी देवताओं, महापुरुषों, स्वतन्त्रता सेनानियों के चित्र देखे। तत्पश्चात वहां के कई लोगों ने हम लोगों को वहां के कई स्थानों का परिचय कराया।

तत्पश्चात प्रातः 7.30 बजे हम लोगों ने विवेकानन्दपुरम से मदुराई के लिए प्रस्थान किया। रात्रि 7.00 बजे हल लोग मदुराई के विशाल मन्दिर में पहुँचे। वहां हम लोगों ने मीनाक्षी मन्दिर देखा जो सम्पूर्ण भारतवर्ष का सबसे बड़ा तथा अद्भुत मन्दिर कहलाता है। यह सम्पर्ण भारतवर्ष में एक अपने अलग ढंग का अद्भुत मन्दिर है। वहां पर प्रतिदिन सैकड़ों विदेशी आकर मीनाक्षी माता के दर्शन करके अपने आप को पवित्र समझते हैं। यहां पर शिवाजी, बालाजी नटराज, दुर्गा, हनुमान आदि और भी कई देवी देवताओं की विशाल प्रतिमायें स्थापित की गई है। यहां पर मीनाक्षी देवी की विशाल मूर्ति स्थापित की गई है। रात्रि 7.30 बजे हम लोग मन्दिर के बाहर आए तथा 8.00 बजे बंगलौर के लिए प्रस्थान किया। अगले दिन सायकाल हम लोग बंगलौर पहुँचे। रात्रि विश्राम हेतु हम लोग वहां के संघ कार्यालय में ठहरे। प्रातः 7.00 बजे हम लोगो ने आर्ट गैलरी तथा अजायबघर देखे। जहां पर हाथ द्वारा बनाई गई कला, आलेखन तथा रंगीन मूर्तियां रखी थी। आर्ट गैलरी में प्राचीनकाल के अवशेष तथा आधुनिक वन्य प्राणियों की मूर्तियां रखी थी। उसी प्रकार संग्रहालय जो कि 4 मंजिला था, सभी मंजिलों में सामान रखे थे। संग्रहालय में एक वायुयान तथा एक रेलवे इंजन रखा था। वहां तोप, बंदूकें, प्राचीन सिक्के, प्राचीन वस्त्र, राकेट का एक माडल, लंडन में मिसाइल से मार करने वाली मशीन आदि और भी कई प्रकार के वास्तविक सामान रखे थे।

तिरूपति बालाजी का सम्पूर्ण मन्दिर सोने द्वारा निर्मित है तथा चारों ओर हवन कुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित थी। बालाजी की सोने की मूर्ति के सामने जाते ही ऐसा लगा जैसे हम लोग देवलोक में पहुँच गये हैं। प्रात: 10.30 बजे हम लोगों ने तिरूपति तिरूमाला से कांचीपुरम के लिये प्रस्थान किया। रात्रि 8.30 बजे हम लोग कांचीपुरम पहुँचे। वहाँ पर स्थित शिवमन्दिर के दर्शन किये। यहाँ पर शिव एवं पार्वती जी की बालू की प्रतिमा है। तथा यहाँ पर बालाजी महाराज की भी मूर्ति है।

दक्षिण भारत में मन्दिरों में बाहर किले के समान बड़ी-बड़ी दीवारें हैं जिन पर किसी पशु अथवा देवता की प्रतिमा लगी होती है। तथा उसमें चारों दिशाओं में एक-एक प्रवेश द्वार होता है जो गोपुरम कहलाता है तथा मंदिर की इमारत भी काफी ऊँची होती है जिसपर देवी-देवता सभी की प्रतिमायें अंकित हैं। सबसे ऊपर सात अथवा ग्यारह नारियल सोने के बने होते हैं। इस प्रकार हर मन्दिर काफी विशाल तथा भव्य लगता है।

कांचीपुरम के मदिर का दर्शन कर हम लोग रात्रि बिताने हेतु एक धर्मशाला में ठहरे। जहां की व्यवस्था अत्यधिक अच्छी थी। प्रात: 5.00 जागरण हुआ। प्रात: 7.30 बजे कांचीपुरम में शंकराचार्यजी के दर्शन हेतु पास ही स्थित श्री चन्द्र मौलेश्वर नामक मन्दिर गये। जहां शंकराचार्यजी का निवास स्थान था। मन्दिर में सर्वप्रथम हम लोगों ने शिवजी के दर्शन किये। लगभग आधे घण्टे बाद हम लोगों ने शंकराचार्य जी के दर्शन किये। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे साक्षात भगवान शिव की प्रतिमा आ गई हो। इनकी उम्र 93 वर्ष है। तेलगु और सस्कृत भाषा बोलते हैं।

तत्पश्चात प्रात: 7.45 पर हम लोग कांचीपुरम से मंडपम के लिये प्रस्थान किया। रात्रि के 12.00 बजे हम लोग मंडपम पहुँचे प्रात: 6.15 बजे हम लोगों ने रेलगाड़ी से रामेश्वरम के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में पांवन के फूल से समुद्र को पार करते हुए प्रात: 7 30 बजे हम लोग रामेश्वरम पहुँचे। तत्पश्चात हम लोग समुद्र स्नान के लिए गए। समुद्र तट पर स्नान कर हम लोगों ने वहां के मन्दिरों का दर्शन किया। यहां के मन्दिरों मे श्री पर्वतवर्धिनी अम्मन रामेश्वरम, रामनाथ स्वामी का गर्भगृह नन्दी की विशाल मूर्ति, श्री शकर मठ आदि कई पवित्र मूर्तियाँ तथा स्थान थे। यहां एक चाँदी का विशाल रथ भी रखा है जो अपने आप में एक अलग स्थान रखता है। इसकी चित्रकारी बहुत ही अद्भुत हैं। तत्पश्चात हम लोग दोपहर 12 00 बजे वाली ट्रेन से वापस मडपम आए। कुल मिलाकर संध्या 3.30 बजे हम लोगों ने कन्याकुमारी के लिए प्रस्थान किया। रात्रि 1.00 बजे हम लोग कन्याकुमारी के सागर तट पर पहुँचे। प्रात: 6 15 पर सूर्योदय देखने के बाद हम लोग विवेकानन्द पुरम गए। सूर्योदय के समय ऐसा लगता है कि जैसे समुद्र से एक लाल तवा निकल रहा है। उस समय का दृश्य इतना सुहावना होता है कि उस वातावरण का शब्दों में वर्णन कर पाना अत्यंत कठिन है। विवेकानन्दपुरम के निवासी बहुत ही सीधे, मिलनसार तथा सहिष्ण थे। दोपहर मे वहीं के एक सदस्य श्री राजेशजी ने विवेकानन्द शिला देखने के पहले वहाँ की सम्पूर्ण जानकारी दी तथा विवेकानन्दजी के रहस्यमय जीवन को समझाने का बहुत सफल प्रयास किया। इनके सगठन के सभी सदस्य गरीबों की सेवा करते हैं। श्री राजेश जी वहीं पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के प्रचारक के रूप में भी कार्यरत है। दोपहर 2.00 बजे हम लोग विवेकानन्द शिला स्मारक देखने गए। संध्या 3.00 बजे हम लोग शिला पर गए, जहां पर विवेकानन्दजी ने लगातार तीन दिन तक समाधि लगाई थी। वहां पर उस जगह श्री एकनाथजी राना डे स्मारक का निर्माण करवाया था। यह स्मारक 1965–1970 में बनकर तैयार हुआ। विवेकानन्दजी ने 25,26, और 27 दिसम्बर

प्रातः 10.00 हम लोगोंने बंगलौर से मैसूर के लिए प्रस्थान किया। संध्या 6.30 बजे हम लोग वृन्दावन गार्डेन के पास पहुँचे। कावेरी नदी पर बने बड़े से पुल को पार कर हम लोग वृन्दावन गार्डेन पहुँचे। चारों ओर विद्युत द्वारा प्रकाश व्यवस्था थी। वहां की सुन्दरता देखने से ऐसा लग रहा था मानों पृथ्वी ने अपनी सम्पूर्ण छटा को यहीं रख दिया हैं।

वृन्दावन गार्डेन में चारों ओर पानी के फव्वारे छूट रहे थे तथा चारों ओर रंग बिरंगा प्रकाश दिया जा रहा था। कई जगह तो सातो रंग के फव्वारे अपनी शोभा से प्रत्येक पर्यटक के हृदय को जीत लेते थे। वहां पेड़ों की आकृति को देखकर ऐसा लगता है कि मानों इतनी सुन्दरता को देख कर वह भी प्रसन्न होकर नृत्य करने वाला हो। वहां पर कई जगह मुलायम घास बिछी है। जिस पर चलने से ऐसा लगता है मानों यह घास नहीं रूई का गद्दा है। वहां पर बने कुण्ड में नौका विहार का तो और भी बहुत आनन्द है। वहां छोटे-छोटे लैम्प पोस्ट से निकल रहा संगीत तो पर्यटकों का मन और प्रसन्न करता हैं। वहाँ की सबसे अद्भुत कला लहरों का संगीत पर स्वयं नृत्य करना है। यहाँ पर जिस प्रकार का संगीत निकलता है। वहाँ लहरें उसी प्रकार का नृत्य करके सबका मन मोह लेती है। वास्तव में वृंदावन गार्डेन को देखने से ऐसा लगता जैसे हम लोग किसी सुरलोक में आ गये हैं। चारों तरफ शांति छायी रहती है। यहां पर कुण्ड पर रंग-बिरंगी धारा तो प्रत्येक पर्यटक का मनोरंजन करती है।

रात्रि 9.00 बजे हम लोगोंने मैसूर से बीजापुर के लिए। प्रस्थान किया। प्रातः 9.00 बजे हमलोग बीजापुर पहुँचे। तत्पश्चात हम लोगों ने आसार महल, गोल गुंबद देखा आसार महल प्राचीन काल का उच्चन्यायालय था। यह 450 ई० पू० में निर्मित किया गया था। इस पर आलमशाह नबाब ने शासन किया था यह पहला किला है जिसे शिवाजी ने अपने 16 वर्ष की उम्र में नबाब से जीता था। यह बहमनी राजाओं द्वारा बनवाया गया था। तथा गोलगुंबद भी 17 वीं शताब्दी में बहमनी राजाओं द्वारा बनवाया गया था। यहां पर आदिलशाह ने सन् 1926 ई० से 1656 तक शासन किया। तथा गोलगुंबद में आदिलशाह और उसकी बेगम एवं पुत्री की कब्र है। यह 7 मन्जिला है। तथा लगभग 150 फुट ऊँची है। इसमें सबसे ऊँची छत पर जाने के लिए 127 सीढ़ियाँ हैं। दोपहर 2.00 हम लोगोंने शोलापुर के लिए प्रस्थान किया। दूसरे दिन 3.00 दोपहर में हम लोग शोलापुर पहुँचे। शोलापुर पहुँचने पर हम लोगोंने वहाँ का बाजार किया तथा संध्या समय 7.00 बजे कानपुर के लिए प्रस्थान किया।

दूसरे दिन रात्रि 9.00 बजे हम लोग खजुराहो पहुँचे। तथा रात्रि विश्राम हेतु वहीं कुछ दूर पर स्थित एक धर्मशाला में रुके। प्रातः 6.00 हम लोग वहीं पर स्थित जैन मन्दिर देखने गया। प्राचीन काल में खजुराहो में चन्देल राजाओं ने 85 मन्दिर बनवाये। जिनमें से अधिक जैन मन्दिर हैं। सर्वप्रथम हम लोगोंने जैन मन्दिर के दर्शन किए। वहाँ महावीर जी की तथा 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। तत्पश्चात हम लोग खजुराहो का मन्दिर देखने गए।

मन्दिर में प्रवेश करने पर सर्वप्रथम हम लोगोंने नन्दीजी के दर्शन किए। नन्दी जो भगवान शिव का वाहन है। फिर हम लोग शिवमन्दिर गए। यहाँ मन्दिर में दिवाल पर संस्कृत भाषा के कुछ सुन्दर वचन अंकित है। यहाँ के सभी मन्दिरों में चित्रकारी का बहुत ही अच्छा प्रदर्शन है। परन्तु मन्दिरों के ऊपर तथा अन्दर अनेक भावमय मूर्तियाँ चित्रित हैं। तत्पश्चात हम लोग क्रमशः वराह मन्दिर, महावीर मन्दिर, लक्ष्मी मन्दिर देखे। तत्पश्चात दोपहर

2.00 बजे हम लोगोंने खजुराहो से कानपुर के लिए प्रस्थान किया। रात्रि 8.00 बजे हम लोग गगनभेदी नारों के साथ अपने विद्यालय वापस सकुशल लौट आए।

इस 18 दिन के सफल देशाटन को पूरा करने में हम लोगों को मार्ग में बहुत कठिनाइयों से लड़ाई लडनी पड़ी। परन्तु हम लोग धैर्य पूर्वक सदा आगे बढ़ते रहे। परिणामस्वरूप हम लोग अपने देश दर्शन की यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा किया। प्रत्येक मनुष्य को कम से कम अपने देश का तो दर्शन करना ही चाहिए ताकि वह अपने देश के वास्तविक वातावरण को पहचान सकने में सफल हो सके तथा अपने को उस वातावरण के अनुकूल ढालने का प्रयास करे।

ईसोपदेश

लाठी का बदला लाठी गाली का बदला गाली और खून का बदला खून नहीं हो सकता। तुम लोगों का दिल बदलने की कोशिश करो। जो कुरता छीने उसे दोहर भी दे दो। भलमनसाहत की मार बदला लेने की अपेक्षा अधिक कारगर होती है।

पृथ्वी पर धन जमा न करो। इसमें चोरी होने ईर्ष्या बढ़ने और अहंकारी विलासी होने का डर है। अपने धन परलोक में जमा करो। जहाँ वह घटता नहीं बढ़ता ही रहता हैं :

देवालय के विश्राम घर में जो सट्टा लगा रहे थे और कबूतर बेचने खरीदने का धन्धा कर रहे थे। ईश्वर पुत्र ने उनकी चौकियाँ उलट दीं और कहा-'परमेश्वर के घर को डाकुओं की खोहन बनाओ।

यह याजक को कहते हैं उन्हें सुनो, उनमें से जो उचित हो उसे अपनाओ। पर वे जो करते हैं सो न करो। क्योंकि इन पुरोहितो की कथनी और करनी मे जमीन आसमान जैसा अंतर पाया जाता है।

लोक सेवा में निरत होकर तुम अपने गाँव और घर में सम्मान नहीं पा सकते। इसीलिये अच्छा है कहीं अन्यत्र आश्रम ढूढ़ों।

बड़ाई सुनने का लालच न करो ढिंढोरा न पीटो न पिटवाओ। ढोंगी लोगों की तरह मंच सजाने और बढ़ बढ़कर बातें करने का प्रयत्न न करो। जो देना है दांये हाथ से ही दे डालो। ताकि बाँया हाथ उसे जान पाये।

भलाई इसीलिये करो कि ईश्वर को प्रसन्नता दूँ। दीपक की तरह जलो, ताकि उजेला फैले। उचकने की कोशिश न करो। दीपक सदैव दीवट पर रखा जाता है। उपयुक्त जगह उसे अनायास ही मिल जाती है।

हमारी दक्षिण भारत यात्रा

—अभिषेक अष्टम 'क'

देशाटन शिक्षा का एक सशक्त माध्यम है . इसके माध्यम से हम अपने देश की सांस्कृतिक परम्पराओं को जितने निकट से देख पाते हैं उतने निकट से शायद ही कभी देख पाते हों। इसलिए प्रायः विद्यालयों में सत्र में एक बार देशाटन कार्यक्रम किया जाता है।

देश दर्शन कार्यक्रमों की कड़ी में इस वर्ष भी हमारे विद्यालय का देशदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। किन्तु इस वर्ष देशदर्शन दो दलों में बाँटा गया। पहला दल नवम से द्वादश तक के छात्रों का था। यह दल प्रसिद्ध पर्वतीय क्षेत्र कुल्लू एवं मनाली गया था। द्वितीय दल षष्ठ से अष्टम तक के छात्रों का था। यह दल भारत के सुदूर दक्षिणी अन्तरीय कन्याकुमारी गया था।

प्रतीक्षा की घड़ियों के समाप्त होते ही 21 10-85 को प्रातःकाल हम लोग बहुत खुश थे क्योंकि आखिरकार वह घड़ी आ गयी थी जब हमें कन्याकुमारी को बस द्वारा प्रस्थान करना था। अंततः सभी क्रिया-कलापों को विधिपूर्वक सम्पन्न करते हुए हम लोग बस पर सवार हुए। सामान पहले ही बस पर चढ़ चुका था। प्रातः 8-30 बजे हम लोग विद्यालय-प्रांगण से बाहर निकल गये। नारे लगाते हुए हम लोगों ने यात्रा प्रारम्भ की। हमारी इस यात्रा में 7 आचार्य, 3 कर्मचारी तथा 45 छात्र थे। सभी का मन बहुत प्रसन्न था। संध्या 7 30 बजे हम लोग चित्रकूट पहुँचे। यहाँ पर भगवान राम वन जाते समय रुके थे। यहीं पर राम भरत मिलाप हुआ था। यहाँ पर हम लोग 'प्रमोद वन' के मंदाकिनी विश्राम गृह में ठहरे। इसी विश्राम गृह से सटकर मंदाकिनी नदी बहती है। यहाँ पर हम लोगों ने भोजन किया और विश्राम किया। प्रातःकाल हम लोगों ने मन्दाकिनी में स्नान किया फिर 7-30 बजे (प्रातः) तक हम लोग जलपानादि कर चित्रकूट भ्रमण को चल दिये। सर्वप्रथम हम लोगों ने स्फटिक शिला पर भगवान राम एवं माता सीता के पदचिन्ह देखे। तत्पश्चात कामदगिरि एवं गुप्त गोदावरी देखते हुए मैहर को चले।

चित्रकूट से चलने के बाद दोपहर 3-30 बजे हम मैहर पहुँचे। वहाँ पर भोजन किया और मैहर देवी के दर्शन के लिए चले। मैहर देवी का मन्दिर ऊँचाई पर है। वहाँ पहुँचने के लिए लगभग 600 सीढ़ियां हैं। यह मन्दिर अत्यन्त भव्य बना हुआ है। माँ शारदे की यहाँ अत्यन्त भव्य मूर्ति स्थापित है। यहाँ हजारों लोग प्रतिदिन दर्शन के लिए आते हैं।

मैहर दर्शन के बाद 6-30 बजे हम लोग जबलपुर को चले। रात्रि 11-30 बजे के करीब हम लोग विभिन्न प्रकार के शहरों के लोगों को देखते हुए मध्यप्रदेश के प्रमुख शहर जबलपुर पहुँचे। यहाँ पर हम लोग "जैनधर्मशाला" में ठहरे। भोजनोपरान्त 3-00 बजे हम लोग सो गये। प्रातः 6-30 बजे हम लोग शौचादि से निवृत होकर 'धुंआधार' देखने चले। इसकी विशेषता यह है कि यहाँ पर नर्मदा का जल इतने वेग से नीचे गिरता है कि नीचे पहुँचने के तुरन्त बाद इसका कुछ भाग वाष्पित हो जाता है इसीलिए इसे 'धुंआधार' कहा जाता है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य तो अकथनीय है बड़े बड़े शिलाखण्डों के मध्य बहती नर्मदा की शोभा शब्दों से नहीं आंकी जा सकती। यहाँ पर हमने स्नान किया। उसके बाद हम लोगों ने जलपान किया। 10 बजे हम लोग मेड़ाघाट चले। वहाँ पर संगमरमर की चट्टानें हैं जिसके कारण जबलपुर की प्रसिद्धि है। 11 45 बजे हम लोगों ने भोजन किया फिर मेड़ाघाट पहुँचे। 2.00 बजे मेड़ाघाट में नौका-बिहार किया। नौका बिहार करते समय हम लोगों ने संगमरमर की ऊँची-ऊँची चट्टानें, दुर्गावती द्वारा स्थापित शिवलिंग तथा चट्टानों के कटाव से बनी विभिन्न आकृतियों को देखा। वहाँ पर नर्मदा की गहराई 600 फीट से भी अधिक है।

जबलपुर भ्रमण करने के बाद हम लोग आगे बढ़े। मार्ग के विभिन्न मनोहर दृश्यों, आदिवासी बस्तियों आदि से गुजरते हुए सायं 6.30 बजे हम लोग मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र की सीमा पर पहुँचे। यहाँ पर कुछ यातायात सम्बन्धी असावधानियों के कारण हमें रुकना पड़ा। इसलिए हम लोगों ने वहीं पर भोजन बनाया और खाया। वहाँ से हमें लगभग 12.30 बजे छोड़ा गया। हम लोगों ने फिर सफर शुरू किया। रात भर चलने के बाद प्रातः 4.30 बजे नागपुर से 40 कि०मी० दक्षिण में एक आदिवासी गांव के पास रुके। वहीं एक नदी थी इसलिए हम लोगों ने वहीं पर स्नानादि प्रातःकालिक कार्यक्रम किये। तत्पश्चात जलपान आदि करके हम लोग फिर चल दिये। मार्ग में हमें मराठी रहन-सहन, महाराष्ट्र के लोगों, मराठी भाषा को अत्यन्त निकट से देखने का अवसर मिला। यहाँ पर स्वच्छता काफी थी। लगभग प्रत्येक गाँव या शहर स्वच्छ था। मनोविनोद करते हुए प्राकृतिक छटा को निहारते हुए, महाराष्ट्र प्रान्त को देखते हुए हम लोग महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश की सीमा पर पहुँचे। इस सीमा को पार करते ही हमें तेलुगू भाषा सुनाई पड़ी, लिखी दिखाई पड़ी। आन्ध्रप्रदेश के बारे में हमारे मन में जो कौतूहल थे वे धीरे-धीरे शान्त हो रहे थे। मार्ग में आंध्रप्रदेश की खूबसूरती देख कर हम दंग रह गये। हमारी यात्रा जारी रही। इस प्रदेश की स्वच्छता वाकई प्रशंसनीय है। यहाँ की जनजातियों को सरसरी निगाह से देखते हुए 24-10-85 को सायं 6.45 बजे के लगभग हम लोग भारत के प्रसिद्ध नगर, निजामों की भू० पू० राजधानी तथा आन्ध्र प्रदेश की वर्तमान राजधानी हैदराबाद पहुंचे। यह एक महानगर तथा औद्योगिक नगर है परन्तु यहाँ पर सड़कों पर नाम मात्र के लिए भी गन्दगी नहीं थी। प्रकाश की यहाँ पर उत्तम व्यवस्था थी। वहाँ पर हम 'श्री बाला जी लाज में ठहरे। हैदराबाद के एक होटल में हमने रात्रि का भोजन किया। भोजन सुस्वादु था। भोजनोपरान्त थके होने के कारण हम लोग शीघ्र ही अपने अपने बिस्तरों पर सो गये।

प्रातः 5.00 बजे उठ कर कपड़े धोए स्नानादि किया। फिर 10.00 बजे जलपान आदि करके हम लोग हैदराबाद दर्शन के लिए चले। सर्व प्रथम हम लोगों ने 'चार मीनार' देखा। इन चारों मीनारों पर अद्भुत शिल्प की अनोखी मिसाल देखने को मिली। हम लोग दुर्भाग्यशाली थे क्योंकि 25-10-85 को जब हम हैदराबाद भ्रमण कर रहे थे उस दिन वहाँ का विश्व प्रसिद्ध म्यूजियम 'सालार जंग' बन्द था। क्योंकि वह शुक्रवार(जुम्मा)

का दिन था। म्यूजियम को बाहर से देखते हुए हम लोग "नेहरू जूलौजिकल पार्क, हैदराबाद" देखने चले यहाँ टिकट लेकर हम लोग इसे देखने चले। यह एक विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां पर बड़ी भारी संख्या में पर्यटक प्रतिदिन आते हैं। हम लोगों ने यहाँ की स्वच्छता और व्यवस्था के अवलोकन के साथ ही मछली घर, विशाल कछुए, शेर, चीते तेंदुआ, विभिन्न प्रकार के मोहक पक्षी, अनेक प्रकार के बन्दर तथा बस द्वारा खुले जंगल में शेर भी देखे। इस पार्क में अच्छी तरह घूमने के बाद 2.30 बजे प्रसिद्ध 'गोलकुण्डा' का किला देखा। यह किला तेलुगू राजा 'काकती प्रताप रुद्र देव' ने सन् 1143 ई० में बनवाया था। यह किला तुर्की और फारसी शैली से प्रभावित है। इस किले की विशेषता यह है कि यहाँ पर बिना तार के टेलीफोन की व्यवस्था है। यहाँ के शाही गेट से कोई थोड़े ऊँचे स्वर में बोले तो वह आवाज किले के सर्वोच्च स्थान तक पहुँचती है जो कि शाही दरवाजे से 500 फीट ऊँचा है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर पानी भी ऊपर तक ले जाने के लिए बड़े-बड़े जलकुण्ड, बने हुए हैं। इसके अलावा यहाँ पर रामदास कोटा, दीवान-ए-आम, दीवान-ए- खाद्य, अम्बार खाना, स्वीमिंग पुल (कटर हाऊस), मोती महल, मीर आलम कुण्ड, दुर्गावती प्रेमावती मंच, रानी महल, मुर्दा गृह, बजार ए दरवाजा, हुसैन सागर, लंगर खाना आदि स्थान भी थे। गोलकुण्डा के किले को भली भाँति देख लेने के बाद उसी दिन हम लोग भारतवर्ष के प्रसिद्धतम मंदिरों में से एक "तिरुपति बाला जी को चल दिये।

हैदराबाद से सायं 6-00 बजे चलने के बाद हम लोग बस में मनोविनोद करते हुए चलते रहे। रात्रि में एक होटल में भोजन किया उसके बाद रात भर सोते हुए बस से सफर करते रहे। प्रातः होने पर लगभग 5.00 बजे बस एक नहर के पास रुकी। उसी नहर के पानी से हम लोगों ने स्नानादि कार्यक्रम संपन्न किये। हम लोगों का जल पान तैयार हो चला था। हम लोगों ने जलपान किया, फिर यात्रा प्रारम्भ कर दी मार्ग में तेलुगू रहन-सहन की विशेषताओं, वहाँ की कृषि, भाषा, आदि पर दृष्टिपात करते हुए तथा मार्ग में पड़ने वाले मनोरम स्थलों का चलती बस से ही अवलोकन करते हुए हम लोग 26.10.85 को दोपहर 3.30 बजे तिरुपति शहर पहुँचे। वहाँ के एक रेस्तरां में हम लोगों ने दक्षिण भारतीय भोजन का रसास्वादन किया। भोजनोपरान्त हम लोग एक धर्मशाला में ठहरे। वहां पर हाथ मुंह धोकर हम लोग 'श्री बालाजी" के दर्शन के लिए तैयार हो गये। बालाजी का मन्दिर एक पहाड़ी पर है जिस पर बस द्वारा ही जाया जाता है जाने के लिए सीढ़ियों का मार्ग भी बना हुआ है। इस मन्दिर में जाने के मार्ग में प्रकाश की अच्छी व्यवस्था है। हम लोगों ने बस द्वारा 20 किलो मीटर की दूरी तय की। पहाड़ी के शिखर पर पहुँचने के बाद हम लोग यह देखकर अचंभित रह गये कि पहाड़ी के ऊपर एक अत्यन्त स्वच्छ बस्ती बसी हुई है जो कि अत्यंत प्रकाश मान है। यहाँ पर सर्वप्रथम हमें "श्री बाला जी महाराज" का रथ मिला जो कि बल्बों से जगमगा रहा था। उसके थोड़ा ही आगे एक भव्य और अत्यन्त सुन्दर 'गोपुरम' (प्रवेश द्वार) मिला। इसकी ऊँचाई भी काफी थी। यह बल्बों के प्रकाश में जगमगा रहा था। उसके बाद हमें एक बड़ा सा सरोवर मिला जिसका जल अत्यन्त शीतल और स्वच्छ था। हम लोगों ने उस जल का आचमन किया। उसके बाद हम लोगों ने थोड़ा बहुत छट पुट सामान क्रय किया। उसके बाद हम लोग एक विशाल भवन में गये। उस भवन में लगभग 4 कमरे थे जो कि दर्शनार्थियों से भरे थे। उन कमरों में बैठने के लिये कुर्सियाँ लगी थीं। कमरों में प्रकाश व पंखे की भी व्यवस्था थी। उस कमरे में 12.00 बजे तक बैठने के बाद हम लोगों का नम्बर आया। हम लोग एक गैलरी में गये उसमें थोड़ी दूर चलने पर एक दरवाजा मिला दरवाजे से थोड़ी दूर पर ही मुख्य मन्दिर था जिसके अन्दर श्री बाला जी की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित थी। प्रतिमा के ठीक ऊपर सोने का विशाल कलश रखा हुआ था। प्रतिमा सोने की थी और 4 फीट लम्बी थी। उनके दर्शन

हमें एक बारगी ऐसा लगा कि कहीं हम पौराणिक स्वर्ग में तो नहीं आ गए हैं। वहाँ की सुन्दरता को शब्दों की सीमा में बाँधा नहीं जा सकता। वहाँ के मुख्य सुन्दर क्षेत्र हैं–'म्यूजिकल डांसिग फाउन्टेन' अर्थात् संगीत की धुन पर नाचने वाले फव्वारे, रंग बदलने वाले फव्वारे तथा विभिन्न प्रकार के रंगों के पानी का झरना। आदि। वृन्दावन गार्डेन की सुन्दरता पर मुग्ध होकर हम लोग भाव विभोर हो गए। बाग से 8.30 बजे लौटकर हम लोग आगे चल दिये।

मैसूर से थोड़ा आगे बढने पर 'मनहिल' में हम लोग रुक गए। वहीं पर भोजन तथा विश्राम किया। वहाँ से प्रातः 6 बजे जलपान आदि कर के शोलापुर को चले। 8.00 बजे बीजापुर पहुँच गए। वहाँ पर 'गोल गुम्बद' देखा तथा एक होटल में जलपान किया और 1.00 बजे दोपहर को शोलापुर पहुँच गये। वहाँ पर भोजन कर के शहर के पैदल भ्रमण के लिए निकले। वहाँ पर अत्यन्त सुन्दर सुन्दर चादरें मिल रहीं थी। वहाँ पर जलपान करके 5.00 बज वहाँ से अगले स्थान के लिए चल दिए।

शोलापुर से चलने के बाद हम लोग 4–11–85 रात को चलते रहे। 5–11–85 की प्रातः एक ग्राम में रुके। वहीं पर एक 'हैण्ड पाइप' के जल से स्नानादि कार्यक्रम किये तथा भोजन एवं जलपान भी बनाया। जलपान करके हम लोग आगे चल दिए। लगातार चलने एवं मार्ग में पड़ते शहरों को छोड़ते हुए 6–11–85 को दोपहर 2.00 बजे जबलपुर पहुँचे। वहाँ पर भोजन किया तथा बस में ही आराम किया। 5.00 बज फिर यात्रा आरम्भ हो गई। चलते चलते हम लोग 'खजुराहो' में आ गये। रात के 12.90 बजे हम लोग वहाँ की एक धर्मशाला में पहुचे। वहाँ भोजन इत्यादि करक 3.30 बजे हम लोग निद्रा में लीन हो गए। प्रातः 6 बजे हम लोग खजुराहो के प्रसिद्ध जैन मन्दिरों के दर्शनार्थ निकले। खजुराहों के मन्दिरों में शिल्पियों द्वारा किया गया शिल्प बेसिसाल था। शिल्प के कारण मन्दिर देखने में अत्यन्त भव्य लग रहे थे। मन्दिरों को देखने के बाद हम लोगों का उत्साह आसमान छू रहा था क्योंकि शीघ्र ही हम लोग कानपुर पहुँचने वाले थे। अन्ततः जब हम लोग उत्तर प्रदेश की सीमा में आ गए तो हमें अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ। उसके बाद हम लोगों ने महोबा में जलपान किया और हमीरपुर को पार करते हुए 7–11–85 को रात्रि 8.00 बजे कानपुर अपने विद्यालय आ गये। अत्यन्त प्रसन्नता के साथ हम लोग बस से उतरे। इस प्रकार कुछ कड़वे तथा कुछ मृदु अनुभवों के साथ हमारा देश दर्शन अपने उद्देश्य में सफल रहा।

जिनमें शंख, सीपों की माला, सीपों से बने कैलेण्डर तथा अन्य आकर्षक वस्तुएं जो शंखों और सीपों से बनी थी प्रमुख थीं। उसके बाद हम लोगों ने रात्रि को हर्ष उल्लास और हृदय में तरंग लिए हुए भोजन ग्रहण किया और चर्चाओं को प्रधानता देते हुए विश्राम किया। प्रात: 6.00 बजें उत्साह के साथ नहा धोकर हम लोग जल-पान के लिए बैठ चुके थे। जलपान कर जब हम लोग कन्या कुमारी के मुख्य समुद्र तट पर पहुंचे, सूर्योदय हो चुका था। हमें क्षणिक निराशा हुई परन्तु फिर हम उसी रमणीक वातावरण में खो गए। उसके बाद हम लोगों ने विवेकानन्द केन्द्र को घूमा और वापस जाने की तैयारियाँ करने लगे। हममें से अधिकांश छात्र उदास थे क्योंकि उनका मन वहाँ से जाने के लिए नहीं कह रहा था। परन्तु हो क्या सकता था ? समय कम था हमें 7–11–85 को कानपुर में पहुंचना था। इसलिए सभी छात्रों ने अन्तिम बार अरब सागर, हिन्द महासागर बंगाल की खाड़ी के मिलन स्थल को निहारा और वापसी यात्रा के लिए चल दिए।

कन्याकुमारी से 1.11 85 की प्रात: 9.30 बजे चले। मार्ग अत्यन्त रमणीक तथा ताड़ के वृक्षों से अच्छादित था। हम लोग अत्यन्त प्रसन्नचित्त थे। चलते-चलते हमें एक अत्यन्त विशाल मन्दिर दिखाई दिया जो कि अत्यन्त भव्य था। हमारी उत्सुकता जागी हमने अपने आचार्य श्री गणेश जी से पूछा कि यह किसका मन्दिर है ? और यह कौन सा शहर है। पता चला कि हम लोग मदुरै शहर में थे और यह 'मीनाक्षी देवी' का मन्दिर था। हम लोगों ने उस मन्दिर को देखा उसकी विशेषता यह थी उसमें भारतीय पुराणों आदि ग्रन्थों में उल्लेखित 66 करोड़ों देवी-देवताओं की किसी न किसी रूप में प्रतिमा स्थापित है। इससे उस मन्दिर की विशालता का सहज ही अनुमान लग जाता है। उसे देख लेने के बाद हम लोग अपने अगले गन्तव्य को चले।

2–11–85 की होपहर 2.30 बजे हम लोग भारत के प्रसिद्ध औद्योगिक शहर 'बंगलौर' पहुंचे। वहाँ पर हम लोगों ने 'नन्दी' की विशाल प्रतिमा वाला मन्दिर देखा। उसके बगल में एक गणेश जी का मन्दिर भी था। उन दोनों मन्दिरों का दर्शन करके 6.30 बजे सायं काल संघ कार्यालय पहुंचे। भोजनादि कर वहीं पर रात्रि विश्राम किया। प्रात: 6.30 बजे हम लोग स्नादि जलपान से निवृत्त हो संघ कार्यालय से विदाई की तैयारियाँ करने लगे। 8.00 बजें हम लोग "विश्वेश्वरैया" द्वारा बनवाये गये म्यूजियम में पहुचे। उस म्यूजियम में भौतिकी से सम्बन्धित लगभग हर वस्तु थी तथा वहाँ विभिन्न माडलों द्वारा भौतिक विज्ञान की जानकारी दी जाती थी। उसके बाद हम लोगों ने प्रसिद्ध 'आर्ट गैलरी देखी। उसमें विभिन्न कलाकारों की अनुपम कलाकृतियाँ तथा पुरातत्व विज्ञान से सम्बन्धित कई वस्तुयें रखी थीं। उसके बाद बस से बंगलौर शहर की स्वच्छता व सुनियोजितता पर दृष्टिपात करते हुए मैसूर की ओर चल दिए।

3–11–85 को दोपहर 2.00 बजे बंगलौर से चलने के बाद हम लोग 5.15 बजे 'टीपू सुल्तान' की राजधानी श्रीरङ्गपट्टम पहुंचे। उसके बाद किले को सरसरी निगाह से देखते हुए हम लोग 6.45 बजे मैसूर पहुंच गये। वहाँ के मुख्य आकर्षण 'वृन्दावन गार्डेन' के लिए जाने वाले मार्ग पर बस रुक गई। उसके आग एक बांध था जिसके ऊपर से हमें जाना था। हमने उसका टिकट लिया। वहाँ पर 150 विभिन्न प्रान्तों की टूरिस्ट बसें खड़ी थीं जिससे उसकी प्रसिद्धि का अनुमान सहज ही लग जाता है। उस बांध के ऊपर लगभग 1 किलो मीटर चलने बाद वह बाँध आया। सबसे पहले उस बाँध के निर्माता 'विश्वेश्वरैया की एक प्रतिमा स्थापित थी। जिसके नीचे लिखा हुआ था कि यह बाँध सन् 1940 ई० में बनकर तैयार हुआ था। इस बाग में प्रवेश करते ही

होने ही हम लोगों की सारी थकान दूर हो गयी । दर्शन करने के बाद हम लोगों ने प्रसाद लिया । फिर जलपा किया । तब तक 2 बज चुके थे । उसके बाद हम लोग सीढ़ियों से उतरे । अन्ततः 8.00 बजे प्रातः हम लोग धर्म शाला पहुँचे । वहाँ पर स्नानादि से निवृत होकर 1.00 बजे भोजन कर हम लोग रामेश्वर को चल दिये ।

27.10-85 को दोपहर 1.3 पर चलने के बाद रात्रि 7.00 बजे सप्त पुरियों में से एक काञ्चीपुरम् पहुँचे । वहाँ पर हम लोगो ने 'का भाक्षी देवी' का दर्शन किया । दर्शन करने के बाद हम लोग एक धर्मशाला में रुके वहाँ भोजन किया । भोजन के बाद थोड़ी देर चर्चाएँ की फिर सो गए । उसके बाद प्रातः 4.00 बजे उठे । नहा धोकर 6.00 बजे तक तैयार हो गये । 6.00 बजे जलपान कर के चल दिये । मार्ग में 'आदि शङ्कराचार्य' 'श्री चन्द्रशेखरन्' के दर्शन किये और फिर तमिलनाडु प्रांत की भाषा तमिल, और लोगों पर दृष्टिपात करते हुए हम लोग चलते रहे । मार्ग में कई सुन्दर स्थल पड़े । दोपहर 2.30 बजे हम लोग 'श्रीरंगम' पहुँचे । यहाँ पर भगवान 'श्री रंगनाथ' के दर्शन किये । दर्शन करने के बाद जलपान किया । 5.00 बजे हम लोग श्री रंगम से चले । 28/20/85 को रात्रि 11.35 बजे हम लोग मण्डप्पन पहुँचे । वहाँ पर बस छोड़कर हम लोग ट्रेन से रामे श्वरम् को चले जो कि मण्डप्पम से 19 किमी० दूर है । मार्ग में समुद्र के ऊपर पुल भी बना था । दिनाङ्क 29.10.85 को प्रातः 4.00 बजे हम लोग रामेश्वरम् के समुद्र तट पर थे । एक किनारे हम लोगों ने अपना सामान रखा और देर तक समुद्र में नहाते रहे । समुद्र की गहराई तट पर कम थीं और आगे अधिक थी इसलिए हम लोगों को अधिक आगे नहीं जाने दिया गया । वहाँ पर भली प्रकार नहाने के बाद हम लोग रामेश्वरम के मन्दिर की ओर चले । उस मन्दिर को देखने के बाद हम लोगों ने पूरा मन्दिर देखा । मन्दिर बहुत विशाल क्षेत्र में फैला था तथा उसका गोपुरम् अत्यन्त सुन्दर व ऊँचा था । उसके बाद हम लोग वापस प्लेटफार्म पर आये । गाड़ी खड़ी थी हम लोग उस पर बैठे और वापस मण्डप्पम आ गये । दोपहर 12,00 बजे हम लोग कन्या कुमारी को चल दिये ।

रामेश्वरम से चलने के बाद 30.10.85 को हम लोग 2.39 बजे भारत के सुदूर दक्षिणी सिरे कन्या कुमाँरी पहुँच गये । 5.00 बजे तक हम लोग शौचादि से निवृत होकर जलपान, के लिए बैठ गए । जलपान कर हम लोग सूर्योदय का दृश्य देखने के लिए खड़े हो गये । सूर्य धीरे-धीरे बंगाल की खाड़ी से निकल रहा था और समद्र पर सुनहला रंग चढ़ रहा था । जब सूर्य आधा निकल आया तो ऐसा लगा कि कोई दहकती हुई गेद समुद्र के अन्तस्थल से निकल रही है । यह दृश्य अतीव शोभनीय था । उस दृश्य को देखने के बाद हम लोग विवेकानन्द पुरम् आ गये । यहीं पर एक होटल में हम लोग ठहर गये । 2.00 बजे हम लोग भोजन कर पानी के जहाज से 250 मी० दूर स्थित विवेकानन्द शिला स्मारक पर गए । रह स्मारक स्वामी विवेकानन्द की स्मृति में बनवाया गया था । भारत का भ्रमण करके लौटने के बाद विवेकानन्द ने इसी शिला पर ३ दिन तक ध्यान लगाया था । इस स्मारक के निर्माण में श्री एकनाथ रानाडे का महत्वपूर्ण योगदान था । इस स्मारक मे स्वामी विवेकानन्द की एक भव्य प्रतिमा स्थापित हैं । इस प्रतिमा के अतिरिक्त वहाँ पर ध्यान मण्डपम् भी है । इस स्मारक की शान्ति और स्वच्छता व्यवस्था प्रशसनीय थी । उस शिला पर ही देवी कन्या कुमारी के चरण चिन्ह भी हैं । उसके बाद 5.00 बजे हम लोग वापस तट पर आ गये और उसके बाद का सूर्यास्त का दृश्य देखा यह दृश्य सूर्योदय के दृश्य से चार गुना अधिक सुन्दर था । उसके बाद हम लोगों ने 'गांधी मण्डपम' देखा । इसमें गांधी जी की भस्म रखी है । इसके बाद कन्या कुमारी देवी के दर्शन किये । कन्या कुमारी देवी की प्रतिमा कन्या के रूप में वहाँ पर स्थ पित है । मन्दिर के भली भाँति दर्शन कर लेने के बाद हम लोगों ने स्मृति के लिए थोड़ा बहुत सामान क्रय किया

(कृपया पृष्ठ 33 को 31 मानें)

'स्वतन्त्र लेखन प्रतियोगिता'

एक अविस्मणीय यात्रा

निरंजन गोरे, एकादश 'ख'

पहाड़ी की ऊँची ऊँची चोटियाँ बर्फ से ढके शिखर और भी कई मनोरम दृश्य अचानक एक के बाद एक मेरी आंखों के सामने तैर गए।

हम लोगों ने सर्दी की छुट्टियों में केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि स्थानों पर जाने का निर्णय लिया था। इस समय हम लोग देहरादून में रहते थे। देहरादून वैसे भी पहाड़ो इलाका है और मंसूरी के बहुत निकट होने के कारण बहुत ठडा रहता है। मंसूरी को पहाड़ो की रानी (Queen of the mountains) के नाम से भी जानते हैं। यह कहना उचित भी है। हम लोग देहरादून में रहने के कारण ही यह निर्णय ले पाए थे। देहरादून से बद्रीनाथ, केदारनाथ को जाने के लिए कई टैक्सियाँ मिलती है। वहां से टैक्सी करके हम लोग जाने को निकले। मन मे तरह-तरह की भावनाएं उठ रहीं थीं। कैसा होगा बद्रीनाथ? क्या वहाँ बर्फ होगी? उत्साह व उमंग में हम लोग जा रहे थे।

देहरादून से मसूरी केवल 30 k. m दूर है। 2 घटे के सफर के बाद हम लोग मंसूरी पहुँचे। रास्ता इतना गोल २ था कि सामने से आती गाडी का मोड़ पर ही पता चलता। रास्ते से नीचे जो गाड़ियाँ दिखती वह खिलौने के समान प्रतीत होतीं।

मंसूरी में आकर हम लोगों ने भोजन किया व कुछ देर विश्राम कर हम आगे की यात्रा को चले। अब हमें आगे "जमनोत्री" को जाना था। दोपहर में धूप तेज थी पर शाम ढ़लते २ अंधकार व ठंड बढ़ने लगी। हम लोगों ने जल्दी शाल व कम्बल निकाल लिए। शाम तक हम हनुमानमठ में पहुँच गए। वहाँ की स्थिति देखने पर हमें देश की वास्तविक स्थिति का पता चला। वहाँ के लोग पेट्रोमेक्स व मोमबत्ती की रोशनी में काम करते हैं। ईंधन की लकड़ी लाने के लिए तड़के ही उठकर उन्हें कुल्हाड़ी लेकर 30–40 कि०मी० तक जाना पड़ता था, ऊपर से पर्वतीय रास्ता, हम लोगों को तो उनके जीवन पर दया आने लगी। हम लोगों ने अपनी पहली रात हनुमानमठ में काटी। उसके बाद जमनोत्री को जाने के लिए आगे गाड़ी न जाती थी, आगे पैदल जाना पड़ता था। सुबह–२ हम लोग पैदल निकल पड़े। आगे लगभग 20 मील जाकर जमनोत्री पड़ता था। पहले उमग में निकले थे, सो 5 मील कैसे गुजर गए पता तक न चला। पर बाद में·····, बाद में तो एक-एक डग भरना

पुश्किल था। हम जैसे तैसे गरुड़ चट्टी तक पहुँचे, वहाँ हमने चाय पी। मन कर रहा था सो जाए पर ऐसा कैसे हो सकता था।

हम लोग आगे बढ़े। आगे रास्ता और भी ऊबड़-खाबड़ था और रास्ते की चौडाई 2 मीटर से अधिक न थी। रास्ते पर पत्थर बिखरे थे पर हम इन सब की परवाह किए बिना बढ़ते गए। धरणचट्टी अगली चट्टी थी। जहाँ हम लोगों ने भोजन किया। भोजन करने पर तो नींद आने लगी।

इस प्रकार हम लोग शाम तक जमनोत्री पहुँच गए। मन्दिर में भीड़ ऐसी थी कि लगता था अब कल ही दर्शन होंगे। पर ऐसा नहीं हुआ हमें जल्दी ही दर्शन मिल गए।

जमनोत्री के दर्शन के बाद हम लोग लौटकर फिर हनुमानमठ पहुंचे फिर टैक्सी से हम लोग गंगोत्री यात्रा को निकल पड़े।

अगली शाम तक हम लोग देव प्रयाग पहुँचे वहाँ से हमें पैदल जाना था। हम लोग वही ठहर गए।

वहाँ के नेपाली लोग बहुत मेहनती हैं, मेहमाननवाजी कोई उनसे सीखे। वे हम लोगों की बड़ी सेवा करने लगे। हम रजाई ओढ़े थे और वे लोग कभी अँगीठी और कभी और कुछ लाकर हमें दे रहे थे।

अगले दिन हम गंगोत्री को निकले कुल 30 कि०मी० चलना था। हम लोगों ने यात्रा के लिए छड़िया ले ली। हम लोग आगे बढ़े, रास्ता चौड़ा था, पर बालू से भरा था। सीमा के सिपाही वहाँ चुस्ती से तैनात थे। रुद्र प्रयाग में मंदाकिनी व भागीरथी का संगम था और वही पर हमने नीचे झुककर नदी की गहराई का अनुमान लगाया। नेपाली लोग अपनी डोलची में लोगों को बैठाकर ले जा रहे थे। जहाँ हमें अकेले का बोझ सभालना कठिन हो रहा था वे लोग दो जनों का बोझ सुगमता से उठा रहे थे। रुद्रप्रयाग के बाद विष्णुप्रयाग मे हमने अपना डेरा डाला और भोजन किया।

विष्णुप्रयाग में मदाकिनी व अलखनन्दा का संगम होता है व संगम स्वरूप अलखनन्दा नदी ही बनती है वैसे ये सब पयाय गंगा के ही हैं परन्तु फिर भी ये अलग माना जाती है।

विष्णु प्रयाग से हम लोग जल्दी ही गंगोत्री पहुँच गये। दोपहर का समय था, दर्शन भी जल्दी ही मिल गए।

गगोत्री के बाद हम लोगों ने पास बने गोल्फ क्लब में शाम गुजारी व अगले दिन आगे चलने का निर्णय किया।

अगले दिन हम लोगों ने गोमुख जाने की सोची। पर वहाँ पर कितनी ठंड होगी। और यह कितनी ऊँचाई पर है यह सोचकर न जाना ही उचित समझा। पत्थरों के ढलने (Land Slide) से अगले दिन कई लोग मारे गए। हम लोगों ने भाग्य को धन्यवाद दिया कि हम लोग आगे नहीं गए और वापसी यात्रा पूर्ण करते हुए सकुशल घर लौट आये।

ईसोपदेश

यह न समझो कि मैं मेल-मिलाप बढाने और सुख सुविधायें बरसाने आया हूं। मैं तलवार की धार पर चलना सिखाता हूं और छोटे परिवार की उपेक्षाकर बड़े परिवार में प्रवेश करने की शिक्षा देता हूं।

जो अपने प्रियजनों को मुझसे अधिक चाहता है वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने को बचाता है वह खोयेगा और जो उसे खोने में नहीं झिझकता, वह उसे पायेगा।

एक विद्वान ने कहा—"मैं आपके आश्रम पर रहा करूँगा।" ईसा ने कहा—"लोमड़ियों की मांद होती है। और पक्षियों के बसेरे। तू मुझ निरन्तर भ्रमण करने वाले के साथ कहाँ टिकेगा।

एक शिष्य ने पूछा–मेरा बाप मर गया है। आज्ञा दें तो उसे गाढ़ आऊँ। ईसा ने कहा मुर्दों को मुर्दे गाढ़ने दो, तू मेरे साथ चल।

ईसा के साथ मछुये और दूसरे गिरे हुए लोग लगे रहते थे। धनियों ने कहा-यह आपको शोभा नहीं देता। ईसा ने कहा- वैद्य को रोगियों की जरूरत होती है। मैं पापियों और पतितों के बीच क्यों न आऊं ?

निस्पृह ईसा को किसी ने समाचार दिया - आपके कुटुम्बी लोग बाहर बैठे प्रतीक्षा कर रहे हैं। ईसा ने कहा मेरा कुटुम्बी वह है जो मेरे साथ चले। जिनको ईश्वर के आदेशों पर विश्वास है वे ही मेरे सच्चे कुटुम्बी हैं।

स्वर्ग का राज्य किसके लिए है ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए ईसा ने एक छोटे बालक को गादी में उठाया और सबको दिखाते हुए कहा "जिसका मन इस बालक की तरह निर्मल है स्वर्ग का राज्य उन्हीं के लिए है।

गेहूं का दाना जमीन में घुसकर मर नहीं जाता है। वरन् अपने जैसे असंख्यों दाने पैदा करता है।

परिवर्तन

प्रतीक तिवारी

दृश्य गुरुद्वारे का था। अन्दर शब्द कीर्तन चल रहा था। कोई बोला राम-राम कोई अल्लाये कोई सेवै गुसइयां .... । कितनी धार्मिक अनेकता में एकता का भजन है यह परन्तु किसी भी पूजा करने वाले को क्या पता था कि इसी पवित्र स्थल के अन्दर एक कमरे में क्या चल रहा है ?

वो कमरा ज्यादा बड़ा नहीं था। छत के पास एक बल्ब जल रहा था बीचो-बीच एक मेज पड़ी थी। और मेज के एक तरफ एक कुर्सी थी जो खाली थी और दूसरी ओर तीन कुर्सियां रखी थीं जिनमें दो भरी थी एक खाली।

दोनों भरी कुर्सियों में दो सिख नौजवान बैठे थे जो अभी तीन चार दिन पहले ही प्रशिक्षित होकर आये थे पाकिस्तान से। बाँई ओर की कुर्सी पर बैठे युवक का नाम था खुशविंदर सिंह। वह इस समय जामुनी रंग का तंग मोहरी का पैंट पहने था, ऊपर कुर्ता था और सदरी भी थी। उसके दाहिने हाथ की ओर नया चमचमाता कृपाण था और दूसरा युवक तेजपाल सिंह भाटिया सफेद पैन्ट, सफेद शर्ट पहने कृपाण डाले हुए था हाँ उसके पगड़ी नहीं थी, बाल बांधे हुए था।

तब तक गुरुद्वारे में भीड़ भी खत्म हो गई थी तब गुरुद्वारे के मुख्य ग्रंथी साहिब उस कमरे में आ गये थे। मुख्य ग्रंथी साहिब ने दोनों से कहा "जय प्यारे खालिस्तान के' दोनों युवकों ने भी मुख्य ग्रंथी साहिब का अभिवादन किया। फिर मुख्य ग्रंथी साहिब ने उन दोनों को पवित्र सरोवर का अमृत चिखाया फिर दोनों से कहा "आज से तुम दोनों भी सच्चे खालिस्तानी बन गये हो और अब तुम लोगों ने देश की सेवा और (कथित) देशद्रोहियों को खत्म करना है। और चाहे इसमें जान भी क्यों न चली जाय तुम लोगों ने सच्ची सेवा करनी है" और अब तुम लोगों को चौक के पास के 'जय नानक मशीन टूल्स' के मलिक हरनाम सिंह को खत्म करना है। ये लो हथियार और यह कहते हुये मुख्य ग्रंथी ने दोनों को एक-एक पेरिस्कोपिक पिस्टल और रिवाल्वर साथ में काफी सारे छर्रे (गोलियाँ) दीं। इसके बाद में दोनों युवकों (आतंकवादियों) ने अपने कड़े बदले यानि कि पुराने कड़े उतार कर नय कड़े धारण किये। 'अब तुम लोग जाओ' मुख्य ग्रंथी ने आदेश दिया।

दोनों युवक यन्त्र चालित 'रोबोट' की तरह अपनी-अपनी कुर्सियों से उठे और मुख्य ग्रंथी को अभिवादन करते हुये दरवाजे से निकल गये।

खुशविंदर सिंह, जो बचपन से ही अपनी दादी और अम्मा से सुनता आया था "अव्वल अल्ला नूर उपाया, कुदरत से सब बंदे' सोचने लगा कैसे कर पायेगा वह अपने ही भाई की अपने ही बिरादर की हत्या। जबकि दोनों युवकों में आपस में यह तय हुआ था कि खुशविंदर पहले गोली मारेगा। खुर्विंदर सोचने लगा कि बचपन से सुनता आया है कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई आपस में सब भाई-भाई। उसका हृदय क्लेश से भर गया। मानसिक वेदना तेज हो गई। अगर वह मना करेगा तो उसकी जान को खतरा तो होगा ही और जानने वालों के बीच देशद्रोही भी कहलायगा। और अगर वह यह कार्य कर देगा तो उसको पैसा तो मिलेगा ही साथ ही साथ आदर भी बढ़ेगा। खुशविंदर ने सोचा कि अगर वह खुद को खत्म कर लेता है। तो भी उसे मुक्ति मिल सकती है पर उसे यह भी अच्छा न लगा।

खुशविंदर और तेजपाल सिंह दोनों अगले दिन से 'नानक मशीन टूल्स' पर नजर रखने लगे। 6, 7 दिन में ही उन्होंने यह पता कर लिया कि यदि हत्या करनी ही है तो दोपहर एक बजे से तीन बजे तक समय सर्वोत्तम रहेगा। क्योंकि उस समय भीड़ बहुत कम या नगण्य ही रहती है। इधर खुशविंदर ने भी तेजपाल को राजी कर लिया था कि पहले गोली तेजपाल मारेगा।

अगले दिन वे दोनों (आतंकवादी) गुरनानक मशीन टूल्स पर पहुँचे। करीब दो बज रहा होगा। तेजपाल दुकान पर गया और खुशविंदर उसके पीछे। जाते ही तेजपाल ने दुकान मालिक से कहा कि जरा टैम्पो का रिप्यरिंग लाक दिखाइये। दुकानदार पीछे मुड़ा सामान निकालने लगा कि तेजपाल की बन्दूक निकली एक शोला बरसा और दुकानदार जमीन पर गिर कर तड़पने लगा। लेकिन खुशविंदर भी होशियार था उसकी भी पिस्तौल से दो शोले निकले एक तेजपाल के लिए और दूसरा खुद के लिये। दुकानदार, तेजपाल तो ढेर हो गये पर खुशविंदर भी मरते-मरते चिल्लाकर रुकती-उठती आवाजों में कह गया—

हम बंदे—हिन्दुस्तान के.....।

—०—०—

यह कर्त्तव्यपालन है ।

—त्रिभुवन नाथ पाण्डेय, अष्टम 'क'

मानव इस संसार में परमेश्वर के घर से अपने कुछ उत्तरदायित्व, कर्त्तव्य, एवं कुछ विशेष कार्य को लेकर इस पृथ्वी पर आता है। जन्म, यौवन, जरा एवं मृत्यु पर्यन्त तक कुछ न कुछ कर्त्तव्य होते हैं ऐसे ही एक कर्त्तव्य को उजागर करती है यह प्रेरणास्पद एवं भावात्मक कहानी—

1971 ई० में भारत पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था। राजस्थान के एक गाँव के एक परिवार की कुछ विचित्र ही दशा थी। होती भी क्यों न ? पिता ने युद्ध में प्राणोत्सर्ग कर दिया था। शेष एक बीस वर्षीय युवक, उसकी बहन व कुछ दिनों पूर्ण ही हुई विहाता माँ थी। धीरे-धीरे घर का चलाना दूभरा हो गया था। आभूषण तक बिक गये थे। युवक की आकांक्षा मन ही मन में दब रही थी। वह स्वस्थ युवक था। चाहता था कि अपने पिता की ही तरह सेना में प्रवेश प्राप्त करे कुछ दिन पश्चात उसकी इच्छा जब अदम्य हो गयी, माँ से कहा मुझे आज्ञा दे मैं सेना में प्रवेश प्राप्त करना चाहूँगा। कितनी बिडम्बना उस माँ के सामने ? कुछ ही दिन पूर्व पति ने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया था व आज भी अनुमति माँग रहा है ? नहीं वह आज्ञा न देगी। परन्तु मोहवश किया गया निर्णय न होता है। वह तो उस प्रान्त में पैदा हुई थी जिसमें पन्नाधाय ने राजा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था। अब उसके विवेक ने काम किया अन्ततः प्राणों पर पत्थर रख कर आज्ञा दे दी।

युवक ने सेना में प्रवेश प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। 15 दिनों के अन्तराल के पश्चात उसे गर्मअंचल में युद्ध हेतु भेज दिया गया। काफी वीरता के साथ अपने वैरियों को यमलोक का पथिक बनाना प्रारंभ किया। सेना पति उससे काफी प्रसन्न था।

एक दिन युद्ध में सायंकाल तक युद्ध हुआ, रात्रि को अचानक जब भारतीय सिपाही विश्राम कर रहे थे शत्रु सेना ने पुनः आक्रमण कर दिया मूकाबला हुआ शत्रु सेना हार चुकी थी। परन्तु सैनिक प्यास से पीड़ित थे। 6 घण्टे से जल की बूँद भी न गयी थी। मेजर ने ट्रांसमीटर से केन्द्र को खबर भेजी, तथा यह उत्तर मिला की हेली काप्टर शीघ्र ही जल लेकर आ रहा है आगे बढ़ो। प्रातः काल बीत चुका था। धीरे-धीरे सूर्य सिर पर आरहा था। 4 घण्टे और व्यतीत हो गये। अब तक धूप काफी तेज हो चुकी थी। सैनिकों की हालत खराब थी उस समय ऐसा लगता था मानों जल अमृत ही हो। परन्तु दुर्भाग्य कि शत्रु ने पुनः आक्रमण कर दिया। फिर घमासान युद्ध होने लगा। दो घण्टे तक युद्ध चला। भारतीय सैनिकों को पुनः विजयश्री मिली। इस बीच कुछ जल मिल जाय ऐसी ही आकांक्षा

थी। उपसेनापति भी मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। उस बीर युवक ने उपसेनापति के कब्र के पास गया धीरे से झुक कर कब्र की मिट्टी हटायी व सेनापति की बोतल को खोलकर उसे मूंह से लगा लिया इस आशा में कि कुछ जल हो परन्तु उसे जल न मिल सका निराश होकर बोतल को पूर्ववत रख मिट्टी से कब्र को भरा एवं पूर्ववत् सैनिक सैल्यूट देकर सैनिक मित्रों से आ मिला। इस बीच एक हेलीकाप्टर उतरा सैनिकों ने पानी पिया व बोतले भर लीं। उसके पश्चात वे अपने निर्दिष्ट स्थान पर बढ़ने लगे। अचानक तीसरीं बार पुनः शत्रु सेना ने आक्रमण कर दिया। 40 घण्टों के भीतर यह तीसरा आक्रमण था शत्रु सेना पुनः परास्त हो गयी। कुछ घायल सैनिक इधर उधर पड़े कराह रहे थे। उस युवक ने पानी की बोतल का ढक्कन खोलकर पानी पीना चाहा परन्तु उसकी दृष्टि एक ऐसे सैनिक पर पड़ी जो पानी की बोतल को अत्यधिक कावर दृष्टि से देख रहा था। करार रहा था आह···पानी··· एक बूंद···पानी।··· अल्लाह के नाम पर·····एक बूंद पानी। आवाज सुनकर युवक कुछ देर हतप्रद व विवेक शून्य हो खड़ा रहा। अचानक उसके चेहरे पर एक मुस्कराहट दौड पडी मानों उसके पास कोई बड़ी निधि आ टपकी वह उस सैनिक के पास गया एव बोला लो तुम यह पानी पी लो। वह पाकिस्तानी था वह उसका शत्रु था जानते हुए भी वह उसकी मदद कर रहा था क्योंकि उसका विवेक कह रहा था कि वह तुम्हारा शत्रु तब तक था जब तक वह सशक्त था। तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम उसे पानी दो। परन्तु अचानक उसके मन में यह प्रतिवाद आया कि तुम तो शत्रु की मदद करोगे परन्तु आत्मा ने समझाया कि इससे बढ़ कर व शायद सबसे बड़ी होती है—माना कि तुम उस देश के नागरिक हो जिसने कबूतर की रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिए थे।

अंततः उसने उस पाकिस्तानी सिपाही को घुटनों की मदद से उठा कर कहा "लो पानी पी लो।' सैनिक ने कृतज्ञता एवं आश्चर्य भरी नजरों से उसे देखा व कहा, "तुम···मगर तुम···हिन्दुस्तानी हो।" युवक ने कहा हाँ, 'मैं पहले तुम्हारा शत्रु था किन्तु अब जब तुम घायल हो मैं एक मानव का कर्त्तव्य निबाह रहा हूँ। सैनिक ने कहा "शुक्रिया···अल्लाह तुम्हें···उमर दराज···करे। मैं अल्लाह···के दरबार में···कहूँगा कि भारतीय सैनिक··· वास्तव···में···इन्सान होते हैं। इतना कह कर उसने बोतल पी ली व अपने प्राण त्याग दिए। और उस वीर युवक को आनन्द का पारावार न रहा क्योंकि उसने अपने कर्त्तव्य का पालन किया था। कर्त्तव्य-जिसे पालन करने में बड़े-बड़े लोग हिचकिचा जाते हैं। कानों में गूंज रहा था—

'फिर महान बन मनुष्य फिर महान बन'

—०—०—

'दर्द'

—प्रतीक तिवारी

और फिर अनवरत गालियों अपशब्दों और उपमाओं का सिलसिला शुरू हो गया था। और मैं चुपचाप उसके प्रत्युत्तर की तैयारी 'मम्मी' जी के लिए कर रहा था ये मेरी भी खासियत थी कि जब तक 'मम्मी' से उपमायें मिलती थीं तब तक मैं भी ढूंढ़-ढूंढ़ कर के जबाब उगलता रहता था। लेकिन आज तो हद ही हो गई थी मेरे न पढ़ने पर। आज अभी 'मम्मी' ने तीसरी बार मुझसे कहा कि 'अरे साइकिल से ही तो स्कूल जाते हो न पढ़ने के न लिखने के तो काहे नहीं मर जाते हो ट्रक से भिड़ कर, ट्रेन से कट के।" 'अगर मालुम होता कि तुम इतने उपाई निकलोगे तो मैं तो तुम्हें पैदा करते ही गला घोंटकर मार देती अरे तब तो संतोष हो जाता।" और अब हो गये हो लूमड़ ऐसे, सबसे ज्यादा टूंसते हो, मुहल्ले ऊपर फैशन बाजी करनी है। हरेक 'ग्रुप' के लड़कों के साथ खेलना। और पढ़ने से जी चुराना।" 'मम्मी' क्रोध के उफनाते हुये चली गई थी। और मैं पढ़ने की मेज से सिर लगाये गीली आंखें लिये हुये अपने ही विचारों में खो गया।

अभी 5–6 दिन पहले ही की तो बात है। जब मैंने अपना 55% अंक उत्तीर्ण का परीक्षा फल दिखाया तो उस समय तो कुछ भी नहीं बोली और 'पापा' के आते ही उनके साथ मुझे ऐसी लात गालियां खिलवाई कि उस रात को मैं सो न सका सारी रात रोता रहा। अरे वो तो लात जूते चला करके आप मेरे 2 वर्षीय छोटे भाई के साथ खेलने में मस्त हो जाते है और मेरे लिये सोचने को रह जाता है। जब भी पापा से सवाल बताने को या फिर अंग्रेजी पढ़ाने को कहता हूँ तो 10 मिनट तक तो पढ़ाते हैं फिर कोई बहाना लेकर के उठ जाते हैं और फिर बैठने का कोई सवाल नहीं उठता। और फिर जब भी मैं एक आध गाइडें खरीद देने को कहता हूँ तो कहते हैं कि 'हम किस लिये हैं हमसे पूंछ लिया करो'। और मैं मन मार करके चुप हो जाता हूँ अरे क्लास में और लड़कों को देखो एक-एक विषय की तीन-तीन चार-चार गाइडें रखे हैं। और अगर मैं यह बात रखता हूँ तो एक और तर्क है उनके पास सशक्त और अकाट्य कि वो दूसरे लड़के तो उससे गाइडों से पढ़ने होंगे याद करते होंगे परन्तु तुम-तुम तो ऐसे हो कि दो दिन शान जागने को पढ़लोगे फिर-फिर वा तो अलमारी या मेज में पड़ी रहेंगी या फट जायगी। और मैं फिर चुप हो जाता हूँ। मानता हूँ कि इसमें कुछ गल्ती मेरी भी है। क्योंकि स्कूल में रोज-रोज तीन बेलाओं में मैं ज्यादा नहीं समझ पाता हूँ।

अभी-अभी तीन दिन पहले मैं सामाजिक विज्ञान लिख रहा था तो मम्मी कहती हैं कि 'ये विषय तो ऐसे है

कि केवल पास मार्क्स ले आओ तो ठीक है।' मैं निरुत्तर सा कापी रख देता हूँ। हलांकि मेरा मन कह रहा है कि तुम भी करारा जवाब सुना दो तो अच्छा है। लेकिन मेरी चेतना मुझे ऐसा कर देने से मना कर देती है क्योंकि मैं कुछ बोलकर के फिर उपमायें लात व जूते नहीं खाना चाहता था। और अब तो मुहल्ले के जितने भी आवारा और बदमाश लड़के हैं उन्हीं से मेरी तुलना होने लगी। मैं घर का सबसे तुच्छ प्राणी हूँ। लेकिन। परसों न जाने क्या सूझी कि मुझसे कहा कि अगर तुम्हें समझ में न आता हो स्कूल में तो कुछ गाइड मंगा लो पैसे में दिलवा दूंगी। लेकिन उसी दिन। खाना खाते समय मुझसे हाथ में पकड़ा हुआ गिलास छिटक गया तो फिर डांट पड़ने लगी। और उसमें भी वो लोग धूम-धाम करके पढ़ाई पर ही आ गई। और परसों ही शाम को जनगणमन से पहले ही मुझे समझाया कक्षा चार जीने। अब मैं भी पढ़ता हूँ ठीक से पढ़ता हूँ। मैंने निश्चय किया है कि मैं ठीक से पढ़ूंगा। लेकिन आज भी। केवल थोड़ी देर को बाहर खेलने की इजाजत मांगी थी। और फिर वही रोजवाला सिलसिला शुरू हो गया था। और अब 'पापा' आ गए हैं मैं सुन रहा हूँ कि मम्मी मेरी शिकायत पापा से कर रही हैं और अब मैं भी मानसिक रूप से तैयार हो रहा हूँ लात जूता खाने को और अन्य नई पुरानी उपमायें सुनने को।

मोहन कैसे सुधरा

—दीपेन्द्र गुप्त अष्टम (ख)

मोहन एक छोटा लड़का था। यूँ तो वह अच्छा लड़का था पर उसमें एक बुरी आदत थी। वह जरा-जरा सी बात पर रोने लगता था। कोई जोर से बोल दे तो रोना, मां कोई चीज देने में देर कर दे तो रोना। सब उसकी इस आदत से परेशान थे।

एक दिन उसकी माँ ने कुछ निश्चय किया। सुबह उठ कर वह मुँह हाथ धो कर नाश्ता करने बैठा। ज्यों ही उसने माँ को आवाज दी, माँ ने रोना शुरू कर दिया और रोते-रोते ही उसे नाश्ता दिया। वह माँ को अचम्भे से देखता रह गया। माँ ने और भाई-बहनों को ठीक से नाश्ता दिया। स्कूल से घर आ कर ज्यों ही उसने माँ को पुकारा माँ रोती हुई आ गई, उसने चुपचाप मुँह हाथ धो कर खाना खाया। शाम को उसने अपने भाई–बहनों से खेलने को कहा तो वह भी रोने लगे। जब वह पढ़ने बैठा तो उसे एक सवाल नहीं आया। तो वह पिता जी के पास गया तो पिता जी ने भी रोते हुए सवाल बताया। रात में दादा जी ने कहानी भी रोते-रोते सुनाई।

अंत में उससे रहा न गया तो वह मां से पूँछने गया कि बात क्या है? मां ने रोते हुए कहा तुम भी तो हर वक्त रोते हो। अब तो तुम्हें पता चल गया होगा की हर वक्त रोना कितना बुरा है। मोहन को बात समझ में आ गई, और उसने हर वक्त रोना छोड़ दिया।

"जो युवक रोया नहीं, जंगली है, और जो बूढ़ा हँसता नहीं, वह बेवकूफ है।"

कहानी

अनुशासित छात्र

सुधीर कुमार पोरवाल सप्तम् (क)

मोहन और श्याम दो बालक थे। दोनों बालक एक ही विद्यालय में पढ़ते थे। मोहन पढ़ने में होशियार था। वह अपने माता-पिता, भाई-बहन आदि लोगों का सम्मान करता था। और अपने से छोटे भाई-बहनों से प्रेम पूर्वक बोलता था। और अपनी कांपी व किताबों को सुरक्षित यथा स्थान रखता था। जबकि श्याम पढ़ने में कुशाग्र न होने के साथ-साथ अपने से बड़े-बूढ़ों का कहना नहीं मानता था। जब वह विद्यालय अथवा और दूर कहीं जाता तो माता-पिता के चरण स्पर्श नहीं करता था। और अपनी कापी किताबों को यथा स्थान नहीं रखता था और कभी-कभी अपने छोटे भाइयों को पीटा करता था जो उसकी कापी, किताबें थोड़ी पढ़ने के लिये ले लेते थे अर्थात वह किसी भी प्रकार से अनुशासित नहीं रहता था। एक बार उसके विद्यालय में अर्द्धवार्षिक परीक्षा की तिथियाँ घोषित कर दी गई। मोहन एक अनुशासित छात्र था वह प्रतिदिन नियमानुसार पढ़ने लगा। जबकि श्याम को अभी किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं थीं। उसके माता-पिता उसे रोज समझाते परन्तु वह उनकी बात नहीं मानता था। धीरे-धीरे अर्द्धवार्षिक परीक्षाये पास आती गई। और मोहन ने उसकी पहले से ही तैयारी कर ली। अगले दिन परीक्षा थी तो श्याम जब पढ़ने बैठा तो उसकी कापी किताबें नहीं मिली। वह दौड़कर मोहन के पास गया और उससे कुछ कापियाँ माँगी। उस समय मोहन पढ़ रहा था। अतः उसने कापी देने से मना कर दिया। जब परीक्षायें शुरू हुई तो श्याम को कुछ नहीं आया। फलतः इसका परिणाम यह हुआ कि श्याम अर्द्धवार्षिक परीक्षा में फेल हो गया और मोहन ने अपनी कक्षा में प्रथम स्थात प्राप्त किया। उस दिन से श्याम को अपने ऊपर बड़ा ही पश्चाताप हुआ और उसने अपने माता-पिता से क्षमा मांगी और अपनी कापियों व किताबों को यथा स्थान रखने लगा। अब वह एक अनुशासित छात्र हो गया। धीरे-धीरे उसका भी कक्षा म श्रेष्ठस्थान आने लगा अब वह किसी को भी गाली आदि नहीं देता था। सब विद्यार्थी उससे अच्छे व्यवहार करने लगे। और उसके माता-पिता भी उससे स्नेह करने लगे।

कहने का आशय ये है कि यदि विद्यार्थी अनुशासन में रहेगा और कर्तव्यों का पालन करेगा तो वह एक न एक दिन निश्चित कामयाब होगा। अतः हम लोगों को भी अनुशासन को ध्यान में रखते हुए अपनी पुस्तकों को ठीक से रखेंगें तो हम एक अनुशासित छात्र कहलायेगें।

सिसकती मानवता

—नवीन वर्मा दशम् (ख)

सूरज धीरे-धीरे अस्त होता जा रहा था, चारों ओर अन्धकार बढ़ता जा रहा था। इसी बीच एक मनुष्य फटा कोट पहने चला जा रहा था, वह गरीबी की माला पहने हुए था तथा उसके चेहरे पर उदासी छाई थी। अचानक वह एक जानी पसचानी जगह को देख कर रुक गया। उसने टूटे-फूटे मकान पर एक दस्तक दी। अन्दर से एक वृद्ध महिला की आवाज आयी "कौन है ? श्यामू बेटा आ गए क्या ?"

श्यामू बिना उत्तर दिये उस टूटी-फूटी चारपाई पर बैठ गया। वह बी० ए० पास एक नवयुवक था। वह नौकरी की तालाश करते–करते इतना टूट गया था कि आत्महत्या करना चाहता था परन्तु अपनी बूढ़ी मां के कारण वह कुछ नहीं कर सकता था। वह चारपाई पर लेट कर सो गया।

सूर्य ने अपनी किरणों से अन्धकार को दूर किया। अभी श्यामू उठा ही था कि महाजन आ गया। और किराया माँगने लगा। श्यामू के अत्यधिक गिड़गिड़ाने पर उसने सिर्फ आठ दिन की मोहलत दी।

श्यामू नौकरी की तलाश में फिर निकल गया है और एक दफ्तर में पहुँचा है किन्तु वहाँ के चपरासी द्वारा अपमानित होकर भगा दिया गया है क्योंकि वह चपरासी घूस खोर था परन्तु श्यामू के पास देने के लिए फूटी कौड़ी तक नहीं थी।

वह भूखा प्यासा चला जा रहा था। ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी, रात के साढ़े दस बजे थे। वह एक होटल के सामने जा कर रुक गया। और वहां पर पड़ी प्लेटों मे जूठन को देख कर अपने आप को वश में न कर सका और उस भोजन की तरफ बढ़ा तभी एक आदमी आया और उसने उसे मार-मार कर अध-मरा कर दिया और सड़क पर धकेल दिया।

श्यामू सड़क पर पड़ा था, उसमें अब हिलने डुलने की क्षमता समाप्त हो गयी थी, लोग उसके ऊपर से निकल रहे थे क्योंकि उसके पास घूस देने को कुछ न था और न सिफारिश के लिए कोई बड़ा आदमी। एक ओर सिसकती मानवता तो दूसरी ओर फुफकारती दानवता।

सुबह दूसरे दिन अखबार में निकला कि एक भिखारी ठंड के कारण सड़क में मरा पड़ा पाया गया। मरने वालों की संख्या 50 हो गई।

———

३८ वर्ष बाद.....

राघवेन्द्र सिंह चौहान, अष्टम (क)

आजादी के '३८ वर्ष बाद.....' आज हम कहाँ खड़े है ? राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के साथ प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानजनक जीने की निम्नतम आवश्यकताओ की पूर्ति क्या हम इन चार दशकों में कर सके हैं ? चि० राघवेन्द्र की यह लघुकथा प्रस्तुति शायद इन्हीं सवालों को उजागर करती है । (सं०)

श्रावण मास, कृष्ण पक्ष । प्रतिपदा को प्रारम्भ हुई वर्षा आज 15 दिन पश्चात् विश्राम ले रही थी । चारों ओर जल ही जल, पकिल मार्ग ! इस अतिवृष्टि से जन-जीवन त्रस्त हो गया था । आज इतने दिन बाद स्वच्छ आकाश को देखकर मन-मानस प्रफुल्लित था । प्रातःकाल से ही गृहस्थी की व्यस्तता में मैं पत्नी का सहयोग कर रहा था । वस्त्र प्रक्षालन, अर्धसिक्त बिस्तरों को सुखाना, सामान यथा क्रम रखना, यही गृहस्थी के काम थे । अपरान्ह 4 बजे पत्नी का प्रस्ताव आया, चलिए आज कहीं बाहर घूम आया जाए । प्रस्ताव की मधुरिमा मुझे भी मुग्ध कर गई । घर की देखभाल बच्चों पर छोड़कर शंकर पार्वती की तरह देश दर्शन को निकल पड़े ।

राजमार्ग के किनारे-किनारे हास-परिहास के साथ हम आगे बढ़ रहे थे । नगर के बाहर का दृश्य बड़ा ही सुहावन था । खेत जल मग्न थे, कहीं-कहीं जल प्रवाह की कल-कल ध्वनि आ रही थी । वृक्षों के धुले हुए हरे-हरे पत्ते मानो अपने पास बुलाने का निमंत्रण दे रहे थे । मखमली घास हवा के झोकों में लहरा रही थी । आकाश में उड़ते हुए बादलों के टुकड़े विविध चित्र बना रहे थे । कहीं धूप खिली थी, कहीं छाया । चलते-2 हम लोग कितनी दूर चले आये इसका ज्ञान ही नहीं रहा । जब सूर्यास्त का आभास होने लगा, ध्यान पुनः घर की ओर गया । और आगे बढ़ते कदम पीछे मुड़ गए उसी प्रकार हास परिहास में निमग्न हम दोनों दो शरीर एक प्राण अब पुनः नगर में प्रवेश कर आवास की ओर बढ़ रहे थे । घर से कुछ दूरी पर ही थे कि अचानक किसी की रोने की आवाज सुनकर रुकना पड़ा ।

आवाज एक जर्जर मकान से आ रही थी जिसकी हालत देखकर लगता था मकान किसी अत्यन्त गरीब का है । दरवाजे पर दस्तक देने पर एक कृशकाय वृद्धा ने दरवाजा खोला जो एक मैली कुचैली कई जगह

से फटी धोती पहने हुए थी अपनी नारी सुलभ लज्जा को बचाने का निर्थक प्रयास कर रही थी । उसे देखकर ऐसा लगता था कि शासन का गरीबी हटाओ का नारा अभी इस जर्जर मकान तक नहीं पहुँचा था । अन्यथा गरीबो या गरीब दोनों में एक तो हट ही गया होता । हम दोनों पति पत्नी विचार कर ही रहे थे कि चिंतन की श्रंखला उस समय भंग हुई । जब वृद्धा ने ससंकोच बैठने का आग्रह किया हम उसकी स्थिति देखकर बहुत कुछ जान गए थे परन्तु मन के किसी कोने में और भी बहुत कुछ जानने की इच्छा थी शायद वृद्धा हमारे मन के अभिप्राय को समझ चुकी थी उसके आँसू सूख चुके थे । शायद वह हमारे सामने अपना दुःख प्रकट करना नहीं चाहती थी । आग्रह पूर्वक पूँछने पर उसने न चाहते हुए भी बताया कि ' बेटा मैंने अपने दोनों पुत्र अपने इस देश की आजादी पाने के लिए बलिदान कर दिए । उस समय मैं अपने को धन्य मान रही थी कि मेरे पुत्र इस भारत माता की स्वतन्त्रता के काम आये उन्होंने मेरे दूध को नहीं लजाया, उनका बलिनान रंग लाया देश आजाद हुआ उस दिन मैंने अपने पुत्रों के चित्रों पर मालायें पहनायीं । उनके आगे घी के दिये जलाये और सबकी खुशी में शामिल हुई परन्तु आज·····" कहते–2 वृद्धा रुक गई शायद इसके आगे कुछ कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी । सान्त्वना के कुछ शब्द कहने पर उसके आगे फिर बोलना प्रारम्भ किया कि–"लगता है कि मैंने अपने पुत्रों को गलत दिशा निर्देश दिया था यदि हमारे दोनों पुत्र जिंदा होते तो आज आप हमारी जो स्थिति देख रहे हैं वह सम्भवत. नहीं होती । घर में एक सप्ताह से चूल्हा नहीं जला है । सामने पड़े वृद्ध को आप देख रहे हैं यह उन अमर शहीदों के पिता हैं जो आज उपयुक्त चिकित्सा के अभाव में जीवन की अन्तिम सांसे गिन रहे हैं । मुझे इस बात का दुःख नहीं है कि मेरे दो पुत्र मर गए हैं या मैं एक सप्ताह से भूखी हूँ अथवा मैं आज अपने पति परमेश्वर को खोने जा रही हूँ दुःख तो इस बात का है कि आज उन शहीदों द्वारा प्राप्त स्वतन्त्र को खतरा उत्पन्न हो गया है । देश जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रीयवाद की आग में झुलस रहा है–हम उस स्वन्त्रता की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं । हमारे ही घर में जयचन्द जैसे देशद्रोही फिर उत्पन्न हो गए हैं । आज मैं अपने पुत्रों से कहती कि, "बेटा ! स्वतन्त्रता तो फिर मिल सकती हैं । स्वतम्त्रता प्राप्ति से पूर्व तू उन देशद्रोहियों के सिर मेरे कदमों में लाकर डाल दे जो इस देश की अखण्डित मूर्ति को खण्डित करने की तैयारी में लगे हुए हैं ।"

वृद्धा के चुप होने पर एक बार पुनः ध्यान की श्रृंखला हटी । हम सोच रहे थे कि—38 वर्ष बाद के अन्तराल में हमने कितनी प्रगति की है ।

———

उसने कल्लू की इस मरणशील अवस्था को देखा तो उसकी आँखों में खून उतर आया। उसने पिता की ओर देखा और तिरस्कार पूर्ण शब्दों में कहा, "धिक्कार है। आप भगवान के पुजारियों को। पुजारी नाम पर आप में तो मानवता नाम की कोई चीज नहीं है। आप धार्मिक ढोंगी समाज के एक कीड़े के समान है जो समाज को खोखला किये जा रहे हैं।

इन शब्दों को सुनकर पुजारी जी आँखें विस्मित हो गई। उन्हें अपने अज्ञान का पता चल चुका था। उनके नेत्रों से अश्रुधारा प्रस्फुटित हो उठी। वे अपनी भूल का पश्चात्ताप कर रहे थे। उनके पुत्र विजय ने उन्हें उनके कर्तव्य पालन का ज्ञान करा दिया था। वे बोले—बेटा, तुम ठीक कहते हो। हम धर्म के आडम्बरी मानवता के लिए कलंक हैं अब मेरी आँखें खुल गई हैं। अब मैं समझ गया हूं कि संसार में 'मानवता' सबसे बड़ी चीज है।" यह कह कर उन्होंने कल्लू को उठाया तथा गले से लगा लिया। एक क्षण के लिए कल्लू हर्ष विह्वलित हो गया। उसने मन ही मन विजय को धन्यवाद दिया। उसके शरीर से काफी रक्त निकल चुका था। वह अधिक देर तक खड़ा न रह सका। अगले ही क्षण उसने दम तोड़ दिया।

—०—०—

कर्तव्य पालन की राह

—ज्योति कुमार गुप्त, अष्टम 'क'

सायंकाल की बेला आरम्भ होने जा रही है। कल्लू बाजार गया था। उसकी इकलौती बेटी रहिमा झोपड़ी में पड़ी कराह रही है। उसकी केवल एक अभिलाषा, मंदिर में भगवान के दर्शन की तथा प्रसाद प्राप्त करने की है किन्तु वह अस्पृश्य थी। मन्दिर में प्रवेश करना उसके लिए मृत्यु बुलाना था।

किन्तु वह हिम्मत करती हुई कांपती हुई मन्दिर के समीप पहुँचती है। वातावरण आल्हादित था। मन्दिर में घंटों तथा शंखों की स्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। पुजारी जी दरवाजे के पास खड़े थे। रहिमा हिम्मत बटोरती हुई उनसे बोली—"बाबू जी, भगवान के लिए मुझे एक बार भगवान के दर्शन कर लेने दीजिये।" यह शब्द सुनते ही पुजारी जी के तन बदन में आग लग गई। वे बोले—जमादार की लड़की, भगवान का दर्शन चाहती है। सीधे सीधे कहता हूँ दूर हो जा मन्दिर से। लेकिन भगवान की कृपा से वह इतनी उत्सुक हो गई थी उसने अपने वाक्य का पुनः स्पष्टोच्चारण किया। पुजारी ने बुरा सा मुँह बनाकर कहा, "तू ऐसे नहीं मानेगी।" उसने अपने खूंखार दिखने वाले कुत्तों को उस पर छोड़ दिया। कुत्तों ने उसको बुरी तरह काटा। वह बिलबिला उठी किन्तु उसने यह कहना न छोड़ा कि, "बाबू जी भगवान का प्रसाद दे दीजिए।

शाम को कल्लू वापस घर लौटा उसने अपनी बेटी की असहनीय दशा को देखा तो कुछ क्षण के लिए उसके रोंगटे खड़े हो गए। रहिमा बार-बार आँख बन्द करे बड़बड़ा रही थी कि –प्रसाद दे दो, भगवान का दर्शन कर लेने दो। कल्लू ने कहा बेटी, मैं तेरे लिए प्रसाद अवश्य लाऊँगा और वह इतना कह कर हताश मन से मन्दिर की ओर चल पड़ा।

पुजारी जी उसे बेखते ही बोले, "तू फिर आ गया। उस बार तो तेरी बेटी की वह दशा करी थी, अब तू भी मरने आया है।" कल्लू ने हाथ जोड़ते हुए कहा कि "मेरी बेटी की अन्तिम अभिलाषा मुझे पूरा कर लेने दो। भगवान के लिए मुझे प्रसाद दे दो।" पुजारी जी पर उसके प्रार्थनात्मक शब्दों का कोई प्रभाव न पड़ा। उसने बलदेव ठाकुर की तरफ देखा। बलदेव और उसके साथी डडों स उसे पीटने जुट गये। कल्लू की कराह से सारा वातावरण गूंज उठा। कल्लू की मरणीय अवस्था हो गई थी। तब तक खबर मिली रहिमा का देहान्त हो चुका है। तो कल्लू बुरी तरह टूट गया वह एक कर्कशता विहीन काँखती हुई कराह के साथ गिर पड़ा।

तब तक विजय, पंडित जी का लड़का जो पढ़ाई करने शहर गया हुआ था उसी जगह आ पहुँचा।

चिर तारुण्य

दीपक खन्ना

सदस्य तरुण भारती (विद्यालय का पूर्व छात्र संगठन)

समय का परिवर्तन ! अविरत ! अचल ! नई चेतना का उदय ! विकास के लिये ! सर्वत्र सुख शान्ति के लिये ! एक आन्तरिक उल्लास के लिए । हर ओर खुशहाली ; प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित, सुसंस्कृत और देश प्रेमी ! हर ओर पर्याप्त संतोष ! हर तरफ नियमबद्धता और अनुशासन ! ये है हम नौ जवानों का सपना ! हमारा अडिग विश्वास और दृढ़ संकल्प ही है जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि यह स्वप्न हम इसी भारत की धरती पर साकार करेंगे ।

छोटा और भोला बचपन ! जीवन की कठिनाइयों एवं उसके अर्थों से अजान ! अपनी मां से दूर परन्तु प० दीनदयाल विद्यालय की ममतामयी छांव के तले शिक्षा एवं देश प्रेम तथा जीवन के महान विचारों को ग्रहण करता हुआ अपना मार्ग प्रशस्त करता गया । बालक को हर दिन, प्रतिक्षण यह अहसास होता तथा अपने गुरुजनों से ग्रहण करना कि उसे सेवा-भाव, ईमानदारी, सच्चाई और देश प्रेम की भावना को अपनाना है ताकि इस विद्यालय का ध्येय सफल हो सके ।

मैं समझता हूँ कि यह कथन विद्यालय के हर छात्र के लिए सत्य है । विद्यालय का अनुशासन गुरुजनों तथा छात्रों के मध्य का स्वस्थ वातावरण तथा व्यवहार और छात्रों का अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ सकल्प ही वह आधार है जिनके माध्यम से आदरणीया 'बूजी' का सपना साकार हो उठा है और छात्रों ने देश सेवा के लिए अपने को पूर्णतः समर्पित करने का सकल्प लिया है ।

हमारा लक्ष्य केवल सपने दखना ही नहीं है । हम छात्रों में इतनी सामर्थ्य है कि यह लक्ष्य जीत लेना कोई कठिन कार्य नहीं, परन्त इसके लिए हमें चाहिए सगठन की शक्ति । संगठन वो हो जिसका संकल्प एक हो, जिसकी विचारधारा एक हो और जिसकी कार्य प्रणाली एक हो । सगठन के हर सदस्य में देश के लिए आहुति देने की भावना हो

पं० जी के निर्वाण के पश्चात् आदरणीया बूजी का हृदय यह सोच कर विचलित हो उठा कि अगर एक दीनदयाल गया तो क्या भारत का उत्थान रुक जायेगा । उन्होंने तन, मन और धन से पूर्णतः समर्पित होकर इस विद्यालय की आधार शिला रखी, जिसमे कई दीनदयाल पैदा हों और भारत वर्ष को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने मे अपना महत्वपूर्ण योगदान द ।

इस कार्य को सफलता पूर्वक आगे बढ़ाने में संस्थापक आचार्यों ने अपना जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है और वर्तमान में भी जो कार्य कर रहे हैं वह वास्तव में सराहनीय तथा अनुकरणीय है । आज के वाता

वरण में हम छात्रों को अपने स्वार्थों का मोह त्याग कर सेवा के कार्य में जुट जाना है, यही अभिलाषा है इस महान विद्यालय की।

आज की कठिनतम परिस्थितियों के बीच गुजर रहे हमारे सभी युवा साथियों को अच्छी तरह मालूम होगा कि हमारा समाज, हमारा राष्ट्र किस दौर से गुजर रहा है। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि पिछले चालीस वर्षों में हम अपने ही लोगों के लिए न भोजन जुटा सके है, न मकान और न तन ढकने के लिए वस्त्र। क्या हमने कभी गम्भीरतापूर्वक विचार किया कि अस्पृश्यता और जातिवाद ने हमारी सभ्यता और संस्कृति की जड़ों को काटना शुरू कर दिया है। हमें शिक्षा प्राप्त कर भौतिकता की चकाचौंध में ही सीमित नहीं रहना है। वो समय कब आयेगा। जब हम भारत को पहचानने तथा संवारने के लिए उठ खड़े होंगे।

मैं समझता हूं कि अभी तक ऐसा सच्चा और संगठित प्रयत्न नही हुआ जिससे अछूत, अस्पृश्य, अशिक्षित और गरीब की सहायता का यत्न हुआ हो। हमें एक बात अच्छी तरह से समझ लेनी है कि इस कार्य को प्रारम्भ करने का बीड़ा हमें उठाना होगा। अगर हमारे पास सगठन है, शक्ति है और योजना है तो उसका समुचित उपयोग समाज और राष्ट्र के हितों के लिये होना ही चाहिए।

गाँधी जी, शास्त्री जी तथा पं० जी को आदर्श मानकर हमें तो ऐसा कार्य कर्ता बनना है जो छोटे से छोटे सेवा के कार्य को बेहिचक प्रारम्भ कर सके, चाहे वो ग्राम्य सेवा हो अथवा पिछड़े व तिरस्कृत वर्ग की समस्याओं से जूझना हो। हम जानते हैं कि हर अच्छे कार्य का प्रारम्भ छोटा और कठिनाइयों से पूर्ण होता है। हो सकता है कि इस कार्य के लिए हमें कुछ त्याग करना पड़े और हम तमाम सुविधाओं से वंचित रह जायें, परन्तु हमें अपना वातावरण ही इस तरह तैयार करना है जिससे हमें सुविधाओं का अभाव ही न लगे और सेवा कार्य में ही अत्यधिक आनन्द की प्राप्ति हो।

हमें ऐसे छोटे-छोटे पर ईमानदारी से पूर्ण संगठनों का निर्माण करना हैं जिनका काम बैठकों के अतिरिक्त सृजनात्मक तथा रचनात्मक हो। जिसका सहयोग निम्नवर्गीय तथा तिरस्कृत वर्ग के उत्थान के लिए हो। हमें ये ध्यान रखना है कि कभी ये विचार मन में न उठें कि ये सारे सेवा कार्य व्यर्थ है और इनका कोई फल निकलने वाला नहीं! हमें ये भी नही सोचना है कि जब तमाम सुविधायें उपलब्ध हैं तब क्यों सेवा कार्य अपनायें।

हमारे युवा साथियों ने क्या सोचा है कि यह जीवन क्यों है और इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने का क्या उद्देश्य है ;

हम छात्रों को इस विद्यालय की उन्नति के लिए तथा आदरणीया बूजी के स्वप्न को साकार करने के लिए विद्यालय तथा गुरुजनों के प्रति अपना विश्वास व आस्था को अनवरत बनाये रखना होगा और सगठित होकर समाज में सद्भाव, आपसी प्रेम, अहिंसा तथा त्याग का वातावरण बनाना होगा।

सुख सुविधाओं को भोगने के लिए जिन्दगी बड़ी नहीं है, परन्तु असहाय व अपंग की सहायता के लिए तथा असमानता और अन्याय को समाप्त करने के लिए हमारा जीवन पर्याप्त है। परिवार का मोह त्यागना और सेवा का मोह जगाना, यही मंत्र है सेवा का।

Computer And Society

—Pradeep shukla-B. Tech.

Computers are playiug an important role in onr world today and their importance is increasing day by day. They are opening up for consideration a tremendous range of new problems in almost every subject. They are helping in the solution of problems whieh only a short time ago were unexplorable by anyone.

The general purpose digital computer is basically a calculating machine. Its chief advantage lies in its enormously high speed precision,reliability and virtually infinite memory. A modern computer can perform millions of arithmetic operations in a second, with almost cent per cent accuracy.

The computer revolution is approximately four decade old. Since 1946 when the first electronic digital computer began operating several changes have taken place The first computer ENIAC weighsed 30 tons and contained 18,000 vacuum tubes, which failed at an average rate of one every seven minutes. With developments in semiconductor technology, a room size computer has been reduced to a silicon chip of the size of a pea and prices have kept dropping. In contrast to 5 487,000 paid for ENIAC, a SINCLAIR—TIMEX personal computer costs as low as 578, meaning a reduction in cost of over 5000 times.

The effect of the computer revolution can be compared to the industrial revolution, which also radically changed society. Both revolutions changed work and leisure activities. With respect to work no occupations was left untouched by the industrial revolution, except artisan crafts such as sculptoring, painting etc. Computer revolution has similarly left no field or occupation untouched. Today computers are used in factories for manufacturing goods, in communication networks to supply information regarding weather, agriculture, transportation, medicine, in education, in entertainment and in space programmes etc. Amongst the users of personal computers are doctors, lawyers, small businessmen, writers, astrologers. entrologers. engineers etc. Users of home computers are housewives, children etc. An orthopadic surgeon in US connects Apple computer in his home to American medical Association, AMA/NET service, to get information on 1500 different drugs, arthritis and cancer.

A farmer uses personal computer for yields on test plots of corn, breeding records of cows etc. A lawyer uses personal computer for searching the legal references. Computers have revolutionized offices. Besides routine tasks like managing pay rolls and checking inventories computers are replacing typewriters. hey are being used for writing letters, checking spelling mistakes, storing and searching letters computers can help housewives in home financing and management to store important pieces of information and to provide entertainment. Children use it for education and enjoyment.

The low cost of the micro chip has led to its use in hitherto unheard of applications Micro-wave ovens now offer split second timing and temperature controls. In cars computer controls the ignition to maximise engine efficiency, besides supplying navigational information, pocket computers act as interpreters to provide instant translation from one language to another, handling six languages at a time.

Micro-chip controlled toys add fun to education teaching a child various subjects, from English and History to music and arithmetic. Computer aided instruction (CAI) packages assist in self paced learning of complex subjects such as physics, mathematics and engineering.

In India the computer revolution has come very late. The Indian computer industry made a humble beginning in 1971 when ECIL made the first indian computer TDC-12. Today ECIL is making large 32 dgit computers(TDC-332). In 1984 some 1200 business computers costing Rs. 50 crore were sold by Indian companies The entry of over 140 computer companies into the Indian market in less than 5 years has resulted in a fast growth of computer systems and lowering their cost. A system which was priced at Rs. 5 lakhs six month ago became available at a price of Rs. 25 lakhs today. Tremendous growth in computer industry has resulted in shortage of man power. During the last few years there has been a steady growth in computer applications all over India. Now an electricity user receives his bill produced by computer. An employee in a medium or large organisation receives his monthly pay slip prepared by computer. Many of us receive letters, cheques, mark–sheets, certificates and statement of accounts prepared by computers. Weather information which we see in T.V. is prepared with the help of computers, passengers travelling by air have their reservations done by computers. In addition many of t e industrial products and services which we use in daily life, such as blades, steel, photocopying etc. are produced with the help of computers.

Seeing the importance of computers in education and business, Govt. of India is running a massive programe for awareness of computers in schools, for the benefit of class XI and XII studentf. As a part of the process 250 Computerr systems have already been imported Installation of another 1000 computers has also been announced.

———

Cancer or Malignancy

—PRAVEEN SARASWAT 3rd year, MBBS

Geneally people speak of these two dangerous words very frequently, knowing little about them Now let us first see how these words come in the general practice, you people must have heard many English words begining with the prefix 'male'—a long list of words eg. Malediction (invocation of evil), Malevdent (one who commits a crime or evil), Maleficient (causing or doing evil), Malevden (Having an evil disposition toward others) and last but not the least is 'Malign' which is also of the same sense i.e. illdisposed or tending to injure. Infact this disease tends to injure the body or always tries to cause evil. Cancer also implies the same thing i e. any inveterate spreading evil.

So now, I think, the things have become very simple for us and we can very easily understand these two words. We know that, growth is very essential for us. Compare yourself with a little child who has got the same organs. In this case it is the growth which makes all the difference. But imagine if this growth occurs without any sort of control then it may cause some very serious defects. you might have seen some 'giants.' This phenomenon occurs because of excessive growth. But these giants are not suffering from cancer as one may interpret. These people have a 'hormonal imbalance' which causes excessive growth. In this topic we are not concerned with this problem. Before going in to the details of cancer or malignancy I would like to tell you about growth, you know that our body consists of billions of tiny cells which are of course individual units but they form tissues and a single tissue performs a particular function to cope with the basic demands of our body. Growth of tissues not only means the increase in the size of cells but also the proliferation of cells. Growth occurs in the process of repair, in response to initiation, or hormonal stimulation. Such growth is purposeful. In cancer, however, the growth is not only excessive but apparently purposeless, progressing without regard to surrounding tissues or the requirement of the individual as a whole. A group of these cells which do not follow any rule, forms a localised mass known as tumour. Here I must put a word of caution. You should know that all tumours are not malignant. Some tumours only remain confined to the site of their origin and they are termed as benign tumours to differentiate them from malignant tumours. As you can see

that cancer means the spreading evil, of course this type of growth has an inherent tendency to spread and that is why it is far more dangerous than benign tumour. Suppose a man has a malignant tumour in his stomach then this will not be confined to stomach, it may invade the liver or other viscera which are closely related to stomach either directly or through any channel. In many cases the spreading of malignant cells is so intense that it becomes a tough job to detemine the primary focus of malignancy.

Another very dangerous aspect of cancer is that sometimes after excision of malignant tissue, a person may enjoy many years of good health but this may be followed by rapid growth of cells of some distant tissue, this suggests that a host of defence mechanisms are involved, and they arrest growth for long periods.

Causation of Cancer—Paradoxically we know many causes for cancer but not the cause of cancer. The process of conversion of a normal cell to malignancy is called carcinogenesis and agents which cause this are termed carcinogers. Carcinogenesis in man is a very complex process and it involves interaction of many factors. But one thing is very clear that genetically determined factors do exist & these factors determine an individuali's susceptibility to develop a particular cancer. And second factor which is also very important is the external environment-

'Causation of cancer' is a very vast topic and I can write a few pages on this. But I think we should not go in details as this topic is concerned because every day new concepts are coming and unfortunately we have not been able to make a fixed idea about their action. However, I am giving some important causes in short so that you can make a general concept–

(1) **Genetically determined factors**—Some persons are predisposed to develop cancer. This can be proved by the fact that only a few persons develop cancer though they are living in the same environment in which many normal persons live.

(2) **Chemical Carcinogens**—To investigate whether the given chemical agent is carcinogenic or not requires a lot of time, skill, labour, and also patience. Here I am giving a list of such known compounds—many polycyclic hydrocarbons (these are present in mineral oils and are released by combustion of most organic materials), aromatic amines, Ajo-dyes, alkylating agents like mustard gas, nitrosamines (formed in stomach and in large intestine by action of bacteria on food stuffs), asbestos, Arsenic, Berylium, Nickle and chromates.

(3) **Physical agents**—Much is known about these agents. Most important of thse is radiant energy (X-rays, α, β and rays and ultraviolet light. As you know that UV light radiations are present in sunlight U.V. light penetrates the skin and causes mutation of genes of abberation in chromosomes But you should not be afraid of sunlight because most of U.V. light is protected from entering by melanin pigment Some human races (e.g. negros),

exposed to much sunlight, have developed more or less heavy pigmentation as a defence.

(1) **Age**—As the age advances risk of cancer increases, One very obvious reason for th's relationship is that conversion of a nomal cell to a malignant one may require a considerable period.

(5) **Occupational factors**—Workers working in those factories which produce carcinogenic compounds work at high risk. I would like you to look at the following table—

Type of tumour	occupational group	Carcinogen
Skin cancer	(a) Radiologists	(a) X-rays
	(b) Farmers and fishermen	(b) U.V. light
Myeloid lukaemia (blood cancer)	Radiologists	X-rays
Bladder cancer	Rubber Workers	1- hydroxy naphthylamine
Lung cancer	(a) Miners	(a) Silica
	(b) Uranium miners	(b) r-radiation
Nose Cancer	Furniture makers	Wood dust
Liver Cancer	Chamber Cleaners in plastics industry	Vinyl Chloride

(6) **Social factors**—Two social habits known to cause cancer are cigarette smoking and betal chewing. Cigarette smoking is very largely responsible for high incidence of lung cancer throughout the world, chewing of betal leaves mixed with tobacco leaves and slaked lime is associated with a high incidence of cancer of oral mucosa (membrane inside the mouth cavity)

Now let us come to a very common cancer i.e. breast cancer. Incidence of breast cancer is lower in women who have borne children than in those who have no children. It again appears to be lower in mothers who have suckled their children than in those who have used artificial feeds.

(7 **Dietary factors**—Here I want to emphasise upon you that a pure nonvegetarian has 60% more chances of developing cancer of intestine than a pure vegetarian. I am a vegetarian and I suggest you to adopt this habit (If you are nonvegetarian)

I think all of you know that medicine has not developed a perfect cure for cancer so far. But scientists of many countries are now trying to achieve this noble goal. At the present time we have many techniques e g. radiotherapy, chemotherapy, surgical removal of the malignant part of affected organ, And I must mention here a remarkable achievement of curing blood cancer by bone marrow implantation. But this is just a begining. So, I look forward to a day when cancer will no lon er be a fatal disease. *

शाबाश ! राजेन्द्र

—सम्पादक

अप्रैल की तपती दोपहर। दीपक जी चि० राजेन्द्र को देखने के लिये व्याकुल हो रहे हैं। वह मन की तरंगों में बह जाने वाले भावुक आचार्य हैं। "चलोगे, राजेन्द्र को देखने ? वह बुरी तरह जल गया है।" उन्होंने मुझसे पूछा और मैं तैयार हो गया।

मैं और दीपक जी १६५/१२ बाबूपुरवा कालोनी, किदवई नगर, कानपर के निवासी अभिभावक श्री गणेश प्रसाद गुप्त का घर ढूँढ़ते हुये पहुँचता हूँ। श्री गुप्त घर में नहीं है। उनकी पत्नी राजेन्द्र की माँ और दो भाई-बहन राजेन्द्र के पलंग के चारो ओर बैठे हुये हैं। चि० राजेन्द्र, जो इस विद्यालय के अष्टम् 'ख' के होनहार छात्र हैं, हम दोनों को देखकर उठने की कोशिश करते हैं। हमने उन्हे स्नेह से थपथपाते हुये पलंग पर लिटा दिया। राजेन्द्र ने अभिवादन की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़ दिये पर हाथ वापस रखते हुये उनके चेहरे पर वेदना की गहरी रेखायें अंकित हो गयीं। हम सिहर गये।

राजेन्द्र का समूचा शरीर बुरी तरह जला हुआ है। सिर के बाल जलकर पूरी तरह झुलस गये हैं। हर अंग पर जलने के घाव हैं। कुछ फफोले अभी भी उभरे हैं, जिनमें जलन का पानी भरा हुआ है। अधिकांश बड़े फफोलों का पानी इन्जेक्शन से खींचकर निकाला जा चुका है।

पहली दृष्टि में राजेन्द्र को देखकर सहसा विश्वास नहीं हुआ कि यह वही ग्यारह वर्षीय राजेन्द्र हैं, जो अवकाश के क्षणों में नवजात मेमने की तरह कुलाचें भरते थे। कुछ क्षणों तक हम दोनों राजेन्द्र को अपलक देखते रहे। समूचा वातावरण मर्माहत करने वाला है।

मनुष्य भावातिरेक में अधिक समय तक नहीं रह सकता। संयत होते हुये दीपक जी ने पूछा—"यह सब कैसे हुआ ?" राजेन्द्र की माँ घटना का वितरण देने लगी— "आचार्य जी, ग्यारह अप्रैल शुक्रवार सायं ५ बजे भैया राजेन्द्र पढ़ रहे थे। मैं सब्जी लेने बाजार गयी थी, और बहन गैस पर चाय बना रही थी कि अचानक गैस का रबर-पाइप गैस-लीकेज के कारण जलने लगा। गैस रिसकर समूचे रसोई घर में भरी थी, इसलिये भयंकर आग फैल गयी। राजेन्द्र की छोटी बहन आग में फँसकर चीख पड़ी कि राजेन्द्र रसोई घर की तरफ दौड़े और उसे आग की लपटों से खींचकर बाहर निकाला, और यह देखकर कि आग धीरे-धीरे गैस सिलिण्डर के मुँह तक पहुँच रही है, और सिलिण्डर फटने से भयंकर दुर्घटना हो सकती है ये दुबारा जलती आग में कूद पड़े, और लेटकर सिलिण्डर का स्विच बन्द कर दिया। इस तरह इन्होंने कलोनी के इस ब्लाक के १२ क्वार्टर में रह रहे ६५ सदस्यों के जीवन और सम्पत्ति को भस्म होने से बचा लिया। राजेन्द्र के इस अद्भुत साहस और प्रखर बुद्धि से कानपुर में उस दिन भयंकर अग्नि-कांड होते-होते बचा। आचार्य जी, उसके जीवन की रक्षा और साथ ही ६५ व्यक्तियों के जीवन की रक्षा राजेन्द्र की आप सबकी कुशल शिक्षा-दीक्षा व शुभकामनाओं के कारण ही सम्भव हो सकी। राजेन्द्र धीरे-धीरे ठीक हो जायेगा— डाक्टर ने कोई चिन्ताजनक बात नहीं कही।"

जब राजेन्द्र की माँ घटना का विवरण सुना रही थीं, हम दोनों राजेन्द्र को रह-रहकर देख रहे थे। मुझे पूरे समय राजेन्द्र में "प्रिय प्रवास" के कृष्ण की छवि दिख ई थी। राजेन्द्र की तरह ही कृष्ण ने अपने बाल सखाओं व ग्वाल-बालों और गायों को भयंकर दावाग्नि में भस्म होने से बचा लिया था। राजेन्द्र तो निस्पद और मौन लेटे थे, पर उनमें उभरी कृष्ण की छवि कह रही थी—

"बिना न त्यागे ममता स्व-प्राण की,
विना न जोखों ज्वलदग्नि में पड़े।
न हो सका विश्व-महान-कार्य है,
न सिद्ध होता भव-जन्म हेतु है ॥"

शाबास ! राजेन्द्र

समदर्शी .....

—दीपक राजे आचार्य

[सभी को एक दृष्टि से देखना एवं एक ही प्रकार का व्यवहार करना कितना कठिन है इसका वर्णन है प्रस्तुत कृति में]

कहते है ईश्वर समदर्शी है
पर समझ में नहीं आता है कि
वह समदर्शी है तो किस कोने से
समदर्शी याने क्या ?
जो सबको देखे समान दृष्टि से वही न
आओ फिर इसी कसौटी पर कसें हम भी ईश्वर को
यदि ईश्वर होता समदर्शी तो
वह न ढालता सब नर-नारियों को एक ही साँचे में
सुन्दर व कुरूप का भेद न होता
शक्ति सम्पन्न एवं दुर्बल के मध्य भी होता न अन्तर
सभी एक ही स्तर के होते
यदि वह समदर्शी होता तो,
विश्व में अमीर गरीब का भेद न होता
मानव का बौद्धिक स्तर भी होता एक समान
कुशाग्र और मन्द बुद्धि वालों के वर्ग न होते
विश्व के सब राष्ट्र
भौतिक एवं शक्ति के स्तर पर होते समान
पर विद्यमान है यह भी विषमता घोर
इन सब तथ्यों के आधार पर
है अपना यह निष्कर्ष
ईश्वर समदर्शी नहीं वरन् है पक्का पक्षपाती
ईश्वर यदि होता समदर्शी तो

हाथों की पाँचो उँगलियों को बनाता बराबर
शरीर के दांये व बांये अंग भी एक सी शक्ति वाले होते
उसी प्रकार मानव भी नहीं हो सकता समदर्शी
यह कल्पना करना भी है व्यर्थ की वह समदर्शी होगा
उसके व्यवहार में भी मिलेगा अन्तर
वह देगा किसी को अपार स्नेह तो
किसी को अपार उपेक्षा
यह तो जीवन का एक क्रम है
और यही सतत चलता रहेगा
जो भरते हैं दम्भ कि हम समदर्शी है
उनका कथन कोरा मिथ्या है
वे करते है केवल मिथ्या भाषण
कथनी करनी के अन्तर, का करते हैं प्रकाश
कह कर अपने को समदर्शी
सभी कर लें अच्छी तरह नोट
कि ईश्वर नहीं है समदर्शी
वैसे ही मानव भी कभी नहीं हो सकती समदर्शी

———

आतंकवादी से ... ...

[प्रस्तुत रचना विद्यालय प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष माननीय श्री शिवशरण जी शर्मा की विद्यालय-परिवार को दुर्लभ भेंट है। आज जब भारत के मानचित्र पर पंजाब एक बार फिर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिये चुनौती बनकर खड़ा हो रहा है, माननीय शर्मा जी की प्रस्तुत रचना आतंकवादी सिखों से कई प्रश्न पूछते हुए आत्म-विश्लेषण के लिये बाध्य करती है। काश ! आतंकवादी गुरुनानक की महान विरासत को समझ पाते ... ...। सं०]

आतंकवादी, बता
क्यों उलझा है तू ?
क्या समस्या है तेरी ?
या मैं कह दूँ– कि
न तो कोई समस्या है तेरी
और न ही आवश्यकता है किसी
समाधान की।
केवल इतना कर कि शान्त होकर–
तू अपने को जान,
तू अपने को पहचान।

(२)

तू है कौन ?
ध्यान कर अपने 'पुरुखों' का,
और समझ कि,
तू किसकी है सन्तान।
तू अपने को जान
तू अपने को पहचान

(३)

तू भूला है, तू भटका है।
आज तूने पहना है
पहना नहीं— पहनाया गया है तुझे
एक विदेशी रंगीन चश्मा, जिससे
उत्पन्न हुआ है
एक अनोखा भ्रम; और
तू समझ रहा है
अपनों को शत्रु, और
गैरों को मित्र।
बस यही है तेरी भूल, और यही तेरा अज्ञान
तू अपने को जान.....

(४)

फोड़ दे यह चश्मा, खोल दे अपने चक्षु,
और स्थिर हो अपने स्वरूप में, फिर
खड़ा हो अपनी सही पंक्ति में, और
देख दायें-बायें, आगे-पीछे—
ये सब तेरे अपने भाई-बन्धु ही तो हैं,
जिनमें से कितनों पर,
भ्रम-जाल में फँस कर
तूने परकीयों के अस्त्र-शस्त्रों से प्रहार कर
उनके प्राण लिये हैं।
क्या यही हैं तेरी उपलब्धियाँ
जिन पर है तुझे गर्व और अभिमान ?
तू अपने को जान.....

(५)

अब अपने इस पागलपन को दूर भगा,
होश में आ, और दृष्टिपात कर उन सब पर,
तो पायेगा कि—
कोई तेरा चाचा है, तो कोई ताऊ

वार्षिकोत्सव का मुख्य आकर्षण विज्ञान प्रदर्शनी
प्रो० राजेन्द्र सिंह जी ने इसका उद्घाटन किया

राजेन्द्र गुप्त सुपुत्र गनेश प्रसाद गुप्त
१६५/१२ बाबूपुरवा कालोनी, कानपुर।
आयु १२ वर्ष घटना दिनाँक ११-४-८६

वार्षिक खेल-कूद का पारितोषिक वितरण समारोह :
माननीय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी छात्र को पुरस्कृत करते हुए ।

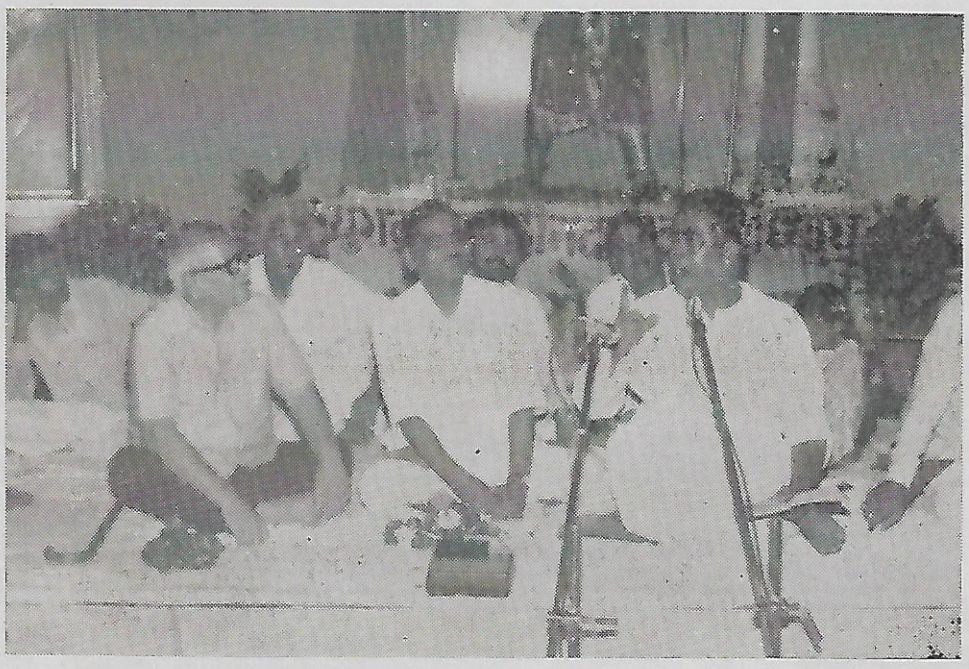

विद्यालय वार्षिकोत्सव की काव्य संध्या
आत्मप्रकाश शुक्ल काव्य पाठ करते हुये ।

कोई मामा, तो कोई उनका 'पुत'
कोई है भाँजा और कोई बुआ का 'सुत'
यह सब तेरा अपना ही परिवार—
तेरे अपने ही प्रिय बन्धुओं की सन्तान।
तू अपने को जान·····

(६)

आज 'भाषा' और 'ककार'
बन रहे फौलादी दीवार
कर दिये खड़े बना कर एक दृढ़ दीवार।
तू शान्त हो, और कर गम्भीर विचार—
फिर पहचान इन दोनों का वास्तविक आकार।
'थाली', 'कुर्सी', और 'लकड़ी,
'शेर', 'चीता' 'भेड़' और 'बकरी'
क्या भेद है, इस भाषा और तेरी भाषा में ? बता।
पर, गन्दी राजनीति
भ्रष्ट कर देती है सबको, और
उत्पन्न कर देती है भेद
और खड़ी कर देती है जटिल समस्यायें।
ऐसा विनाशकारी है भाषाओं का विधान।
तू अपने को जान—·····

(७)

फिर, पंच 'ककार'— ये क्यों बनें दीवार ?
गुरुगोविन्द सिंह जी ने तो
भारत और भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु—
वार दिये चारों सुत और शेष परिवार।
उसी गुरू के हम हैं 'शिष्य'—
ऐसे त्यागी पूर्वजों की सन्तान—
तू अपने को जान·····

(८)

आगे देख !
इतने अल्पकाल में ही
भूल गये तुम भगतसिंह सरदार,
चूम लिया था हँसते-हँसते

फाँसी का फंदा जिसने—
भारत माता को करने आजाद ।
आज भारत आजाद है— पर
यह है ऐसे ही वीरों का उपहार ।
उनकी ही नित्य करते हम पूजा
देश-भक्ति थी जिनकी महान ।
तू अपने को जान.....

(९)

भारत में नागरिकता की है केवल एक श्रेणी,
फिर भी भ्रम-वश मान रहा है तू
'प्रथम' और 'द्वितीय' ।
यहाँ पूर्ण स्वराज्य, पूर्ण प्रजा-तंत्र, और
सबको अवसर समान,
यहाँ जाति-धर्म का भेद नहीं
आज, यहाँ सर्वोच्च पद को
कर रहे सुशोभित ज्ञानी जैलसिंह महान
जिनका कर रहे हम सर्वाधिक सम्मान ।
तू अपने को जान.....

(१०)

एक प्रदेश नहीं था—
पूरा अखण्ड भारत अपना देश
सन सैंतालिस में हुआ यह खण्डित
इसका है हमें महान क्लेश ।
परकीयों की चाल थी यह
दिया 'जिनाह' को उकसा— और
वह खेल गया कठपुतली सा
और भारत माँ का हुआ विभाजन
और सब का हाल हुआ बेहाल ।
आज पुनः उपस्थित हुआ है
वैसा ही संकट

और तुम बने हो उस गन्दी चाल की गोट ।
दो इस पर अपना पूर्ण ध्यान ।
तू अपने को जान.....

(११)

जागो, चेतो, यह है धोखे की टट्टी ।
भाई से भाई लड़ाये जो—
वह है धूर्त और कपटी ।
भारत देश एक है,
और एक रहेगा ।
एक भाषा, एक ध्वज, एक संस्कृति
ये आधार है, 'एकता' और 'अखण्डता' के
और इन्हीं में है—
अपनी शक्ति, अपनी आन, और शान ।
तू अपने को जान,
तू अपने को पहचान ।

———

वेद - वाणी

स वचसा पयसा स तन्भिरगंन्महि मनसा संह शिवेन।

त्वष्ट सुदत्री विदधातु रायीऽनु माष्टुं तन्वो यद्विलिष्टम् ॥ १४ ॥

हे सब विद्याओं के पढ़ने (त्वष्य) सब व्यवहारों के विस्तार कारक (सुदत्रः) अत्युत्तम दान के देने वाले विद्वान ! आप (संशिवेन) ठीक-ठीक कल्याण-कारक (मनसा) विज्ञानयुक्त (संवर्चसा) अच्छे अध्ययन अध्यापन के प्रकाश (पयसा) जल और अन्न से (यत्) जिस (तन्वः) शरीर की (विलिष्टम) विशेष न्यूनता को (अनुमार्ष्टु) अनुरुद्ध से पूर्ण और (रायः) उत्तम धनों का (विदधातु) विधान कीजिये। उस देह और शरीरों को हम लोग (तनूभिः) ब्रह्मचर्य ब्रतादि सुनियमों से बलयुक्त शरीरों से (समगन्महि) सम्यक् प्राप्त हों ॥ १४ ॥

यांरऽआ वहऽउशतो देव देवांस्तान् प्रेरय स्वेऽअग्ने सवस्ये।

जक्षिवांस पपिवांसश्च विश्वेऽसु घर्म्म स्वरातिष्ठतानु स्वाहा ॥ १९ ॥

हे (देव) दिव्य स्वभाव वाले अध्यापक ! तू (त्वे) अपने (सधस्ये) साथ बैठने के स्थान में (यान्) जिन (उशतः) विद्या आदि अच्छे गुणों की कामना करते हुये (देवान्) विद्वानों को (आ अवह) प्राप्त हो (तान्) उनको घर्म्म में (प्र, ईरय) नियुक्त कर। हे गृहस्थ ! (जक्षिवांस) अन्न खाते और (पपिवांसः) पानी पीते हुये (विश्वे) सब तुम लोग (स्वाहा) सत्य वाणी से (घर्मम्) अन्न और यज्ञ तथा (असुम्) श्रेष्ठ बुद्धि वा (स्वः] अत्यन्त सुख को [अनु, आ, तिष्ठत] प्राप्त होकर सुखी रहो ॥ १९ ॥

यजुर्वेद— अष्टमोध्याय

Some Reminiscences of My Student Days

Chandra Pal Singh

In July 1924 I was admitted as a boarder to class Eight of Balwant Rajpoot High School at Agra, which in course of time blossomed into a full-fledged post graduate College known as R. B. S. (Raja Balwant Singh) College. As a student I was not at all self-conscious, as students are generally now-a-days. I never cared to compete with other boys of my class As a matter of fact, I had taken it for granted that the first two positions in the class were reserved for Ved Singh and Dronacharya, who were my friends and commanded my respect as scholars of superior merit, I regarded them my superiors for two reasons-firstly they were older in age, I being almost the youngest in the class and secondly, they had passed the Vernacular Final Examination of those days, which, but for English, was rated almost equivalent to the High School Examination. I never revised my text-books on the eve of examinations. Whatever was taught in the class-room was sufficient for me, so good was my memory. I was, however, fond of reading out-side books, both in Hindi and English, borrowed from the school library or friends. These books were either biographies of great men or those which dealt with the political or religious ferment taking place in the country at that time.

I was the only boy selected to appear at the High School Scholarship Examination, Probably others were overage. As I was a bit weak in Airthmetic particularly, so I requested Ved Singh, who too reside in the hostal, to coach me in the subject and he readily agreed This regular coaching stood me in good stead and made up my deficiency in the subject, Not only was I able to secure the scholarship, which was tenable for the two years of classes IX and X but I also came up to the top of my class in the home examination without my knowing it. Really speaking, I never cared to know what position I got in the class. It was in a fit of forgetfulness that I prosecuted my studies. It was only when the English Teacher awarded me 45 marks out of 50 or the Sanskrit Teacher allotted me 95 marks out of 100 and showed my answer books in the class that I realized that I held some special position in the class. Once the Hindi Teacher in his hurry to go through the whole lot of answer books gave me rather poor marks for my essay, which was appreciated even

by my class-mates. They interceded on my behalf with the teacher who realizing his in advertance in the matter gladly remedied the injustice.

At last the final year of my stay at the school came. Up till now, so for as I remember, the annual function of the school had not been held at least during my stay there, This year (1926-27) it was announced by our Headmaster (a high school head was not called principal then) Dr. S. C. Sarkar, that the annual function of the school would be held and that Shri Rabindra Nath Tagore would preside over it and give away the pnizes. We boys did not know much about him. We knew only that he was a great Bengali poet and, for the matter of that, the first Indian to have received the highest and most coveted award in the world, viz, Nobel Prize for literature. One of his stories, 'The Cabuliwallah' was included in our English text-book, so we were eager to see the great poet, who had earned world fame.

Tagore had founded at Bolpur in West Bengal an educational institution called Shantiniketan, where an experiment in education for the all round development of the child with an international bias was being carried out. The Raja of Awagarh, our Vice-President, who had financially helped the poet in founding the institution, invited the poet, while he was on a fund-raising tour in U. P., to perside over the prize-giving ceremony of his school. The poet gladly accepted the invitation.

On the scheduled day, the poet accompanied by the Raja Sahib came to our school. The function was held on the school lawns under a huge canopy or shamiana. The parents of the boys and the elite of the town had been invited. The chief guest sat on a guilded chair placed on a dais. After reading out his report Dr. Sarkar, our Head-master, requested the poet to give away the prizes. Then he called out the names of the prize winners. The first list included winners of proficiency prizes and the second of sports prizes. The first list began with the names of the boys who had secured the first, second and third position in Class 3 to 9 at the last annual examination. The boys one by one approached the dais and received their respective prizes from the august personage. We boys of class X however, were given the special privilege of receiving prizes subject-wise. I, therefore, enjoyed the proud privilege of going before the Nobel Laureate three times, as I had stood first in three subjects, English Mathematics and Sanskrit. With much trepid ation I stood up, when my name was called out I and slowly wended my wap up the aisle to the dais on which the honoured guest sat. His snow-white locks topped with a high and black velvet cap, equally white long beard and moustaches, pinkish Aryan features, a loose black gown covering his tall stately figure from shoulders to ankles, deep penetrating but child-like eyes-all gave him the appearance of a heavenly magician casting his spell on the whole assemblage. I stood enthralled three times before him to accept the ribbon-baund packets of books from the hands of that, modern rishi whose appearance overawed me, but whose kindly eyes were reassuring. And lo ! the prize packet for English contained

three books written by Tagore himself. Gora-a novel, My Reminiscences-his auto-biography and Hungry Stores-a collection of his stories, you can imagine the pride of a boy of fifteen receiving books from the hands of the author himself and that too an inter-notional celebrity. The books are still my proud possession. though about sixty years have rolled back. Would that I were smart and extrovert enough to get them autographed by their celebrated author. In that case they would have been a priceless treasure.

I had also the proud privilege of preparing a brief report of the function for our school magazine, whose editor, our Geography teacher, had asked me to do so Though I was only a student of class X, I could very well follow what the Chief Guest told us and summarise it in my own English. Tagore had spoken about his own ideas on child education and how he had put them in practice at Shantiniketan. Though more than half a century has elapsed since I had the darshan of Gurudeva Shri Ravindra Nath Thakur (Tagore is only an anglicised corruption of Thakur) his rishi-like image still hovers on my mental horizon. He kindled in me a love for Bengali. Not only I learnt Bengali alphabet but also picked up a smattering knowledge of the language. Only unfortunately I could'nt continue my efforts through my lethargy.

Another great man who happened to influence my life and thinking was Pandit Madan Mohan Malaviya. After passing the High School Examination of 1927 from B. R. High School in the First Division with Distinction in Sanskrit, I joined Agra College, Agra. It was a post graduate College with the intermediate classes attached to if, In the natural course I should have continued my studies in this College up to M. A , Agra being my district town. But somehow I felt fed up with Agra and the wonder-lust and spirit of adventure so natural with adoloscents, having seized me. I decided to leave Agra to pro-secute my studies for the bachelor's degree. Some how I was drawn towards Banaras Hindu University. The only attraction there for me was its illustrious founder and Vice-Chancellor Malaviyaji. I had heard and read a lot about him that he was a nationalist and patriot out and out, that he was one of the pioneers of the Indian National Congress, having presided over its annual session more than once, that he was at the same time a great protagonist of Hindu religion, Hindu culture and Hindu solidarity, that he was a lover of Hindi, who had worked hard for getting it officially recognised as a court language in U. P. and had presided over Hindi' Sahitya Sammelan and that he was the only leader whom Mahatma Gandhi respected as his elder brother.

My father, on learning that I wanted to go out of Agra for further studies after the Intermediate, advi sed me to join Allahabad University, for it was famous for turning out P. C. S. and I. C. S. officers, Full of nationalistic ideas and imbued with patriotic fervour, I detested the very idea of joining a university which at best prided itself on producing hard-boiled beaurocrats for the British Government. I, therefore, leaving Allahabad behind proceeded on my way to Varanasi (then known as Benares) where I got myself admitted

to the 3rd year B. A. class. In no ther university of Indian then Hindi Literature was taught in B. A. and M. A. classes. It was only in B. H. U. that this provision had been made. The department of Hindi here was manned by such illustrious savants of Hindi as Babu Shyam Sundar Das, Pandit Ram Chandra Shukla, Pandit Ayodhya Singh Upadhyaya, Lala Bhagwen Din and Pandit Keshav Prasad Mishra, who though not even M. A. 'S' had been producing M. A. 'S', Ph. D. 'S' and D. Litt. 'S'. So though I had studied Hindi only up to high School, I offered the subject for my B. A. degree.

The first thing that impressed me most about Malaviyaji was his impecoably white dress made of fine khadi from head to foot Even his winter dress was white. A white turban, a long white scarf encircling his neck and let fall on both sides of his chest, a white achkan, a white dhoti or trousers shrouding his legs, white socks, if worn at all, and a pair of white lacetess canvas shoes—he wore this dress without fail on all public occasrons, and a white sandal blob always shone on his forehead. Though he did not keep a beard like Tagore, he sported well-trimmed moustaches, Though he was short-statured, lean and thin, his fair features were well-chiselled. He must have been quite handsome as a young man. It was said of him that he had played the roles of Portia of Shakespeare's Merchant of Venice and Kalidasa's Shakuntala when he was at College.

On every ekadasi day he used to deliver Bhagwat Katha in the Arts College hall. All students and teachers attended it and listened to it with rapt attention, so entertaining and educative it was. He was one of the country's half a dozen best orators. Whether he spoke in Hindi or English or Sanskrit he could spell-bind his audience for hours together. Once in his convocation address he commended to us to learn by heart the following lines of an English poet, which during his stay in Britain he had heard the British monarch sing :

"I vow to thee. my country, all earthly things above,
Entire and whole and perfect, the service of my love,
The love that never falters, the love that pays the price
And lays upon the altar the final sacrifice,"

There was no public cause in the country with which Mahamana Malaviya's name was not associated. He was an expert raiser of funds for public causes. Every boy, whether rich or poor, Hindu or non-Hindu, took pleasure in giving him his mite. His seventieth birthday was celebrated in the university with great eclat. I can't help quoting here the opening lines of a poem, written by a class-mate of mine :

"Prince of beggars, beggar of princes
Round thy crescent vedic brows
Gather the snows of sixty years and ten"

His doors were always open to all needy or aggrived people including students. His heart melted instantaneously at the sight of grief and misery, The last words of the Mahamana that still ring in my ears were his exhortation to us, his old boys; "Wherever vou go and whatever you are called upon to do, my boys, always remember that you are graduates of Banaras Hindu University". And these words really have proved to be the sheet-anchor of my life.

There was yet another great man, whom I chanced to have a darshan of from close quarters, during my stay at the university. He was Mahatma Gandhi, It was the year 1927-28, when I was a student of B. A. First year and resided in the Birla hostel, that Mahatma Gandhi was pleased to pay a visit to the university. At that time I was already under the spell of Gandhi and used to wear hand-spun and hand-woven khodi. I was a member of the Gandhi Ashram at the university and used to spin cotton yarn with a takli. Under a big shamiana erected in the amphitheatre of the university a mammoth meeting was held to welcome, see and hear the great leader. We spinners with taklis in our hands and plying them stood on both sides of the path leading from the gate to the canopy. The Mahatma was received with vociferous shouts of Mahatma Gandhi ki jai and Bharat Mata ki jai. An emaciated, bronze coloure naked figure, but for his loin cloth, with a stick in his hand, appeared before us accompanied by a number of khadi-clad ladies and gentlemen, who were his close associate. I don't exactly remember what Gandhi said on this occasion, I only remember that a poem composed by Sohan Lal Dwivedi on khadi with the opening line, khadi ke chage-dhage men apnepan ka abhiman bhara and printed on art paper with a bust photo of Mahatma Gandhi in the middle was distributed among the audience and was recited on this occasion by Dwivediji who was then a law student at the university. This was the begining of his popularity as a nationalist poet or rashtrakavi of Hindi.

Being a shy unassuming boy, lacking the dash of an extrovert, I always missed the bus and continue to do so even now, I could only admire and worship great men from a distance I had not the nerve and initiative to establish direct contact with them. Though I got many a chance to do so. It was the age of great men and Varanasi, being a centre of light and learning, was often visted by luminaries of every field. Of the several whom I was fortunate enongh to see or contact, the three whom I have tried to portray here are the Satyam, Shivam and Sundaram of modern India Gandhi represents Satyam, Malaviya Shivam and Tagore Sundaram.

Life, at its highest moments of importance, is death.

T. S. Eliot

Thoughts for Today

Collected by–AVINASH KULKARNI
XII 'A'

* There are four varieties in society; the lovers, the ambitious, observers and fools. The fools are the happiest.
— TAINE

* An acre of performance is worth the whole world of promise — JAMES HOWELL

* Prayer is the key of the morning and the bolt of the evining — MAHATMA GANDHI

* Science and art belong to the whole world, and before them vanish the barriers of nationality
— GOETHE

* The only tyrant I accept in this world is the " still small voice " within me.
— MAHATMA GANDH

* Reform must come from within, not from outside. You cannot legislate for virture.
— CARDINAL GIBBONS

* Every religion must be tolerated.....for.....every man must get to heaven his own way.
— FREDERICK THE GREAT

* Don't delay. Today will be yesterday tomorrow. — CERVANTES

* Good resolutions are simply checks that men draw on a bank where they have no account.
— OSCAR WILDE

* Liberality lies less in giving liberally than in the timeliness of the gift.
— LA BRUYERE

* We live under a government of men and morning newspapers.
— SIR HENRY WOTTEN

* A proud man is seldom a grateful man, for he never thinks he gets as much as he deserves.
— H. W. BEECHER

* One of the tests of Leadership is the abillity to recognize a problem before it becomes an emergency.
— ARNOLD GLASOW

* "Knowledge", says-Bacon, is power, but mere knowledge is not power; it is only a possibillity. Action is power and its highest manifestation is when it is directed by knowledge.
— T. W. PALMER

* Method is the very hinge of business ; and there is no method without punctuality.
— CECIL

* The first forty years of life give us the text, the next thirty supply the commentary on it.
— SCHOPENHAUER

* When things get rough remember, "it's rubbing that brings out the shine.
— WASHINGTON IRVING

* When firmness is sufficient, rashness is unnecessary. — NSPOLEON

* It is a mistake to look too far ahead. Only one link in the chain of destiny can be handled at a time.
— CONFUCIUS

* Curses are like young chickens, and still come home to roost.
— BUL WER LYTTON

Why does it happen

Shailesh Gupta
XI B

Q. (1) What is the functioning of a helicopter ?

Helicopter is a type of aircraft in which lift and forward movement are provided by a large rotor positioned above the fusage. The smaller propeller on the extreme end of the tail is to prevent the aircraft twisting because of the movement of the rotor and for controlling the direction of the machine. The all important thing about a helicopter is that it can hover, and ascent and decsent vertically; that is there is no need for long runways. Helicopters are used not only for short-distance transport but for such jobs as crop spraying, air sea, rescue etc. The great pioneer of this type of aircraft was Igor sikorshy belonging to U. S.

Q. (2) Why does hot water clean better than cold water ?

Most materials are much more readily soluble in hot water than in cold water. In addition heat can speed up the chemical reaction in grease particles. There are special cases in which cold water should be used for cleaning blood stains, because hot water may cause a reaction which may make the stain permanent.

Q. (3) Why do we sweat ?

Sweating is a vital process for cooling us down when we get too hot, sweat is produced by the sweat glands on the surface of the skin. There it evaporates and cools the body.

Our body prefers to operate at its normal temperature. So when our body temperature gets too high, such as during strenuous exercise, we need to lose heat. There are two ways in which this happens.

First, the tiny blood vessels in our skin increase in size and are filled with blood, giving us a flushed appearance. Heat travels from the blood to the outer air.

When our body get hotter, our sweat glands produce, a mixture of water and waste chemicals known as sweat. When water evaporates, it consumes a great deal of heat. So as the water of our sweat evaporates it takes heat rapidly from our body.

Shailesh Gupta
XI B

Some Simple Puzzles

—Aditya Sachan, XI 'A'

1. A man was born on 28th February 1900. When was he 40 years old ?

2. A milkman had to measure 2 litres, 4 litres and 5 litres of milk to different customers. Which three measures all the different quantities ?

3. From 'LEAF' make a word meaning an insect ?

4. What is that which you see once in a minute, twice in a week, once in a year, but never in a month ?

5. A man has four sons, and each of his sons has four sons. How many pairs of 'father and son' are there ?

6. A is the father of B and C, but C is not brother of B. What is C to B.

Ans. (1) Never because 28th February did not fall in the year 1900.
(2) 1 liter, 2 litres, 3 litres. (3) FLEA
(4) Letter 'e' (5) 20 (6) C is sister to B

Our Education System

—Saurabh Rai XI-B

Education is the key to lead the society on the path of all round development. The objectives of education are perrenial and widely accepted, but now they seem to be reoriented in this age of requirements and achievements. Recent data of literacy of devloping countries show that we are lagging far behind in comparison to the other countries, since the adult literacy-rate is 36 per cent in India against 58 per cent for other low income-grouped countries. Fifteen per cent of Indian children do not go to any school. In higher education only nine per cent in the relative age group study in the institution of higher learning.

The percent education is based on Macaulay's system of education, which was intended to produce people who were Indians in looks but English at heart. We have a massive man-power and if this is not utilized in the upliftment o the country, it will be a burden for us. Although during the first Five-year plan after independence there was extensive expansion of schools and facilities for the training of teachers. Unfortunately, there has been a notable decline in the role and share of private initiatives and voluntary organizations. Therefore, this situation needs our immediate attention, otherwise there will be a threat to our integrity secularism and democracy.

The general impression among educationists is that there is too much bureaucratisation, besides politics, in the implementation of the policy of educational development. There is little of experimentation, innovation or professional planning and much tendency in favour of maintainnig status quo. No wonder, several distortions are noticable. There is considerable disillusionment, because of the increasing unemployment-the result of too many misfits and too few job opportunities. The target wasn't achieved, even though there was a rapid, almost phenomenal expansion in the number of schools as well

as in enrolment. Unless the rate of progress in literacy is considerably raised, in the year 2000 A. D. over half of the world's population of illiterates will be in India.

The failure of colleges to perform their true-function is due to the increasing pressure of enrolment, low-standard of teaching and the politicalisation of administration. The present education does not adequately equip young men & women for the battle of life. Nor does it lay the foundation of good citizenship. In many cases it distorts true Indian values. The student finds class lectures dull and education boring. The teachers adopt the easy courses, they do not take pains and their lectures are ill-prepared. There is little personnal contact between the teacher and the taught.

So the present education system is defective and needs multi-sided correctives. First, The over crowding in collges and universities should be checked. Second, Co-ordination should be ensured between the activities of the mind and the hand. Third, new horizons avenues should be developed. The system of education should meet requirements of our society. Proper environment should be provided for developing talent and merit.

The true function of education is to build an intergrated personality and to ensure a simultaneous growth of body and mind, senses and sensibilities. India needs good citizens imbued with a spirit of service to the masses and a sense of dedication. Real India lives in villages and it is towards the country side that the attention of the youth should be directed. This would also help to relieve the congestion in urban areas and the pressure of the population there.

Laser–a new Source of Light

✲

ASHISH TAYAL, XI 'A'
(Under the guidance of
Dr. V. P. TAYAL)

Laser is a special light source with some unique properties which are not possessed by other light sources. Because of its properties it is finding greater and greater applications in many diverse fields such as medical, engineering, communication, optical imaging in'ormation storing and retrieval, millitary besides basic fundamental research. We will here attempt to see in a very elementary way the principle, how it works, what are the unique properties which make its application so versatile and some of its applications also. The coverage is just representative and not exhaustive for want of space and level of understanding

Principle

Laser stands for light amplification by stimulated emission of radiation. Amplification means enhancement of a given signal without changing the form of the signal. Radiation means emission of transverse electro-magnetic waves in which electric and magnetic field changes with time sinsoidally, both fields are mutually perpendicular to each other and also perpendicular to the direction in which the light travels. Heat radio-waves, microwaves, light, X-rays and Y-rays are all electromagnetic radiations, the wave-length becoming shorter and frequency higher as one moves from radiowaves to y-rays.

Light is ordinarily emitted by incandescent hot filament bulb-in which case we obtain light of all wavelengths, by sodium or mercury vapour lamp where atoms of sodium or mercury are excited to higher atomic energy states E' by collision with electrons and atoms come to lower ground energy state E" spontaneously. The energy $E'-E''=hV$ — where V is the frequency and h is the planck's constant—is radiated as a pulse of light called photon, In this spontaneous emission of light, there is no relationship in the light

emitted by various atoms with respect to time of emission, the direction of propogation and its phase. Phase is the relative state of the wave of light emitted from different atoms.

Stimulated Emission—In contrast to the spontaneous emission in stimulated emission the emission of light by an atom due to transition from higher energy E' state to the groundstate E'' is effected by the presence of light photon of energy $hV=E'-E''$. This requisite photon induces or causes the emission of radiation by simultaneous transition from E'' to E' states of many atoms. The resulting light waves from each atom travels exactly in the same direction and are in the same phase. This is called temporal (referring to time) and spatial (refering to space) coherence. The probabilites of upward and downward transition of atoms by stimulated absorption or emission of radiation are equal and are proportional to the density of requisite incident photons. If the density of this radiation is increased then stimulated emission will become dominant over spontaneous emission.

Population inversion—In normal condition, the number of atoms (population) in ground state is more than in the excited state (higher energy state). So the absorption of radiation will be more than the emission and hence there will be net absorption of radiation. But for amplification we need emission to be larger than absorption. This can be achieved by population inversion that is by some means the population of atoms in the higher energy state is increased over that of atoms in the lower energy state. This population inversion is essential for Laser action i. e. increasing the intensity of out going radiation or amplification of light.

Simple Three Level Laser—By absorption of light transition takes place from the ground state (1) to the excited state (pumping level), 2. which is broad and then rransition occars from excited state 2 to a metastable state 2. In metastable state the atoms remain for a longer period of time than in level 2 before transition to level 1. Hence the number of atoms in level 3 becomes larger than in level 1. And hence population inversion is achieved.

Four Level Laser—Here one gas serves to effect population inversion in another gas by collision and the lasing lower level is not the ground state but some unpopulated state, so much larger population inversion occurs.

Types of Lasers

The lasers can be solid state like ruby laser, gaseous gases can be in molecular state like carbon dioxide or in ionic state like Ar^{+}, or in atomic state like copper vapour. Different Lasers gives beams of different wavelengths. Besides this Lasers can give light continuously or in pulses of very short duration say 10^{-6} to 10^{-13} sec, these

are called continuous wave (C. W.) or pulsed lasers respectively. Not only this there are dye lasers which can give light of any desired frequency and this frequency can be changed continuousty - as we tune our radios to receive signals from different stations using different frequencies - these are called tuneable dye lasers. Some Laser can give small energies others huge amount of energy, these are called power lasers. We briefly give description of a Ruby Laser.

Ruby Laser - Chromium ions are doped say few parts per million in alumina (Al_2O_3). Ruby rod is lasing material. Chromium ions undergo transition from metastable state to ground state. Pumping i. e. excitation from ground state to higher energy state is done by light from xeon lamp. The end faces of the rod are polished so as to reflect light completely from one end and partially (about 90%) from the other end. This polishing of end faces increases the density of requisite radiation for lasing. The laser beam comes out from partially polished end. The light emitted is in red wave-length region and is of single wavelength.

PROPERTIES OF LASER LIGHT

1. **Monochromacity -** the light from Laser is highly monochromatic i. e. it contains strictly one single wavelength. Half width of line is very small in comparison with lines from atomic sources like sodium or mercury vapour lamp.

2. **Directionality -** From ordinary source the light spreads in ali directions, but light from a Laser is absolutely parallel and travels in one direction. For example a Laser beam travelling from earth to moon has a diameter of few feet at moon aftet travelling such a long distance.

3. **Spetial and Temporal Coherence -** In a Laser the transition of atoms or ions from higher energy state to lower energy state occurs simultaneously (at one time) and the resulting light waves from different atoms or ions are in the same state of vibration i. e. in the same phase and these waves travel in the same direction. This means that all the electric field vectors from different light waves are in one direction and in the same phase. they just add up this results in a very high intensity of laser beam, (intensity is proportional to E2, E is electric field vector) .

4. **High Intensity -** Because of the directionality and spatial and temporal coherence, Laser light is very intense. As it is concentrated over a very small area the energy delivered per unit area per unit time, called Brilliance is very large.

APPLICATIONS

Because of the above mentioned properties of the Laser light, Lasers are finding increasing applications in many fields.

1. Engineering Applications

I. **Welding -** Laser beam when falls on metal it delivers a large amount of energy over a small area which can heat up the metal at that place only, so much so that it melts locally, The time in which this happens is so short that heat is not conducted away by the metal. So two metal sheets can be joined together with the help of laser beam. Welding by laser beam is very accurate and can be of small joints which is not possible by ordinary gas welding power lasers can be used for larger welding jobs.

II. **Heat treatment of Tools -** Local heating by laser beam can raise the temperature of the tool in the desired region only and as it cools only that part becomes hard, this is heat treatment.

III. **Drilling -** Accurate and precision and very small holes in metal or hard materials like diamond can be drilled Precision cuttlng of metals and hard materials can also be done. This can be done in small dimensions this is known as [micro drilling] .

2. Medical Applicetions

I. **Micro Surqery -** Laser beam can be focussed very accurately and over much smaller area than the thickness of a knife or scissors used by surgeons for operations. Small and delicate operations which can not be performed by ordinary surgical instruments can now be performed using a well focussed laser beam. Wherever laser beams falls it cuts the tissue and also simultaneously seals the blood vessels (the blood co-ogulates). So there is no loss of blood. Operations of eye have been done in this way.

II. **Selective destruction -** of cancerous tumors and cells by focussing laser beams is being done these days.

3. Opthalmology

(I) Treatment of glucoma a disease of eye caused by virus is done by sending laser beam through the eye. The light is not absorbed by the intervening fluid of the eye but by the portion affected by virus, so the virus is burnt.

(II) Sometimes retina gets detached and this can be cured by focussing laser beam on the detached portion of the retina which fuses with the main ratina.

Fiber Optics

Laser light because of its directionality can be made to pass through a thin fiber, optical fiber is thread like material with special property that it has largest refractive index

in the centre and refractive index goes on decreasing as we go out from the centre of the fiber to the surface, So the light passing through the centre if goes towards surface it is not allowed to go out of the fiber but is totally internally reflected. Hence light passes through the optical fiber just as water flows through a bent pipe.

This has many applications. One of the very promising applications is endescope used in diagnostic medicine. The state of internal organs which can not be seen can be found by actually seeing them without operation. Optical fiber (endoscope) is passed say through nose to the stomach or even upto intestines and by sending laser beam the image of the organ is seen outside and actual state of tumour or ulcer can be found. Not only this the bleeding of the ulcers of intestine (internal hemorrhage) can be stopped by sending laser beam through optical fiber to the site of bleeding like peptic ulcer which co-ogulates the blood and hence the bleeding stops, other example is ratina of eye bleeding in diabatic patients.

Communication - With the help of optical fiber the light signals can be sent from one place to the other just as electric signals are sent from one place to other by means of electric cables. So telephonie communication by electric cables can be replaced by laser light signals and optical fiber. This has got many technical advantages one of them is that with one optical fiber using laser beam light signals many messages can be sent simultaneously through the same optical fiber. All the future development in telepho-nic communication and expansion in India will be by using laser signals and optical fiber.

Range Finding - The laser beam can be sent without appreciable spreading (because of high directionality) over long distances. There is also very little loss in the intensity by absorption through medium (earth's atmosphere). So laser beams can be used to locate distant accurately objects and to find the distances of far way objects with great precision. The laser beam sent from earth and reflected from moon has enabled measurement of the distance of moon from the earth accurate to few metres. This has application in finding irregularites in the motion of moon or earth like wobbling.

Holography - With the help of laser beam three dimensional images of objects can be obtained. A beam from laser is sent after being reffected from the object and the other one direct at the same place these two beams interact and produce a modified intensity pattern which is recorded photographically-this is called hologram. When this potogram is viewed by the original laser light then three pimensional image of the object is seen. This is possible because the laser light has the same phase relationship over a wide aera and time. [Spatial and Tempora! eoherence] .

As a light source in Raman Spectroscopy

If monochromatic light is incident on a sample (gases, liquid or solid, atomic or molecular or crysialline solid single crystal to many small crystals) and scattered light is examined with a special type of spectrometre than it is found that scattered light consists of orher frequencies also besides the froquency of incident light. The change in frequency of scallered radiation $\wedge$ v is

$$\triangle V = V \text{ scattered} - V_0$$

or

$$= V_0 - V \text{ scattered.}$$

Called Raman Shift gives the information about the energy levels of the sample [$h\triangle V = E'' - E'$]. The intensity of the scattered light of modified frequency is about 10^{-3} to 10^{-3} times less than the intensity of incident light. As laser beam is highly monochromatic and is very intense it is used with great advantage a light source in Raman spectroscopy.

Not only this many new phenomena have been discovered with the help of laser beam as source because of high intensity of laser beam. A new class of phenomenon known as NON LINEAR OPTICS is being experimentally studied with lasers.

The Gandhian Economics

–Ashutosh Panday
Class XI 'A'

Since man is a social being, he has to fulfil his physical needs. But both physical and spiritual deaelopment are needed for man s eomplete develoyment; as it is a fact that a hungry man can think nothing about metaphysics. The greatest philosophers of all ages were not ignorant about this fact, so they told us how we can lead a good life.

One of those philosophers was M. K. Gandhi. We were led by him in our struggle for freedom and even now his ideology is useful for us. For the upleftment of proletariat, what he propounded is the only way to rescue our country from economic crisis. We should give priority to feeding and clothing our peple rather than nuclear supremacy.

Gandhi propounded the philosopy of the spinning wheel to solve our economic problems. The importance of spinning wheel is not only to supply the whole population with cloth, but it also can change our socio-economic structure. We know that when the English entered India, agriculture was the main occupation and the handicrafts were its complementary. This economic structure, because it was quite 'fixed and non-changing' and the flow of money was towords the Emperor's palace; the money of the country remained in the home and threfore, every man could, at least fulfil his basic necessities.

When the Britisher came here, they established big factories and mostly machine based textile industries. This borke our economic structu e and it led us to double disadvantage. Firstly, the balanced urban culture was disturbed and hand workers lost their means of livelihood. Secondly, since the production of hand spun cloth came to a stand

still, both the urban and tne rural people had to buy their cloth from foreign countries. Thus the money of the country was handed over to England gradually.

Gandhiji understood this conspiracy and he found it necessary to break this economic structure with the help of the spinning wheel. He felt that it would made the people of India self-reliant. This thing would not onl improve their financial condition but endow them with the felling of swadeshi and make them united for struggle of swaraj.

Another thing for which he advocated was the establishement of small cottage industries. He believed that country wide establishment of collage industries could solve the problem of unemployment. This would also put a stop to centralization of big industries in cities. Of course it was not his view that big industries should not be established. We may take example of railways. This does not reduce employment but opens new avenues of employment, because before invention of the railway-engine no long journies were made.

Establishment of cottage induetries can prevent centralization of capital which has resulted in several socio-economic complications. Gandhiji was against to violence, so he taught us a peacefnl way of decentralizing industries and winning freedom and dignity for labour.

Some people say that if we follow the Gandhian economics, we will lag behind others in technology but it is a fact that we import technology from foreign countries. Our currency is very cheap in the world. So we give foreigners our agricultural products and raw materials in exchange of technology. Until self-reliance is achieved, we can't improve swadeshi technology.

Mahatma Gandhi was a practical thinker. He was a true mahatma. He practised every thing he preached to others. His life was an experiment. So we should follow his path. We are really fortunate that he was born in India.

Science and Religion

Chavli Ramesh
XII 'A'

Man is the most intelligent creature on earth. He has a curiosity to bring out truth. Besides filling his stomach like other animals, he can't rest, if there are things left to be explosed. This characteristic of man has led him to ask questions and discover the mysterious laws of nature.

Now questions are of two types, viz, 'How does this occur ?' why does this occur ?' ['THIS' refers to any phenomenon of nature]. Science can only solve the question 'why'. We take a general example, known to every one 'why does a ball fall on the earth ? The gravitation theory of newton tells us that the earth attracts the ball. But if we again ask why the property of 'mutual attraction' granted to the bodies. This can't be answered by science, for a super power element comes into-picture here-since science never goes by sheer guess or imagination.

So the remaining question is 'why'. In my opinion the word 'why' has a greater depth which is beyond the reach of science. This is attempted (to solve) by religion and philosophy. Up till now man has not been able to solve the question. He imagines an omnipresent 'God' and so on.

Another difference between science and religion is in the plane on which they operate Science tries to explain every phnomenon differently. And then tries to bring harmony between the explanations. But religion is more fundamental in nature.

The main object of religion is to find out the creator (God) And the creator is often used to solve the problems of nature. For example in the Bible it has been said

that the earth was created in six days. And so simply we get rid of one of the major question of science. A scientist tackles this question differently, by observing varioue celestial objects, he then tries to answer that the earth might have been created due to a collison of two stars. So science uses the inductive method in solving problems. In indutive method we observe certain phenomenon in many cases and finally give a generalized solution. Now I don't wan't to dwell on the paradoxes which appear due to the successive application of the method of induction.

Ultimately we see that science and religion have the aim that is to find out the reality lies behind this world. This is of course an unending quest but we have to strive for it.

Let no one even for a moment entartain the fear that a reverent study of other religions is likely to weaken or shake one's faith in one's own. The Hindu system of Philosophy regards all religions as containning the elements of truth in them and enjoins an attitude of respect and reverence towards them all. This of course presupposes regard tor one's own religion. Study and appreciation of other religions need not cause a weakening of that regard, It should mean extension of that regard to other religions.

— Gandhiji

Religious Conversion Athreat to our integration

Anshul Dixit
class XI 'B'

India is a country of various divergent political and religious viewpoints. Even in this diversity a unique unity is present which was nourished by Gandhiji and taken care of by his illustrious successors.

The people of the Indian subcontinent have shown an outstanding respect for each other's religion and way of thinking. As a matter of fact religion played a pivotal role in their lives.

In ancient/time, India was a country of perfect and exemplary communal harmony. Various communities and ideologies co-existed without any conflict of interests. The Indians were then contented with themselves and worked for the bettermet of their nation.

About 1500 years ago, a religion took birth in the Middle East, which came to be known as Islam. The word 'Islam' literally means peace but it was spread with the help of the sword and the fire. The meteoric rise of Islam and the invasions of Muslim conquerors transformed India into a poor and pitiful state. The country which was completely satisfied in itself had to cope with tne growing menace of these invaders. As a result, the foundations on which our cultural unity hinged were eroded and atavison and communalism roots out the harmony from Indian soil.

39 years ago we Indians made "a tryst with destiny" and freed ourselves from the shackles of the British. Even at this critical juncture, the Muslims did not pause to think about national integration and demanded a separate state for themselves. Consequently India was patitioned and Pakistan came into being. Even though Pakistan was created as a land of the Muslim.

After these 38 years they have got themselves declared a minority community and are enjoying much more benefits, than any other community. Many communal Muslim organizations are recieving monetary aid from Arab countries and carrying out the conversions. The secular goverdment is a passive on looker. The Muslim constitute 15% of the total Indian Population and they farm a vote block. Therefore every political party tries to pamper them, to further its own ends.

The above indications reveal a deep rooted conspiracy aimed at destablishing India creating a dishonouorised state of society.

This challange can only be answered by Hindus by organising themselves and removing the disparities & inequalities that exist among. The backward communities should be made aware of the dangers Hindu community them are facing as a whole. They would be awarded equal oppertunities for development. They should be treated at par with upper castes and be treated with brotherly feelings. These processes, if initiated, will go a long way in strengthening our ancient political, cultural, & relegious unity.

'What We Should Aim At'

We aim at a strong, free and democratic, India where every citizen has an equal place and full opportunity of growth and service, where present-dav inequalities in wealth and status have ceased to be, where our vital impulses are directed to creative and co-ope rative endeasur In such an India communalasim, seporalism, isolation eutouchability, bigotry and exploitation of man by man have no place, and while religion is free, it is not allowed to interfere with the political and economic aspects of a nation's life. If that is so, then all this business of Hindu and Muslim and Christian and Sikh must cease in so far as our political life is concerred and we must build a emited but composite nation where both individual and natioual freedom are secure

Pandit Nehru

Gandhian Ideology

—MANISH
Shrivastava XI A

Mahatama Gandhi pioneer-prophet of Twentieth century India, died at the hand of an assassin on january 30th 1948. but the inspiration of his life, and his spretual teachings, live in hearts of millons throughout the world.

Lewis Titsher has said—

"When he died, Gandhi was, what he had always, been, a private citizen, without, property, title, official position, academic distinction or scientific achievment, yet the chief of all governments except of the soviet govt. and the heads of all religions. Paid homage to the thin. brown man of seventy eight in a lioncloth." President truman, the British king. The president of France, population the chief Rabbi of London, the Dalai-Lama and more than three thousand other foreigners sent unsolicited messa ges of condolence to India. The security council of U. N. O. interrupted its deleberations to pay it tribute to Gandhi. The U. N. lowered its flag to half-mast, which ment the humanity-lowered its flag.

No one who survived him had faced mighty, adversaries at home and abroad. With the weapons of kindness, honesty humility and non-violence and with these alone, won so many victories. His is a story of unusual suecess with unusual means. The theory of Gandhian Satyagraha is nothing new. It was elaborated and enunciated long before by Patanjali, Gandhi's credit lies in the fact that he demonstrated its potentialities for solving individual and social problems, not only by living it himself but by envolving a technique by which it could by practised by the people at large and successfully teaching them its use.

The work which he has taken in hand was not only the achievment of political freedom for India but the establishment of a social order based on truth and nonviolence.

Ahinsa, Truth, non-possessions non-stealing and Brahmcharya were the five pillars on which Gandhi's whole life and his philosphy of satyagraha were built. But his approach to these ideals was not that of the orthodox moralists, but of a scientific searcher after Truth. Gandhiji's striving for truth consisted infull practice of all the above five ideals. He had adopted and practiced the ideals of Brahmcharya, since his youth. Brahmacharya literally means the mode of lite or course of conduet adapted to the search for Brahma, that is, Truth, Ahinsa the manifest part of truth.

According to Gandhian idealogy Brahamcharya is not complete until such a state of mind is reached that no unwanted thought can arise is the striver's mind. This is also the main point of his satyagraha. "Without Brahmacharya the satyagrahi will have no lustre, no inner shength to stand unarmed against the whole world."

In other words such a Brahmachari "does not flee from the company of women almost disappears. His conception of beauty alters. He will not look at the external form, but at the inner charm. The great scientific approach motivated millions and still it is vibfrating the hearts of thinkers all over the world.

Aresent Aspect—India achieved Independence at the cost of unity. This was not the independence that Gandhiji set out to achieve. It was not the non-violence movement of Gandhi, that haw failed, but their practice of non-violence or rather his technique in inculcating the non-violence of his conception out the people.

After Independence we are exchanging Gandhian idealogy at home and abroad, but the fact is, that most of so called Gandhian, followers donot understand it fully. The main idealogy of adapting the life. We are preaching is absent to tally in such cuses.

Gandhiji observed, practised and then preached, what he wanted to give his country men that is his real greatness. Our true homage to Gandhiji is to adopt a mode of conduct, we want other to adapt, for themselves.

पं० दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, नबाबगंज, कानपुर

इण्टर मीडिएट के परीक्षार्थी १९८५-८६

अनुक्रमांक	परीक्षार्थी	अनुक्रमांक	परीक्षार्थी
208429	अभय मिश्रा	208451	अविनाश कुलकर्णी
,, 30	आदित्य शुक्ल	,, 52	भरत चतुर्वेदी
,, 31	अजीत सिंह सेंगर	,, 53	भरत साहू
,, 32	अक्षय कुमार अग्रवाल	,, 54	भुवन चन्द्र जोशी
,, 33	आलोक मिश्र	,, 55	चावली रमेश
,, 34	आलोक मोहन उपाध्याय	,, 56	दीपक अग्रवाल
,, 35	अम्बरीष मिश्र	,, 57	देवेन्द्र बाजपेई
,, 36	अमित अग्रवाल	,, 58	देवेश कुमार मिश्र
,, 37	अनिल कुमार गुप्त	,, 59	गौरव चन्द्रा
,, 38	अनिल कुमार वर्मा	,, 60	गौतम चतुर्वेदी
,, 39	अनीश भाटिया	,, 61	ज्ञान प्रकाश शर्मा
,, 40	अनूप कुमार पाण्डेय	,, 62	ज्ञानेन्द्र कुमार
,, 41	अनुपम मेहरोत्रा	,, 63	हरमिन्दर सिंह बेदी
,, 42	अनुराग बाजपेई	,, 64	हृदयेश गुप्त
,, 43	अनुराग मिश्र	,, 65	जितेन्द्र गुप्त
,, 44	अनुराग कुमार वर्मा	,, 66	कपिल गुप्त
,, 45	अरुन कुमार मिश्र	,, 67	कृष्ण कुमार तिवारी
,, 46	अरुन शुक्ला	,, 68	कृष्ण कुमार
,, 47	अरुन वर्मा	,, 69	महेश सिंह चौहान
,, 49	अतुल अस्थाना	,, 70	मोहन कृष्ण मिश्र
,, 50	अवधेश कुमार गौतम	,, 71	मृदुल गुप्त

इण्टर मीडिएट के परीक्षार्थी १९८५-८६

अनुक्रमांक	परीक्षार्थी	अनुक्रमांक	परीक्षार्थी
208472	नरेन्द्र देव गुप्त	208493	संजय मलिक
" 73	नरेश यादव	" 94	संजय सारस्वत
" 74	नितिन मालवीय	" 95	संजय शर्मा
" 75	पंकज गुप्त	" 96	संजीव कुमार अवस्थी
" 76	पंकज कुमार	" 97	सत्य प्रकाश
" 77	प्रमेन्द्र श्रीवास्तव	" 98	शैलेश सक्सेना
" 78	प्रणय दीप खरे	" 99	शैलेन्द्र जौहरी
" 79	प्रवीण भगवत	208500	शरद कुमार श्रीवास्तव
" 80	प्रवीण कुमार द्विवेदी	" 1	शुमेन्दु शेखर अवस्थी
" 81	पुनीत गुप्त	" 2	सिद्धार्थ शुक्ल
" 82	राजकुमार गुप्त	" 3	सोमनाथ
" 83	राजीव प्रसाद सिंह	" 4	श्रवण कुमार कौशल
" 84	राजेश चन्द्र	" 5	सुनील कुमार गुप्त
" 85	राजेश कुमार श्रीवास्तव	" 6	सुरेन्द्र त्रिपाठी
" 86	राजेश यादव	" 7	विनित तिवारी
" 87	रवीन्द्र प्रकाश	" 8	विपुल जैन
" 88	संजय गौतम	" 9	बीरेन्द्र सिंह चौहान
" 89	संजय कुमार	" 10	विवेक कुमार द्विवेदी
" 90	संजय कुमार धूपड़	" 11	विवेक कुमार गुप्त
" 91	संजय कुमार खण्डेलवाल	" 12	विवेक जैन
" 92	संजय डिमरी	" 13	विवेक त्रिपाठी

प० दीन दयाल उपाध्याय, सनातन धर्म विद्यालय नबाबगंज, कानपुर

हाई स्कूल परीक्षार्थी १९८५–८६

रोल नम्बर	छात्र का नाम	रोलनम्बर	छात्र का नाम
0499928	चि० अजय शुक्ल	0499949	,, दिनेश चन्द्र
,, 29	,, अजीत कुमार सिंह	,, 50	,, दिवस सनवाल
,, 30	,, आलोक साबल	,, 51	,, दुर्गाप्रसाद सिंह
,, 31	,, आलोक जौहरी	,, 52	,, दुर्गाचरन सिंह
,, 32	,, अमित सिंह चौहान	,, 53	,, गोपाल कृष्ण सक्सेना
,, 33	,, मिअताभ मुखर्जी	,, 54	,, हिमांशु अग्रवाल
,, 34	,, आम्रद प्रकाश सिंह	,, 55	,, हितेन्द्र केशव अवस्थी
,, 35	,, अनिल कुमार तिवारी	,, 56	,, जय सिंह
,, 36	,, अनूप खन्ना	,, 57	,, जयन्त सोमानी
,, 37	,, अनुपम मिश्र	,, 58	,, जितेन्द्र कुमार सिंह
,, 38	,, अनुराग सक्सेना	,, 59	,, कैलाश चन्द्र जोशी
,, 39	,, अनुराग पुरवार	,, 60	,, मनीष दीक्षित
,, 40	,, अरुण कुमार सिंह	,, 61	,, मनीष अग्रवाल
,, 41	,, अरविन्द देव	,, 62	,, मनीष तिवारी
,, 42	,, आशीष कुमार	,, 63	,, मनीष सक्सेना
,, 43	,, अशोक उत्तम	,, 64	,, मनीष कृष्ण
,, 44	,, अशोक कुमार त्रिपाठी	,, 65	,, मनोज कुमार गुप्त
,, 45	,, ब्रजेश वाजपेयी	,, 66	,, मोहित कुमार श्रीवास्तव
,, 46	,, चारु चन्द्र पाठक	,, 67	,, नवनीत गुप्त
,, 47	,, दीपक कुमार तिवारी	,, 68	,, नवीन वर्मा
,, 48	,, दिनेश मिश्र	,, 69	,, नवीन कुमार शुक्ल

रोलनम्बर	छात्र का नाम	रोलनम्बर	छात्र का नाम
0499970	,, निलय कुमार पाण्डेय	9049995	,, साकेत श्रीवास्तव
,, 71	,, नीलेश कुमार सांगुरी	,, 96	,, सलिल सहाय
,, 72	,, पंकज गुप्ता	,, 97	,, संदीप मेहरोत्रा
,, 73	,, जय सिंह	,, 98	,, संजय सिंह
,, 74	,, पंकज विश्वकर्मा	,, 99	,, संजय कुमार
,, 75	,, पंकज कुमार शुक्ल	0500000	,, संजय कुमार सिंह
,, 76	,, पंकज सक्सेना	,, 1	,, संतोष मिश्र
,, 77	,, प्रभाकर विसेन	,, 2	,, संतोष कुमार
,, 78	,, प्रदीप कुमार मेहता	,, 3	,, सौरभ बाजपेयी
,, 79	,, प्रदीप दीक्षित	,, 4	,, शैलेन्द्र सिंह भदौरिया
,, 80	,, प्रशांत शुक्ल	,, 5	,, शैलेन्द्र कुमार
,, 81	,, प्रबीण कुमार मिश्र	,, 6	,, शिव प्रकाश
,, 82	,, प्रबीण पाण्डेय	,, 7	,, सिन्धु दमन
,, 83	,, प्रबीण मेहरोत्रा	,, 8	,, सुधीर कुमार गुप्त
,, 84	,, राजकुमार वर्मा	,, 9	,, सुनील गुप्त
,, 85	,, राजेश कुमार	,, 10	, सूरज मिश्र
,, 86	,, राजीव कुमार	,, 11	,, तरुण सक्सेना
,, 87	,, राकेश कुमार	,, 12	,, विजय कुमार सर्राफ
,, 88	,, रामचन्द्र बाजपेयी	,, 13	,, विमल पाण्डेय
,, 89	,, रमेश चन्द्र मिश्र	,, 14	, विन्देश्वरी प्रसाद शुक्ल
,, 90	,, रंजन खन्ना	,, 15	,, विनीत त्रिपाठी
,, 91	,, रबीन्द्र शर्मा	,, 16	,, विनीत मेहरोत्रा
,, 92	,, रबीन्द्रकुमार गुप्त	,, 17	,, विश्वजीत कुमार
,, 93	,, रीतेश कुमार शुक्ल	,, 18	,, विवेक भाटिया
,, 94	,, ऋषेश कुमार मिश्र	,, 19	,, बश कुमार श्रीवास्तव

1. अखिलेश त्रिपाठी
2. रामकृपाल जी
3. राजेश्वर सिंह
4. श्रीवास्तव जी

शिक्षक–परिवार

(1) श्री ओमशंकर त्रिपाठी एम० ए० (हिन्दी) बी० एड्० प्रधानाचार्य
(2) श्री प्रयाग सिंह एम० एससी० (गणित) बी० एड्० उपप्रधानाचार्य
(3) श्री प्रकाशनारायण बाजपेयी एम० एससी० (जन्तु वि०) बी० एड् प्रवक्ता
(4) श्री ज्ञानेन्द्र शर्मा एम० एससी० (भौतिकी) बी० एड प्रवक्ता
(5) श्री राजेश कुमार शुक्ल एम० एससी० (रसायन वि०) बी० एड्० प्रवक्ता
(6) श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव बी० एससी० (गणित) एम० ए० (समा. शा०) बी० एड् आचार्य
(7) श्री रामतीर्थ मिश्र एम० ए० (हिन्दी) बी० एड् आचार्य
(8) श्री बिहारी लाल मिश्र एम० ए० (अंग्रेजी) बी० एड० आचार्य
(9) श्री श्रीनारायण एम० एससी० (रसायन विज्ञान) बी० एड् आचार्य
(10) श्री दिनेश कुमार शुक्ल एम० ए० (अंग्रेजी) बी० एड्० आचार्य
(11) श्री प्रेमनारायण अवस्थी एम० ए० (हिन्दी) बी० एड् आचार्य
(12) श्री सुभाषचन्द्र शर्मा एम० ए० (भूगोल) डी० बी० एड्० आचार्य
(13) श्री दीपक राजे बी० ए० (इतिहास) बी० एड्० आचार्य
(14) श्री गया प्रसाद वर्मा एम० ए० (अंग्रेजी) बी० एड्० आचार्य
(15) श्री बीरेन्द्र सिंह पाण्डेय एम० ए० (समाज शास्त्र) बी० एड् आचार्य
(16) श्री रमाकान्त कटियार एम० एससी० (गणित) बी० एड् आचार्य
(17) श्री लल्लूराम चन्देल एम० एससी० (गणित) बी० एड्० आचार्य
(18) श्री गणेश शंकर बाजपेयी एम० ए० (संस्कृत) बी० एड्० शास्त्री आचार्य
(19) विमलेन्द्र कुमार कनौजिया एम० एससी० (वनस्पति वि०) बी० एड० आचार्य
(20) श्री सतीश चन्द्र गुप्त एम० ए० (प्राचीन इतिहास, राजनीति शा०) बी० एड्० आचार्य
(21) श्री हेमन्त शुक्ल एम० एससी० (भौतिकी) आचार्य
(22) श्री आनन्द प्रसाद वर्मा आई० जी० डी० (बाम्बे) आचार्य
(23) श्री रमेश चन्द्र अवस्थी बी० काम०, एम० ए० (साहित्य रत्न) कार्यालय अधीक्षक
(24) श्री घनश्याम शर्मा बी० काम० कार्यालय सहायक
(25) श्री श्यामलाल — कार्यालय कर्मचारी
(26) श्री रामभजन — प्रयोगशाला सहायक
(27) श्री रामलाल — ,, ,,
(28) श्री ओंकार नाथ गुप्त — ,, ,,

○○○

विद्यालय-प्रबन्ध-समिति

अध्यक्ष : श्री नरेन्द्रजीत सिंह, बैरिस्टर, कानपुर

उपाध्यक्ष : श्री शिवशरण शर्मा, अवकाश प्राप्त प्राचार्य
वी. एस. एस. डी. महाविद्यालय, कानपुर

मंत्री : श्री वीरेन्द्रजीत सिंह
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, कानपुर

सहमंत्री : डा० जगमोहन गर्ग, उद्योगपति गाजियाबाद

सदस्य : श्री भाऊराव देवरस, सामाजिक कार्यकर्ता, नागपुर
श्री राजेन्द्र सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता, दिल्ली
(पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति)
डा० भूषणलाल धूपड़ प्राध्यापक,
(आई. आई. टी.) कानपुर
श्री रामबालक मिश्र, एडवोकेट, कानपुर
श्री इन्द्रजीत जैन, एडवोकेट, कानपुर
श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, व्यवसायी, कानपुर
श्री गौरीशंकर भार्गव, एडवोकेट, कानपुर
श्री हरिशंकर शर्मा, अवकाश प्राप्त
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक, उ० प्र० कानपुर
श्री ओमशङ्कर त्रिपाठी, प्रधानाचार्य, कानपुर
दो शिक्षक प्रतिनिधि

मुद्रक : नवीन प्रिन्टर्स, गोविन्द नगर, कानपुर। फोन : २१५९६६

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
सङ्घे जागृयाम वयम्
कानपुर